उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी

बी.ए. ज्योतिष (चतुर्थ सेमेस्टर)

BAJY(N)-221

(MINOR VOCATIONAL COURSE)

होरा ज्योतिष

मानविकी विद्याशाखा

वैदिक ज्योतिष विभाग

तीनपानी बाईपास रोड , ट्रॉन्सपोर्ट नगर के पीछे
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल - 263139
फोन नं .05946- 261122 , 261123
टॉल फ्री न0 18001804025
Fax No.- 05946-264232, E-mail- info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

विशेषज्ञ समिति एवं अध्ययन समिति

प्रोफेसर ओमप्रकाश सिंह नेगी – अध्यक्ष
कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रोफेसर रेनू प्रकाश – निदेशक
मानविकी विद्याशाखा
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी – समन्वयक
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

डॉ. प्रमोद जोशी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी),
ज्योतिष विभाग, उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

प्रोफेसर विनय कुमार पाण्डेय
अध्यक्षचर, ज्योतिष विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रोफेसर श्याम देव मिश्र
अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, लखनऊ परिसर, लखनऊ

प्रोफेसर प्रेम कुमार शर्मा
अध्यक्षचर, ज्योतिष विभाग, श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. रत्न लाल शर्मा
अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

डॉ. प्रभाकर पुरोहित, असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी)
ज्योतिष विभाग, उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

पाठ्यक्रम संयोजन एवं सम्पादन

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, वैदिक ज्योतिष-भारतीय कर्मकाण्ड विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी

सह-सम्पादन

डॉ. रंजीत दूबे
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी)
वैदिक ज्योतिष विभाग, उ0मु0वि0

इकाई लेखक	खण्ड	इकाई संख्या
डॉ. प्रमोद जोशी असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), वैदिक ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी	1	1,2,3,4,5
डॉ. विजय रतूड़ी असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), वैदिक ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी	2	1,2,3,4
डॉ. रंजीत दूबे असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), वैदिक ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी	**2**/3	5/1,2,3,4

कापीराइट @ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रथम संस्करण : 2025 **ISBN No. -**

प्रकाशक : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी **मुद्रक :**

नोट: - इस पुस्तक के समस्त इकाईयों के लेखन तथा कॉपीराइट संबंधी किसी भी मामले के लिये संबंधित इकाई लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का निस्तारण नैनीताल स्थित उच्च न्यायालय अथवा हल्द्वानी स्थित सत्रीय न्यायालय में किया जायेगा।

होरा ज्योतिष MINOR VOCATIONAL COURSE BAJY(N)-221

बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर – (ज्योतिष)

क्रम व इकाइयों के नाम	पृष्ठ संख्या
खण्ड 1	**2**
इकाई 1 होरा ज्योतिष का परिचय	3-17
इकाई 2 राशि एवं नक्षत्र विवेचन	18-30
इकाई 3 ग्रह स्वरूप	31-46
इकाई 4 भावों की विविध संज्ञायें एवं फलादेश निर्णय	47-59
इकाई 5 कारक विचार	60-74
खण्ड 2	**75**
इकाई 1 षडवर्ग विचार	76-93
इकाई 2 ग्रहों के मित्रामित्र	94-106
इकाई 3 ग्रहों की अवस्थादि विचार	107-125
इकाई 4 ग्रहों के बलाबल में विशेष	126-138
इकाई 5 द्वादश भावस्थ सूर्य ग्रह फल	139-153
खण्ड 3	**154**
इकाई 1 द्वादश भावस्थ चन्द्र एवं मंगल ग्रह फल	155-174
इकाई 2 द्वादश भावस्थ बुध एवं गुरु ग्रहफल	175-194
इकाई 3 द्वादश भावस्थ शुक्र एवं शनि ग्रहफल	195-214
इकाई 4 द्वादश भावस्थ राहु एवं केतु ग्रहफल	215-233

बी.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर)

MINOR VOCATIONAl COURSE

होरा ज्योतिष

BAJY(N)-221

खण्ड - 1
होरा ज्योतिष का परिचय एवं राशि नक्षत्रादि विचार

इकाई -1 होरा ज्योतिष का परिचय

इकाई की संरचना –

1.1 - प्रस्तावना

1.2 - उद्देश्य

1.3 - ज्योतिषशास्त्र का परिचय-

1.3.1- होरा शास्त्र का स्वरूप -

1.3.2- होराशास्त्र का वैशिष्ट्य -

1.3.3- होरा शास्त्र के विभाग -

1.4 - सारांश

1.5 - सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.6 - बोध प्रश्नों के उत्तर

1.7 - निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 - प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAJY(N) – 221 के प्रथम खण्ड की प्रथम इकाई 'होरा शास्त्र का परिचय' नामक शीर्षक से सम्बन्धित है। सामान्यतया आकाश में स्थित ग्रह, नक्षत्रादि पिण्डों की गति, स्थिति एवं उसके प्रभावादि निरूपण का अध्ययन हम जिस शास्त्र के अन्तर्गत करते हैं, उसे 'ज्योतिषशास्त्र' कहा जाता है। भारतीय वैदिक सनातन परम्परा में ज्योतिषशास्त्र को सर्वविद्यामूलक वेद का अंग होने के कारण 'वेदाग' कहा गया है। वेद के छः अंग हैं शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द एव ज्योतिष। इन्हीं वेदांगों को 'शास्त्र' भी कहा जाता है। यह शास्त्र हमारे प्राचीन ऋषियों की देन हैं। कालनियामक होने के कारण इसे 'कालशास्त्र' भी कहा जाता है।इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप होरा शास्त्र से परिचित हो सकेंगे तथा उसके मूलभूत तथ्यों को समझने में समर्थ हो सकेंगे।

1.2 - उद्देश्य

- इस इकाई में आप होरा शास्त्र के विषय को समझ सकेंगे
- इस इकाई में आप होरा शास्त्र के अंगों के बारे में जान पायेंगे
- होरा शास्त्र के वैशिष्ठय को जान पायेंगे
- होरा शास्त्र के अन्य फलादेश को समझ सकेंगे

1.3 ज्योतिषशास्त्र का सामान्य परिचय-

भारतीय ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसको कोई निश्चित तिथि या सीमा में बाधा नहीं की जा सकता। यह बात निश्चित है कि जितने प्राचीन हमारे वेद है, उतना ही प्राचीन हमारा ज्योतिष शास्त्र भी है। यद्यपि पूरा वेद ही कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि उसमे ज्योतिष से सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में महर्षियों व आचार्यों ने बताया है। ज्योतिष शास्त्र वेद का अंग होने के कारण वेद के समान ही इसकी प्रमाणिकता होती है। भारतीय सनातन परम्परा और ज्ञान के आधार पर वेद अपौरूषेय तथा अनादि अनन्त है। और इस कल्प के आरम्भ से अब तक लगभग 2 करोड़ वर्ष व्यतीत हो चुके है। जिसको आज के आधुनिक वैज्ञानिक भी मानते हैं।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।

शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्
तस्मात्सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥

वेद के छः अंग माने गये हैं। व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त, कल्प, शिक्षा, छन्द। इन छः अंगों में ज्योतिष को वेद के नेत्र के रूप में जाना जाता है। व्याकरण को मुख, निरूक्त को कान, कल्प को हाथ, शिक्षा को नाक और छन्द को पैर माना गया हैं। इन छः अंगों का वेद में अपना-अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रायः ज्योतिष और ज्यौतिष इन दोनों ही शब्दों का प्रयोग सभी जगह मिलता है। "ज्योतिः अधिकृत्य कृतं शास्त्रं ज्योतिषं शास्त्रम्" इस अर्थ में "अण" प्रत्यय लगाने से ज्योतिष बनेगा। तथा "ज्योतिः अस्ति अस्मिन्पदार्थ" "आर्शदिभ्ये अच" इस सूत्र से ज्योतिषम् बनेगा। सूर्यादि नवग्रह एवं अश्विन्यादि सताईस नक्षत्रों तथा धूमकेतुओं का बोध कराने वाले शास्त्र को ज्योतिषशास्त्र कहते हैं। काल विपाक शास्त्र जो समय का बोध कराये उसे भी ज्योतिष शास्त्र कहा जाता है।

ज्योतिष शास्त्र के मुख्यतः अठारह पर्वतक माने गये है जो निम्न प्रकार से है-

सूर्यः पितामहोव्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मुनिरङ्गिरा।
लोमेशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशश्चैते ज्योतिः शास्त्रप्रवर्तकाः ॥

सूर्य, पितामह, व्यास, वशिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरिचि, मनु, अङ्गिरा, लोमेश, पौलिश, च्यवन, यवन, भृगु, और शौनक।

मानव के समस्त कार्य जो भी निष्पादन किये जाते है, वह सब ज्योतिष के द्वारा ही चलते हैं। व्यवहार के लिए उपयोगी दिन, सप्ताह, पक्ष, अयन, ऋतु, वर्ष एवं उत्सवादि का ज्ञान इसी शास्त्र के द्वारा होता है। यदि मानव को इनका ज्ञान न होता तो धार्मिक उत्सव, सामाजिक त्यौहार, महापुरुषों के जन्मदिन, अपनी प्राचीन गौरव गाथा का इतिहास प्रकृति की किसी भी बात का ठीक-ठीक पता न लग सकेगा और न ही कोई भी कार्य सही समय पर सम्पन्न नहीं किया जा सकेगा। भारतीय अनपढ़ कृषक भी व्यवहारोपयोगी ज्योतिष ज्ञान से परिचित रहते हैं। अतः बीज कब बोना चाहिये जिस से फसल अच्छी हो। यदि कृषक ज्योतिष शास्त्र के उपयोगी तत्त्वों को न जानता तो उसका अधिकांश श्रम निष्फल जाता।

ज्योतिषशास्त्र के मुख्य तीन स्कन्ध हैं-

1. सिद्धान्त
2. संहिता
3. होरा

1. सिद्धान्त

इसमें त्रुटि से लेकर कल्पकाल की गणना, सौर, चान्द्र मासों का प्रतिपादन, ग्रह तिथियों का निरूपण, व्यक्त, अव्यक्त गणित का प्रयोजन, प्रश्नोत्तर-विधि, ग्रह नक्षत्र की स्थिति नाना प्रकार के तुरीय, नलिका इत्यादि यंत्रो की निर्माण विधि दिक्, देश, कालज्ञान के अनन्यतम उपयोगी अंग, अक्ष क्षेत्र सम्बन्धी अक्षज्या, लम्बज्या, धुज्या, कुज्या, तधृति, समशंकु इत्यादि का आनयन रहता है। प्राचीनकाल में इसकी परिभाषा केवल सिद्धान्त गणित के रूप में मानी जाती थी। "सिद्धान्त" जिसमें युगादि से इष्ट दिन पर्यन्त अहर्गण बनाकर ग्रहगणित किया जाये वह "तन्त्र" और जिसमें कल्पित इष्ट वर्ष का युग मानकर उस युग के भीतर ही किसी अभीष्ट दिन का अहर्गण लाकर ग्रहानयन किया जाये उसे करण कहते हैं। समस्त ब्रह्माण्डीय कल्पना ही सिद्धान्त है।

2. संहिता

इसमें भूशोधन, दिक्शोधन, शल्योद्धार, मेलापक, आयानयन, ग्रहोपकरण, इष्टिकाद्वार, ग्रहारम्भ, गृहप्रवेश, जलाशय निर्माण, मांगलिक कार्य के मुहूर्त, उल्कापात वृष्टि, ग्रहों के उदयास्त का फल, ग्रहचार का फल एवं ग्रहण फल आदि की बातों का निरूपण विस्तार पूर्वक किया जाता है। मध्य युग में संहिता की परिभाषा होरा, गणित और शकुन के मिश्रित रूप में मानी गई है। 9 वीं सदी में कर्म काण्ड भी इसकी परिभाषा के अन्तर्गत आ गया है। संहिता शास्त्र का जन्म आदिकाल में हुआ और इसकी परिभाषा का क्षेत्र उत्तरोत्तर बढ़ता चला गया।

3. होरा

होरा इसका दूसरा नाम जातक शास्त्र है। इसकी उत्पत्ति **"अहोरात्र"** शब्द से हुई है। आदि शब्द "अ" और अन्तिम शब्द "त्र" का लोप करने से **'होरा"** शब्द बनता है। इस शास्त्र के अन्तर्गत जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति के अनुसार व्यक्ति के लिए फलादेश का निरूपण इसमें किया जाता है। इस शास्त्र में जन्म कुण्डली के द्वादश भावों के फल उनमें स्थित ग्रहों की अपेक्षा तथा दृष्टि रखने वाले ग्रहों के अनुसार विस्तार पूर्वक प्रतिपादित किये जाते हैं। मानव जीवन के सुख, दुःख, इष्ट, अनिष्ट, उन्नति, अवनति, भाग्योदय आदि समस्त शुभाशुभों का वर्णन इस शास्त्र में किया जाता है। होरा ग्रन्थ

में फल निरूपण के दो प्रकार हैं। एक में जातक के जन्म-नक्षत्र से और दूसरे में जन्म लग्नादि द्वादश भावों से विस्तारपूर्वक फल कथन को बताया जाता है।

काल (समय) परिचय

2 परमाणु = 1 अणु (अति सूक्ष्म)

3 परमाणु = 1 त्राण

3 त्राण = 1 त्रुटि

100 त्रुटि = 1 वेध

3 वेध = 1 लव

3 लव = 1 निमेष (0.444... विपल) = 1 सेकेण्ड का (0.17777...) वाँ भाग यह गणना 1 सेकेण्ड से पहले की है-

18 निमेष = 1 काष्ठा 8 विपल (3.2 सेकेण्ड)

30 काष्ठा (8 विपल) = 1 कला, 4 पल 1.6 मिनट

30 कला = 1 मुहूर्त, 2 घटी या 48 मिनट

30 मुहूर्त = 1 दिन, 60 घटी (24 घण्टे)

15 दिन = 1 पक्ष

2 पक्ष = 1 महीना

6 महीना = 1 अयन

2 अयन = 1 वर्ष = सौर वर्ष = (1 दिव्य दिन)

360 सौर वर्ष = 1 दिव्य वर्ष

1200 दिव्य वर्ष = कलियुग

2400 दिव्य वर्ष = द्वापर युग

3600 दिव्य वर्ष = त्रेतायुग

4800 दिव्य वर्ष = सतयुग (कृतयुग)

12000 दिव्य वर्ष = एक महायुग

71 महायुग = 1 मनु (मन्वन्तर) सन्धिकाल सहित (खण्ड प्रलय)

864000000000 × 360 (सौर वर्ष हेतु)

311040000000000 सौर वर्ष ब्रह्म आयु।

जब मनु की समाप्ति हो जाती है और दूसरा मनु प्रारम्भ होता है तो उस बीच के समय को सन्धि काल कहते है।

1 सन्धिकाल = 4800 दिव्य वर्ष

14 मन्वन्तर = 1 कल्प

14 x 71 994 + (15 सन्धियाँ 4800 × 15 = 72000 दिव्य वर्ष)

72000 ÷ 12000 = 6 महायुग 994 + 6 = 1000 महायुग

1000 महायुग = 1 कल्प ब्रह्म का दिन

1 कल्प ब्रह्मा की रात्रि, इस तरह 2 कल्प का एक ब्रह्म अहोरात्र होता है।

ब्रह्मा का समय

720 कल्प = ब्रह्म वर्ष

720 × 100 = 72000 कल्प = ब्रह्म आयु

एक कल्प = 1000 महायुग = 12000 दिव्य वर्ष × 1000

अतः एक कल्प = 12000000 दि. वर्ष 120,00000 = दिव्य वर्ष

तो 72000 कल्प = 12000000 × 72000 = 864000000000 दि. वर्ष

(25920000 4320000 = 111974400,000,000 सौ वर्ष) महाप्रलय ये हमारे वर्षों के अनुसार ब्रह्मा की आयु है और अभी तक ब्रह्मा अपनी आयु का आधा भोग कर चुके हैं आधा अभी भोगना बाकी है।

होरा शब्दार्थ -

होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात् ।
कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि यत् तस्य पंक्तिं समभिव्यनक्ति ॥

अहोरात्र का दूसरा नाम होरा होता है। अहोरात्र के पूर्व वर्ण 'अ' और अन्त्यवर्ण 'त्र' के लोप होने से बीच के 'होरा' ये दो अक्षर बाकी रह जाते हैं। होरा 'लग्न' को भी कहते हैं। यह 'होरा' मनुष्य के पूर्व जन्म के किये गये कर्मो के शुभाशुभ फल को बताने का कार्य करता है।

जातकरत्नमाला ग्रन्थ के अनुसार होरा शास्त्र के लिये ख गया है -

पाटी- कुट्टक बीजमन्दिरपदारूढ़ोऽपि ये प्रौढधीः
सिद्धान्तोक्तसहस्रयुक्तिचटुलो नो वेत्यसत्सत्फले ।

होरातन्त्रमनन्तयुक्तिविहितं दैवज्ञवृन्दे तथा
राज्ञां सत्सदसि प्रगल्भगणको हास्यं परं गच्छति ।।

जो परम बुद्धिमान् पाटी - कुट्टक- बीजादि गणित का ज्ञाता व सिद्धान्त ग्रन्थोक्त सहस्रों युक्तियों का ज्ञाता होकर भी, अनन्त युक्तियों से युक्त। होराशास्त्र में कथित शुभ व अशुभ फल को नहीं जानता है वह ज्योतिर्विदों के समुदाय में एवं राजा की सभा में प्रौढ़ ज्योतिर्विद भी हास्य का पात्र होता है,

सारावली ग्रन्थ के अनुसार होरा शास्त्र के बारे में आचार्य कल्याण वर्मा जी का कथन कुछ इस प्रकार से है-

अर्थार्जने सहायः पुरूषाणामापदर्णवे पोतः ।
यात्रो समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः ।।

ज्योतिरविदों को धन अर्जित करने में यह जो होराशास्त्र है वह विशेष रूप से सहायक होता है जैसे-ग्रहों का शुभा-शुभत्व व शुभ दशा का ज्ञान होने पर लाभ होता है। विपत्ति रूप समुद्र में नौका वा जहाज का कार्य करता है एवं यात्रा के समय में यह शास्त्र मन्त्री अर्थात् उत्तम सलाहकार के रूप में कार्य करता है।

होरा शास्त्र का स्वरूप -

ग्रहनक्षत्रादि के प्रभाव से व्यक्तिगत जीवन की शुभाशुभ घटना का अध्ययन जिस स्कन्ध में हो, उसे होरा कहते है।

मानवों के जन्मकालीन ग्रहस्थिति या तिथि नक्षत्रादि द्वारा उनके जीवन में घटित होने वाले अतीत, भविष्य तथा वर्तमान के सुख - दुःखादिकों का ज्योतिष की जिस शाखा द्वारा निर्धारण किया जाता है, उसे होग शास्त्र या जातक शास्त्र के नाम से जाना जाता है। अरबी भाषा से अनूदित ताजिक शास्त्र भी इसी के अन्तर्गत आता है। इस होरा तथा मुहूर्त आदि का संयुक्त अभिधान फलित ज्योतिष है। इस भाग का सम्प्रति उपलब्ध सर्वप्राचीन ग्रन्थ वराहमिहिरप्रणीत वृहज्जातक है। इस होरा या जातक शास्त्र की प्रक्रिया शुद्ध वैज्ञानिक है। किस लग्न में उत्पन्न मनुष्य के क्या लक्षण होंगे, उसके शरीर का विचार कुण्डली के किस स्थान से किया जायेगा, इत्यादि का निर्धारण इस शास्त्र में किया गया है। उदाहरणार्थ जातक की पत्नी से सम्बन्धित समस्त विचार सप्तम स्थान से एवं राजा से सम्बन्ध रखने वाले अधिकांश बातों का विचार दशम स्थान से करना चाहिए। लग्नकुण्डली में होने

वाले सभी बारहों स्थानों के नाम निर्धारित कर दिये गये हैं और वे हैं- तनु, धन, सहज, सुहृत, सुत, रिपु, जाया, मृत्यु, धर्म, कर्म, आय, व्यय। मनुष्य के बारे में फलादेश अधिकांशतः इस लग्नकुण्डली द्वारा ही किया जाता है। कभी- कभी राशिकुण्डली द्वारा भी फलादेश किया जाता है। लग्नकुण्डली से राशिकुण्डली में अन्तर यह है कि लग्नकुण्डली में प्रथम स्थान में जन्मकालीन लग्न की राशि का अंक लिखा जाता हैं, जबकि राशिकुण्डली में जन्मराशि लिखी रहती है। शेष बातें दोनों में ही समान होती है।

जातक शास्त्र के प्रयोजन का ज्ञान -

होराशास्त्रप्रयोजनमुक्तं सारावल्याम् अर्थार्जने सहायः पुरूषाणामापदर्णवे पोतः। यात्रो समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः ।।

होराशास्त्र की आवश्यकता का वर्णन आचार्य कल्याण वर्मा ने इस प्रकार सारावली में किया है -मनुष्यों को धन अर्जित करने में यह होराशास्त्र सहायक होता है अर्थात् शुभ दशा का ज्ञान होने पर लाभ होता है। विपत्ति रूप समुद्र में नौका वा जहाज का कार्य करता है एवं यात्रा के समय में मन्त्री अर्थात् उत्तम सलाहकार होराशास्त्र को छोड़कर अन्य कोई नहीं हो सकता है।

वराहमिहिर ने भी स्वग्रन्थ लघुजातक में कहा है-

यदुपचितमन्यजन्मान शुभाशुभं तस्य कर्मणः पंक्तिः।
व्यञ्जयति शास्त्रमेतत्तमसि द्रव्याणि दीप इव ।।

प्राणी पूर्वजन्म में जो शुभाशुभ अर्जित करता है उस शुभाशुभ का ज्ञान होरा शास्त्र के द्वारा ही किया जाता है। जिस प्रकार अन्धकार में रखी हुई वस्तुओं का ज्ञान दीपक से होता है।

जातक शास्त्र को जानने वाले दैवज्ञ या ज्योतिषी के लक्षण व दोष -

आचार्य वराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ वृहद्संहिता के सम्वत्सर अध्याय में ज्योतिषी को कैसा होना चाहए बतलाते हुए स्पष्ट किया ह- ज्योतिषा का दर्शनीय, नम्र, सत्यवादी, परच्छिद्रान्वेषणावरत, राग द्वेष रहित, दृढपुष्ट शरीर श्रेष्ठ शुभलक्षण सम्पन्न, हाथ, पैर, नाखून, ऑख, कान, दाँत, तथा मस्तक शुभ लक्षण सम्पन्न गम्भीर उदात्त विचारों से पूर्ण होना चाहिये। इस प्रकार के स्वरूप वाले दैवज्ञ द्वारा किया गया भविष्य विचार सही एव शुभ होता है। पुनश्च आचार्य कहते हैं कि जो समाज एवं सभा में सुन्दर वक्ता, प्रतिभा सम्पन्न देश-काल की गतिविधि से पूर्ण परिचित, शुभ

निर्णय प्रतिद्वन्दियों में विजयी, चेष्टाओं का ज्ञाता दुर्व्यसनों से रहित वेद शास्त्रों का ज्ञानी तथा उनके अनुष्ठानिक उपयोगों में निष्णात एवं आस्थावान, मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, वशीकरण स्तम्भन आदि विद्याओं का ज्ञाता, व्रतोपवास, देवपूजा, श्रौत स्मार्त कर्मानुष्ठानरत्त, समाज में प्रभावोत्पादक, प्राकृतिक अशुभ उत्पात, भूमिकम्प, ऑधी तूफान आदि अनिष्ट समय का ज्ञाता तथा उनसे समाज को मुक्त करने की सद्विद्याओं का मर्मज्ञ होते हुए ग्रहणादि, संहिता होरा शास्त्र में मर्मज्ञ हो ऐसे गुणों से सम्पन्न ज्यौतिषा स हा समाज एव राष्ट्र का कल्याण हा सकता है।

1.3.1 होराशास्त्र का वैशिष्ट्य -

'अभिधेयं तु जगतः शुभाशुभनिरूपणम्' महर्षि नारद के इस वचन से सिद्ध होता है कि इस जगत में प्राणिमात्र के शुभाशुभ निरूपण करना ही होराशास्त्र का मुख्य प्रयोजन है। होराशास्त्र मानवजीवन का पथप्रदर्शक है। जन्मकुण्डली के आधार पर द्वादश भावों के शुभाशुभ फल का विवेचन करना होराशास्त्र का प्रधान विषय है। लग्न के माध्यम से राशिचक्र का द्वादश भावों में विभाजन किया जाता है। उन ग्रहों के शुभाशुभ गुणों के आधार पर व्यक्ति के शुभाशुभ फल का कथन किया जाता है। जन्म कुण्डली मानव के पूर्वजन्मों में अर्जित कर्मो का मूर्त्तिमान रूप होती है। जैसे एक विशाल वटवृक्ष का सूक्ष्म रूप से समावेश उसके बीजाङ्कुरण में होता है उसी तरह प्रत्येक मानव के पूर्व जन्म जन्मान्तर में किये गये कर्मों का अंकन जन्मकुण्डली में होता है, होराशास्त्र उन्हीं पूर्वजन्मार्जित कर्मों के फल को प्रकट करता है। जैसा कि कहा है-

यदपचितमन्यजन्मनि शुभाशुभ तस्य कर्मणः पङ्क्तिम्।
व्यञ्जयति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव।।

होराशास्त्र में जातक का शुभाशुभ फलसम्बन्धि विचार सूक्ष्मतया किया जाता है। होराशास्त्र जीवन में चल रहे समस्त घटनाक्रम का यथार्थ रूप से ज्ञान करवाता है। यद्यपि ज्योतिषशास्त्र मानव जीवन के विविध पक्षों के ज्ञान के अनेक मार्ग है, तथापि जैसा ज्ञान होराशास्त्र द्वारा होता है वैसा अन्य किसी शास्त्र से सभव नहीं है। होराशास्त्र दैवज्ञ को ऐसी दिव्यदृष्टि प्रदान करता है जिससे वह मनुष्य के ललाट पर विधाता द्वारा लिखित अक्षरमालिका को भी पढने में समर्थ हो जाता है। जैसा कि शास्त्र वचन है -

विधात्रा लिखिता याऽसौ ललाटेऽक्षरमालिकाम्।
दैवज्ञस्तां पठेद् व्यक्त होरानिर्मलचक्षुषा ।।

1.3.2 होरा शास्त्र के विभाग -

ज्योतिष शास्त्र के आचार्यों ने होरा शास्त्र को पांच अंगों में बाँटा गया है-

जातक, ताजिक, प्रश्न, रमल, स्वप्न इन सब में जातक शास्त्र को सर्वाधिक प्रचलन में लाया जाता है। जातक जो शब्द है, उसे ही होराशास्त्र के नाम से जाना जाता है। आचार्य कल्याणवर्मा ने सारावली ग्रन्थ में कहा-

जातकमिति प्रसिद्ध यल्लोके तदिह कीर्त्यते होरा।
अथवा दैवविमर्शनपर्यायः खल्वयं शब्दः ॥

जातक- जातक शास्त्र को ही होराशास्त्र के मुख्य अङ्ग के रूप में माना गया। इसमें जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त शुभाशुभ फलों का वर्णन इस शास्त्र के द्वारा किया जाता है।

ताजिक- जिस शास्त्र में वर्षप्रवेश के समय ग्रह-नक्षत्र-तिथि-वार-राश्यादि के आधार पर फलादेश किया जाता है, उस भाग को ताजिक शास्त्र कहा जाता है। ताजिक में मुख्य रूप से वर्षफल विचार किया जाता है।

प्रश्न शास्त्र- जिस समय कोई व्यक्ति किसी भी विषय में प्रश्न करता है, उस समय का लग्न निकाल कर गोचर ग्रहों की स्तिथि के अनुसार जो फलादेश किया जाता है, उसे प्रश्न शास्त्र कहा जाता है।

रमल शास्त्र- फेकें गये पाशों के आधार पर प्रश्नों के समय जो फलादेश कथन किया जाता है, उसे रमल शास्त्र कहते है। स्वप्न शास्त्र- मनुष्य को नीद में जो कुछ भी दिखाई देता है, उसके विवेचन से शुभाशुभ फल का जो निरूपण किया जाता है, उसे स्वप्न शास्त्र कहा जाता है। इन चार ताजिक, रमल, प्रश्न, व स्वप्न शास्त्र में फल प्रतिपादन हेतु जन्म लग्न कुण्डली की आवश्यकता नहीं होती है । इन सभी शास्त्रों के ग्रन्थों की भी भिन्न रूप से रचना की गई।

होरास्कन्ध के अन्तर्गत विषय -

होरास्कन्ध के अन्तर्गत कौन - कौन से विषयों का समावेश रहता है इस सन्दर्भ में आचार्य वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में ग्रन्थ वर्णन किया **"होराशास्त्रेऽपि च राशिहोराद्रेष्काणनवांशकद्वादशभागत्रिंशद्भागबलाबलपरिग्रहो ग्रहाणां दिक्-स्थान-काल-**

चेष्टाभिरनेप्रकाबल-निर्धारणं प्रकृतिधातुद्रव्यजाति चेष्टापरिग्रहो निषेकजन्मकाल विस्मानपन प्रत्ययादेश सद्योमरण-आयुर्दाय-दशान्तर्दशा -अष्टकवर्ग-राजयोग-चन्द्रयोग-द्विग्रहादियोगानां नाभसादीनां च योगानां फलानि-आश्रय भावावलोकन-निर्याणगत्यूनूकानि तत्कालप्रश्नशुभाशुभनिमित्तानि विवाहादीनां च कर्मणां करणम्।।"

जातकशास्त्र अथवा होराशास्त्र में जन्मकाल व जन्मस्थान के आधार पर निर्मित कुण्डली के आधार पर फलादेश किया जाता है। अतः सभी जातक ग्रन्थों में सर्वप्रथम जन्मकुण्डली के मुख्य बातों का विवेचन किया जाता है जैसे – राशि, नक्षत्र, ग्रह एव भावों का वर्णन। गगन मण्डल में अनेक ज्योतिर्पिण्ड दिखाई देते है उनमें से जो सर्वदा स्थिर गति के दिखाई देते है उन्हें नक्षत्र, ऋक्ष अथवा भ नाम से जाना जाता है । यद्यपि ब्रह्माण्ड एक अविभाज्य, विभु आर अनन्त है तथापि ज्योतिरापण्डों की स्थिति के अध्ययन हतु आचार्यो ने समस्त ज्योतिषचक्र को 27 सताईस भागों में विभाजित किया (कुछ आचार्यो ने 28 भागों में भी विभाजित किया) उन्हें नक्षत्र कहा गया। उनमें भी प्रत्येक नक्षत्र को भी चार चरणों में विभाजित किया गया है । इस प्रकार से नक्षत्रों के कुल 108 चरण हुए। जब इन चरणों को बारह भागों में विभाजित किया गया तब नौ चरण वाले एक भाग को 'राशि' कहा गया।

सूक्ष्मतया अवलोकन से पूर्वाचार्यो ने स्पष्टया जाना कि जन्म के समय जो जो भी जन्मनक्षत्र, राशि, लग्न, वार, तिथि आदि होते हैं वह मनुष्य भी उसी प्रकृति व स्वभाव वाला होता है । अतः उन सभी का सूक्ष्मतया ज्ञान होना आवश्यक होता है। अतः जातक ग्रन्थों में सर्वप्रथम राशिशीलाध्याय व ग्रहस्वरूपवर्णनाध्याय प्राप्त होते है। उनमें राशीयों की संज्ञाये, स्वरूप, स्थान, सलिलादि संज्ञा, चतुष्पदादि संज्ञा, धातु मूल जीव आदि संज्ञा, ब्राह्मण आदि वर्ण, वर्ण (रग), बलाबल, स्वामी, उच्च नीच मूलत्रिकोण आदि, दशवर्ग, भावों के संज्ञा, भावों के कारक, भावों की कन्द्र आदि संज्ञा, उदयमान, राशायों के शुभाशुभ भाग, वास दश, प्लवत्व निरूपण आ।।द ।वषयों का वर्णन किया गया।

उसमें ग्रहों के संज्ञा स्वरूप गुणभेद आदि का वर्णन किया गया। जातकग्रन्थों में वर्णन किया गया कि न केवल ग्रह मनुष्य के शुभाशुभ का विवेचन करते है अपितु मनुष्य स्वयं ही ग्रहमय होता है जिसकी आत्मा सूर्य, मन चन्द्र, शक्ति मंगल, वाणी बुध, ज्ञान गुरु, सुख शुक्र और दुःख शनि है। जैसा कि वर्णन है -

कालात्मा दिनकृन्मनस्तु हिमगुः सत्त्वं कुजो ज्ञो वचः।
जीवो ज्ञानसुखे सितश्च मदनो दुःखं दिनेशात्मजः ।।

इनमें सूर्य, मगल, शनि व राहु पाप ग्रह है, चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र सौम्य ग्रह हैं किन्तु क्षीण चन्द्र और क्रूर ग्रहों से युक्त बुध भी पाप ग्रह माने जाते है। राशि, भाव, उदयास्त, बाल-तरूण-वृद्धत्व अवस्था आदि के आधार पर ग्रह शुभाशुभ फल देते हैं उनमें भाव मध्य में गत ग्रह पूर्ण और सन्धि में स्थित ग्रह कोई फल प्रदान नहीं करता है।

जातक के जन्म के समय जो राशि क्षितिज के पूर्वभाग में उदय होती है वहीं लग्नराशि कहलाती है। उसी से आरम्भ कर वामावर्त्त क्रम से द्वादश भाव जन्मकुण्डली में अवस्थित होते हैं।

द्वादश भावों के नाम –

आचार्य वराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ में द्वादश भावों के नामो का उल्लेख करते हुये कहा है –

होरादयस्तानुकुटुम्बसहोत्थबन्धु ,
पुत्रारिपत्निमरणानि शुभासपदय शुभास्पदाया:
रि: फाख्यमित्युपचयान्यरिकर्मलाभ,
दुश्चिक्यसंज्ञितगृहाणि न नित्यमेके

जन्म कुण्डली में द्वादश भावों को निम्न नामों से जाना जाता है ,जैसे- लग्न को तनु भाव, द्वितीय भाव को कुटुम्ब, तृतीय को सहोत्थ, चतुर्थ को सहज, पंचम को बन्धु, षष्ठ को अरि, सप्तम को पत्नी,अष्टम को मरण,नवम को शुभ, दशम को कर्म, एकादश को लाभ, और द्वादश को हानि आदि भावों से जाना जाता है

द्वादश भावों के विचारणीय विषय

लग्न भाव- शरीर, सुख –दुःख, कीर्ति, नम्रता, ज्ञान,जन्म –स्थान, स्वप्न, बल, गौरव, राज्य, स्वभाव, आयु, शांति, अवस्था, स्वाभिमान, व्यक्तित्व, चोट, निशान, अपमान, त्वचा, वर्ण, आदि का विचार किया जाता है

द्वितीय भाव- धन, कुटुम्ब, बचत, आँख, मुख , वाणी, विद्या, भाषण प्रखरता, वाचालता, भोजन का स्वाद, क्रय-विक्रय, दान, नाक, आस्तिकता, परिवार का उत्तरदायित्व, चातुर्यता, संगीत, विनयशीलता, वैराग्य, बदनामी, यात्राएँ, आदि का विचार किया जाता है

तृतीय भाव- पराक्रम, पुरुषार्थ, परिश्रम, भाई, कान, भुजा, टांग, स्वप्न, नौकर, मन की बेचेनी, यात्रा, गुण, अभिरुचियाँ, कुल का स्तर, सहयोगी, वाहन, मित्र, आदि का विचार किया जाता है।

चतुर्थ भाव- सुख, सम्पति, वाहन, माता भूमि, भवन, जमीन-जायजात, प्रसिद्धि,बन्धु – बांधव, श्वसुर, पिता का व्यवसाय, ह्रदय, यश, मान –सम्मान, जन –सम्पर्क, गृह त्याग, झूठे आरोप प्रत्यारोप, माता का स्वास्थ, आदि का विचार किया जाता है

पंचम भाव- विद्या, बुद्धि, तांत्रिक क्रियाएँ, संतान सुख ,प्रेम-प्रसंग, रहस्य, प्रबंध कार्यो में कुशलता, गर्भ, पेट, पदोन्नति, तार्किक समता, बौद्धिक क्षमता, शिल्प, कला कौशल, नम्रता, लेखन शैली आदि का विचार किया जाता है

षष्ठ भाव- शत्रु, ऋण, रोग, मामा, पागलपन, विषपान, अंग-भंग, नाभि, कमर, मूत्ररोग, निन्दा, चोरी, विपत्ति, भिक्षावृत्ति, पागलपन, फोड़े-फुंसी, आदि का विचार किया जाता है

सप्तम भाव- पत्नी, दाम्पत्य सुख, व्यविचार, काम शक्ति, वीर्य, साझेदारी, पवित्रता, गुप्तांग, दत्तक पुत्र, बाबा का विचार, अन्य स्त्री से उत्पन्न पुत्रादि, दैनिक आय, रास्ता भटकना,पौष्टिक भोजन, का विचार किया जाता है

अष्टम भाव- आयु,मृत्यु का कारण, गडा धन, वैराग्य, कष्ट झगडा, मुसीबत, गुप्तरोग, पत्नी का शाररिक कष्ट, राजकोप, पाप, शल्यचिकित्सा, जीवन रक्षा, मरणोपरांत, चोरी कि आदत, सूदखोरी, आलस्य आदि अष्टम भाव से देखा जाता है।

नवम भाव- दान, धर्म, दया, त्याग, बलिदान, तपस्या, गुरुभक्ति, ऐश्वर्य,राज्याभिषेक, पैतृकधन, चिकित्सा आदि का विचार नवम भाव से किया जाता है

दशम भाव- मान- सम्मान, प्रतिष्ठा, राजपद, राज्यप्राप्ति, यश, कार्य –विस्तार, रोजगार, वायुमार्ग कि यात्रा, घुटना, प्रशासन, कृषि, संन्यास, आकाश, कार्यविस्तार, ख्याति, गौरव, नियंत्रण तथा पिता का विचार दशम भाव से किया जाता है

एकादश भाव- लाभ,बड़े भाई का, आमदनी, विद्द्या, वाहन, माता कि आयु का, गुलामी, धन के श्रोतो का, निपुणता, पदवी, सब प्रकार कि उपलब्धि का, आभूषण, पैतृक धन, पराधीनता, मालिक का धन, समाज में प्रतिष्ठा व जंघा आदि का विचार एकादश भाव से किया जाता है

द्वादश भाव- धन का व्यय, नीद, मानसिक स्थिति, पैर, आँख, बन्धन, दूरदेश कि यात्रा, विदेश यात्रा, ऋणग्रस्थता, वैवाहिक जीवन का सुख, अपयश, दुराचरण, गुप्त शत्रु, हानियाँ, ऋण से मुक्ति, मानसिक बेचेनी, किसी अंग का भंग होना आदि का विचार बारहवें भाव से किया जाता है

1.4 - सारांश

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात आप यह जानने में सफल हो पाए होंगें कि होरा शास्त्र किसे कहा जाता है। वेदांग ज्योतिष में ज्योतिष को वेदांगो में सर्वोत्तम कहा गया है। मयूर की शिखा एवं नागों की मणियों के समान समय वेदांगो में इसे मूर्धन्य माना गया है। ज्योतिष यज्ञ प्रधान होने के कारण कालादिपरिज्ञान के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना गया। पाणिनीय शिक्षा में ज्योतिष को वेद चक्षु माना गया है। चक्षु का अर्थ प्रकाशक, आलोकित, करने वाला आदि। इस प्रकार ज्योतिष वेदार्थ का प्रकाशक तो है ही कलादि तथ्यों को विशेष रूप में निरुपित करता है।'

ज्योतिषशास्त्र की व्युत्पति **'ज्योतिषांसूर्यादिग्रहाणांबोधकंशास्त्रम्'** इसमें मुख्यतः ग्रह, नक्षत्र, घूमकेतु आदि ज्योतिः पदार्थों का स्वरूप, संचार, परिभ्रमणकाल, ग्रहण और स्थिति प्रभृति समस्त घटनाओं का निरुपण एवं ग्रह, नक्षत्रों की गति, स्थिति और संचारानुसार शुभाशुभ फलों का कथन किया जाता है। जिस शास्त्र में ज्योतिविद्या का सांगोपांग वर्णन रहता हैं, वह ज्योतिषशास्त्र है। भारतीय ज्योतिष की परिभाषा के स्कन्दत्रय सिद्धांत, होरा, और संहिता के रूप में ग्रहण किया गया। परन्तु इस युग के मध्य में इस परिभाषा में और भी संशोधन देखे और आगे जाकर यह पंचरूपात्मक अथवा स्कन्धपंच सिद्धान्त, होरा, संहिता, प्रश्न और शकुन ये अंग है।

बोध प्रश्न -

1. 2 परमाणु बराबर होता है
   क. 1 अणु ख. 2अणु ग. 3अणु घ. 4अणु
2. 3 वेध बराबर होता है
   क. 2 लव ख. 1 लव ग. 4 लव घ. 3 लव
3. 1200 दिव्य वर्ष का होता है
   क. सतयुग, ख. द्वापरयुग ग. त्रेतायुग घ . कलयुग
4. 3600 दिव्य वर्ष का होता है
   क. त्रेतायुग ख. कलयुग ग. सतयुग, घ. द्वापरयुग

5. 2 अयन का होता है

क. 3 दिव्य दिन ख. 1 दिव्य दिन ग. 4 दिव्य दिन घ. 2 दिव्य दिन

6. होरा स्कन्ध के अंग है

क. 3. ख. 4, ग. 5, घ. 6

1.5 - सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. होरारत्नम् - चौखम्भा प्रकाशन प्रथम अध्याय

2. होराशास्त्रम चौखम्भा प्रकाशन -

3. वृहज्जातक - चौखम्भा प्रकाशन

4. लघुजातक - चौखम्भा प्रकाशन

5. सारावली - चौखम्भा प्रकाशन

6. भारतीय ज्योतिष: नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ चालीसवां संस्करण : 2005

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क 2. ख 3.घ 4. क 5. ख 6. ग

1.7 - निबन्धात्मक प्रश्न

1. होरा शास्त्र पर विस्तृत लेख लिखिये।
2. होरा शास्त्र के वैशिष्टय व प्रतिपादित विषयों का विस्तृत वर्णन कीजिए।
3. होरा शास्त्र के महत्व पर प्रकाश डालिये।
4. होरा शास्त्र की क्या उपयोगिता है?

इकाई - 2 राशि एवं नक्षत्र विवेचन

इकाई की संरचना –

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 नक्षत्र परिचय

2.4 राशियों का परिचय एवं विवेचन

2.5 सारांश

2.6 सहायक पाठ्य सामग्री

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAJY(N)–221 प्रथम खण्ड के द्वितीय इकाई 'राशि एवं नक्षत्र' विवेचन नामक शीर्षक से है। इस इकाई में आप नक्षत्रों के बारे में व राशियों से सम्बंधित बातों को सरल रूप में समझ पायेंगे। इस इकाई के द्वारा आप नक्षत्रों के गणना क्रम को और नक्षत्रों के आधार पर राशियों की विधि को आप सरल रूप में समझ सकते है। जिस प्रकार से जैसे कोई पूछे कि अमुक घटना सड़क पर कहाँ घटी, तो यही उत्तर दिया जायेगा किं अमुक स्थान से इत्तने कोस या मील चलने पर, उसी प्रकार अमुक ग्रह आकाश में कहाँ है, तो इस प्रश्न का भी वही उत्तर दिया जायेगा कि अमुक नक्षत्र में। तथा राशियों के स्वरूप व उनके आचार –व्यवहार के बारे में इस इकाई में आप सरल रूप में समझ सकते है।

2.2 उद्देश्य

- ❖ नक्षत्रों को सरल रूप में समझने में सफल हो सकेंगे।
- ❖ नक्षत्र चरणानुसार राशियों की गणना करने में सफल हो सकेंगे।
- ❖ राशियों के स्वरूप को जान पायेंगे।
- ❖ राशियों की विभिन्न अवस्थाओं और अन्य चीजों को सरल रूप में जान पायेंगे।

2.3 नक्षत्र परिचय

नक्षत्र

कई ताराओं के समुदाय को नक्षत्र कहते हैं। आकाश-मण्डल में जो असंख्यात तारिकाओं से कहीं अश्व, शकट, सर्प, हाथ आदि के आकार बन जाते हैं, वे ही नक्षत्र कहलाते हैं। जिस प्रकार लोक-व्यवहार में एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी मीलों या कोसों में नापी जाती है, उसी प्रकार आकाश-मण्डल की दूरी नक्षत्रों से ज्ञात की जाती है। तात्पर्य यह है कि जैसे कोई पूछे कि अमुक घटना सड़क पर कहाँ घटी, तो यही उत्तर दिया जायेगा किं अमुक स्थान से इत्तने कोस या मील चलने पर, उसी प्रकार कौन सा ग्रह आकाश में कहाँ है, तो इस प्रश्न का भी वही उत्तर दिया जायेगा कि अमुक नक्षत्र में। समस्त आकाश-मण्डल को ज्योतिषशास्त्र ने २७ भागों में विभक्त कर प्रत्येक भाग का नाम एक-एक नक्षत्र रखा है। सूक्ष्मता से समझाने के लिए प्रत्येक नक्षत्र के भी चार भाग किये गये हैं, जो चरण कहलाते हैं। २७ नक्षत्रों के' नाम निम्न हैं-

नक्षत्र

१. अश्विनी	८. पुष्य	१५. स्वाति	२२. श्रवण
२. भरणी	९. आश्लेषा	१६. विशाखा	२३. धनिष्ठा
३. कृत्तिका,	१०. मघा	१७. अनुराधा	२४. शतभिषा
४. रोहिणी	११. पूर्वाफाल्गुनी	१८. ज्येष्ठा	२५. पूर्वाभाद्रपद

५. मृगशिरा	१२. उत्तराफाल्गुनी	१९. मूल	२.६ उत्तराभाद्रपद
६. आर्द्रा	१३. हस्त	२०. पूर्वाषाढ़ा	२७. रेवती
७. पुनर्वसु	१४. चित्रा	२१. उत्तराषाढ़ा	

अभिजित् को भी २८वाँ नक्षत्र माना गया है। ज्योतिर्विदों का अभिमत है कि उत्तराषाढ़ा की आखिरी १५ घटियाँ और श्रवण के प्रारम्भ की चार घटियाँ, इस प्रकार १९ घटियों के मानवाला अभिजित् नक्षत्र होता है। यह समस्त कार्यों में शुभ माना गया है।

नक्षत्रों के स्वामी अश्विनी का अश्विनीकुमार, भरणी का काल, कृत्तिका का अग्नि, रोहिणी का ब्रह्मा, मृगशिरा का चन्द्रमा, आर्द्रा का रुद्र, पुनर्वसु का अदिति, पुष्य का बृहस्पति, आंश्लेषा का सर्प, मघा का पितर, पूर्वाफाल्गुनी का भग, उत्तराफाल्गुनी का अर्यमा, हस्त. का सूर्य, चित्रा का विश्वकर्मा, स्वाति का पवन, विशाखा का शुक्राग्नि, अनुराधा का मित्र, ज्येष्ठा का इन्द्र, मूल का निऋति, पूर्वाषाढ़ा का जल, उत्तराषाढ़ा का विश्वेदेव, श्रवण का विष्णु, धनिष्ठा का वसु, शतभिषा का वरुण, पूर्वाभाद्रपद का अजैकपाद, उत्तराभाद्रपद का अहिर्बुध्न्य, रेवती का पूषा एवं अभिजित् का ब्रह्मा स्वामी है। नक्षत्रों का फलादेश भी स्वामियों के स्वभाव-गुण के अनुसार जानना चाहिए।
भचक्र के एक निश्चित बिन्दु से मेषादि द्वादश राशियों और अश्विन्यादि २७ नक्षत्रों की स्थिति होती है। यह भचक्र पश्चिम से पूर्व की दिशा में नित्य भ्रमणशील रहता है। इसी भचक्र को जिसे कान्तिवृत्त कहते हैं, सूर्य अपनी पूर्वाभिमुख गति से नित्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है।

पूरा भचक्र ३६०° का होता है। इस भचक्र को पुनः सत्ताईस भागों में विभक्त किया गया। इस प्रकार ३६० ÷२७ =१३°,२० का एक नक्षत्र होता है। पुनः एक नक्षत्र को चार भागों में विभक्त किया गया। नक्षत्र के इस चतुर्थांश को चरण या पाद कहते हैं। २७ नक्षत्रों अर्थात् पूरे भचक्र में १०८ नक्षत्रचरण होते है, जो १२ राशियों के तुल्य है।

नक्षत्रों के चरणाक्षर-

१. अश्विनी	चू चे चो ला	१५. स्वाति	रू रे रो ता
२. भरणी	ली लू ले लो	१६. विशाखा	ती तू ते तो
३. कृत्तिका	आ ई उ ए	१७. अनुराधा	ना नी नू ने
४. रोहिणी	ओ वा वी वू	१८. ज्येष्ठा	नो या यी यू
५. मृगशिरा	वे वो का की	१९. मूल	ये यो भा भी
६. आर्द्रा	कू घ ङ छ	२०. पूर्वाषाढ़ा	भू धा फा ढ़ा
७. पुनर्वसु	के को हा ही	२१. उत्तराषाढ़ा	भे भो जा जी
८. पुष्य	हू हे हो डा	२२. श्रवण	खी खू खे खो
९. आश्लेषा	डी डू डे डो	२३. धनिष्ठा	गा गी गू गे
१०. मघा	मा मी मू मे	२४. शतभिषा	गो सा सी सू

११. पूर्वाफाल्गुनी	मो टा टी टू	२५. पूर्वाभाद्रपद	से सो दा दी
१२. उत्तराफाल्गुनी	टे टो पा पी	२.६ उत्तराभाद्रपद	दू थ झ अ
१३. हस्त	पू ष ण-ठ	२७. रेवती	दे दो चा ची
१४. चित्रा	पे पो रा री		

2.4 राशियों का परिचय एवं विवेचन

राशि परिभाषा

नक्षत्रों के समूह को राशि कहते है। आकश में अनेक ताराओं का जो समूह हमें दिखई पड़ता है। उन्हीं ताराओ के समूह को ज्योतिष शास्त्र के प्राचीन आचार्यों ने देखा कि वह तारों का समूह में आकाश में एक आकृति का निर्माण कर रही है। उन्हीं आकृतियों के आधार पर आचार्यों ने उन्हें राशि का नाम दिया। राशियों की कुल संख्या 12 है। राशि शब्द का शाब्दिक अर्थ धन होता है। भचक्र में 30" के बराबर एक राशि का मान होता है।

अक्षरानुसार राशिज्ञान

१ मेष = चू,चे, चो,ला,ली,लू, ले, लो, आ,
२ वृष = ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो,
३ मिथुन = का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा,
४ कर्क = ही, हू, हे, हो, डा,डी, डू,डे, डो,
५ सिंह = मा, मी, मू, मे, मो,टा, टी, टू, टे,
६ कन्या = टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो,
७ तुला = रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते,
८ वृश्चिक = तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू,
९ धनु = ये, यो, भा, भी, भू,धा, फा,ढा, भे,
१० मकर = भो, जा,जी, खी, खू,खे, खो, गा,गी,
११ कुम्भ = गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो,दा,
१२ मीन = दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची,

राशियों के पर्यायवाची शब्द इस प्रकार हैं-

मेष-अज, विश्व, क्रिय, तुंबुर, आद्य। **वृष**-उक्ष, गो, तावुर, गोकुल।
मिथुन- द्वन्द्व, नृयुग्म, जुलुम, यम, युग, तृतीय। **कर्क** कुलीर, कर्नाटक, कर्कट।
सिंह- कण्ठीरव, मृगेन्द्र, लेय। **कन्या**-पाथोन, रमणी, तरणी।

तुला- तौली, वणिक्, जूक, घट। **वृश्चिक**-अलि, अष्टम, कौपिं, कीट।
धनु-चाप, शरासन। **मकर**- मृगास्य, नक्र।
कुम्भ- घट, तोयधर। **मीन** अन्त्य, मत्स्य, पृथुरोम, झष।

मेषादि द्वादश राशियों के स्वामी

धराजशुक्रज्ञशशीनसौम्यसितारजीवार्कजमन्दजीवाः।
क्रमेण मेषादिषु राशिनाथास्तदंशपाश्चेति वदन्ति सन्तः॥

राशि	स्वामी	राशि	स्वामी
मेष	मंगल,	तुला	शुक्र
वृष	शुक्र	वृश्चिक	मंगल,
मिथुन	बुध	धनु	बृहस्पति
कर्क	चन्द्रमा	मकर	शनि
सिंह	सूर्य	कुम्भ	शनि
कन्या	बुध	मीन	बृहस्पति

कालपुरुष के अंग के रूप में द्वादश राशियाँ

कालात्मकस्य च शिरोमुखदेशवक्षो-
हत्कुक्षिभागकटिवस्तिरहस्यदेशाः
ऊंरू च जानुयुगलं परतस्तु जङ्गे
पादद्वयं क्रियमुखावयवाः क्रमेण॥

मेष राशि कालपुरुष के मस्तक का, वृष उसके मुख का, मिथुन राशि उसके वक्षःस्थल का, कर्क राशि उसके हृदय का, सिंह राशि उसके कुक्षि प्रदेश (उदर) का, कन्या राशि कटि प्रदेश का, तुला उसके बस्तिप्रदेश (पेडू) का, वृश्चिक राशि गुप्ताङ्ग का, धनु राशि उसके ऊरु प्रदेश (दोनों जङ्घाओं) का, मकर राशि उसके दोनों घुटनों का, कुम्भ राशि उसके दोनों पिण्डलियों का और मीन राशि उसके पैरों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

मेषादि राशियों के वासस्थान

मेषस्य धातुकररत्नधरातलं स्यात् उक्षणस्तु सानुकृषिगोकुलकाननानि।
द्यूतक्रियारतिविहारमही युगस्य वापीतटाकपुलिनानि कुलीरराशेः॥
कण्ठीरवस्य घनशैलगुहावनानि षष्ठस्य शाद्वलवधूरतिशिल्पभूमिः।
सर्वार्थसारपुरपण्यमही तुलायाः कीटस्य चाश्मविषकीटबिलप्रदेशाः॥
चापस्य वाजिरथवारणवासभूमिः एणाननस्य सरिदम्बुवनप्रदेशाः।
कुम्भस्य तोयघटभाण्डगृहस्थलानि मीनाधिवाससरिदम्बुधितोयराशिः॥

मेष राशि का वासस्थान रत्न और धातुओं से पूर्ण भूमि; कृषि योग्य भूमि में होता है, गोशाला और वन में वृष राशि का वास रहता है, जूआघर, रति-विहार स्थल मिथुन राशि का वास रहता है, वापी, तडाग और पोखर आदि का तट कर्क राशि का वासस्थान है। पर्वतगह्वर तथा गहन वन सिंह का वास रहता है, हरी घास से युक्त भूमि, रतिस्थान और शिल्पभूमि कन्याराशि का वासस्थान है। धनकोषागार और बाजार तुलाराशि का वासस्थान है। पाषाण, विष और कीटादि के विवर वृश्चिक राशि का वासस्थान है। रथशाला, घुड़शाल और फीलखाना धनु राशि का वासस्थान है। नदी और वन मकर राशि का वासस्थान है। जलस्थान- जहाँ घट आदि में जल संग्रह किया जाता है-कुम्भ राशि का और जलाशय, नदी, समुद्रादि मीन राशि का वासस्थान है ॥

मेषादि राशियों के भेद

ह्रस्वा गोऽजघटाः समा मृगनृयुक्चापान्त्यकर्कोटकाः
दीर्घा वृश्चिककन्यकाहरितुला मेषादिपुंयोषितौ ।
प्रागादिक्रियगोनृयुक्कटक भान्येतानि कोणान्विता-
न्याहुः क्रूरशुभौ चरस्थिरतरद्वन्द्वानि तानि क्रमात् ॥

मेष, वृष और कुम्भ राशियों को उनके आकार के अनुसार ह्रस्व कहते हैं। मकर, मिथुन, धनु, मीन और कर्क राशियों को सम तथा वृश्चिक, कन्या, सिंह और तुला राशियों को दीर्घ कहते हैं।

मेषादि राशियों की संज्ञाएँ-

मेष राशि पुरुष और वृष स्त्री, मिथुन पुरुष, कर्क स्त्री, सिंह पुरुष, कन्या स्त्री, तुला पुरुष, वृश्चिक स्त्री, धनु पुरुष, मकर स्त्री, कुम्भ पुरुष, मीन स्त्री संज्ञक हैं।

मेषादि राशियों की दिशायें-

मेष, उससे पंचम सिंह और उससे नवम धनु राशि- ये तीनों पूर्व दिशा में,
वृष, कन्या और मकर दक्षिण दिशा में,
मिथुन, तुला और कुम्भ राशियाँ पश्चिम दिशा में
कर्क, वृश्चिक और मीन राशियाँ उत्तर दिशा में निवास करती हैं।

क्रूर-सौम्य संज्ञक राशियाँ -

मेष की क्रूर, वृष की सौम्य, मिथुन की क्रूर, कर्क की सौम्य, सिंह की क्रूर, कन्या की सौम्य, तुला की क्रूर, वृश्चिक की सौम्य, धनु की क्रूर, मकर की सौम्य, कुम्भ की क्रूर, मीन की सौम्य, संज्ञाएँ हैं।

चर, स्थिर और द्विस्वभाव संज्ञक राशियाँ -

	राशि
चर	मेष, कर्क, तुला , मकर
स्थिर	वृष, सिंह , वृश्चिक, कुम्भ
द्विस्वभाव	मिथुन, कन्या , धनु, मीन

राशियों की धातु-मूलादि संज्ञाएँ

धातुर्मूलं जीवमित्याहुरार्या मेषादीनामोजयुग्मे तथैव ।
स्वर्णाद्धातुमृत्तिकान्तं तृणान्तं वृक्षान्मूलं जीवकूटः स जीवः ॥

मेषादि द्वादश राशियों की धातु-मूल-जीव संज्ञाएँ होती हैं। स्वर्ण से मिट्टी पर्यन्त सभी पदार्थ धातु हैं। वृक्ष से तृण पर्यन्त सभी वनस्पतियाँ मूल हैं तथा सभी जीवधारी जीवसंज्ञक हैं।

	राशि	
चर	मेष, कर्क, तुला , मकर	धातु संज्ञक
स्थिर	वृष, सिंह , वृश्चिक, कुम्भ	मूल संज्ञक
द्विस्वभाव	मिथुन, कन्या , धनु, मीन	जीव संज्ञक

विशेष-

स्वर्ण से मिट्टी पर्यन्त सभी पदार्थ धातु हैं। वृक्ष से तृण पर्यन्त सभी वनस्पतियाँ मूल हैं तथा सभी जीवधारी जीवसंज्ञक हैं।

मेषादि राशियों के वर्ण

मीनालिवृषभा विप्राश्चापाजहरयो नृपाः ।
कुम्भयुग्मतुला वैश्याः शूद्राः स्त्रीमृगकर्कटाः ॥

मीन, वृश्चिक और वृष राशियाँ विप्रवर्ण, धनु, मेष और सिंह राशियाँ क्षत्रिय; कुम्भ, मिथुन और तुला राशियाँ वैश्य तथा कन्या, मकर और कर्क राशियाँ शूद्र वर्ण हैं।

मेषादि राशियों के अन्धत्वादि -

सदा निशान्धाः क्रियगोमृगेशा मध्यन्दिने कर्कटयुग्मकन्याः ।
पूर्वाह्णकाले बधिरौ तुलाली धन्वी मृगाख्यश्च तथाऽपराह्ने ॥
मृगाननश्चापधरश्च पट्टू सन्धिद्वये नाशकरौ भवेताम् ।
स्याद्दृक्षसन्धिः कटकालिमीनभान्तं प्रगण्डान्तमिति प्रसिद्धम् ॥

मेष, वृष और सिंह राशियाँ रात्रि में; कर्क, मिथुन और कन्या मध्याह्न में अन्धी होती हैं। तुला और वृश्चिक राशियाँ पूर्वाह्न काल में तथा धनु और मकर राशियाँ अपराह्न काल में बधिर होती हैं। प्रातः-सायं सन्धिद्वय में धनु और मकर राशियाँ पङ्गु होती है। ये विनाश- कारक होती हैं। कर्क, वृश्चिक और मीन राशियों की अन्तिम सन्धियाँ ऋक्षसन्धियाँ कहलाती हैं। इसे गण्डान्त (लग्नगण्डान्त) कहते हैं ॥

राशियों का रंग -

लोहितसितशुकहरिताः पाटलपरिधूम्रपाण्डुचित्राश्च।
कृष्णकनकाभपिङ्गाः कर्बुरबभ्रू त्वजादिवर्णाः स्युः।।

लाल, गौर, शुकसदृश हरित, रक्ताभ, धूमिल, पीत, रंग-बिरंगा, श्याम, सुनहला, पिंगल, चितकबरा और भूरा क्रमशः मेषादि द्वादश राशियों के वर्ण होते हैं।

राशियों के तत्व-

मेष, सिंह, धनु का - अग्नि तत्व
वृष, कन्या, मकर का - पृथ्वी तत्व
मिथुन, तुला, कुम्भ का – वायु तत्व
कर्क, वृच्छिक, मीन का – जल तत्व
अग्नि तत्व व वायु तत्व में, पृथ्वी तत्व व जल तत्व में मित्रता होती है।
मेषादि द्वादश राशियों के द्रव्य

वस्त्राद्यं शालिमुख्यं वनफलनिचयः कन्दली मुख्यधान्यं,
त्वक्सारं मुद्गपूर्वं तिलवसनमुखं त्विक्षुलोहादिकं च।
शस्त्राश्वं काञ्चनाद्यं जलजनिकुसुमं तोयजातं समस्तं,
द्रव्याण्याहुः क्रियादिष्वबलबलयुतेष्वल्पताधिक्यभाञ्जि॥

मेष राशि के पदार्थ धारण किये जाने वाले वस्त्र, वृष राशि के पदार्थ उत्तम कोटि का धान, मिथुन राशि के अन्तर्गत आने वाले वन्यफल का समूह, कर्क राशि के पदार्थो में कन्दली कमलगट्टे का बीज, सिंह राशि के पदार्थो में मृग की एक जाति अथवा केले का वृक्ष, कन्या राशि के अन्तर्गत आने वाले पदार्थो में वंशवृक्ष (बाँस), तुला राशि के पदार्थो में मूँग की दाल, वृश्चिक राशि के पदार्थो में तिल और वस्त्रादि, धनु राशि के पदार्थो में ईख और लौह आदि पदार्थ, मकर राशि के अन्तर्गत आने वाले पदार्थो में शस्त्र और अश्व, कुम्भ राशि के अन्तर्गत आने वाले पदार्थो में स्वर्णादि, तथा

मीन राशि के अन्तर्गत आने वाले पदार्थो में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थ है। मेषादि राशियों के बलाबल के अनुसार उनसे सम्बन्धित पदार्थों का लाभ अथवा हानि होती है।

राशिफल

वृत्तेक्षणो दुर्बलजानुरुस्रो भीरुर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
बचारशील अपलोऽनृतोक्तिवं शाङ्किताङ्गः क्रियने प्रजातः॥

यदि किसी जातक का जन्म मेष राशि हो तो जातक की गोल आंखें होती है, उसके घुटने कमजोर होते हैं, वह उग्र प्रकृति का होता है, किन्तु जल से डरता है। ऐसा व्यकि चपल और घूमने का शौकीन होता है उसके शरीर में व्रण का चिन्ह होता है। ऐसे व्यक्ति कामी होते हैं किन्तु भोजन थोड़ा करते हैं। ऐसे व्यक्ति मिथ्याभाषी भी होते हैं।

पृथ् रुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यान्- मध्यान्तसौख्यः प्रमदाप्रियश्च।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्र्व गोमान् पृष्ठास्यपाश्र्वेऽङ्कयुतो वृषोत्थः॥

यदि जन्म के समय किसी जातक की वृष राशि में हो तो चेहरा और जांघे बड़ी होती हैं। जातक कृषि कर्म करने वाला होता है। यदि उसके जीवन को तीन भागों में बांटा जाय तो अन्तिम दो भाग सुख से व्यतीत होते हैं। ऐसा व्यक्ति स्त्रियों का शौकीन, त्यागी क्षमावान्, क्लेश सहने वाला,व परिश्रमी होता है । ऐसे व्यक्ति चौपाये वाहनों से युक्त होते हैं। किन्तु जातक के पीठ में, चेहरे पर, या बगल में निशान होता है- मस्से, लहसन का या व्रण का।

श्यामेक्षणः कुञ्चितमूर्द्धजः स्त्रीक्रीडानुरक्तश्च परेङ्गितज्ञः।
उत्तुङ्गनासः प्रियगीतनृत्तो वसन् सदान्तः सदने च युग्मे॥

यदि जन्म के समय मिथुन राशि हो तो जातक के नेत्र काले होते हैं और बाल घुंघराले । ऐसे जातक स्त्री-विलास में बहुत अनुरक्त रहते हैं परन्तु बुद्धिमान् होते हैं और दूसरे की मन्शा समझ लेते हैं। इनकी नाक ऊंची होती है, और नाच गान के शौकीन होते हैं। ऐसे लोग अपने मकान में ही रहना ज्यादा पसन्द करते हैं अर्थात् मकान के बाहर मेष लग्न वालों की तरह इन्हें भ्रमण पसन्द नही।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः समित्रो बह्वालयस्तुङ्गकटिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्पपुत्रः॥

यदि जातक की कर्क राशि हो स्त्रीनिर्जित स्त्रियों से जीता हुआ या स्त्रियों के वशीभूत, स्थूल गले वाला और मित्रवान् होता है । ऐसे जातक के स्वयं के कई मकान होते हैं और धनाढ्य होता है। उसकी कमर मोटी होती है किन्तु कद ऊँचा नहीं होता । ऐसा जातक बुद्धिमान् और जलविहार का शौकीन होता है। वह शीघ्र चलने वाला होता है। उसके पुत्र थोड़े
होते हैं।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुविशालवक्त्रोऽभिमानी सपराक्रमः स्यात्।
कुप्यत्यकार्ये वनशैलगामी मातुविषेयः स्थिरधीमृगेन्द्र।।

सिंह राशि में किसी जातक का जन्म हो तो पीले नेत्र, मोटो ठोढ़ी, बड़े चेहरे वाला। ऐसे व्यक्ति अभिमानी, पराक्रमी, स्थिर बुद्धि वाले और अपनी माता के विशेष प्यारे होते हैं। ऐसे जातक वनों में और पहाड़ों में भ्रमण करने के शौकीन होते हैं। सिंह लग्न या सिंह राशि वाले जातक छोटी-सी बात पर जिस में क्रोध नहीं करना चाहिये उसमें भी, क्रोध करते हैं ।।

स्रस्तांसबाहुः परवित्तगेहैः संपूज्यते सत्यरतः प्रियोक्तिः।
ब्रीडालसाक्षः सुरतप्रियः स्या- च्छास्त्रार्थविच्चाल्पसुतोऽङ्गनायाम्।।

यदि जन्म के समय कन्या लग्न हो या चन्द्रमा कन्या राशि में हो तो जातक सत्य में रत सत्य का पालन करने वाला, प्रिय वचन बोलने वाला होता है । ऐसे व्यक्ति के नेत्रों में लज्जा रहती है और सुरत प्रिय होता है। कन्या राशि के जातक शास्त्रों को जानने वाले विद्वान् होते हैं। दूसरे के द्रव्य और दूसरों के मकान का लाभ उठाते हैं। इनके कन्धे और बाहु ढीले होते हैं और पुत्र सन्तति भी थोड़ी होती है।

चलत्कृशाङ्गोऽल्पसुतोऽतिभक्तो देवद्विजानामटनो द्विनामा।
प्रांशुश्च वक्षः क्रयविक्रयेषु धीरोऽदयस्तौलिनि मध्यवाबी।।

यदि जन्म के समय तुला राशि हो तो देवताओं और ब्राह्मणों का भक्त किन्तु चंचल और कृश शरीर वाला होता है। ऐसा व्यक्ति लम्बा, खरीद फरोख्त में होशियार, धैर्यवान्, इन्साफ पसन्द होता हैं, ऐसे आदमी को अन्य लोग पंच मुकर्रर करते हैं। तुला राशि के जातकों के प्रायः दो नाम होते हैं। सन्तान थोड़ी होती है और जातक घूमने का शौकीन होता है। ऐसे व्यक्तियों का भाग्योदय विलम्ब से होता है।

वृत्तोरुजङ्घः पृथुनेत्रवक्षा रोगी शिशुत्वे गुरुतातहीनः।
क्रूरक्रियो राजकुलाभिमुख्यः कोटेऽब्ज रेखाङ्कितपाणिपादः।।

यदि जन्म के समय वृश्चिक राशि हो तो छाती और नेत्र विशाल होते हैं। जांघ और पिडलियाँ गोल होती हैं। हाथ पैर में पद्म रेखा होती है। ऐसे जातक बचपन में बीमार रहते हैं और उन्हें पिता तथा गुरु का सुख पूर्ण नहीं होता। ऐसे व्यक्ति क्रूर क्रिया करने वाले और राजकुल में बहुत ऊँची पदवी धारण करने वाले अर्थात् उच्चाधिकारी होते हैं।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः।।

जिनका जन्म धनु राशि में हुआ हो उनकी नाक, कान, चेहरे और कण्ठ बड़े होते है। ऐसे व्यक्ति किसी न किसी कार्य में लगे रहते हैं अर्थात् निठल्ले नहीं बैठते । बोलने में बहुत प्रगल्भ और त्यागी होते हैं। इनका कद बहुत ऊचा नहीं होता। या.कुछ झुक कर चलते हैं । ये लोग साहसी होते हैं और अपने शत्रुओं को पछाड़ देते हैं। ये लोग बलाढ्य और राजा के प्यारे भी होते हैं। ऐसे व्यक्ति को समझा कर ही अपने वश में किया जा सकता है। उनसे कोई काम कराना हो तो वश करने के जो चार साधन हैं उनमें से केवल **"साम"** से, उनसे कार्य कराया जा सकता है।

अधः कृशः सत्त्वयुतो गृहीत- वाक्योऽलसोऽगम्यज राङ्गनेष्टः।
धर्मध्वजो भाग्ययुतोऽटनश्च वातादितो नक्रभवो विलज्जः॥

जिनका जन्म मकर राशि में हुआ हो उनके शरीर के नीचे का भाग अर्थात् (कमर से पैर तक) कृश होता है । किन्तु ऐसे व्यक्ति में सत्व (शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शक्ति) काफी होती है। ऐसे व्यक्ति दूसरों की बात मानते हैं किन्तु स्वभाव से आलसी होते हैं। ऐसे व्यवितयों का सम्बन्ध किसी अधिक वयवाली अगम्या स्त्री से होता है । ऐसा व्यक्ति धर्मध्वज होता है अर्थात् उसका बाहरी आवरण बहुत घार्मिकता का होता है। वह घूमने का शौकीन और भाग्यवान् किन्तु लज्जाहीन होता है। मकर-चन्द्र के जातक वात रोग से पीड़ित होते हैं। ॥

प्रच्छन्नपापो घटतुल्यदेहो विघातदक्षोऽध्वसहोऽल्पवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धियुक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः॥

कुंभ राशि में जन्म लेने वाले जातकों फल बताते हैं। ऐसे व्यक्ति छिपकर पाप करने बाले, थोड़े द्रव्य वाले, लोभी, दूसरे के घन के इच्छुक, मार्ग चलने का परिश्रम सहन करने वाले और दूसरों को चोट पहुंचाने में दक्ष होते हैं। इनका शरीर भी घड़े के आकार का होता है। पुष्पों के और सुगन्धित द्रव्यों के ये शौकीन होते हैं। कभी यह क्षय को प्राप्त होते हैं और कभी वृद्धि को अर्थात् इनकी आर्थिक स्थिति में उतार बढ़ाव आता रहता है ।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता ।
विद्वान्कृतज्ञोऽभिभवत्यमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोऽन्त्यराशौ ॥

जिनकी मीन राशि होती है उनके शरीर के अंग बराबर जितने बड़े होने चाहिए उतने और सुन्दर होते हैं। ऐसे व्यक्ति की दृष्टि बहुत सुन्दर होती है। ये लोग विद्वान्, कृतज्ञ, अपनी स्त्री में सन्तुष्ट रहने वाले अर्थात् अन्य स्त्री प्रसंग है रहित, भाग्यवान् होते हैं। जल से उत्पन्न पदार्थों द्वारा इन्हें धन प्राप्त होता है। आजकल के समय में समुद्र पार से आने जाने वाले पदायों को भी हम लोग जल से उत्पन्न या सम्बन्धित मान सकते हैं। ऐसे जातक अपने अमित्रों (शत्रुओं) को परास्त कर उन पर विजय प्राप्त करते हैं ।

2.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने अध्ययन के पश्चात् यह जाना होगा की नक्षत्रों की गणना किस प्रकार से की जाती है। तथा नक्षत्रों के चरणाक्षरो की गणना किस प्रकार से की जाती है,व उनको किस

प्रकार से राशियों में विभक्त किया जाता है, तथा किस राशि में कितने चरणाक्षर होते है। नक्षत्राणां समूहः 'राशिः' कथ्यते। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु मकर, कुम्भ, मीन ये बारह राशियों है। राशियों के भी विभिन्न स्वभाव, शील, गुण व धर्म माने गए है,

जिनका विचार फलादेश में आवश्यक है। ये बारह राशियाँ आकाश में दीर्घ वृत्ताकार मार्ग या क्रान्तिवृत्त या सूर्य के भ्रमण मार्ग पर स्थित है। उसी प्रकार से राशियों के बल,तत्व,धातु,रंग-रूप दिशाओं का ज्ञान इस इकाई के माध्यम से समझने में सफल हो सके होंगें।

बोध प्रश्न-

1. नक्षत्रों की संख्या है।

क. 28 ख. 27 ग . 26 घ. 29

2. एक नक्षत्र में कितने चरण होते है।

क. 4 ख. 3 ग. 5 घ . 2

3. नक्षत्रों का गणना क्रम किस नक्षत्र से होता है।

क. रेवती से ख . कृतिका से ग. अश्विनी से घ. मूल से

4. राशियों की संख्या है।

क.11, ख.10, ग. 8, घ. 12

5. मेष, सिंह, धनु राशियाँ कौन से तत्व की है।

क. अग्नि तत्व, ख. पृथ्वी तत्व, ग. वायु तत्व, घ. जल तत्व

6. मिथुन, कन्या , धनु, मीन ये राशियाँ कौन सी संज्ञक है।

क. धातु ख. मूल ग. जीव

7. वृष, कन्या और मकर इन राशियों की दिशा है।

क. दक्षिण दिशा, ख. पूर्व दिशा ग. उत्तर दिशा घ. पश्चिम

2.6 सहायक पाठ्य सामग्री

जातक पारिजात

जातक पद्धति

फलित संग्रह

ज्योतिष सर्वस्व

फलदीपिका

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहज्जातकम् - चौखम्भा प्रकाशन

वृहत्पराशरहोराशास्त्र - चौखम्भा प्रकाशन

ज्योतिष सर्वस्व – चौखम्भा प्रकाशन

चमत्कार चिंतामणि- चौखम्भा प्रकाशन
भावप्रकाश - चौखम्भा प्रकाशन
सरावली- चौखम्भा प्रकाशन
मानसागरी-चौखम्भा प्रकाशन

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख, 2. क, 3. ग, 4. घ, 5. क 6. ग 7. क

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. नक्षत्र विवेचन पर निबन्ध लिखिये।
2. द्वादश राशियों के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
3. ग्रहों की विभिन्न अवस्थाओ का विस्तृत वर्णन करें।
4. राशियों के वास स्थान, भेद, द्रव्यों का वर्णन करें।

इकाई – 3 ग्रह स्वरूप

इकाई की संरचना –

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 ग्रह स्वरूप

3.4 ग्रहों का फलादेश सम्बन्धी विवेचन

3.5 सारांश

3.6 सहायक पाठ्य सामग्री

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAJY(N) – 221 प्रथम खण्ड के तृतीय इकाई **'ग्रह स्वरूप'** नामक शीर्षक से है। ग्रह कहा किसे जाता है, इस बात का उत्तर इससे दिया जा सकता है, गच्छतीति ग्रहः अर्थात् जो चलता है, जिसमें गति है उसे ग्रह कहते है। सूर्य या किसी अन्य तारे के चारों ओर परिक्रमा करने वाले खगोल पिण्डों को ग्रह कहते हैं। भारतीय वैदिक वांग्मय के अनुसार अनुसार ग्रहों की संख्या नौ बताई गयी है, जो क्रमशः सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शुक्र, मंगल, गुरु, शनि, राहु और केतु है। इस इकाई में आप ग्रहों की विभिन्न स्थितियाँ-परिस्थितियाँ , उनके स्वरूप व शुभाशुभत्व के बारे में सरल रूप से समझ सकेंगें।

3.2 उद्देश्य

- ग्रहों के शुभाशुभत्व के समझ सकेंगें।
- ग्रहों के स्वरूप को सरल रूप में जान पाएंगें।
- ग्रहों के फलादेश से सम्बंधित बातों को समझ सकेंगें।
- ग्रहों के सिद्धांतों को समझने में सहायक रहेंगे ।

3.3 ग्रह परिचय व स्वरूप

सूर्यादि ग्रहों के पर्यायवाची-

हेलिः सूर्यस्तपनदिनकृद्भानुपूषारुणार्काः
सोमः शीतद्युतिरुडुपतिग्लौर्मृगाङ्केन्दुचन्द्राः ।
आरो वक्रक्षितिजरुधिराङ्गारकक्कूरनेत्राः
सौम्यस्तारातनयबुधविद्बोधनाश्चेन्दुपुत्रः॥
मन्त्री वाचस्पतिगुरुसुराचार्यदेवेज्यजीवाः,
शुक्रः काव्यः सितभृगुसुताच्छास्फुजिद्दानवेज्याः ।
छायासूनुस्तरणितनयः कोणशन्यार्किमन्दाः,
राहुः सर्पासुरफणितमः सैंहिकेयागवश्च ॥
ध्वजः शिखी केतुरिति प्रसिद्धा वदन्ति तज्ज्ञा गुलिकश्च मान्दिः ॥

सूर्य- हेलि, सूर्य, तपन, दिनकृत्, भानु, पूषा, अरुण और अर्क ।
चन्द्रमा- सोम, शीतद्युति, ग्लौ, मृगाङ्क, इन्दु और चन्द्र ।
भौम - मंगल, आर, वक्र, क्षितिज, रुधिर, अङ्गारक और क्रूरनेत्र ।
बुध- सौम्य, तारातनय, बुध, विद्, बोधन और इन्दुपुत्र ।
बृहस्पति- मन्त्री, वाचस्पति, गुरु, सुराचार्य, देवेज्य और जीव ।
शुक्र- काव्य, सित, भृगुसुत, आच्छ, आस्फुजित् और दानवेज्य ।

शनि- छायासूनु, तरणितनय, कोण, आर्कि और मन्द।

राहु- सर्प, असुर, फणि, तम, सैहिकेय और अगु।

केतु- ध्वज, शिखि और केतु।

गुलिक को मान्दी भी कहते हैं॥

सूर्यादि नवग्रहों के स्वरूप-

सूर्य-

पित्तास्थिसारोऽल्पकचश्च रक्तश्यामाकृतिः स्यान्मधुपिङ्गलाक्षः।
कौसुम्भवासाश्चतुरस्रदेहः शूरः प्रचण्डः पृथुबाहुरर्कः॥

सूर्य की पित्त प्रकृति होती है, इसकी अस्थियाँ (हड्डियाँ) दृढ़ होती हैं, थोड़े केश (सिर के बाल) होंगे। इसकी आकृति रक्त-श्याम (कुछ स्याही लिये हुए लाल) होती है। इसके नेत्र की पुतलियाँ शहद की तरह कुछ भूरापन और ललाई लिये हुए; इसकी आकृति चौकोर है; इसकी भुजायें विशाल हैं; यह लाल वस्त्र धारण किये हुए है; स्वभाव से सूर्य शूर और प्रचण्ड है।

चन्द्रमा-

स्थूलो युवा च स्थविरः कृशः तितः कान्तेक्षणश्चासितसूक्ष्ममूर्धजः।
रवतैकसारो मृदुवाक् सितांश को गौरः शशी वातकफात्मको मृदुः॥

चन्द्रमा का स्थूल (बड़ा) शरीर है। वह युवावस्था का भी है और प्रौढ़ावस्था का भी है; उसका शरीर सफेद और कमजोर' है; उसके सिर के केश सूक्ष्म और काले हैं; उसके नेत्र बहुत सुन्दर हैं; उसके शरीर में रक्त की प्रधानता है; अर्थात् शरीर रक्त-प्रवाह पः चन्द्रमा का नाधिपत्य है। चन्द्रमा की वाणी मृदु है और गौर वर्ण वाला सफ़ेद वस्त्र पहनने वाला है। यह मृदु (मुलायम) है- शरीर से भी, स्वभाव से भी। त्रिदोषों में कफ और वात पर इसका विशेष अधिकार है अर्थात् चन्द्रमा अपनी अन्तर्दशा में वात रोग या कफ रोग या वातकफात्मक रोग उत्पन्न करेगा।

मंगल-

मध्ये कृशः कुञ्चितदीप्तकेशः क्रूरेक्षणः पैत्तिक उग्रबुद्धिः।
रक्ताम्बरो रक्ततनुर्महीजश्चण्डोऽत्युदारस्तरुणोऽतिमज्जः॥

मंगल मध्य में कृश है अर्थात् उसकी पतली कमर है; इसके सिर के केश घुंघराले और चमकीले हैं; इसकी दृष्टि में क्रूरता है और स्वभाव से भी उग्र बुद्धि है। यह पित्त प्रधान है। लाल वस्त्र धारण किये हुए और इसके शरीर का भी वर्ण लाल ही है। यह स्वभाव से प्रचण्ड है किन्तु अति उदार है; शरीर के मज्जा भाग पर इसका विशेष अधिकार है (इसका आशय यह हुआ कि जिसकी जन्मकुण्डली में मंगल बलवान् है उसके शरीर की मज्जा बलवान् होगी; जिसका मंगल निर्बल है उसकी मज्जा निर्बल होगी) मंगल तरुण अवस्था का है

बुध-

दूर्वालताश्यामतनुस्त्रिधातुमिश्रः सिरावान्मधुरोक्तियुक्तः ।
रक्तायताक्षो हरितांशुकस्त्वक्सारो बुधो हास्यरुचिः समाङ्गः ।।

अब बुध का स्वरूप तथा प्रकृति बतलाते हैं। बुध के शरीर की कान्ति नवीन दूब के समान है। इसमें वात, पित्त, कफ, त्रिदोषों का सम्मिश्रण है। इसका आशय यह है कि जन्मकुण्डली में बुध यदि पीड़ित हो तो अपनी दशा-अन्तर्दशा में वायु से उत्पन्न, कफ से उत्पन्न तथा पित्त से उत्पन्न तीनों प्रकार के रोग उत्पन्न कर सकता है। यह नसों से युक्त हैं शरीर में जो स्नायु मंडल है-जिसे अंग्रेजी में नर्वस सिस्टम कहते हैं उसका अधिष्ठाता बुध है। यदि बुध पीड़ित होतो नर्वस सिस्टम में खराबी होगी। बुध स्वभाव से मधुर वाणी बोलने वाला होता है। इसके शरीर के अंग बराबर हैं अर्थात् सुडौल हैं। जो जितना बड़ा होना चाहिये वह अंग वैसा ही है। बुध मज़ाकपसंद है। जिन स्त्रियों या पुरुषों की कुण्डलियों में बुध चन्द्रमा से युक्त होता है वे मज़ाकपसंद होते हैं। कोई-न-कोई तमसखुर की बात बोलते रहते हैं। जिस प्रकार मंगल में मज्जा प्रधान है इसी प्रकार बुध त्वचा प्रधान है। त्वचा शरीर के सबसे ऊपर की जिल्द (खाल) को कहते हैं। बुघ अच्छा होने से त्वचा अच्छी होगी, बुध पापाक्रान्त होने से त्वचा के रोग होंगे। बुध के नेत्र लंबाई लिये हैं और वह हरे वस्त्र धारण करता है। ॥

गुरु-

पीतद्युतिः पिङ्गरुचेक्षणः स्यात् पीनोझतोराश्च बृहच्छरीरः ।
कफात्मकः श्रेष्ठमतिः सुरेडधः सिंहाग्जनावश्च वसुप्रधानः ॥

बृहस्पति का पीला वर्ण है किन्तु नेत्र और सिर के बाल कुछ भूरापन लिये हुए हैं। इसकी छाती पुष्ट और ऊंची है और बड़ा शरीर है। यह कफ प्रधान है। वैद्यक शास्त्र में कफ प्रकृति वालों में जो लक्षण बताये गये हैं, वे उस व्यक्ति में घटित होंगे जिसकी कुण्डली में बलवान् बृहस्पति लग्न में होगा या बलवान् होकर नवाँश का स्वामी है। बृहस्पति बलवान् होने से मनुष्य बहुत बुद्धिमान् होता है; बुध से भी बुद्धि देखी जाती है और बृहस्पति से भी। तब दोनों से ही बुद्धि का विचार किया जावे तो तारतम्य क्या होगा ? बुध से किसी बात को शीघ्र समझ लेना, किसी विषय का

शीघ्र ही हृदयंगम हो जाने आदि का विचार करना चाहिये। किन्तु बृहस्पति से विचार करने की शक्ति दृढ़ होती है। श्रेष्ठ मति होना बृहस्पति का लक्षण है। इसीलिये इसे देवताओं का गुरु कहा गया है। बृहस्पति की वाणी शेर या शंख की भांति गम्भीर है। यह धन प्रधान ग्रह है अर्थात् घन कारक है। बृहस्पति यदि कुण्डली में अच्छा होगा तो मनुष्य घनी होगा। गोचर में जब बृहस्पति अनकूल होगा तो धन दिलावेगा। जन्मस्थ बृहस्पति जब पापाक्रान्त हो अर्थात् पाप ग्रहों से पीड़ित हो तब धन नाश होगा।

शुक्र-

चित्राम्बराकुञ्चितकृष्णकेशः स्थूलाङ्गबेहश्च कफानिलात्मा ।
दूर्वाङकुराभः कमनो विशालनेत्रो भृगुः साधितशुक्लवृद्धिः ॥

शुक्र का स्वरूप और लक्षण बताते हैं - रंग-बिरंगे कपड़े पहने हुए है; काले घुघराले केश हैं; शरीर और अवयव स्थूल हैं; कफ और बात की प्रधानता है; दूव के अंकुर की भांति उज्ज्वल शरीर है (बुध के लिये दूर्बालता कहा क्योंकि वह अधिक गहरे हरे रंग की होती है। शुक्र के लिये दूर्वा का अंकुर कहा क्योंकि यह सफेदी लिये हुए उज्ज्वल होता है।) शुक्र देखने में बहुत सुन्दर है इसका अर्थ यह है कि जिसके लग्न में बलवान् शुक्र हो या जन्मकुण्डली में शुक्र के प्रभाव की अधिकता हो वह देखने में बहुत सुन्दर होता है। इसके विशाल नेत्र हैं; और वीर्य पर इसका विशेष आधिपत्य है। वीर्य को शुक्र कहते हैं इसका कारण यही है कि वीर्य का स्वामी शुक्र है। अष्टम में शुक्र होने से प्रायः वीर्य रोग होते हैं ॥

शनि-

पङ्गुनिम्नविलोचनः कृशतनुर्वीर्घः सिरालोऽलसः
कृष्णाङ्गः पवनात्मकोऽतिपिश नः स्नाथ्यात्मको निघृणः।
मूर्खः स्थूलनखद्विजः परुषरोमाङ्गोऽश चिस्तामसो
रौद्रः क्रोधपरो जरापरिणतः कृष्णाम्बरो भास्करः ॥

शनि का स्वरूप बताते हैं:- यह लंगड़ा है। शनि द्वादश में होने से या शनि का विशेष प्रभाव होने से पैर में विकार होता है, इसकी आँखें गढ़ेदार हैं। संस्कृत में निम्नविलोचन के दो अर्थ हैं। दूसरा अर्थ ये हुआ कि जिसकी नज़र नीचे की तरफ हो। शरीर दीर्घ किन्तु कृश है। नसें बहुत हैं । स्वभाव से आलसी है, शरीर का रंग काला है। बात (वायु) की प्रधानता है; स्वभाव से कठोर हृदय और चुगलखोर है। मूर्ख है, इसके दांत और नाखून स्थूल (मोटे) हैं; इसके शरीर के अवयव बऔर रोम कठोर हैं। अपवित्र है; भयानक देखने में और स्वभाव से क्रोषी है। काले वस्त्र पहने हुए है; वृद्ध अवस्था है। इसमें तमोगुण के विशेष लक्षण पाये जाते हैं ॥

राहु-

नीलद्युतिर्दीर्घतनुः कुवर्णः पामी सपाषण्डमतः सहिवकः।
असत्यवादी कपटी च राहुः कुष्ठी परान्निन्दति बुद्धिहीनः॥

राहु के स्वरूप का परिचय देते हैं- राहु का दीर्घ शरीर है, नीला रंग है, इसकी म्लेच्छ जाति, शरीर में खुजली या चर्म रोग है यह अधार्मिक, पाखण्डमति है। इसको हिचकियां आती हैं, झूठ बोलता है। कपटी है, कोढ़ी है, बुद्धिहीन है और दूसरों की निन्दा करता है।

केतु-

रक्तोग्रदृष्टिवषवागुदग्रदेहः सशस्त्रः पतितश्च केतुः।
धूम्रद्युतिर्घमप एव नित्यं व्रणाङ्किताङ्गश्च कृशो नृशंसः॥

केतु के स्वरूप का परिचय देते हैं- केतु की आंखें लाल और उग्र हैं, उसकी वाणी में विष है, ऊंचा शरीर, शस्त्र धारण किये है, घुयें का-सा उसके शरीर का रंग है और सदैव धूम्रपान, (सिगरेट

पीना) आदि करता रहता है। उसके शरीर में व्रणों (घावों) के निशान हैं। शरीर से कृश है परन्तु स्वभाव से क्रूर और अत्याचार करने वाला है। यह जाति से भी पतित है।

सारावली ग्रन्थ के अनुसार ग्रहों का स्वरूप -

सूर्य का स्वरूप और गुण

स्वल्पाकुञ्चितमूर्धजः पटुमतिर्मुख्यस्वरूपस्वनो,
नात्युच्चो मधुपिङ्गचारुनयनः शूरः प्रचण्डः स्थिरः ।
रक्तश्यामतनुनिगूढचरणः पित्तास्थिसारो महान्
गम्भीरश्चतुरस्रकः पृथुकरः कौसुम्भवामा रविः॥

थोड़े घुंघराले केश (बाल), सुन्दरबुद्धि व रूप, गम्भीर वाणी, अत्यन्त ऊंचा नहीं, सहत के समान लाल नेत्र, शूर प्रतापी, स्थिर, (चञ्चल नहीं), लाल और कृष्ण वर्ण शरीर, छिपे हुए पैर, पित्त स्वभाव, हड्डियों में तागत (बल), बड़ा, गम्भीर, चौलूंटा (लम्बाई चौड़ाई सम), विशाल किरण, केसर के रङ्गमदृश बस्त्र बाला सूर्य है ॥

चन्द्रमा का स्वरूप-

सौम्यः कान्तविलोचनो मधुरवाग्गौरः कृयाङ्गो युवा
प्रांशुः सूक्ष्मनिकुञ्चितायितकचः प्राज्ञो मृदुः सात्त्विकः।
चारुर्वातकफात्मकः प्रियसखो रक्तकसारो घृणी
वृद्धस्त्रीषु रतश्चलोऽतिसुभगः शुभ्राम्बरश्चन्द्रमाः॥

शान्त, शोभायमान नेत्र, मीठा बोलने वाला, सफेद वर्ण, कृश शरीर, जवान, उन्नत, छोटे काले घुघराले बाल, विद्वान्, मृदु स्वभाव, सत्त्वगुण से युक्त, मुन्दर, वात और कफ प्रकृति, मित्रों से प्रेम करने वाला, खून में बल, घृणा करने वाला, बुड्ढी (बूढ़ी) स्त्रियों में आसक्त, चञ्चल, अत्यन्त सुन्दर, सफेद वस्त्र वाला चन्द्र है।

मङ्गल का स्वरूप -

ह्रस्वः पिङ्गललोचनो दृढवपुर्दीप्ताग्निकान्तिश्चलो
मज्जावानरुणाम्बरः पटुपरः शूरश्च निष्पन्नवाक् ।
ह्रस्वाकुञ्चितदीप्त केशतरुणः पित्तात्मकस्तामस-
श्चण्डः साहसिकोऽपि घातकुशलः संरक्तगौरः कुजः॥

लघु कद, पिङ्गल आँख, मजबूत शरीर, जली हुई अग्नि के समान कान्ति, चञ्चल, चर्बी में बल, लाल वस्त्र, चतुर, शूर, सिद्ध वचन, छोटे घुंघराले चमकदार बाल, जवान, पित्त प्रकृति,

तमोगुणी, पराक्रमी, साहसी, मारने में निपुण, लालिमा से युक्त सफेद वर्ण वाला भौम है।

बुध का स्वरूप -

रक्तान्तायतलोचनो मधुरवाग्द्वर्वादलश्यामल-
स्त्वक्सारोऽतिरजोधिकः स्फुटवचाः स्फीतस्त्रिदोषात्मकः ।
हृष्टो मध्यमरूपवान्सुनिपुणो वृत्तः शिराभिस्ततः
सर्वस्थानुकरोति वेषवचनैः पालाशवासा बुधः ॥

लाल विशाल नेत्र, मीठी वाणी, घास (दूब) के समान कृष्ण, त्वचा (खाल) में बल, अत्यन्त रजोगुणी, स्पष्ट वचन, स्वच्छ, त्रिदोषात्मक (कफ, पित्त, वात) प्रकृति, प्रसन्नात्मा,मध्यम स्वरूप, चतुर, गोलाकृति, नसों से व्याप्त, अपने वेष व वाणी से सबका अनुसरण करने वाला एवं हरे वस्त्र बाला बुध है।

गुरु का स्वरूप-

ईषत्पिङ्गललोचनश्रुतिधरः सिंहाच्छनादः
स्थिरः सत्त्वात्यः सुविशुद्धकाञ्चनवपुः पीनोन्नतोरस्थलः।
ह्रस्वो धर्मरतो विनोतनिपुणो बुद्धोत्कटाक्षः
क्षमी स्यात्पोताम्बरधुक्क 'फात्मकतनुर्मेदः प्रधानो गुरुः।।

थोड़े पीत नेत्र व कर्ण, सिंह के समान गम्भीर शब्द, स्थिर, सतोगुणी (सत्वगुण से युक्त), तपे हुए सोने के समान शरीर वर्ण, मोटी व ऊँची छाती, लघु, धर्म में तत्पर, नम्रता में चतुर, स्थिर उत्कृष्ट दृष्टि, क्षमावान्, पीला वस्त्र, कफ प्रकृति, चर्बी में बल- बाला गुरु है।

शुक्र का स्वरूप-

चारुर्दीर्घभुजः पृथूरुवदनः शुक्राधिकः कान्तिमान्
कृष्णाकुञ्चितसूक्ष्मल म्बिचिकुरो दूर्वादलश्यामलः ।
कामी वातकफात्मकोऽतिसुभगश्चित्राम्बरो राजसो
लीलावान्मतिमान्विशालनयनः स्थूलांसदेशः सितः ॥

मनोहर स्वरूप, लम्बे हाथ, विशाल वक्षस्थल व मुख, वीर्यकी अधिकता, चेष्टावान्, काले घुघराले पतले लम्बे बाल, दूब के समान श्यामल वर्ण, कामी, वात व कफ प्रकृति, अत्यन्त सौभाग्य से युक्त, अनेक रंग का वस्त्र, रजोगुणी, केलिकुशल, बुद्धिमान्, विशाल, नेत्र, मोटे कन्धों वाला शुक्र है।

शनि का स्वरूप-

पिङ्गो निम्नविलोचनः कृशतनुर्दीर्घः सिरालोऽलसः
कृष्णाङ्गः पवनात्मकोऽतपिशुनः स्नाय्वाततो निघृणः ।

मूर्खः स्थूलनखद्विजोऽतिमलिनो रूक्षोऽशुचिस्तामसो
रौद्र क्रोधपरो जरापरिणतः कृष्णाम्बरो भास्करिः ॥

कपिल, गहरे नेत्र, पतला लम्बा शरीर, नसों से युक्त, आलसी, काला वर्ण, वात प्रकृति, अत्यन्त चुगल खार, स्नायु (खाल) में बल, निर्दयी, मूर्ख, मोटे नाखून और दाँत, अत्यन्त मलिन वेश, चेष्टाहीन, अपवित्र, तामस प्रकृति, भयावह, क्रोधी, वृद्ध (बूढ़ा), काले वस्त्र वाला शनि है।

3.4 ग्रहों का फलादेश सम्बन्धी विवेचन

ग्रहों को चार प्रकार का बल प्राप्त होता है जो निन्मलिखित है-

दिक्स्थानकालचेष्टाकृतं बलं सर्वनिर्णयविधाने ।
वक्ष्ये चतुःप्रकारं ग्रहस्तु रिक्तो भवेदबलः ।।

समस्त शुभाशुभ फल निर्णय हेतु ग्रहों के दिक् , स्थान, काल, चेष्टा इन ४ प्रकार के बलों को यहाँ दिया जा रहा है । इन चारों बलों से हीन ग्रह निर्बल होता है

1 दिग्बल -

लग्ने जीवबुधौ दिवाकरकुजौ व्योम्नि स्मरे भास्करि-
बैन्धाविन्दुसितो दिशाकृतमिदं

जन्मलग्न में गुरु और बुध, दशम में सूर्य व भौम, सप्तम में शनि एवं चतुर्थ भाव में चन्द्र व शुक्र बली होते हैं। इसे दिग्बल कहते हैं।

विशेष - दिग्बल में लग्न को पूर्व, दशम को दक्षिण, सप्तम को पश्चिम और चतुर्थ को उत्तर दिशा समझना चाहिए,

2 स्थानबल-

स्वोच्चे स्वकोणे स्वभे,
मित्रस्वांशकसंस्थितः शुभफलैर्दृष्टो बलीयान्ग्रहः
स्त्रोक्षेत्रे शशिभागंवौ नरगृहे शेषा बले स्थानजे ॥

जो ग्रह अपनी उच्च राशि में स्थित हो वा मूलत्रिकोण में वा अपनी राशि में वा मित्रगृह राशि में वा अपनी नवांश राशि में स्थित हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो बलवान् होता है। सम राशि में चन्द्रमा व शुक्र एवं शेष ग्रह विषम में बली होते हैं। इसे स्थान बल कहते है ।।

3 काल बल -

जीबार्काब्जितोऽह्नि विच्च सततं मन्देन्दुभौमा निशि
होरामासदिनाब्दपाश्च बलिनः सौम्याः सितेऽन्येऽसिते ।

गुरु, सूर्य, शुक्र दिन में काल बल प्राप्त होता है, बुध दिन व रात्रि में दोनू समय काल बल तथा, शनि, चन्द्रमा, भौम को रात्रि में काल बल प्राप्त होता हैं। होरा में होरेश, मास में मासेश, दिन में दिनपति, वर्ष में वर्षेश बली होता है। शुक्लपक्ष में शुभ ग्रह, कृष्णपक्ष में पापग्रह बली होते हैं, इसे काल बल कहते हैं।

4- चेष्टावल-

संग्रामे जयिनो विलोमगतयः संपूर्णगावो ग्रहाः
सूर्येन्दू पुनरुत्तरेण बलिनौ सत्योक्तचेष्टाबले ।।

जो ग्रह युद्ध में विजयी हो, जो ग्रह वक्रगति हो, जिन ग्रहों की पूर्ण रूप से उदित हों किरण सम्पूर्ण हों वे ग्रह बली होते हैं। रवि और चन्द्रमा उत्तरायण में बली होते हैं। इसी प्रकार के बल को चेष्टाबल बल कहा गया है ।।

ग्रहों का आयन बल

उत्तरमयनं प्राप्ताः शुकुकुजार्केन्द्रमन्त्रिणो बलिनः ।
याम्यं शशिरविपुत्रौ द्वयेऽपि शशिजः स्ववर्गस्थः ॥

शुक्र, मंगल, गुरु, रवि को उत्तर अयन बल होता है, दक्षिणायन में प्राप्त चन्द्र, शनि बली होते हैं। बुध अपने वर्ग में हो तो दोनों अयन में बली होता ।।

ग्रहों का द्रेष्काण बल-

पुंस्त्रीनपुंसकाख्याः क्षेत्रेष्वाद्यन्तमध्यसंप्राप्ताः।
सूर्यान्निर्गत्य सदा नवोदिता यवनराजमतम् ।।

पुरुष ग्रह (मं० गु० सू०) किसी भी राशि के प्रथम द्रेष्काण (१० अं० तक) में स्त्री ग्रह (चं० शु०) तृतीय द्रेष्काण में, नपुंसक ग्रह (श० बु०) द्वितीय द्रेष्काण में बली होते हैं। सूर्य के सांनिध्य अर्थात् कोई भी ग्रह अस्त ना हों तभी ग्रह बली होते हैं ।

ग्रहों का दिन रात्रि त्रिभाग बल-

प्राग्रात्रिभागेऽतिबलः शशाङ्कः शुक्रो निशाधेऽवनिजो निशान्ते।
प्रातर्बुधो मध्यदिने च सूर्यः सर्वत्र जीवोऽर्कसुतो दिनान्ते ॥

रात्रि के प्रथम तीसरे भाग में चन्द्र को , मध्य रात्रि में शुक्र को , अन्तिम त्रिभाग में मंगल को बल प्राप्त होता है। एवं दिन के प्रथम त्रिभाग में बुध, द्वितीय में सूर्य, तृतीय भाग में शनि और गुरु सर्वदा बली होता है ।।

ग्रहों का नैसर्गिक बल-

कृष्णारबुधगुरुसिताः शशिसूर्यावुत्तरोत्तरं बलिनः ।

स्वाभाविकबलमेतद्बलसाम्ये चिन्तयेत्प्राज्ञः ॥

शनि (कृष्ण) भौम, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र, सूर्य ये क्रम से उत्तरोत्तर बली होते हैं। अर्थात् शनि से भौम, भौम से बुध.बुध से इत्यादि । यह स्वाभाविक बल है। यदि अन्य बलों में समता हो तो जिसका स्वाभाविक बल अधिक हो वह बलवान् होता है।

ग्रहों की दीप्तादि ८ प्रकार की अवस्थायें-

दीप्तः स्वस्थो मुदितः शान्तः शक्तो निपीडितो भीतः ।
विकलः खलश्च कथितो नवप्रकारो ग्रहो हरिणा ॥

१ दीप्त, २ स्वस्थ, ३ मुदित, ४ शान्त, ५ शक्त, ६ निपीडित, ७ भीत, ८ बिकल ९ खल ये ९ प्रकार की ग्रहों की अवस्था होती हैं।

दीप्तादि अवस्थाओं के फल -

स्वोच्चे भवति च दीप्तः स्वस्थः स्वगृहे सुहृद्गृहे मुदितः ।
शान्तः शुभवर्गस्थः शक्तः स्फुटकिरणजालश्च ।।
विकलो रविलुप्तकरो ग्रहाभिभूतो निपीडितश्चैवम् ।
पापगणस्थश्च खलो नोचे भोतः समाख्यातः ॥

ग्रह अपनी उच्च राशि में हो तो दीप्त, अपनी राशि में हो तो स्वस्थ, मित्र की राशि में हो तो मुदित, शुभग्रह के वर्ग में हो तो शान्त, अनस्तङ्गत ग्रह हो तो शक्त, सूर्य की किरणों से अस्त ग्रह की विकल अवस्था , युद्ध में पराजित ग्रह की निपीडित अवस्था , पापग्रह के वर्ग में ग्रह हो तो खल और अपनी नीच राशि में ग्रह हो तो भीत अवस्था प्राप्त करता है ।।

1. दीप्त ग्रह का फल

दीप्ते विचरति पुरुषः प्रतापविषमाग्निदग्धरिपुवर्गः ।
लक्ष्म्यालिङ्गितदेहो गजमदसंसिक्तभूपृष्ठः ।।

जब कोई ग्रह दीप्त अवस्था में हो तो वह मनुष्य अपने पराक्रम के बल पर शत्रु वर्ग को परास्तकरने में पूर्ण रूप से सक्षम होता है। तथा धन वैभव सम्पदा से युक्त होता है, अर्थात् समस्त सम्पत्ति सुख प्राप्त होता है। एवं उसके हाथियों के मद से पृथ्वी का ऊपरी भाग भीग जाता है, अर्थात् उसकी ख्याति दूर-दूर तक प्रसिद्ध होती है ।।

2. स्वस्थ अवस्था का फल-

स्वस्थः करोति जन्मनि रत्नानि सुखानि कनकपरिवारान् ।
नृपतेर्दण्डपतित्वं गृहधान्यकुटुम्बपरिवृद्धिम् ।।

ग्रह जब स्वस्थ अवस्था में स्थित होता है तो जातक अनेक सुवर्ण के आभूषणों से युक्त , रत्नादि विविध प्रकार के सुख-सुविधाओ से युक्त , और राज्य में न्यायाधीशादि अधिकार व घर में धान्य एवं कुटुम्ब वृद्धि करता है ॥

3. मुदित अवस्था का फल-

मुदिते विलसति मुदितो विलासिनीकनकरत्नपरिपूर्णः ।
विजितसकलारिपक्षः समस्तसुखभाङ् नरो भवति ॥

यदि कोई ग्रह मुदित अवस्था में हो तो प्रसन्न चित्त होकर भोग -बिलास करने वाला होता है। तथा स्त्री सुवर्ण रत्न से पूर्ण, समस्त शत्रु पक्ष को जीतने वाला, समस्त सुखों का भोग करने वाला मनुष्य होता है ॥

4. शान्त अवस्था का फल-

शान्ते प्रशान्तचित्तः सुखधनभागी महीपतेः सचिवः ।
विद्वान्परोपकारी धर्मपरो जायते पुरुषः ॥

यदि शान्त अवस्था में ग्रह हो तो चित्त में अधिक शान्ति, सुख व घन का प्राप्त कर्त्ता, राजा का मन्त्री, मनीषी, दूसरे का उपकार करने वाला, धर्मपरायण एवं भाग्यवान् होता है ॥

5. शक्त अवस्था का फल-

स्त्रीवस्त्रमाल्यगन्धैर्विलसति पुरुषः सदा विततकीतिः ।
दयितः सर्वजनस्य च शक्ताख्ये भवति विख्यातः ॥

यदि शक्त अवस्था में ग्रह हो तो जातक स्त्रो, वस्त्र, माला, सुगन्धित द्रव्यों से आनन्दित होता है, उसकी कीति सदा विस्तृत होती है, और समस्त जनों का प्रिय (प्यारा) व संसार में ख्याति प्राप्त होती है ॥

6. पीड़ित अवस्था का फल-

दुःखैर्व्याधिभिररिभिः प्रपीड्यते पीडिताख्ये तु ।
देशाद्देशं विचरति बन्धुवियोगाभिसंतप्तः ॥

यदि पीड़ित अवस्था में ग्रह हो तो जातक नाना प्रकार के दुःखों से रोगों से शत्रुओं से पीड़ित होता है और बन्धुओं के वियोग से दुःखी (संतप्त) होकर देश देशान्तर में विचरण करता है ॥

7. भीत अवस्था का फल-

बहुसाधनोऽपि राजा प्रध्वस्तबलः प्रपीडितो रिपुणा ।

नाशमुपयाति विजितो भीते दैन्यं परं प्राप्तः ॥

यदि भीत अवस्था में ग्रह हो तो बहुत साधनों से युक्त राजा भी शत्रुओं से पीड़ा प्राप्त कर निर्बल और पराजित होकर नाश को प्राप्त होता है या परम दीनता को प्राप्त करता है ॥

8. विकल अवस्था का फल-

स्वस्थानपरिभ्रष्टः क्लिष्टो मलिनः प्रयाति परदेशम् ।
विध्वस्तबलो विकले रिपुबलसंचकितचित्तश्च ॥

यदि विकल अवस्था में ग्रह हो तो शत्रु बल से चकित चित्त होकर अपने स्थान से पृथक् होता है और क्लेश होने से मलीन चित्त करके दूसरे देश में जाता है, तथा उसका बल, अथवा धन नष्ट हो जाता हैं ।

9. खल अवस्था का फल-

स्त्रीभरण दुखतप्तः समस्तधननाशकलुषितमनस्कः ।
न जहाति शोकभारं कथमपि खलसंज्ञिते पुरुषः ॥

यदि खल अवस्था में ग्रह हो तो जातक - स्त्री-पुत्रादि पालन में समर्थ न होकर उनके दुःख से दुःखी, सम्पूर्ण धन नाश से कलुषित मनवाला कभी भी अन्तःकरण में शोक रूपी भार का त्याग नहीं करता है ॥

ग्रहों के नैसगिक नित्र, शत्रु, सम ग्रह-

मित्राणि सूर्याद्गुरुभौमचन्द्राः सूर्येन्दुपुत्रो रविचन्द्रजीवाः ।
भानुः सशुक्रः शशिसूर्यभौमा मन्देन्दुजौ शुक्रबुधौ क्रमेण ॥
शुकार्की चन्द्रमसो न कश्चित्तौम्यः शी शुक्रमुचो रवीन्दू ।
सोमाकंवका रवितस्त्वमित्रा मित्रारिशेषो न सुहुन्न शत्रुः ॥

नैसर्गिक मित्र, शत्रु, सम चक्र

ग्रह	**सूर्य**	**चन्द्र**	**मंगल**	**बुध**	**गुरु**	**शुक्र**	**शनि**
मित्र	च.मं.गु.	सू. बु.	सू.च.गु.	सू.शु.	सू.च.मं.	शु.बु.	शु.बु.
सम	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.	मं.गु.	गु.
शत्रु	शु.श.		बु.	च.	शु.बु.	सू.च.	सू.च.मं.

ग्रहों की पूर्ण दृष्टि-

पूर्ण पश्यति रविजस्तृतायदशमं त्रिकोणमपि जीवः ।

चतुरस्रं भूमिसुतो द्यूनं च सितार्कशशिबुधाः क्रमशः ॥

प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते है इसके अलावा कुछ ग्रहों की विशेष दृष्टि भी होती है, जैसे शनि की ३-१० पर , गुरु की ५-९ पर , भौम की ४-८ पर अपने स्थान से पूर्ण रूप से देखते है ॥

ग्रहों की एकपाद, द्विपाद व त्रिपाद दृष्टि-

संपश्यन्ति स्थानात्सदा ग्रहाश्चरणवृद्धितः सर्वे।
त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमानां फलं क्रमेणैव ॥

समस्त ग्रह जिन स्थानों में रहते हैं उन-उन स्थानों से ३, १० स्थानों को एक पाद दृष्टि से तथा ५-९ को द्विपाद दृष्टि से, ४-८ को त्रिपाद दृष्टि से देखते हैं,

ग्रहों के रत्न

माणिक्यं दिननायकस्य विमलं मुक्ताफलं शीतगोः,
माहेयस्य च विद्रुमं मरकतं सौम्यस्य गारुत्मकम्।
देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्यस्य वज्रं शनेः,
नीलं निर्मलमन्ययोश्च गदिते गोमेदवैदूर्यके ॥

ग्रह	रत्न (हिन्दी नाम)	अंग्रेजी नाम
सूर्य	माणिक्य	Rubi
चन्द्रमा	मोती	Pearl
मंगल	मूँगा	Coral
बुध	पन्ना	Emerald
बृहस्पति	पुखराज	Topaz
शुक्र	हीरा	Diamond
शनि	नीलम	Sapphire
राहु	गोमेद	Agate
केतु	वैदूर्य	lapislazuli/turkois

ग्रहों के वस्त्र-

स्थूलाम्बरं नूतनचारुचेलं कृशानुतोयाहतमध्यमानि।
दृढांशुकं जीर्णमिनादिकानां वस्त्राणि सर्वे मुनयो वदन्ति ॥

सूर्य का मोटा वस्त्र, चन्द्रमा का नूतन सुन्दर वस्त्र, भौम का जला हुआ वस्त्र, बुध का जल से क्षत वस्त्र, बृहस्पति का सामान्य वस्त्र, शुक्र का दृढ और शनि का जीर्ण वस्त्र है ॥

दिशा और ऋतुओं के स्वामी

प्रागादिका भानुसिताराहुमन्देन्दुविद्देवपुरोहिताः स्युः।

पूर्वादि दिशाओं के स्वामी क्रमशः सूर्य पूर्व दिशा में, शुक्र अग्निकोण में, भौम दक्षिण दिशा में, राहु नैऋत्य कोण में, शनि पश्चिम दिशा में, चन्द्रमा वायव्य कोण में, बुध उत्तर में और बृहस्पति ईशान कोण में इन ग्रहों का निवास होता है।

शुक्रारचन्द्रज्ञसुरेज्यमन्दा वसन्तमुख्यत्र्वधिपा दृगाणैः ॥

शुक्र वसन्तऋतु का स्वमी, भौम ग्रीष्मऋतु का स्वामी, चन्द्रमा वर्षाऋतु का स्वामी, बुध शरदऋतु का स्वामी, बृहस्पति हेमन्तऋतु का स्वामीऔर शनि शिशिरऋतु के क्रमशः स्वामी हैं।

ग्रहों के वासस्थान-

देवतोयतटवह्निविहाराः कोशगेहशयनोत्करदेशाः ।
भानुपूर्वनिलयाः परिकल्प्या वेश्मकोणनिलयावहिकेतू ॥

सूर्य का देवालय में, चन्द्रमा का जलाशय में, मंगल का अग्निस्थान में, बुध का विहारस्थल में, गुरु का कोशागार में, शुक्र का शयनकक्ष में और शनि का उत्करदेश अर्थात् ऊसर भूमि भूमि में राहु का वेश्मकोण अर्थात्(घर का कोना) और केतु का निलय (गोपनीय) स्थान में ग्रहों का वासस्थान होता हैं ॥

ग्रहों के प्रदेश-

लङ्कादिकृष्णासरिदन्तमारः सितस्ततो गौतमिकान्तभूमिः ।
विन्ध्यान्तमार्यः सुरनिम्नगान्तं बुधः शनिः स्यात्तुहिनाचलान्तः ॥

लंका से कृष्णा नदी तक का भाग मंगल ग्रह का, कृष्णा नदी से गौतमी नदी तक का भाग शुक्र ग्रह का, गौतमी नदी से विन्ध्य तक का भाग बृहस्पति ग्रह का, विन्ध्य पर्वत से गङ्गा नदी तक का भाग बुध ग्रह का तथा गंगा नदी से हिमालय तक का भाग शनि ग्रह का माना गया है ॥

विशेष-

देवस्थान हिमालय से उत्तर भाग में सुमेरु पर्वतश्रृङ्ग तक देवताओं का प्रदेश सूर्य का भाग और समुद्र चन्द्रमा का प्रदेश होता है ।

ग्रहों के गुण -

आदित्यामरमन्त्रिशीतकिरणाः सत्त्वप्रधानग्रहाः
शुक्रज्ञौ सरजोगुणौ शनिधरापुत्रौ तमः स्वामिनौ ॥

ग्रहों में गुणों की बात की जाय तो सूर्य, बृहस्पति और चन्द्रमा सतोगुणी या सत्त्वगुण प्रधान ग्रह है। शुक्र और बुध रजोगुण सम्पन्न हैं तथा शनि और भौम तमोगुणी ग्रह हैं ॥

ग्रहों के राजत्वादि-

दिनेशचन्दौ राजानौ सचिवौ जीवभार्गवौ ।

कुमारो वित् कुजो नेता प्रेष्यस्तपननन्दनः ॥

सूर्य और चन्द्रमा राजा है, बृहस्पति और शुक्र मन्त्री, बुध राजकुमार, भौम सेनापति और शनि सेवक है ॥

सूर्यादि ग्रहों के उपग्रह

उपग्रहा भानुमुखग्रहांशाः कालादयः कष्टफलप्रदाः स्युः ॥
क्रमशः कालपरिधिधूमार्द्धप्रहराह्वयाः ।
यमकण्टककोदण्डमान्दिपातोपकेतवः ॥

सूर्यादि ग्रहों के कुछ भाग काल आदि उपग्रह के नाम से प्रसिद्ध हैं- १. सूर्य का उपग्रह- काल, २. चन्द्रमा का उपग्रह- परिधि, ३. मंगल का उपग्रह -धूम, ४. बुध का उपग्रह -अर्धप्रहर, ५. गुरु का उपग्रह -यमकण्टक, ६. शुक्र का उपग्रह- कोदण्ड, ७. शनि का उपग्रह -मान्दि, ८. राहु का उपग्रह -पात और ९. केतु का उपग्रह -उपकेतु- ये क्रमशः ग्रहों के उपग्रह हैं। ये अनिष्ट फलकारक होते हैं ॥

3.5 सारांश

इस इकाई के द्वारा आप यह जान पाए होंगे कि नव ग्रहों का स्वरूप किस प्रकार का होता है, जैसे सूर्य का स्वरूप इसके नेत्र की पुतलियाँ शहद की तरह कुछ भूरापन और ललाई लिये हुए; इसकी आकृति चौकोर है; इसकी भुजायें विशाल हैं; यह लाल वस्त्र धारण किये हुए है; स्वभाव से सूर्य शूर और प्रचण्ड है ॥ उसी प्रकार से अन्य ग्रहों का भी आपने इस इकाई के माध्यम से स्वरूप का वर्णन पड़ा होगा, साथ ही अन्य ग्रन्थ के आधार पर भी ग्रहों के स्वरूप को आप जान पाए होंगे। और इस इकाई के द्वारा आप यह भी सरल रूप से जानने में सक्षम हो सके होंगे कि ग्रहों की कितने प्रकार की अवस्थाएँ होती है, व इनका क्या फल होता है। तथा ग्रहों के वस्त्र कौन से होते हैं,उनके कौन-कौन से प्रदेश हैं, ग्रहों के रत्नों के बारे में जानने में सफल हो सके होंगे, इस इकाई के अध्ययन के बाद आपने यह जाना होगा कि फलादेश के किन-किन बातों का ज्ञान होना परमआवश्यक है।

बोध प्रश्न –

सूर्य का उपग्रह क्या है।

1. क. परिधि ख. काल, ग. कोदण्ड, घ. पात

2. बुध का निवास स्थान है।

क. विहारस्थल, ख. देवालय, ग. कोशागार. घ. शयनकक्ष

3. ग्रहों की दीप्तादि अवस्थायें हैं।

क. 5, ख. 6, ग. 8, घ. 7

4. चन्द्रमा किस ऋतु का स्वामी है।

क. ग्रीष्मऋतु, ख. शिशिरऋतु, ग. हेमन्तऋतु , घ. वर्षाऋतु

5. ग्रहों की एक पाद दृष्टि होती है।

क. ३, १० स्थानों पर ख. 5, 9 स्थानों पर ग. 4, 8 स्थानों पर घ. 7वे स्थान पर

6. बुध का पर्यायवाची नही है।

क. सौम्य, ख. तारातनय, ग. बोधन, घ. वाचस्पति

7. गुरु और बुध को लग्न में कौन सा बल प्राप्त होता है।

क. कालबल, ख. चेष्टाबल, ग. दिग्बल, घ. स्थानबल,

3.6 सहायक पाठ्य सामग्री

जातक पारिजात
जातक पद्धति
फलित संग्रह
ज्योतिष सर्वस्व
फलदीपिका

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहज्जातकम् - चौखम्भा प्रकाशन
वृहत्पराशरहोराशास्त्र - चौखम्भा प्रकाशन
ज्योतिष सर्वस्व – चौखम्भा प्रकाशन
चमत्कार चिंतामणि- चौखम्भा प्रकाशन
भावप्रकाश - चौखम्भा प्रकाशन
सरावली- चौखम्भा प्रकाशन
मानसागरी- चौखम्भा प्रकाशन

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख, 2. क, 3. ग, 4. ख, 5. क, 6. घ. 7. ग

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. ग्रहों के स्वरूप का विस्तृत वर्णन कीजिए।
2. ग्रहों के बल व मित्रामित्र का वर्णन करें।
3. ग्रहों की अवस्थाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

इकाई - 4 भावों की विविध संज्ञायें एवं फलादेश निर्णय

इकाई की संरचना –

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 भावों की विविध संज्ञायें
4.4 फलादेश सम्बन्धी विवेचन
4.5 सारांश
4.6 सहायक पाठ्य सामग्री
4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAJY(N) – 221 प्रथम खण्ड के चतुर्थ इकाई भावों की विविध संज्ञायें एवं फलादेश निर्णय नामक शीर्षक है। इस इकाई में आप द्वादश भावों से सम्बन्धित विचारणीय विषय के बारे में जान पायेंगें। द्वादश भाव से किन-किन बातों का विचार किया जाता है, द्वादश भावों की क्या संज्ञा होती है, इन सभी चीजों का अध्ययन आप इस इकाई के माध्यम से कर सकेंगे।

4.2 उद्देश्य

- ❖ द्वादश भाव क्या है, इसे समझ सकेंगे।
- ❖ द्वादश भावों को किन-किन नामों से जाना जाता है इसे जान पायेंगे।
- ❖ द्वादश भावों के विचारणीय तथ्य क्या है, इसे सरलता से समझ सकेंगे।
- ❖ फलादेश में क्या-क्या विचारणीय है,इसे समझ सकेंगे।

4.3 भावों की विविध संज्ञायें

द्वादश भावों के नाम –

आचार्य वराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ में द्वादश भावों के नामो का उल्लेख करते हुये कहा है –

होरादयस्तानुकुटुम्बसहोत्थबन्धु ,
पुत्रारिपत्निमरणानि शुभासपदय शुभास्पदाया:
रि: फाख्यमित्युपचयान्यरिकर्मलाभ,
दुश्चिक्यसंज्ञितगृहाणि न नित्यमेके

जन्म कुण्डली में द्वादश भावों को निम्न नामों से जाना जाता है,जैसे –लग्न को तनु भाव, द्वितीय भाव को कुटुम्ब, तृतीय को सहोत्थ, चतुर्थ को सहज, पंचम को बन्धु, षष्ठ को अरि, सप्तम को पत्नी,अष्टम को मरण,नवम को शुभ, दशम को कर्म, एकादश को लाभ, और द्वादश को हानि आदि भावों से जाना जाता है

लग्नादि १२ भावों के नाम ।

तन्वर्थसहजबान्धवपुत्रारिस्त्रीविनाशपुण्यानि
कर्मायव्ययभावा लग्नाद्या भावर्ताश्चन्त्या:।।

१ तनु, २ अर्थ, ३ सहज, ४ बान्धव, ५ पुत्र, ६ अरि, ७ स्त्री, ८ विनाश, ९ पुण्य, १० कर्म, ११ आय, १२ व्यय, ये लग्नादि १२ भावों के नाम हैं।

भावों की केन्द्रादि संज्ञाएँ

मेषूरणोदयकलत्ररसातलानि स्युः केन्द्रकण्टकचतुष्टयसंज्ञितानि।
लग्नात्त्रिकोणभवनं नवपञ्चमं च स्यात्त्रित्रिकोणमुदयान्नवमं वदन्ति॥

दशम, लग्न, सप्तम और चतुर्थ भावों को केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय कहते हैं।
लग्न से नवम और पंचम भावों को त्रिकोण कहते हैं। लग्न से नवें भाव को त्रित्रिकोण भी कहते हैं।

तनुसुखमदनाज्ञा राशयः केन्द्रसंज्ञाः पणफरभवनानि स्वायपुत्राष्टमानि।
व्ययरिपुगुरुदुश्चिक्यानि चापोक्लिमानि प्रभवति चतुरस्रं मृत्युबन्धुद्वयं च॥

लग्न, चतुर्थ, दशम और सप्तम भावों को केन्द्र कहते हैं। द्वितीय, पंचम, अष्टम और एकादश भावों को पणफर, तीसरे, छठे, नवें और बारहवें भाव को आपोक्लिम कहते हैं। चतुर्थ और अष्टम भावों को चतुरस्र कहते हैं।

द्वादश भावों के विचारणीय विषय-

प्रथम भाव से-

लग्नं होरा कल्यदेहोदयाख्यं रूपं शीर्ष वर्तमानं च जन्म ।

(१) लग्न, होरा, कल्य (प्रभात, सूर्योदय अर्थात् प्रारंभ) देह, उदय (प्रारंभ होना), रूप, सिर, वर्तमान काल , जन्म इन सब का विचार पहले भाव से किया जाता है। इसके अलावा भी शरीर, सुख- दुःख, कीर्ति, नम्रता, ज्ञान,जन्म- स्थान, स्वप्न, बल, गौरव, राज्य, स्वभाव, आयु, शांति, अवस्था, स्वाभिमान, व्यक्तित्व, चोट, निशान, अपमान, त्वचा, वर्ण, आदि का विचार प्रथम भाव या लग्न से किया जाता है

द्वितीय भाव से-

वित्तं विद्या स्वान्नपानानि भुक्ति दक्षाभ्यास्यं पत्रिका वाक्कुटुम्बम् ।।

(२) घन, विद्या, अपनी वस्तु, घन पर अधिकार, खाना पीना, भोजन, दाहिना नेत्र, चेहरा, पत्रिका, वाणी, कुटम्ब यह इन सब का विचार द्वितीय भाव से इसके अतिरिक्त धन, बचत,आँख, मुख, विद्या, भाषण प्रखरता, वाचालता, भोजन का स्वाद, क्रय-विक्रय, दान, नाक, आस्तिकता, परिवार का उत्तरदायित्व, चातुर्यता, संगीत, विनयशीलता, वैराग्य, बदनामी, यात्राएँ, आदि का विचार किया जाता है

तृतीय भाव से-

दुश्चिक्योरो दक्षकर्णं च सेनां धैर्य शोर्य विक्रमं भ्रातरं च

(३) दाहिना कान, सेना, हिम्मत, वीरता, शक्ति तथा भाई (बहिनों) का विचार तृतीय भाव से, इसके अलावा भी पराक्रम, पुरुषार्थ, परिश्रम, भाई, कान, भुजा, टांग, स्वप्न, नौकर ,मन की बेचेनी, यात्रा, गुण,अभिरुचियाँ, कुल का स्तर, सहयोगी, वाहन, मित्र, आदि का विचार किया जाता है इसको दुश्चिक्य स्थान भी कहते हैं।

चतुर्थ भाव से-

गेहूं क्षेत्रं मातुलं भागिनेयं बन्धुं मित्रं वाहनं मातरं च ॥
राज्यं गोमहिषसुगन्धवस्त्रभूषाः पातालं हिबुकसुखाम्बुसेतुनद्यः ।

(४) घर, खेत, मामा, भाञ्जा, बन्धु, मित्र, सवारी, मां, गाय-भैंस, सुगन्धि, वस्त्र, जोवर, तथा सुख का विचार चौथे घर से करें। इसी घर हसे पानी, नदी, पुल, आदि का विचार करना चाहिये। तथा सुख, सम्पति, वाहन, माता भूमि, भवन, जमीन-जायजात, प्रसिद्धि,बन्धु –बांधव, श्वसुर, पिता का व्यवसाय, हृदय, यश, मान –सम्मान, जन –सम्पर्क, गृह त्याग, झूठे आरोप प्रत्यारोप ,माता का स्वास्थ,आदि का विचार चौथे भाव से किया जाता है।

पंचम भाव से-

राजाङ्क सचिवकरात्मधीभविध्यज्ज्ञानासून् सुतजठरश्रुतिस्मृतीश्च ॥

(५) राजशासन की मोहर, मंत्री, कर (टैक्स), आत्मा, बुद्धि, भविष्य ज्ञान, प्राण, सन्तान, पेट, श्रुति (वेद) स्मृति का विचार पंचम से करे। श्रुति-स्मृति से तात्पर्य है शास्त्र ज्ञान का, विद्या, तांत्रिक क्रियाएँ, संतान सुख, प्रेम-प्रसंग, रहस्य, प्रबंध कार्यो में कुशलता, गर्भ, पेट, पदोन्नति, तार्किक समता, बौद्धिक क्षमता, शिल्प, कला कौशल, नम्रता, लेखन शैली आदि का विचार किया जाता है अतः समस्त शास्त्र ज्ञान का विचार पंचम स्थान से करना चाहिये।

षष्ठ भाव से-

ऋणास्त्रचोरक्षतरोगशत्रून् ज्ञात्याजिदुष्कृत्यघभीत्यवज्ञाः ।

(६) कर्ज, अस्त्र, चोर, घाव (चोट), रोग, शत्रु, जाति ,भाई बन्धु जो शत्रुता का भाव रखते हों, युद्ध, दुष्ट कर्म, पाप, भय, अपमान, मामा, पागलपन, विषपान, अंग-भंग, नाभि, कमर, मूत्ररोग, निन्दा, चोरी, विपत्ति, भिक्षावृत्ति, पागलपन, फोड़े-फुंसी, आदि का विचार छठे भाव से किया जाता है।

सप्तम भाव से-

जामित्रचित्तोत्थमवास्तकामान् धूनाध्वलोकान् पतिमार्गभार्याः ॥

(७) हृदय की इच्छाएँ (काम वासना), अद, मार्ग, लोक, पति, पत्नी, दाम्पत्य सुख, व्यविचार, काम शक्ति, वीर्य, साझेदारी, पवित्रता, गुप्तांग,दत्तक पुत्र, बाबा का विचार, अन्य स्त्री से उत्पन्न पुत्रादि, दैनिक आय,रास्ता भटकना, पौष्टिक भोजन, का विचार सप्तम भाव से करना चाहिये।

अष्टम भाव से-

माङ्गल्यरन्ध्रमलिनाधिपराभवायुः क्लेशापवादमरणाशुचिविघ्नदासान्।

(८) मांगल्य (स्त्री का सौभाग्य - पति का जीवित रहना), रंध्र (छिद्र), आधि, मानसिक बीमारी-चिन्ता, अपमान या हार, आयु, क्लेश, बदनामी, मृत्यु, विघ्न, अशुचि (अपवित्रता) दास, मृत्यु का कारण, गडा धन, वैराग्य, कष्ट झगडा, मुसीबत, गुप्तरोग, पत्नी का शाररिक कष्ट,राजकोप,पाप, शल्यचिकित्सा,जीवन रक्षा, मरणोपरांत, चोरी कि आदत, सूदखोरी, आलस्य, गुदा का विचार, बवासीर का रोग आदि का विचार अष्टम भाव से किया जाता है।

नवम प्रथम भाव से-

आचार्यदेवतपितृन् शुभपूर्वभाग्य- पूजातपःसुकृतपौत्र जपार्यवंशान्॥

(९) आचार्य (गुरु), देवता (आराध्य देव), पिता, पूजा, तप, सत्कर्म, पौत्र, उत्तम वंश, दान,धर्म, दया, त्याग, बलिदान, तपस्या, गुरुभक्ति, ऐश्वर्य, राज्याभिषेक, पैतृकधन, चिकित्सा आदि का विचार नवम भाव से किया जाता है

दशम प्रथम भाव से-

व्यापारास्पद मानकर्मजयसत्कोतिं क्रतु' जीवनं
व्योमाचारगुणप्रवृत्तिगमनान्याज्ञां च मेषूरणम्।

(१०) व्यापार उच्च स्थान पोजीशन इज्जत, कर्म, जय, या, यज्ञ, जीविका का उपाय, कार्य में अभिरुचि, आचार सदाचार या दुराचार) गमन, हुकमत, गुण, आकाश, मान - सम्मान ,प्रतिष्ठा, राजपद, राज्यप्राप्ति, यश, कार्य- विस्तार, रोजगार ,वायुमार्ग कि यात्रा, घुटना, प्रशासन, कृषि, संन्यास, आकाश, कार्यविस्तार, ख्याति, गौरव, नियंत्रण तथा पिता का विचार दशम भाव से किया जाता है, इसे 'मेषूरण' या आज्ञा स्थान भी कहते हैं।

एकादश भाव से-

लाभायागमनाप्तिसिद्धि विभवान् प्राप्ति भवं श्लाध्यतां
ज्येष्ठभ्रातरमन्यकर्णसरसान् सन्तोषमाकर्णनम्॥

(११) लाभ, आमदनी, प्राप्ति, आगमन, सिद्धि, वैभव (धन, ऐश्वर्य) कल्याण, श्लाध्यता-प्रशंसा, बड़ा भाई या बड़ी बहन, बायाँ कान, सरसता, अच्छी खबर, लाभ, आमदनी, विद्द्या, वाहन,माता कि आयु का, गुलामी, धन के श्रोतो का, निपुणता, पदवी, सब प्रकार कि उपलब्धि का,

आभूषण, पैतृक धन, पराधीनता, मालिक का धन, समाज में प्रतिष्ठा व जंघा आदि का विचार एकादश भाव से किया जाता है।

द्वादश प्रथम भाव से-

दुःखांघ्रिवामनयनक्षयसूचकान्त्य- दारिद्र्यपापशयनव्ययरिःफबन्धान्।

(१२) दुःख, पैर, वायाँ नेत्र, ह्रास, चुगलखोर, अन्त (किसी का आख़िरी परिणाम), दरिद्रता, पाप, शयन (पलंग पर शयन करना- इसके अतिरिक्त पुरुष स्त्री गुप्त संबंध भी समझना चाहिये), खर्चा, बन्धन (जेल जाना), धन का व्यय, नीद, मानसिक स्थिति, पैर, आँख, बन्धन, दूरदेश कि यात्रा, विदेश यात्रा, ऋणग्रस्थता, वैवाहिक जीवन का सुख, अपयश, दुराचरण, गुप्त शत्रु, हानियाँ, ऋण से मुक्ति, मानसिक बेचेनी, किसी अंग का भंग होना आदि का विचार बारहवें भाव से किया जाता है।

4.4 फलादेश सम्बन्धी विवेचन

अधिकार-प्राप्ति

स्वाभाविक शुभ-अशुभ ग्रह, शुभ-अशुभ भावेश होकर, शुभ-अशुभ फल देने के अधिकारी होते हैं। इसी अधिकार के कारण शुभ या अशुभ ग्रह (परिस्थिति वश अपने स्वभाव से विपरीत फल देने वाले बन जाते हैं। ग्रह तो अपने स्वभाव, प्रकृति या तत्त्व के अनुसार सदैव रहते ही हैं। किन्तु भावेश-विधान के कारण विपरीत (अनुकूल या प्रतिकूल) फल देने लगते हैं।

भावेश-विधान

(१) त्रिकोण के स्वामी शुभ हों या पाप, सर्वदा शुभ ही फल देते हैं।

(२) केन्द्र के स्वामी पाप हो तो शुभफल। शुभयद्द हो तो अशुभ फल देते हैं। पाराशरी मत से केन्द्रेश पापग्रह तभी शुभफल देगा, जब वह त्रिकोणेश भी हो।

(३) लग्न से अधिक चतुर्थेश, चतुर्थेश से अधिक सप्तमेशः सप्तमेश से अधिक दशमेश, फल (शुभ या अशुभ। करने में बलवान् होता है।

(४) पंचम से अधिक बलवान नवम भाव माना गया है। (परमार्थ)

(५) लग्न या लग्नेश की शुभता पर अनेक दोष दूर होते हैं। (बलवत्ता)

(६) द्वितीय-द्वादश (द्विर्दादश) भाव के स्वामियों को अस्थिर अधिकार रहते हैं। जिसमें तीन बार्तों का ध्यान रखना पड़ता है- (क्योंकि यह दोनों भाव नपुंसक संक्षक हैं)

क- द्विदिशेश किस भाव (शुभाशुभ) में हैं।

ख - द्विदिशेश किस मह (शुभाशुम) के साथ में हैं।

ग- द्विदूदिशेश जिस राशि में बैठे हैं। बस राशि का स्वामी किस भाव (शुभाशुभ) में हैं।

(७) अष्टमेश शुभग्रह हो तो शुभ फल; अशुभ ग्रह हो तो अशुभ फल देना, एक साधारण नियम है। परन्तु यदि सूर्य-चन्द्र अष्टमेश हो या लग्नेश-अष्टमेश एक ही मह हो (यथा मङ्गल-शुक) अथवा अष्टमेश स्वमही हो तो शुभफल देता है। अन्यथा अष्टमेश शुभ हो या पाप, सदैव अशुभ फलदायक ही माना गया है; क्योंकि अष्टम भाव क्रूर संज्ञक है। व्यय भाव मध्यम । पष्ठ भाव पाप संज्ञक माना गया है। अष्टम भाव ऐसा ही है जैसे कोई बधिक, एक बकरे को पालता और नष्ट करता है। अतएव अष्टम भावेश पालनकर्ता पर्व संहारकर्ता दोनों ही माना गया है।

(८) तृतीय, षष्ठ, एकादश भाव के स्वामी, अशुभ फल देते हैं। प्रायः इनकी दशाएँ तो निश्चित रीति से अशुभफलकारक होती हैं। तृतीयभाव द्वारा परिश्रम अधिक कराना, षष्ठभाव द्वारा बाधक होना, लाभभाव द्वारा शरीरकष्ट मिलना-अशुभ फल होते हैं। तीसरे से अधिक पष्ठ, षष्ठ से अधिक लाभ भाव का स्वामी पापफल (अशुभ) करते हैं।

(९) केन्द्रेश के शुभफल का परिणाम, परिश्रम के बाद ही हो पाता है। किन्तु लग्नेश एवं त्रिकोणेश का शुभफल बिना परिश्रम (सरलता) होता रहता है।

(१०) त्रिकेश, त्रिक भाव में ही हों तो शुभफल, अन्यथा त्रिकेश, जिस भाव में बैठते हैं। उस भाव की हानि होती है। तथा जिस भाव का स्वामी, त्रिक भाव में बैठता है तो भी उसी भाव की हानि होती है।

त्रिकेश विचार-

कोई ग्रह, कोई राशि, कोई भाव, ऐसा न मिला, जिसके बिना, रोग-विचार किया जा सके-अर्थात् सभी ग्रह, सभी राशि, सभी भाव - सबसे पहिले, स्वस्थ शरीर पर (शुभ) या अस्वस्थ (अशुभ) प्रभाव डालते हैं। यही कारण है कि, न्यूनाधिकता से सभी रोगी हैं। परन्तु प्रायः रोगी त्रिकेश के कारण ही हो पाते हैं। अन्य कारणों के रोगी, अपने-अपने घर में, प्रकृति द्वारा स्वस्थ होते रहते हैं; अथवा स्वल्पकाल के लिए या साधारण ढंग के रोगी- अल्पकष्टमात्र पाने के लिए, यम-सहोद्र (डाक्टर आदि) यम-मन्दिर (जेल आदि बन्धन स्थान) के दर्शन-सुख के सौभाग्य-शाली (दुर्भाग्य-भोगी) होते हैं।

(१) षष्ठ, अष्टम, द्वादश भाव को त्रिक कहा गया है। इनके स्वामी, जिन भावों में बैठे या जिन भावों के स्वामी, त्रिक में बैठें तो उस-उस माब फल में न्यूनता होती है।

(२) त्रिकेश, जिस भाव में हों, यदि उस (त्रिकेशस्थ) भाव का स्वामी, त्रिक में हो तो उस भाष की अधिक हानि होती है। (जिसमें त्रिकेश बैठा होता है)

(३) त्रिकेश, त्रिकस्थ हो अथवा स्वगृही होकर त्रिकस्थ हो तो अशुभ न होकर प्रायः उन्नति-शील (शुभ) फल होते हैं। अथवा त्रिकेश, त्रिकस्थ तो हों, किन्तु इनके साथ अन्य कोई ग्रह न हो, स्वगृद्दी हो या अन्यत्रिक भाबों में हों, प्रायः कम ही अशुभ फल होता है। प्रायः शब्द हमने इसलिए उपयोग किया कि, सूर्य- चन्द्र को छोद, अन्य कोई ग्रह, जब त्रिक का स्वामी होता है, तब

साथ ही किसी दूसरे भाव भी स्वामी होता है अतएव ऐसी स्थिति में कभी कुछ अशुभ फल भी दे सकता है।

(४) त्रिकेश, त्रिकस्थ न होकर, अन्य भाव में हो, स्वगृही भी न हो, किन्तु त्रिकेश-स्थित भावेश ही यदि स्वगृही हो तो चिरस्थायी अशुभफल नहीं होता।

(५) त्रिकेश, त्रिकस्थ न होकर, अन्य भाव में हो, और यदि त्रिकेश स्थित राशि का स्वामी, त्रिकस्थ न होकर, त्रिकेश-स्थित भाव पर दृष्टि डालता हो तो स्थायी अशुभ फल नहीं हो पाता। यथा, कुम्भ लग्न में जन्म हो और शनि-चन्द्र तृतीयस्थ हो, मंगल नवम भाव में हो तो ऐसी स्थिति में त्रिकेश का स्थायी अशुभ फल न होगा।

(६) मंगल-शुक-शनि को त्रिकेश दोष कम ही होता है। यथा मेष-वृश्चिक लग्न में मंगल को, वृष-तुला लग्न में शुक को (लग्नेश होने के कारण), मिथुन-कन्या लग्न में शनि को (त्रिकोणेश) होने के कारण, त्रिकेश दोष की क्षीणता मानी गयी है।

(७) जब त्रिकेश-स्थित राशीश अथवा त्रिकेश के साथ बैठने वाले, जितने मह, जितने भाव, उनकी दृष्टि या युति में आ जाते हैं, उन सबों पर त्रिकेश का दोष-स्पर्श होता ही है।

भाव-फल-विधान

(१) त्रिकेश को छोड़कर, किसी भाव का स्वामी लग्न से, केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो, तो उस भाव के लिए शुभफल होता है,

(२) जिस भाव का स्वामी, अपने भाव से, केन्द्र त्रिकोण में स्थित हो तो शुभफल। त्रिक में हो तो अशुभफल। २, ३, ११ वें भाव में हो तो मध्यम फल देता है।

विशेष-

पूर्वोक्त दोनों नियमों से जब शुभता आती है तब अधिक शुभफल तथा दोनों से अशुभता होने पर अधिक अशुभ फल होता है। सारांश यह है कि, किसी भाव का स्वामी (त्रिकेश को छोड़कर) लग्न से तथा अपने भाव से केन्द्र त्रिकोण में जाने पर शुभफल विशेष देता है। इसी प्रकार लग्न एवं अपने भाव से त्रिक में 'जाने पर अशुभफल विशेष देता है। यथा- पंचमेश-नवमेश, पंचम या नवम में हों तो लग्न से या अपने भाव से केन्द्र-त्रिकोण में ही रहकर शुभफल विशेष देंगे, तथैव लाभेश, पष्ठ भाव में जाने पर, लग्न से षष्ठ एवं लाभ से अष्टम (त्रिकस्थ) होने से अशुभफल विशेष देगा।

(३) जिस भाव का स्वामी स्वगृही या उच्च का हो अथवा उच्च, स्वगृही, मूलत्रिकोणी, मित्रगृही ग्रह के साथ हो तो उस भाव का शुभफल होता है, जिस भाव का स्वामी हो। यथा-सप्तमेश सप्तम में या सप्तमेश शुक, मीन राशि में अथवा सप्तमेश- अन्य किसी उच्चादि स्थित ग्रह के साथ हो तो सप्तम भाव का शुभफल होता है।

(४) लाभ भाव तो शुभ माना गया है, किन्तु लाभेश अशुभ (शरीरकष्टकारक, अपनी दशान्तर्दशा में) होता है। अतएव सब किसी भाव के स्वामी, लाभ भाव में जाने से शुभफल देते हैं। इसी प्रकार उपचय (३।६। १०।११) भाव में, सभी पाप या क्रूरग्रह, शुभफल दायक होते हैं।

(५) यदि कोई भावेश, पापग्रह होकर, तृतीय में हो तो शुभफल, तथैव शुभमह हो तो मध्यमफल होता है।

(६) जिस भाव में शुभमह हो, उस भाव का शुभफल। जिस भाव में पापमह हो, उस भाव का अशुभफल होता है यह एक साधारण नियम है।

(७) त्रिक में शुभमह हों तो उस भाव के अशुभफल का ह्रास, तथैव पापमह हों तो उस भाव के अशुभफल की वृद्धि होना एक साधारण नियम है। परन्तु प्रायः त्रिकेश (शुभ या पाप) कोई भी हो, यदि वे त्रिकस्थ हों तो अशुभफल का ह्रास ही माना गया है।

ग्रह--युक्त-भाव-फल-विधान

(१) केन्द्र-त्रिकोण में शुभग्रह हों तो शुभफल दायक, यदि वह शुभग्रह केन्द्रेश न हो। केन्द्रेश गुरु-शुक्र ही विशेप अशुभ होता है। परन्तु लग्नेश गुरु-शुक्र हो तो इतने अशुभ नहीं होते, जितने अन्य ग्रह केन्द्रेश होकर अशुभ होते हैं।

(२) केन्द्र-त्रिकोण में शुभ-पाप (क्रूर) दोनों हों तो मिश्रित शुभाशुभ फलदायक होते हैं।

(३) ३।६।११ वें भाव में पापग्रह होना, शुभदायक है।

(४) जिस भाव के दूसरे बारहवें पापग्रह हों तो उस भाव का फलनाश। शुभग्रह हों तो फल-वृद्धि होती है। पापकर्तरी में पापफल। शुभकर्तरी में शुभफल होता है।

(५) जिस भाव के दूसरे बारहवें भाव में से एक में शुभग्रह, एक में पापमह हो तो उस भावफल की 'ह्रास -वृद्धि' नहीं होती अथवा मिश्रित शुभाशुभ फल होता है।

(६) जो भाव, अपने स्वामी या शुभमह द्वारा युक्त या दृष्ट हो और पापयुक्त या दृष्ट न हो तो शुभफल।

(७) जो भावेश, शुभयुक्त या दृष्ट हो, अथवा जिस भाव में शुभग्रह हो, अथवा जिस भाव पर शुभग्रह की या शुभभावेश को दृष्टि हो, उसका शुभफल होता है।

(८) जिस भाव का स्वामी या भाव, पापयुक्त या दृष्ट हो तो उसका अशुभफल होता है।

(९) जिस भाव में, शुभ या पापग्रह, नीच राशि का या शत्रु राति का हो तो उस भाव की हानि होती है (जिस भाव में बैठता है)। किन्तु जब यही शुभ या पापग्रह) उच्च, स्वगृही, मूलत्रिकोणी, मित्रगृही होकर, जिस भाव में बैठते हैं उसकी वृद्धि करते हैं।

(१०) भावेश, अस्त या नीचस्थ होकर, केन्द्र त्रिकोण में हो तो शुभफल विशेष रूप से नहीं दे पाता। परेशानी और कष्ट के बाद कुछ शुभफल देता है।

(११) चतुर्थ-दशम भावेश सुखदायक, पंचम नवम भावेश धनदायक, लग्नेश-सप्तमेश धन और सुख दोनों देते हैं। परन्तु सप्तमेश की दशान्तदशा कष्टकारक भी होती है।

(१२) भावेशस्थ राशीश, त्रिकस्थ होने से कुछ निर्बलता एवं भावेशस्थ राशीश, उच्चादि होने से कुछ बलवत्ता भाव के लिए प्रदान करता है।

(१३) भावेश अनिष्टकारक होने पर, भावस्थ ग्रह, उतना शुभफल दायक नहीं हो पाता। जितना भावेश शुभकारक होने पर शुभफल दायक होता है। भावस्थ ग्रह (किरायेदार अस्थिर अधिकारी)। तात्पर्य यह है कि, भावस्थ ग्रह यदि शुभकारक हुआ भी तो, केवल कुछ बाहिरी चमक दिखा देगा और भावेश, सच्चे स्थिर-फल का सूचक होता है।

(१४) जब राहु या केतु, त्रिकोण में, किसी केन्द्रेश के साथ बैठते हैं तब, शुभफलदायक माने गये हैं। इसी प्रकार जब राहु या केतु, केन्द्र में, किसी त्रिकोणेश के साथ बैठते हैं तब भी शुभफल देते हैं। ३। ६। १० । ११ वें भाव में स्थित राहु या केतु शुभफल देते हैं।

भावस्थ-प्राणपद-फल

लग्न में- गूँगा, उन्मत्त, शिथिलांग, हीनांग, दुखी , कृश और रोगी शरीर वाला होता है।

द्वितीय में- सुन्दर, धनाढ्य, सेवक सुख, अनेक मनुष्यों पर अधिकार तथा अनेक प्रकार से सुखी होता है।

भ्रातृ में- गर्वित, हिंसक, क्रूर, मलिन, निष्ठुर एवं गुरु तथा श्रेष्ठजनों का विरोधी होता है।

सुख में- सुखी, सुन्दर, कुटुम्ब तथा मित्रादि का प्रिय, शीलवान् और सत्यवादी होता है।

पुत्र में- सुखी, धार्मिक, परोपकारी तथा कार्य-कुशल होता है।

रिपु में- बन्धु तथा शत्रुओं के आधीन, मन्दाग्नि से पीड़ित, निर्दयी, रोगी एवं अल्पायु-भोगी होता है।

जाया में- इर्ष्या करने वाला, कामी, कठोर और बुद्धिहीन होता है।

आयु में- रोग, सन्ताप, राजा, कुटुम्ब, नौकरी और पुत्रादि से पीड़ित होता है।

धर्म में- पुत्रवान्, धनवान्, भाग्यवान्, सुन्दर और चतुर होता है।

कर्म में- बलवान्, बुद्धिमान्, दक्ष, देव-भक्त एवं राजकार्य में प्रवीण होता है।

लाभ में- गौरवर्ण, माननीय, विरुयात, गुणज्ञ, विद्वान्, धनाड्य और भोगी होता है।

व्यय में- हीनांग, दुष्ट, खुद्र, बन्धु और गुरुजनों से द्वेष करने वाला तथा नेत्ररोगी या काना होता है।

गुलिक का द्वादश भाओं में फल-

लग्न में- रोगी, कामी, चोर, कूर, बिनय-हीन, वेद-शास्त्र-रहित, दुर्बल, नेत्र रोगी, दुःखी, लम्पट, लदमति और अल्पायु बाक्षा होता है। पापयुक्त होने से शुद्ध, दुराचारी और विश्वास-घाती होता है।

द्वितीय में- व्यसनी, दुःखी, घुद्र, भ्रमण-शील, फलही, धन-हीन, प्रवासी और कटुभाषी होता है। पापमह से युक्त हो तो, निर्धनी एवं विद्या-विहीन होता है।

तृतीय में- बड़े बोल बाला (बावदूक, रोखीबाज), सबसे दूर-दूर रहने वाला, मादक पदार्थ-सेवी, कोधी किन्तु शोक एवं भय से रहित, राजा से माननीय, सज्जनों का प्रिय ग्रामादि का नायक और धार्मिक होता है। इसे भाई या बहिन का सुख नहीं हो पाता तथा धन-संग्रह के लिए व्याकुल रहता है।

चतुर्थ में- विद्या-रहित, गृह, धन, भूमि वाहनादि से रहित, भ्रमण-शील, रोगी, वात-पित्तादि के विकार से पीड़ित तथा पापी होता है।

पंचम में- शील-रहित, अव्यवस्थित चित्त, जुद्र, स्त्रियों के आधीन, नपुंसक या अल्पसन्तान बाला, अल्पायु या नास्तिक विचार वाला होता है।

पष्ठ में - शत्रु नाशक, प्रेतादि साधन में तत्पर, पुष्ट शरीर, शुर-वीर एवं तेजस्वी होता है।

सप्तम में- कलह-प्रिय, लोगों से विरोध, कृतन्न और मन्द-बुद्धि वाला होता है तथा इसकी स्त्री, सन्ताप देनेवाली या आरिणी होती है। किसी के कई स्त्रियाँ भी होती हैं।

अष्टम में- मुख या नेत्र दोष के कारण कुरूपवान गुणरहित, कोधी और क्रूर-स्वभाव-वाला होता है।

नवम में- कुकर्मी, माता-पिता तथा गुरुजन की हत्या करने वाला, बहुत जीवों को क्लेश देने बाला, तथा असत्य-भाषी होता है।

दशम में - कुल धर्म-आचार से भ्रष्ट, निर्लज, डीठ, आत्माभिमानी एवं प्रतिष्ठा से रहित होता है।

लाभ में- सुखी, धनी, तेजस्वी, रूपवान्, प्रजावर्ग का पालक और बन्धु-प्रिय होता है। किन्तु ज्येष्ठज की मृत्यु सम्भव होती है।

व्यय में- विषय-रहित वेष वाला, साधु के समान, दीन,भाषण-पटुता से धन-संग्रह करने में प्रवीण होता है ।

4.5 सारांश

इस इकाई के द्वारा आप यह जानने में सफल हो सके होंगे कि द्वादश भाव किसे कहा जाता है। द्वादश भावों को किन- किन नामों से जाना जाता है, जन्मांग चक्र के प्रत्येक भाव से द्वादश भावों के विचारणीय विषय क्या-क्या है। जैसे लग्न, होरा, कल्य (प्रभात, सूर्योदय अर्थात् प्रारंभ) देह, उदय (प्रारंभ होना), रूप, सिर, वर्तमान काल, जन्म इन सब का विचार पहले भाव से किया जाता है। इसके अलावा भी शरीर, सुख –दुःख, कीर्ति, नम्रता, ज्ञान, जन्म- स्थान, स्वप्न, बल, गौरव, राज्य, स्वभाव, आयु, शांति, अवस्था, स्वाभिमान, व्यक्तित्व, चोट, निशान, अपमान, त्वचा, वर्ण, आदि का विचार प्रथम भाव या लग्न से किया जाता है, उसी प्रकार से अन्य भावों का भी बिचार इस इकाई

के द्वारा आप सरल रूप से जान पाए होंगे। तथा इस इकाई के द्वारा फलादेश से सम्बन्धित क्या-क्या अन्य बातों का विचार किया जाता है, ये सब इस इकाई में आपको जानने व समझे को मिला होगा।

बोध प्रश्न

1. प्रथम भाव से विचार किया जाता है।

क. व्यपार ख. नम्रता ग. मृत्यु घ. आय

2. चतुर्थ भाव से विचार किया जाता है।

क. भाई का ख. पिता का ग. माता का घ. संतान का

3. अष्टम भाव से विचार किया जाता है।

क. नम्रता ख. आय ग. संतान का घ. मृत्यु

4. गुलिक के लग्न भाव में फल होता है।

क. कामी , ख. शत्रु नाशक, ग. साधु के समान, घ. मन्द-बुद्धि वाला,

5. प्राणपद का चतुर्थ भाव में फल होता है।

क. इर्ष्या करने वाला, ख. मित्रादि का प्रिय, ग. कामी, घ. विद्वान्,

6. केन्द्र भाव कहा जाता है।

क. तृतीय भाव को, ख. एकादश भाव को ग. द्वादश भाव को घ. चतुर्थ भाव को

7. पणफर भाव कहा जाता है।

क. चतुर्थ भाव को ख. एकादश भाव को, ग. तृतीय भाव को, घ. द्वादश भाव को

4.6 सहायक पाठ्य सामग्री

जातक पारिजात

जातक पद्धति

फलित संग्रह

ज्योतिष सर्वस्व

फलदीपिका

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहज्जातकम् - चौखम्भा प्रकाशन

वृहत्पराशरहोराशास्त्र - चौखम्भा प्रकाशन

ज्योतिष सर्वस्व – चौखम्भा प्रकाशन

चमत्कार चिंतामणि- चौखम्भा प्रकाशन

भावप्रकाश - चौखम्भा प्रकाशन

सरावली- चौखम्भा प्रकाशन

मानसागरी- चौखम्भा प्रकाशन

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख, 2. ग, 3. घ, 4. क, 5. ख, 6. घ, 7. ख

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. द्वादश भावों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

2. फलादेश में भाव-फल-विधान व प्राणपद फल का वर्णन कीजिए।

3. गुलिक का द्वादश भाओं में फल विचार को लिखिये।

इकाई - 5 कारक विचार

इकाई की संरचना –

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 ग्रहों का कारकत्व

5.4 ग्रहों का फलादेश सम्बन्धी कारकत्व

5.5 सारांश

5.6 सहायक पाठ्य सामग्री

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAJY(N)-221 प्रथम खण्ड के **कारक विचार** नामक शीर्षक से संबंधित है। इस इकाई में आप भावों के कारकों के बारे में जानेगें। तथा नवग्रहों के किन-किन वस्तुओं, नवग्रहों के अन्तर्गत किन-किन बातों का विचार किया जाता है, इन सब का अध्ययन आप इस इकाई के द्वारा करने में सफल हो सकेंगे। साथ ही फलादेश से सम्बन्धित बातों का विचार भी आप इस इकाई के द्वारा करने में सफल हो सकेंगे।

5.2 उद्देश्य

- द्वादश भावों के कारकों को जान पायेंगें।
- ग्रहों के कारकत्व को समझ सकेंगे।
- ग्रहों का सम्बन्धियों से कारकों को समझ सकेंगे
- फलादेश सम्बन्धी विषयों को जान सकेंगे।

5.3 ग्रहों का कारकत्व

द्वादश भावों के कारक ग्रह-

द्युमणिरमरमन्त्री गुरुरिनतनयारौ
भूसुतः भार्गवो सोमसौम्यौ भानुपुत्रः ।
दिनकरदिविजेज्यौ जीवभानुज्ञमन्दाः
सुरगुरुरिनसूनुः कारकाः स्युर्विलग्नात् ॥

प्रथम भाव का कारक ग्रह सूर्य, द्वितीय भाव का कारक ग्रह बृहस्पति, तृतीय भाव का कारक ग्रह मंगल, चतुर्थ भाव का कारक ग्रह चन्द्रमा और बुध, पंचम भाव का कारक ग्रह बृहस्पति, षष्ट भाव का कारक ग्रह शनि और मंगल, सातवें भाव का कारक ग्रह शुक्र, आठवें भाव का कारक ग्रह शनि, नवे भाव का कारक ग्रह सूर्य और बृहस्पति, दशम भाव के कारक ग्रह सूर्य, बृहस्पति, बुध और शनि, एकादश भाव का कारक ग्रह बृहस्पति और द्वादश भाव का कारक ग्रह शनि होते हैं।

महर्षि पराशर के अनुसार प्रत्येक भाव के एक-एक ग्रह ही कारक माने गये हैं।
सूर्यो गुरुः कुजः सोमो गुरुर्भौमो भृगुः शनिः । गुरुश्चन्द्रसुतो जीवो मन्दश्च भावकारकः ।।

लग्न के सूर्य, द्वितीय भाव के बृहस्पति, तृतीय भाव के मंगल, चतुर्थ भाव के चन्द्रमा, पंचम भाव के बृहस्पति, षष्ठभाव के मंगल, सप्तम भाव के शुक्र, अष्टम भाव के शनि, नवम भाव के बृहस्पति, दशम भाव के बुध, एकादश भाव के बृहस्पति, द्वादश भाव के शनि है।।

आठ प्रकार के चरकारक -

आत्मा सूर्यादिखेटानां मध्ये हांशाधिको ग्रहः।
अंशसाम्ये कलाधिक्यात्तत्साम्ये विकलाधिकः।।
आत्मकारकभागेभ्यो न्यूनांशोऽमात्यकारकः।
तन्न्यूनांशको भ्राता तन्न्यूनो मातृसंज्ञकः।।
तन्न्यूनांशः पिता तस्मादल्पांशः पुत्रकारकः ।
पुत्रान्न्यूनांशको ज्ञातिर्ज्ञातिन्न्यूनांशको हि यः।।
स दारकारको ज्ञेयो निर्विशङ्क द्विजोत्तम ।
चराख्यकारका एते ब्रह्मणा कथिताः पुरा।।

राशि को छोड़कर सर्वाधिक अंशों वाला ग्रह आत्मकारक
उससे न्यूनांशस्थ ग्रह अमात्यकारक
अमात्यकारक से न्यूनांशस्थ ग्रह भ्रातृकारक
भ्रातृकारक से न्यूनांशस्थ ग्रह मातृकारक
मातृकारक से न्यूनांशस्थ ग्रह पितृकारक
पितृकारक से न्यूनांशस्थ ग्रह पुत्रकारक
उससे न्यूनांशस्थ ग्रह जातिकारक
और जातिकारक ग्रह से न्यूनांश में स्थित ग्रह दारा या पति कारक होता है।

ग्रहों के कारकत्व-

सूर्य का कारकत्व

ताम्रं स्वर्णं पितृशुभफलं चात्मसौख्यप्रतापं धैर्य शौर्य समितिविजयं राजसेवां प्रकाशम् ।
शैवं कार्य वर्नागरिर्गात होमकार्यप्रवृत्ति देवस्थानं कथयतु बुधस्तैक्ष्यमुत्साहमर्कात् ॥

तांबा, सोना, पिताः, शुभ फल, (अर्थात् अपना शुभ), धैर्य, शौर्य,पराक्रम, युद्ध में विजय, आत्मा, सुख, प्रताप, राजसेवा, शक्ति, प्रकाश, भगवान शिव सम्बन्धी कार्य, वन या पहाड़ में यात्रा, हवन कार्य में प्रवृत्ति, देवस्थान, तीक्ष्णता, उत्साह आदि का कारक सूर्य है ॥

कालिदास के अनुसार निम्नलिखित का कारकत्व सूर्य का है-

आत्मा, शक्ति, अतिदुष्ट, किला, अच्छी शक्ति, उष्णता, प्रभाव, अग्नि, शिव की उपासना, धैर्य, काँटेदार वृक्ष, राजकृपा, कटुता, वृद्धता, गाय-भैंस आदि पशु, दुष्टता, जमीन, पिता, रुचि, आत्मप्रत्यय, ऊँचीनजर, डरपोक माँ का बच्चा, मृत्युलोक, चौकोन, अस्थि, पराक्रम, घास, कोख, दीर्घप्रयत्न, जंगल, अयन, आँख, वन में घूमना, चौपाए-पशु, राजा, प्रवास, व्यवहार, पित्त, तपस्या, गोलाई, नेत्ररोग, शरीर, लकड़ी, मनःपवित्रता, सर्वाधिकारित्व। रोगों से मोक्ष, सौराष्ट्रदेश का राजा,

अलंकार, मस्तिष्क के रोग, मोती, आकाश का आधिपत्य, नाटापन, पूर्व-दिशास्वामित्व, ताँबा, रक्त, राज्य, लालकपड़ा। अंगूठी में लगनेवाले नग । खनिज के पत्थर, लोकसेवा, नदीतट, प्रवाल, मध्याह्न बलवत्ता, पूर्व, मुख, दीर्घकोप, शत्रु-विजय, सत्य, केशर, शत्रुता, मोटी रस्सी।

राशियों द्वारा सूर्य का कारकत्व :-

मेष: क्षात्रकर्म, संघटक, फोरमैन, ताँबा, माणिक, प्रवाल, ऊनीकपड़े।

वृष :- दवाइयाँ, पशु, घास, लकड़ी, किसान, नाचना-नाय्यगृह।

मिथुन : स्कूल मास्टर, जवाहरात, कोर्ट की भाषा।

कर्क :- बिजली, बिजलीपर चलनेवाले धंधे, नेत्रवैद्यक।

सिंह : जौहरी, केशर, डिक्टेटर, राजा।

कन्या :- मैनेजर, गिलट, अनाज, सार्वजनिक कार्यालय।

तुला :- सिविल आफिसर, प्लेटिनम, राजदूत।

वृश्चिक :- पत्थर, लालचंदन, चंदन, कच्चारेशम, शस्त्र, शरीरशास्त्री ।

धनु:सोना, रेडियम, ज्यूरर्स, धर्मगुरु, कानून बनानेवाले।

मकर : नगराध्यक्ष, कौंसिलर, असेम्बली, नगरपालिका, जिला वा लोकल-

कुंभ :- मोटी रस्सी बनानेवाले।

मीन :- एक्सरे फोटोग्राफर, मोती, प्रदर्शिनी।

चंदमा का कारकत्व

मातुः स्वस्ति मनःप्रसादमुदधिस्नानं सितं चामरं
छत्रं सुव्यजनं फलानि मृदुलं पुष्पाणि सस्यं कृषिम् ।
कीर्तिं मौक्तिककांस्यरौप्यमधुरक्षीरादिवस्त्राम्बुगो-
योषाप्ति सुखभोजनं तनुसुखं रूपं वदेच्चन्द्रतः ॥

माता का कुशल, चित्त की प्रसन्नता, समुद्र स्नान, सफ़ेद चंवर (या सफ़ेद वस्तु और चंवर) छत्र, सुन्दर पंखे (राज चिह्न) फल, पुष्प, मुलायम बस्तु, खेती, अन्न, कीति (यश), मोती, चाँदी, काँसा, दूध, मधुर पदार्थ, वस्त्र, जल, गाय, स्त्री प्राप्ति, सुखपूर्वक भोजन, रूप (सुन्दरता) चन्द्रमा इन सब का कारक है।

चन्द्रमा का कारकत्व-

बुद्धि, फूल, सुगन्ध, दुर्ग की ओर जाना, रोग, ब्राह्मण, आलस्य, कफ, मिरगी का रोग, प्लीहा का बढ़जाना, मानसिकभाव, हृदय, स्त्री, पुण्य, पाप, खटाई, नीद, सुख, जलीयपदार्थ, चांदी, मोटागन्ना, सरदी का बुखार, यात्रा, कुंआ, तालाब, माता, समदृष्टि, मध्याह्न, मोती, क्षयरोग, श्वेतरङ्ग, कटिसूत्र, कांसी का धातु, नमक, छोटाकद, मन, शक्ति, बावली, हीरा, शरदऋतु, दोघड़ी का समय, मुखकान्ति, श्वेतवर्ण, उदर, गौरी की भक्ति, मधु, कृपा, हंसीमज़ाक, पुष्टि, गेहूँ, कांति, मुख,

मनकी शीघ्रगति, दही कौ चाह, तपस्वी, यश, लावण्य, रात्रि में बली,पश्चिमाभिमुख, विद्वान्, खारा, कामधन्धे की प्राप्ति, पश्चिमदिशा से प्रेम, मध्यलोक, नवरत्न, मध्यआयुजीवन, खानापीना, दूरदेशयात्रा, लग्न, कंधे की बीमारियाँ, छत्र तथा अन्य राजचिह्न, अच्छाफल, अच्छारक्त तथा शक्ति, मछली तथा अन्य जलोत्पन्नजीव, सांप, सिल्क का कपड़ा, अच्छाविकास, चमकीलीवस्तु, स्फटिक, नरम कपड़ा, विद्युत-प्रवाह, चुम्कीय प्रवाह, माता का दूध, मासिक रजोदर्शन, रेलवेअधिकारी, जहाजों के कारखाने, औषधिविक्रेता, लोककर्मविभाग, काप्च के कारखाने, वेधशाला, पेटैन्टदवाइयों, अनाज की दुकान, किरानासामान, सिंप्चाईविभाग, वाटरवर्कस, साल्ट डिपार्टमेन्ट, आयात, निर्यात करविभाग, टकसाल।

मंगल का कारकत्व -

सत्त्वं भूफलितं सहोदरगुणं क्रौर्य' रणं साहसं
विद्वेषं च महानसाग्निकनकज्ञात्यस्त्रचोरात्रिपून् ।
उत्साहं परकामिनीरतिमसत्योक्ति महीजाद्वदे-
द्वीर्य चित्तसमुन्नति च कलुषं सेनाधिपत्यं क्षतम् ॥

सत्व,शारीरक और मानसिक ताक़त, पृथ्वी से उत्पन्न होने वाले पदार्थ, भाई-बहिनों के गुण, भाई-बहिनों का सुख कैसा रहेगा, क्रूरता, रण, साहस, शत्रुता रसोई की अग्नि, सोना, ज्ञाति अस्त्र, चोर, शत्रु, उत्साह, दूसरे पुरुष की स्त्री में रति, मिथ्या भाषण, वीर्य, ताकत, पराक्रम चित्त की समुन्नति चित्त का उत्साह, उदारता; बहादुरी या ऊंचापन, पाप या बुरा काम व्रण (घाव), चोट, सेनाधिपत्य आदि का कारक मंगल है।

कालिदास के ग्रन्थानुसार -

पराक्रम, जमीन, बल, शस्त्रधारण, लोगों पर अविकार जमाना, बीर्थक्षय, चोर, युद्ध, विरोध, शत्रु, उदारता, लाल वस्तुओं की रुचि, बगीचों की मलकीयत, बाद्यबादन, प्रेम, चौपाया जानवर, राजा, मूर्ख, कोच, विदेशयात्रा, धैर्य, आँवले का वृक्ष, अमि, बाद विवाद-पित्त, उष्णता, ब्रण, सरकारी नौकरी, दिन, ऊर्ध्वदृष्टि, नाटाकद, रोग, कीर्ति, सीसा, तलवार, भाला, मन्त्री, स्पष्ट अवयव होना, मणि, स्कन्द-तरुण, कड़वी रुचि, राजाओंओच्य स्थान-अपमान, मांस-आहार, परनिंदा, शत्रुविजय, तिक्तस्वाद, रात्रिवली-सोना-धातु-श्रीष्मऋतु-पराक्रम-शत्रुबल, गम्भीरता, शौर्य, पुरुष, शील, ब्रझ, कुल्हाडी, बनचर, गाँव का मुखिया, राजदर्शन, मूत्रकृच्छ्ररोग, चौकोर आकार, सुनार, दुष्ट-जली हुई जगह, भोजन में अच्छे रुचिकर पदार्थों की प्रियता, दुबलापतला पन, धनुर्विद्या नैपुण्य, रक्तन्ताँबा, रंगविरंगे वस्त्र, दक्षिण दिशा, दक्षिण-दिशा प्रियता, कामवासना, क्रोध, परनिंदा, घर, सेनापतिशतघ्नी, सामवेद, माई, वन्य क्रूर पशु-नेतृत्व, स्वतन्त्रता, खेती-सेनापतिपद सर्पस्थान, वाणी और चित्त का चञ्चल होना, घुड़सवारी, रजोदर्शन, खून सूखना -

पाश्चात्यमत के अनुसार मंगल का कारकत्व –

उष्ण-रूक्ष, दाहक, उद्योगी, वंध्या, पुरुषप्रकृति, साहसी, उबलने वाले पदार्थ, दाहजनक तेल, तीत्र औषध, अम्लपदार्थ, उष्णपदार्थ, दाहकारक रुच्चि, लोहा, फौलाद, इथियार, चाकू-कैंची, झगड़े-चोरी-डकैती, अपघात, लडाई, युद्ध में सम्मान प्राप्ति, महत्वाकांक्षा, पौरुष, कामवासना, क्रोध, मानआदिमनोविकार, आग, बुखार, उन्माद-भर्थकरता, द्रोह, निंदा, पुलिस, स्वल्पकाल कारावास, मौत, पुरुष सम्बन्धी, डाक्टर, सर्जन, रसायनशास्त्र, वैज्ञानिक, गोलंदाज़-शस्त्रकार मैके-निक, इंजीनीयर, टर्नर, फिटर, लेथवर्क करनेवाले, टाटा आदि लोह कारखानों में काम करनेवाले, तांबे के बर्तन बनानेवाले, प्चाकू-कैंची बनानेवाले लुहार, कंगन बेचनेवाले, दंतवैद्य, कसाई-बेलिफ जल्लाद, घड़ीवाले, दर्जी नाई, रंगारी-चमार, जुआरी, मस्तक-नाक, जननेन्द्रिय, पित्त-पित्ताशय, मूत्राशय, स्नायु-मंसिरज्जु चेच्चक, गोबर, खून बहना, कटना-जलना-आगलगी हुई जगह-भट्टी-(सुनारकी, छुहारकी-होटलकी, कांप्चकारखानेकी, लोहे, तांबे, या पीतल के बर्तनों के लिए, चूना बनाने की, शस्त्रों के लिए भट्टी) रसायनशाला, युद्धभूमि, सेनाशिविर, तोपखाना, बारूद का संग्रह, शस्त्रों के कारखाने, अपघात स्थल बड़ाकूप्रदेश-विषैले जन्तुओं के स्थान, कसाईखाना, भाई-बहिन, सुख-दुःख, चचेरे भाई-सौतेले सम्बन्धी, अद्भुत बुद्धिमत्ता के काम।

बुध का कारकत्व -

पाण्डित्यं सुवचः कलानिपुणतां विद्वत्स्तुति मातुलं
वाक्चातुर्यमुपासनादिपटुतां विद्यासु युक्ति मतिम्।
यज्ञं वैष्णवकर्म सत्यवचनं शुक्ति विहारस्थलं
शिल्पं बान्धवयौवराज्यसुहृदस्तद्भागिनेयं बुधात्॥

पाण्डित्य, अच्छी वाक् शक्ति (बोलने की शक्ति), कला, निपुणता, विद्वानों द्वारा स्तुति, मामा, वाक्- चातुर्य, उपासना आदि में पटुता, चतुरता, विद्या में बुद्धि का योग, बुद्धि (बुद्धिमान होना अलग बात है और विद्या में बुद्धि लगाये रहना पृथक् बात है) यज्ञ, भगवान विष्णु सम्बन्धी वार्मिक कार्य, सत्य बचन, सीप, विहार स्थल (आमोद-प्रमोद की जगह), शिल्प कार्य में चतुरता, बन्धु, युवराज, मित्र, भानजा, भानजी आदि का कारक बुध है।

जन्मकुण्डली में उपयोगी कारकत्व –

श्रुत-लिखित नैपुण्य-मंत्रित्व-भूत-हास्य-कीर्ति-विद्या-बंधु-विवेक - मातुल सुहृत्-कृतकर्म-नृत्त वैद्य-हास-श्रो-संतान-शांति-विनय-भक्ति-प्रशा-वेदांत-प्रशावत् कर्म-विज्ञान-प्रवरकाव्यपटुता-विनोदकला-प्रवरबोध - मन की पवित्रता-धृति-पांडित्य-शोभन भाषण-विद्वत्ता-स्तुति-वाक्चातुर्य-सत्यवचन-भागिनेय-कोश-ज्ञान-लिपि-लेख्य तीर्थयात्रा-वाणिज्य-भूषण-मृदुवचन-मातामह-दुःस्वप्न-विराग-विचित्रहर्म्य-भिषज-अभिचार-त्रिनय-भय-भाषाचमत्कार-अच्छा पुराणों की कथा वाचनेवाला-शब्दशास्त्र-रत्नसंशोधक-विद्वान्-मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र-तत्वज्ञान-गणित-अंकज्योतिष-ज्योतिष-व्यापारी-प्रधाननौकर लेखक-मूर्तिकार-कावि-व्याख्याता-बकील-शिक्षक-मुद्रक-अर्को

कमिश्नर-मुद्राविनिमय-लिपिक-सालि-स्टर-सेक्रेटरी-व्याकरणश-चोर-दर्जी-दूत-पदाति-साहूकार-परिचित लोग- मित्र-पड़ोसी-दुभाषिए-नौकरचाकर-प्रवास-भाईबंधु-शिक्षासफलता पुस्तक-विक्रेता -बंधुसौख्य-रजिस्ट्रार-दलाल-लोकसंग्रह-मस्तिष्क-ज्ञानतंतु फेफड़े-आंतडी-मज्जा-हाथ-जीभ-गुह्य-रोग-पेट-वातरोग-कोढ़-मंदाग्नि-शूलरोग-संग्रहणी-डाक-तार-त्रिभाग--बैंक-बीमा कंपनी-रेल्वे-मिल-बड़ीफर्म में क्लार्क अनुवादक होता है

गुरु का कारकत्व-

ज्ञानं सद्गुणमात्मजं च सचिवं स्वाधारमाचार्यकं
माहात्म्यं श्रुतिशास्त्रधीस्मृतिर्मात सर्वोन्नति सद्गतिम् ।
देवब्राह्मण भक्तिमध्वरतपःश्रद्धाश्च कोशस्थलं
वैदुष्यं विजितेन्द्रियं धवसुखं संमानमोड्यादयाम् ॥

ज्ञान का,अच्छे गुण, पुत्र, मंत्री, अच्छा आचरण, आचार्यत्व, पढ़ाना या दीक्षा देना, माहात्म्य, श्रुति (वेद) शास्त्र, स्मृति आदि का ज्ञान, सब की उन्नति, सद्गति, देवताओं और ब्राह्मणों की भक्ति, यज्ञ, तपस्या, श्रद्धा, खज़ाना, विद्वत्ता, जितेन्द्रियता, सम्मान, दया आदि का कारक बृहस्पति है विशेष यदि स्त्री की जन्मकुण्डली का विचार करना हो तो पति सुख का कारक बृहस्पति है ॥

उत्तरकालामृत में वर्णित बृहस्पति का कारकत्व -

ब्राहाण-गुरु, स्वकर्म-रथ-गौ-पदाति-निक्षेपक, मीमांसा, निधि-घोड़े-भैस, बड़े-बड़े अंग-प्रताप, कीर्ति-तर्कशास्त्र ज्योतिः शास्त्र, पुत्र-पौत्र, उदररोग-दोपाए प्राणी, वेदान्त-परदादा आदि प्रासाद-गोमेधिक, बड़ा भाई, दादा-शिशिरऋतु, रत्न-व्यापारी-नैरोग्य सुन्दर घर राजसम्मान-तपश्चर्या-दान-धर्म-परोपकार-समदृष्टि-उत्तर दिशा-वर्तुलाकृति-पीला-ग्रामवासी-प्यारा मित्र, झूला-मेदा-मध्य-वस्त्र-नूतनगृह, सौख्य, बूढ़ों की सलाह-तीर्थ, बुद्धि-काव्य-गोपुर-सभा सत्पुरुषों का आमोद-प्रमोद-सिंहासन, ब्रहादेव की स्थापना-सभीकाल-बल-महीना-वैडूर्य रत्न-अग्निष्टोम यज्ञ का फल, मधुर रुचि-सत्वगुण, सुख दुःख, ऊँचाई-स्वर्णाभूषण-तन्त्र-

कारकत्वसमुच्चय-

मांगल्य, धर्म, पौष्टिक, महत्व-शिक्षा-पान, सोना, धान्य-पुत्र-प्रज्ञा-ज्ञान वित्त-शरीरपुष्टि-शाप-शोक-गुल्म, कामला-वातरोग स्वकर्म-वजन गृह-वस्त्र पात्र-मित्र-आन्दोलन-सुख-वाग्धोरणी-मंत्र-राजतन्त्र, नैष्ठिक, गज-तुरग-बोधकर्म-जीवन साधन-कर्मयोग सिंहासन-वचन पटुता, तन्त्रविचार, प्रवचनकार, व्याख्याता-लेखक-प्रकाशक-विडम्बन-काव्य-राजकृपा-सचिव,आचार्य-शास्त्र-धी-स्मृति-मति-सर्वोन्नति-भक्ति-अध्वरतपः श्रद्धा-वैदुष्य-धनसुख-सम्मान-दया-अंत्रज्वर-मोह-कफजरोग, देवस्थान निधि के उपभोग में लाने से उत्पन्न रोग, भाग्य, कीति-वृद्धि-यश-मैत्री संरक्षण-विधानसभासदस्य, धर्मगुरु, दीक्षागुरु-आध्यात्मिक गुरु, न्यायाधीश, वकील, विद्यार्थी, ऊनीसूती

कपड़ों का कारखाना उसका मालिक व्यापारी-जाँ-पैर-दाहिनाकान-सभी प्रकार का सुख-नृपवद्धिकार, लोकसंग्रह आदि का कारक गुरु होता है।

शुक्र का कारकत्व -

संपद्वाहनवस्त्रभूषणनिधिद्रव्याणि तौर्यत्रिकं
भार्यासौख्यसुगन्धपुष्पमदन व्यापारशय्यालयान् ।
श्रीमत्त्वं कवितासुखं बहुवधूसङ्ग विलासं मदं
साचिव्यं सरसोक्तिमाह भृगुजादुद्वाहकर्मोत्सवम् ॥६॥

सम्पत्ति, सवारी, वस्त्र, भूषण, द्रव्य, नाचने, गाने का योग, सुगन्धि, पुष्प, रति (स्त्री, पुरुष प्रसंग), शय्या का सुख व्यापार, मकान, घनिक होना, अर्थात् वैभव, , विलास, मंत्रित्व (मिनिस्टर होना), सरस उक्ति, विवाह या अन्य शुभ कर्म, उत्सव आदि का कारक शुक्र है।

विशेष - यदि पुरुष की जन्मकुण्डली हो तो स्त्री सुख का विचार भी शुक्र से करना चाहिये

कालिदास-उत्तरकालामृत

अर्थ- सफेद छत्र, चंवर, वस्त्र, विवाह, धनलाभ, दो पाए प्राणी, स्त्री, ब्राह्मण, सौम्यस्वभाव, सफेद रंग, पत्नी, कामुकता, सुख, नाटाकद खट्टी रुचि, फूल, आशा, कीर्ति, तारुण्य, गर्व, वाहन, चांदी, आग्नेयदिशा, नमक, तिरछीदृष्टि, पक्ष, दृढता, राजा, मोती, यजुर्वेद, व्यापारी सुंदरता, खरीद-विक्री, सरस बोलना, जलाशय, हाथी-घोड़े, कविता, नृत्य, मध्यम अवस्था, गीत-स्त्रीसुख, रत्न, हंसी, नौकर, भाग्य, तेज, सुकुमारता, राज्य, सुगंधित फूलों के हार, वीणा बांसुरी, विनोद-आठ प्रकार के ऐश्वर्य, थोड़ा आहार, वसंतऋतु-अलंकार, पूर्व मुख, आंखें, सप्च बोलना, कलानिपुणता, वीर्य, जल के रोग, गंभीरता, बाद्य, नाटक, क्रीडा-सम्मान, सफेद वस्त्र, राजमुद्रा, लक्ष्मी वा पार्वती की उपासना, थकावट, नीले केश, गुह्यांग, सन्ध्या समय, स्थानविषयक रहस्य, नागलोक।

शनि का कारकत्व -

आयुष्यं मरणं भयं पतिततां दुःखावमानामयान्
दारिद्र्यं भृतकापवादकलुषाण्याशौचनिन्द्यापदः।
स्थैर्य' नीचजनाश्रयं च महिषं तन्द्रीमूणं चायसं
दासत्वं कृषिसाधनं रविसुतात्कारागृहं बन्धनम् ॥

आयु, मरण, भय, पतन ,किसी ऊंचे स्थान से गिरना या सम्मान- च्युत होना, जातिच्युत आदि होना, अपमान, बीमारी, दुःख, दरिद्रता, बदनामी, पाप, मज़दूरी, अपवित्रता, निन्दा, आपत्ति, कलुषता मन का साफ न होना, निन्दा, निन्दित कर्म आदि, आपत्ति, मरने का सूतक, स्थिरता, नीच व्यक्तियों का आश्रय, भैंस, आलस्य, ऊँघना, कर्जा, लोहे की वस्तु, नौकरी, दासता, जेल जाना, गिरफ्तार होना, खेती के साघन आदि का कारक शनि है।।

निम्नलिखित विषय भी शनि के कारकत्व में हैं:-

बैंक, सूद लेने-देने का धन्धा, मिल्ल-कारखाने, कारखानों तथा मिल्ल सम्बन्धी कानून, भूगार्भशास्त्र, मुस्लिमकानून, मिलमालिक, साझीदार, प्रिंटिंग प्रैस, कोयले का व्यापार, बड़ी-बड़ी कम्पनियों, जिन्निङ्ग मैसिङ्ग फैक्टरी, इस्टेट ब्रोकर, खदानों के कानून, बीमाकम्पनी, इन्श्युरै सविजिनस, लोहे की चीजें, वैद्यक सम्बन्धी कानून, कृषिविद्यालय, पून्जीपति, तेल के व्यापारी, कारखाने, इस्टेट सम्चन्धी कानून, भूमिसम्बन्धी कानून, रोमन कानून, पुरातत्व संशोधन, स्नायुशास्त्र, हठयोग, उच्चन्यायालय, न्यायाधीश, नगरनिगम, जनपद, जिलापरिषद, विधानसभा आदि के सदस्य, जमींदार, खनिजपदार्थ, गुप्तबातें, दुष्टतापूर्णकाम, खलनायक, कैद, दण्ड, राजनीति और व्यवसाय में हानि, सरकार की ओर से चलाया हुआ मुकदमा, छोटेभाई-वहिन, चोटी, जेलर, जेल्लसुपरिटेंडेंट, विदेश-मन्त्री, विदेशनीति, सन्धि, शत्रुता वा मित्रता, इन्जैक्शन, कार्टरमास्टर, हड्डियों के व्रण, दाद, फोड़े, सन्धिवात, यकृत और प्लीहारोग, पैर और घुटनों के रोग, मल-मूत्र-उत्सर्जक इन्द्रियों के रोग, हाथीपाँव, पसीने में दुर्गध, गंगापन।

उत्तरकालामृतरचयिता कालिदास के अनुसार राहु का कारकत्व--

राहु-छत्र-चामर (राजचिन्ह) देशकी समृद्धि, कुतर्क, क्रूरभाषण, नीच जाति, पापी स्त्रियां, सीमाएं, वाहन, शूद्रलोग, जूआ, संध्याकाल, अयोग्य स्त्री से सम्बन्ध, विदेशगमन, अपवित्रता, हड्डी वा गांठ के रोग, झूठ बोलना, नीचे की तथा उत्तरदिशा, सपेरे, यम, म्लेच्छ आदि नीच लोग, बुरी गांटें, वन, पर्वत, बाहर के स्थान, नैऋत्य दिशा, वात-कफ पीड़ा, सांप, हवा, छोटे-बड़े-सरपट चलनेवाले जीव, सोये हुए प्राणी, प्रवाससमय, वृद्ध, वाहन, नागलोग नाना बातशूल, खांसी, श्वास, दुर्गा की उपासना, ढीठपना, पशुसमृद्धि-दाएँ ओर से लिखी जाने वाली लिपि (जैसे उर्दू) क्रूर भाषा।

दिवाकरजी वेंकट शुम्भाराओं के अनुसार कारकत्व –

राहु- साँप, चोर-लुटेरे, विधवास्त्रिएँ लड़ाई-झगड़े, ढीढपना, ज़बरदस्ती किसी को भ्रष्ट करना, दलचंदी, शुद्र लोग, नीच लोगों की गुटबंदी, घन को संचय करके गुप्त रखने में प्रसन्नता, कालाबाजार, वा चोरबाज़ारी, दिक्कतों से भरा हुआ होना, भयंकर रोग, ज्वर, मूर्छित होना, सन्निपात, कालरा, आक-स्मिक प्राकृतिक घटनाएँ, साहस, यश, काटना, टूटजाना, छेद करना, सज़ादेना, श्मशान घाट, वागूयुद्ध (झगड़ा) विवर, पर्वत, वृक्षपतन, इधर-उधर घूमना, जंगलों में निवास करना, भयंकर युद्ध, वितंडा, मर्मभेदी भाषण, धर्मभ्रष्टता, जुआ खेलना, अपवित्रता, गुह्य चुराकर्म, पशुमैथुन-बात, कफ, पित्त-ये राहु के अधिकार में है।

उत्तरकालामृतरचयिता कालिदास के अनुसार केतु का कारकत्व—

केतु- "शिव, विष्णु वा गणेश आदि देवों की उपासना, वैद्यक, कुत्ते-मुर्गे, गीदड़, क्षय, ज्वर, सर्वविध ऐश्वर्य, मुक्ति, गंगातट के स्थान, महान् तपश्चयो, वायु, वनचर, स्नेह, नौकर, पत्थर, व्रण,

मंत्रशास्त्र, चपलता, ब्रह्मज्ञान, पेट, बा आँख के रोग, जड़ता, कांटे, पशु, ज्ञान-मौन, वेदान्त, सर्वप्रकार के उपभोग, भाग्य, दादा, भयंकर शूल, फोड़े-फुंन्सियों, शुद्रलोग, नीच आत्माओं से कष्ट।"

दिवाकरजी वेंकट शुम्भाराओं के अनुसार कारकत्व -

केतु-शूद्दलोग, कुत्ते, मुर्गे, गिद्ध, सोंगोवाले पशु, क्षयरोग, पीड़ा, ज्वर, श्रण, पिशाचकर्म, ढीठपन, शत्रुओं को पीड़ित करना, धर्मान्धता, अंधविश्वास, लावा तड़क-भड़क, भिक्षावृत्ति-तीर्थयात्रा, लोभ, चुगली करने की आदत, लड़ाई झगड़ा करना, दूसरे से विरोध, अत्युत्तमज्ञान, परिवर्तनशील कर्म, गुफा में निवास, अद्भुत काम, कीर्ति, प्रसिद्धि, चमकीलापन, जंगलों में घूमनाका भविष्यवाणी, रोगमोचन, ऋण से मुक्त कर देना, शिवोपासना-शैवगण, निधि, धनागार, कारावास, मठ में निवास करना, अत्युत्तम आदर्शरूप चित्रचित्रण, ये बेतु के अधिकार में है।

5.4 ग्रहों का फलादेश सम्बन्धी कारकत्व

शैवो भिषङ्न्नृपतिरध्वरकृत्प्रधानी व्याघ्रो मृगो दिनपतेः किल चक्रवाकः।।

सूर्य - शिव का उपासक, वैद्य, राजा, यज्ञ करने वाला, मन्त्री, व्याघ्र, मृग, चकोर।

शास्ताङ्गनारजककर्षकतोयगाः स्युरिन्दोः शशश्च हरिणश्च बकश्चकोरः ॥

चन्द्रमा - शास्ता का पूजक, स्त्री, (कोई भी स्त्री), धोबी, कृषक, जल में रहने वाले जानवर, खरगोश, हरिण, बगुला और चकोर।

भौमो महानसगतायुधभृत्सुवर्ण- काराजकुक्कुटशिवाकपिगृध्रचोराः ।

मंगल-रसोई सम्बन्धी या रसोईघर सम्बन्धी कार्य, (यहां आशय है अग्नि से सम्बन्धित कार्य या अग्नि से सम्बन्धित कार्य करने वाले का) शस्त्र धारण करने वाला, सुनार, मेंढ़ा, मुर्गा, गीदड़ी, बन्दर, गृध्र, चोर।

गोपज्ञ शिल्पगणकोत्त मविष्णुदासास्ताक्ष्यः किकी दिविशु को शशिजो बडालः ॥

बुध ग्वाला, विद्वान् आदमी, शिल्पी, उत्तम हिसाब करने वाला या ज्योतिषी विष्णु भक्त, गरुड़, चातक, तोता तथा बिल्ली।

दैवज्ञ मन्त्रिगुरु विप्र यतीशमुख्याः पारावतः सुरगुरोस्तुरगश्च हंसः।

बृहस्पति-ज्योतिषी, मन्त्री, गुरु ,ब्राह्मण, सन्यासी पुरुष, कबूतर,घोडा, हंसः।

गानी धनी विटवणिङ्नटतन्तुवायवेश्यामयूरमहिषाश्च भृगोः शुको गौः ॥

शुक्र -गाने वाला, धनी, वैश्य (सागर), व्यभिचारी या कामी पुरुष, नट, कपड़ा बुनने वाला, वेश्या, भोर, गाय, भैंस, तोता।

तैलक्रयी भूतकनीचकिरातकायस्काराश्च दन्तिकरटाश्च पिकाः शनेः स्युः ।

शनि-तेल बेचने व श्रीदने वाला, नौकर, नीच पुरुष, शिकारी, लुहार, हाथी, कौआ, कोमल।

बौद्धाहितुण्डिकखराज वृकोष्ट्रसर्पध्वान्तावयो मशक मत्कुण कृम्युलूकाः ॥

राहु केतु-बौद्ध, सांप पकड़ने वाला, गधा, गेंदा, भेड़िया, ऊंट, सांप, मच्छर, खटमल, कीड़े मकोड़े, उल्लू, ऐसा स्थान जहां अन्धेरा रहता हो।

सम्बन्धियों के कारक ग्रह

ताताम्बे रविभार्गवो दिवि निशि प्राभाकरीन्दू स्मृतौ
तद्व्यस्तेन पितृव्यमातृभगिनीसंज्ञौ तदा तत्क्रमात् ।
वामाक्षीन्दुरिनोऽन्यदक्षि कथितो भौमः कनिष्ठानुजो
जीवो ज्येष्ठसहोदरः शशिसुतो दत्तात्मजः संज्ञितः ॥

सूर्य- यदि दिन में जन्म हो तो पितृ कारक, यदि रात्रि में जन्म हो तो चाचा का कारक। शरीर में दक्षिण नेत्र पर इसका विशेष अधिकार है।

चन्द्रमा- यदि रात्रि में जन्म हो तो मातृ कारक, यदि दिन में जन्म हो तो चन्द्रमा से मौसी का विचार करें। शरीर में, बायें नेत्र पर इसका विशेष अधिकार है।

मंगल- मंगल से छोटे भाई का विचार करना चाहिये।

बुध- गोद लिया हुआ पुत्र (दत्तक पुत्र)।

बृहस्पति- बड़ा भाई।

शुक्र- यदि दिन में जन्म हो तो मातृ कारक, यदि रात्रि में जन्म हो तो इससे मौसी का विचार करे।

शनि- यदि दिन में जन्म हो तो चाचा का विचार इससे करे और यदि रात्रि में जन्म हो तो इससे पिता का विचार करे।

शरीर में ग्रहों के कारकत्व-

देहो देही हिमरुचिरिनस्त्विन्द्रियाण्यारपूर्वा,
आदित्यद्विगुलिकशिखिनस्तस्य पीडाकराः स्युः ।
गन्धः सौम्यो भृगुजशशिनौ द्वौ रसौ सूर्यभौमौ,
रूपौ शब्दो गुरुथ परे स्पर्श संज्ञाः प्रदिष्टाः॥

सूर्य आत्मा है, चन्द्रमा शरीर है, मंगल आदि पांचों ग्रहों का पांचों ज्ञानेन्द्रियों पर अधिकार है। सूर्य और मंगल तेज के अधिष्ठाता हैं,इनका अधिकार दृष्टि पर अर्थात नेत्र पर है।

चन्द्रमा और शुक्र का रसनेन्द्रिय पर विशेष अधिकार है क्योंकि यह दोनों जल तत्व के अधिष्ठाता हैं।जीभ पर इनका अधिकार है। बुध घ्राणेन्द्रिय का अधिष्ठाता है। क्योंकि इसमें पृथ्वी तत्व

अधिक है। नाक पर इसका अधिकार है।बृहस्पति आकाश तत्व प्रधान होने से श्रवणेन्द्रिय का अधिष्ठाता है। कान पर इसका अधिकार है। शनि, राहु और केतु वायु के अधिष्ठाता हैं और इनसे स्पर्श का विचार करना चाहिये। त्वचा पर इनका अधिकार है।

ग्रहों के देव कारक-

रुद्राम्बागृहविष्णुधातृकमलाका लाह्यजा देवताः
सूर्यादग्निजलाग्निभूमिख पयोवाय्वात्मकाः स्युर्ग्रहाः ॥

सूर्य का अग्नि तत्व है, इसका अधिष्ठाता देवता रुद्र है।

चन्द्रमा का जल तत्व। इसकी अधिष्ठात्री देवी अम्बा है।

मंगल का तत्व अग्नि है, व उनका देवता कार्तिकेय है।

बुध का तत्व पृथ्वी है, इसका स्वामी विष्णु है।

बृहस्पति का आकाश तत्व है, इनका स्वामी ब्रह्मा है।

शुक्र का जल तत्व है, इसकी अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी है।

शनि का वायु तत्व है, इसका देवता यम है।

किस अन्न पर व किस देश पर ग्रहों का तथा किस धातु ,वस्त्र और भोजन के स्वाद के कारकों के बारे में बताया जा रहा है

गोधूमं तण्डुलं व तिलचणक कुलुत्थाढ कश्याममुद्रा
निष्पावा माष अर्कन्द्वसितगुरुशिखिक्रूरविद्धूग्वहीनाम् ।
भोगीनार्ष्यारजीवज्ञशशिशिखिसितेष्वम्बराख्यं कलिङ्गः
सौराष्ट्रावन्तिसिन्धून्सुमगधयवनान्पर्वतान्कीकटांश्च ॥
ताम्रं कांस्यं धातुताम्रं त्रपु स्यात् स्वर्ण रौप्यं चायसं भास्करादेः ।
वस्त्रं तत्तद्वर्णयुक्तं विशेषाज्जीर्ण' मन्दस्याग्निदग्धं कुजस्य ॥
भानोः, कटुर्भूमिसुतस्य तिक्तं लावण्यमिन्दोरथ चन्द्रजस्य ।
मिश्रीकृतं यन्मधुरं गुरोस्तु शुक्रस्य चाम्लं च शनेः कषायः॥

ग्रह	अन्न	स्थान	धातु	वस्त्र	स्वाद
सूर्य	गेहूं	कलिंग	तांबा	केसरिया	कड़वा
चन्द्र	चावल	यवन	कांसा	सफेद	नमकीन
मंगल	मसूर	अवन्ती	तांबा	लाल	तीखा
बुध	हरी मूंग	मगध	सीसा	हरा	खट्टा-मीठा
गुरु	चना	सिन्धु	सोना	पीला	मीठा
शुक्र	चावल	कीटक	चांदी	सफेद या धब्बेदार	खट्टा
शनि	तिल	सौराष्ट्र	लोहा	काला	कसैला

राहु	उडद	अम्बर			
केतु	कुल्थी	पर्वत			

किस ग्रह का किस प्रकार के वृक्षों पर कारकत्व है, यह नीचे बताया जाता है।

अन्तः सारसमुन्नतगुररुणो वल्ली सितेन्दू स्मृतौ
गुल्मः केतुरहिश्च कण्टकनगौ भौमार्कजौ कोतितौ ।
वागीशः सफलोऽफलः शशिसुतः क्षीरप्रसूनद्रुमी
शुकेन्द्र विधुरोषधिः शनिरसारागश्च सालद्रुमः ॥

जो वृक्ष ऊँचे हों और अन्तःसार जिनके भीतर कठोरता या दृढ़ता हो उन वृक्षों पर सूर्य का विशेष रकत्व होता है। लता, वल्ली आदि पर चन्द्रमा और शुक्र का कारकत्व होता है। गुल्मों और झाड़ियों पर राहु और केतु का विशेष कारकत्व होता है। कांटेदार वृक्षों पर शनि और मंगल का कारकत्व होता है। फलदार वृक्ष वृहस्पति कारकत्व होता है।बिना फल के वृक्षों पर बुध का कारकत्व होता है। जिनमें रस हो या जिन वृक्षों से जो दूध निकलता है उनको शुक्र और चन्द्रमा कारकत्व होता है। औषधियों व जड़ी बूटियों का का स्वामी चन्द्रमा है। जिन वृक्षों में रस विशेष न हों और कमजोर हों उन पर शनि का विशेष प्रभाव रहता है। साल के वृक्षों पर राहु का आधिपत्य है। परन्तु कुछ आचार्यो का ऐसा भी मत है कि - फल वाले वृक्षों पर बृहस्पति का, पुष्प बहुल वृक्षों पर शुक्र का और पत्र बहुल वृक्षों पर बुध का आधिपत्य समझना चाहिए । वैसे तो प्रत्येक वृक्ष में पत्र, पुष्प, फल आदि होते हैं परन्तु उस वृक्ष में प्रधानता किसकी है यह देखना चाहिये। कटहल में फलों की प्रधानता है, मौलश्री में पुष्प की प्रधानता है और अशोक में पत्ते की प्रधानता है।

5.5 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप यह जानने में सफल हो सके होंगे कि जन्म कुंडली में किस भाव का कारक ग्रह कौन सा है, तथा उसका विचार किस प्रकार से करना चाहिये। साथ ही आपने इस इकाई के माध्यम से यह भी जाना होगा कि प्रत्येक ग्रह का कारकत्व किन- किन पर होता है।जिस प्रकार से सूर्य का आत्मा, शक्ति, अतिदुष्ट, किला, अच्छी शक्ति, उष्णता, प्रभाव, अग्नि, शिव की उपासना, धैर्य, काँटेदार वृक्ष, राजकृपा, कटुता, वृद्धता, गाय-भैंस आदि पशु, दुष्टता, जमीन, पिता, रुचि, आत्मप्रत्यय, ऊँचीनजर, डरपोक माँ का बच्चा, मृत्युलोक, चौकोन, अस्थि, पराक्रम, घास, कोख, दीर्घप्रयत्न, जंगल, अयन, आँख, वन में घूमना, चौपाए-पशु, राजा,आदि पर, चन्द्र का बुद्धि, फूल, सुगन्ध, दुर्ग की ओर जाना, रोग, ब्राह्मण, आलस्य, कफ, मिरगी का रोग, प्लीहा का बढ़जाना, माता, मानसिकभाव, मंगल का पराक्रम, जमीन, बल, शस्त्रधारण, लोगों पर अविकार जमाना, बीर्थक्षय, चोर, युद्ध, विरोध, शत्रु, उदारता, लाल वस्तुओं की रुचि, बगीचों की मलकीयत, बाद्यबादन, प्रेम, चौपाया जानवर, राजा, मूर्ख, कोच, विदेशयात्रा पर बुध का श्रुत-लिखित नैपुण्य-मंत्रित्व-भूत-हास्य-कीर्ति-विद्या-बंधु-विवेक - मातुल सुहृत्- कृतकर्म- नृत्त वैद्य-

हास-श्रो- संतान- शांति- विनय- भक्ति- प्रशा- वेदांत- प्रशावत् कर्म- विज्ञान-प्रवरकाव्यपटुता-विनोदकला-प्रवरबोध पर गुरु का ब्राहाण-गुरु, स्वकर्म-रथ-गौ-पदाति-निक्षेपक, मीमांसा, निधि-घोड़े-भैस, बड़े-बड़े अंग-प्रताप, कीर्ति-तर्कशास्त्र ज्योतिः शास्त्र, पुत्र-पौत्र, उदररोग-दोपाए प्राणी, वेदान्त-परदादा आदि प्रासाद-गोमेधिक, बड़ा भाई, पर शुक्र का अर्थ- सफेद छत्र, चंवर, वस्त्र, विवाह, धनलाभ, दो पाए प्राणी, स्त्री, ब्राह्मण, सौम्यस्वभाव, सफेद रंग, पत्नी, कामुकता, सुख, नाटाकद खट्टी रुचि, फूल, आशा, कीर्ति, तारुण्य, गर्व, वाहन, चांदी, आग्नेयदिशा, पा शनि का आयु, मरण, भय, पतन ,किसी ऊंचे स्थान से गिरना या सम्मान- च्युत होना, जातिच्युत आदि होना, अपमान, बीमारी, दुःख, दरिद्रता, बदनामी, पाप, मज़दूरी, अपवित्रता, निन्दा, आपत्ति, कलुषता मन का साफ न होना,पर राहु का साँप, चोर-लुटेरे, विधवास्त्रिएँ लड़ाई-झगड़े, ढीढपना, ज़बरदस्ती किसी को भ्रष्ट करना, दलचंदी, शुद्र लोग, नीच लोगों की गुटबंदी, घन को संचय करके गुप्त रखने में प्रसन्नता, कालाबाजार, वा चोरबाज़ारी, पर केतु का शूद्दलोग, कुत्ते, मुर्गे, गिद्ध, सोंगोवाले पशु, क्षयरोग, पीड़ा, ज्वर, श्रण, पिशाचकर्म, ढीठपन, शत्रुओं को पीड़ित करना, धर्मान्धता, अंधविश्वास, लावा तड़क-भड़क, भिक्षावृत्ति-तीर्थयात्रा, लोभ, चुगली करने की आदत, आदि पर केतु का कारकत्व होता है। इन सब का अध्ययन आपने इस इकाई में किया होगा।

बोध प्रश्न

1. सूर्य का प्रदेश है।

क. मगध, ख. कलिंग, ग. कीटक, घ. अवन्ती,

2. मंगल का प्रदेश है।

क. अवन्ती, ख. कीटक, ग. मगध, घ. कलिंग,

3. बुध का कारकत्व किस वृक्ष पर होता है।

क. फलदार पर, ख. कांटेदार पर, ग. बिना फल के वृक्षों पर, घ. झाडियों पर

4. चन्द्रमा का धातु कौन सा है।

क. तांबा ख. शीशा ग. सोना घ. कांसा

5. प्रथम भाव का कारक ग्रह है।

क. सूर्य ख. चन्द्रमा ग. मंगल घ. गुरु

6. अष्टम भाव का कारक ग्रह है।

क. मंगल ख. सूर्य ग. शनि घ. बुध

7. चरकारक होते है।

क. तीन प्रकार के ख. आठ प्रकार के ग. पांच प्रकार के घ. सात प्रकार के

5.6 सहायक पाठ्य सामग्री

जातक पारिजात

जातक पद्धति

फलित संग्रह

ज्योतिष सर्वस्व

फलदीपिका

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहज्जातकम् - चौखम्भा प्रकाशन

वृहत्पराशरहोराशास्त्र - चौखम्भा प्रकाशन

ज्योतिष सर्वस्व – चौखम्भा प्रकाशन

चमत्कार चिंतामणि- चौखम्भा प्रकाशन

भावप्रकाश - चौखम्भा प्रकाशन

सरावली- चौखम्भा प्रकाशन

मानसागरी- चौखम्भा प्रकाशन

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख , 2. क, 3. ग, 4. घ, 5. क, 6. ग, 7. ख,

5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. ग्रहों का फलादेश सम्बन्धी कारकत्व पर लेख लिखिये।
2. नवग्रहों का कारकत्व विचार का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

खण्ड -2

षडवर्ग, ग्रहबल तथा फल विचार

इकाई – 1 षड्वर्ग विचार

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 ज्योतिष शास्त्र में षडवर्ग का स्वरुप
1.4 षडवर्ग परिचय
1.5 कुंडली के द्वारा षडवर्ग विचार
1.6 फलदीपिका के अनुसार षडवर्ग विचार
1.7 वृह्जातक के अनुसार षडवर्ग विचार
1.8 सर्वार्थचिंतामणि के अनुसार षड्वर्ग का स्वरुप
1.9 षड्वर्गों की विशिष्ट संज्ञाएं
1.10 षड्वर्ग कुण्डलियों का फलादेश
1.11 सारांश
1.12 पारिभाषिक शब्दावली
1.13 अभ्यास प्रश्न
1.14 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.15 संदर्भ ग्रन्थ सूची
1.16 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAJY(N)–221 के पाठ्यक्रम से सम्बंधित है। इस इकाई का शीर्षक **‘षडवर्ग विचार”** हैं। षडवर्ग क्या हैं, इसका विचार केसे किया जाता हैं,से सम्बंधित इकाई का अध्ययन हम आगे विस्तृत रूप से करते हैं। यह इकाई ज्योतिष शास्त्र से सम्बंधित है जिसका विचार जातक के भविष्य फल के लिए किया जाता हैं। जब किसी जातक का जन्म होता हैं तो जन्म के उपरान्त उसका जीवन कैसा रहेगा वह किस तरह से अपनें जीवन मैं उन्नति के मार्ग को प्राप्त करेगा इन सभी का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से किया जाता हैं। जन्म समय के द्वारा शुद्ध कुंडली का निर्माण कर लग्न स्पष्टादिक कर भुक्त भभोग, षष्ठी प्रमाण, परमायु महादशा विंशोतरी महादशा, सप्त पदार्थ के माध्यम से षडवर्ग का विचार गृह , होरा ,द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, इन सभी षड्वर्गो का विचार कर जातक के भविष्य फल का कथन किया जाता हैं। जिससे जातक के भविष्यफल के बिंदुओ का ज्ञान हो सके और जातक को सही मार्ग पर जाने के लिए प्रेरित करनें का कार्य केवल ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ही सम्भव हो सकता हैं। हम सभी इस इकाई का विस्तृत रुप से अध्ययन करेंगे। जन्मकुंडली के साथ साथ षड्वर्गो से भिन्न भिन्न वस्तुओं का विचार भी किया जाता हैं। जिसमें षडवर्ग को प्रमुख माना जाता हैं।

1.2 उद्देश्य-

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- ❖ षडवर्ग परिचय के बारे में जान सकेंगे।
- ❖ जातक की कुंडली में षडवर्ग के बारे में जान सकेंगे।
- ❖ नवमांश कुंडली से परिचित हो सकेंगे।
- ❖ होरा ,द्रेष्काण,, द्वादशांश, के बारे में जान सकेंगे।
- ❖ ज्योतिषशास्त्र में षडवर्ग के भूमिका के बारे में जान पाएँगे

1.3 ज्योतिष शास्त्र में षडवर्ग का स्वरुप

ज्योतिष शास्त्र मैं षड्वर्ग की विशेषता पर प्राचीन ऋषियों ने खगोलीय सिद्धांत का चिंतन करते हुए ज्योतिष शास्त्र की विशेषता को बताया हैं कि किसी भी मनुष्य का जन्म किसी न किसी कारण

से तथा उसका उद्देश्य भी कार्य की सिद्धि के लिए होता हैं। जिससे की यह ज्योतिष शास्त्र सिद्ध हो सकें। यहां प्राचीन दैवज्ञों ने मनुष्यों के भविष्य का चिंतन करते हुये किस तरह से जातक का जीवन निश्चित हो सके कि आने वाली घटनाओं से उसे पूर्व मैं ही ज्ञात हो सके जिससे वो सावधान रहकर अपना कार्य कर सकें। इन सभी भविष्य फल का कथन होरा शास्त्र, के द्वारा ही संभव हैं। किसी भी जातक के जन्म होने के पश्चात् उस जातक का भविष्य फल के कथन या कुंडली का निर्माण किसी विद्वान ज्योतिषी के द्वारा किया जाता हैं। जन्म कुंडली के माध्यम से लग्न स्पष्टादिक भभोग, भयात्, षष्ठी प्रमाण ,दशा महादशा तथा ग्रह स्पष्ट के द्वारा षड्वर्ग कुंडली का निर्माण किया जाता हैं। जिसका परिचय हमने पूर्व मैं आपको बताया था,गृह, होरा, द्वेष्काण नवमांश द्वादशांश त्रिशांश, ये षड्वर्ग कहलाते इन्हीं के माध्यम से जातक की कुंडली का निर्माण तथा सटीक फलादेश किया जाता है। जिसे ज्योतिष शास्त्र का मुख्य भाग कहां गया हैं। वर्ग किसे कहते हैं आइए जानते हैं। राशि से ही वर्ग को ज्ञात किया जाता हैं। मेष से मीन पर्यन्त 12राशियां होती हैं प्रत्येक राशि के 30, 30 अंश निर्धारित हैं। पूर्व के आचार्यों ने वर्ग को 10 प्रकार से विभाजित किया हैं। जो निम्नलिखित हैं गृह, होरा, द्वेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश सप्तमांश दशमांश कलाशं या षोडशांश षष्ट्यशं, ये दश वर्ग कहलाते हैं। गृह होरा द्वेष्काण नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश, सप्तमांश, इनको सप्तर्ग कहते हैं। तथा गृह, होरा, द्वेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश, ये षड्वर्ग के नाम से जाने जाते हैं। जिसका उपयोग जातक के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कब कब कोन सी समस्याएं आती रही हैं या आनेवाली हैं इन सभी घटनाओं से सुरक्षित होने के लिए हमारे प्राचीन दैवज्ञों ने अनुसन्धान के द्वारा प्रमाणित करके नवनीत के रूप मैं हमारे सामने इस अमृत ज्ञान को दिया हैं। जिससे हम सभी ज्योतिष शास्त्र को जान सकें तथा आने वाली विपदाओं से सुरक्षित बच सके। इसलिए ज्योतिष शास्त्र को वेदपुरुष का नेत्र कहा गया हैं जो अपने नेत्रों के द्वारा सही मार्ग को बता सके । तथा षड्वर्ग के द्वारा अलग अलग विषयों का फलादेश की गहराई तक जा सके जिससे मनुष्य मात्र का कल्याण हो सके ।

1.4 षडवर्ग परिचय

गृह –

कुंडली मैं षड्वर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका रहती हैं ये षड्वर्ग क्या हैं, इनका परिचय दिया जा रहा हैं गृह को ही लग्न कहा जाता हैं। जातक की कुंडली मैं जो जन्म समय का लग्न होगा वहीं गृह के नाम से जाना जाता हैं। लग्न किसे कहते हैं इस बारे मैं ज्योतिष शास्त्र के दैवज्ञ विस्तार पूर्वक वर्णन करते हैं कि **"लग्नातीति लग्नः"** जो लगता हैं वह लग्न है। क्या लगता हैं आइये जानते हैं। जन्म के

समय जब जातक का जन्म हुआ हो उस समय कोन सा लग्न चल रहा था इसी दृष्टि से लग्न को देखना चाहिए। किसी भी जातक का जन्म यदि वैशाख महीने मैं प्रातःकाल हुआ हो तो उस समय मेष लग्न चल रहा था। यहां पर यह बात स्पष्ट हो जाती हैं कि जिस लग्न मैं जातक का जन्म हो वह लग्न उस राशि को स्पर्श करता हैं वह लग्न कहलाता हैं। जिसे गृह के नाम से भी जाना जाता हैं।

होरा -

होरा किसे कहते हैं इसका मुख्य कार्य क्या होता हैं, होरा के बारे में जानते हैं। राशि के आधे भाग को होरा कहते हैं। यहां पर विषम राशियों का भी विचार किया जाता हैं। विषम राशि मैं प्रथम होरा सूर्य की तथा दूसरी होरा चन्द्र की होती हैं।

द्रेष्काण –

राशि के तृतीय भाग को द्वेष्काण या द्रेष्काण कहते हैं। एक राशि मैं तीन द्वेष्काण होते हैं। राशि का प्रथम द्वेष्काण उसी राशि का द्वितीय उससे पाचवी राशि तीसरा द्वेष्काण कहलाता हैं।

द्वादशांश -

राशि के बारहवें भाग को द्वादशांश कहते हैं। जो राशि है उससे प्रारम्भ करके बारह द्वादशांश द्वादश राशियों के होते हैं। जो द्वादशांश कहलाते हैं।

त्रिशांश-

राशि के तीसवें भाग को त्रिशांश कहते हैं। विषम राशि मैं प्रथम 5 डिग्री का स्वामी भोम होता हैं। इसी तरह से त्रिशांश का ज्ञान किया जाता हैं।

नवमांश -

एक राशि के नवें भाग को नवमांश कहां जाता हैं। मेष राशि से प्रारम्भ करके नवांश का ज्ञान किया जाता हैं। मेष से धनु, मकर से कन्या, तुला से मिथुन, कर्क से मीन , पुन इसी क्रम मे मेष से धनु, मकर से कन्या, तुला से मिथुन, कर्क से मीन, फिर से इसी क्रम में मेष से धनु, मकर से कन्या, तुला से मिथुन, कर्क से मीन, इसी प्रकार से नवमांश का ज्ञान करना चाहिए।

1.5 कुंडली से षडवर्ग विचार –

गृह –

लग्न चक्र, या राशि चक्र ही 'गृह कुण्डली' के नाम से जानी जाती है, जातक की गृह कुंडली ही लग्न कुंडली होती हैं। जेसे किसी जातक का जन्म लग्न कन्या है, जिस जिस भाव में जो राशि हो उन भावों में ग्रह स्थित होना ही वह गृहकुंडली के नाम से जाना जाता हैं।

होरा चक्र :-

किसी जातक का लग्न स्पष्ट 6.11°.42' है। तो विषम रशि में पहले अर्धभाग में सूर्य की होरा होती है। अतः होरा कुण्डली में लग्न स्थान पर सिंह राशि लिखी जाती है जिसे होरा कुंडली कहते हैं। ग्रह स्पष्ट चक्र से सूर्य सिंह के उत्तरार्ध में है। अतः विषम राशि के उत्तरार्थ की चन्द्र होरा में सूर्य है। चन्द्रमा 11.20°.55' है। यह सम राशि के उत्तरार्ध में होने से सिंह की होरा में ही रखा गया है। इसी प्रकार गुरु 5.000.33' है जो सम राशि के पूर्वार्ध में होने से कर्क की होरा में रखा गया है।

होरा कुंडली

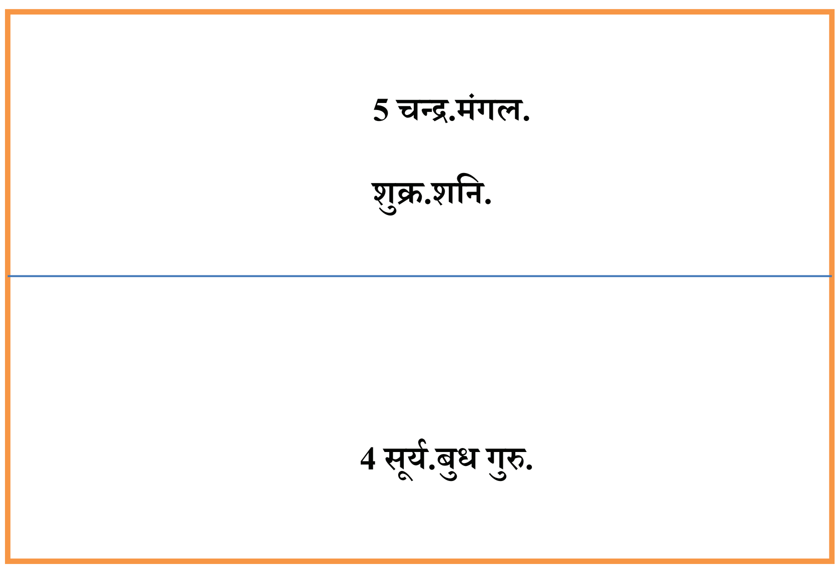

द्रेष्काण

द्रेष्काण का मान 10° अंश होने से प्रत्येक राशि में तीन द्रेष्काण होते हैं।

'द्रेष्काणपाः प्रथमपंचनवाधिपानाम्'

इस सूत्र के द्वारा द्रेष्काण क्रमशः1,5.9 राशियों के होते हैं। पूर्वोक्त उदाहरण में लग्न स्पष्ट 6.11°42' है। अतः तुला का दूसरा द्रेष्काण तुला से पांचवीं राशि कुम्भ का हुआ। अतः द्रेष्काण कुण्डली में लग्न स्थान पर कुम्भ राशि को रखकर व सब ग्रहों को द्रेष्काण चक्रानुसार तत्तद् राशियों में स्थापित किया जाता हैं।

द्रेष्काण कुंडली

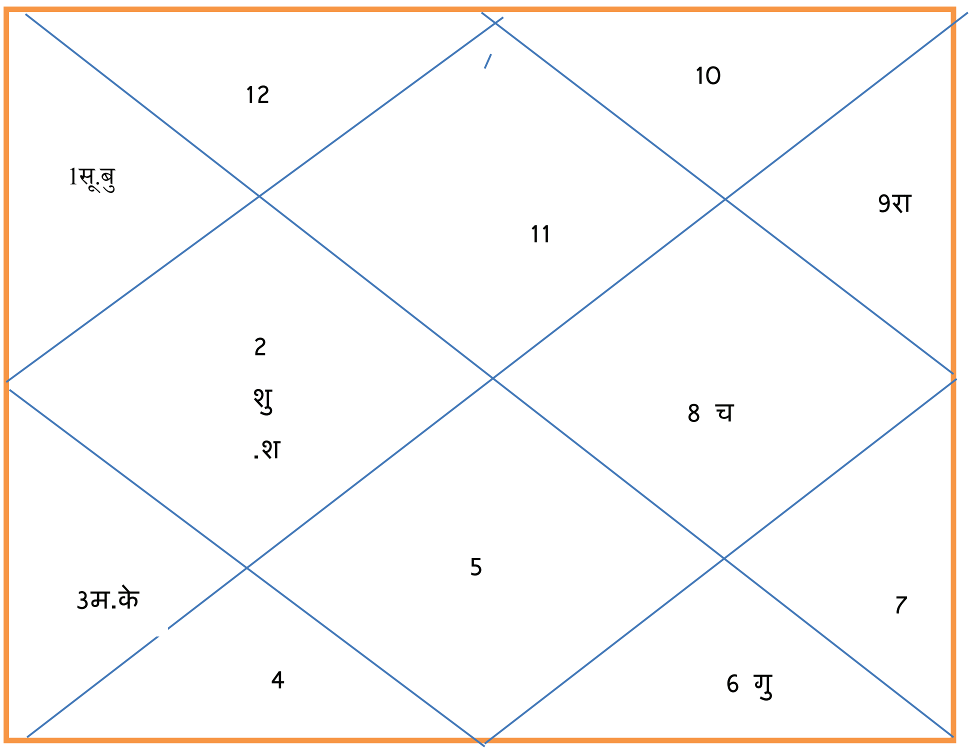

नवांश चक्रविधि-

एक नवांश का मान 3°.20' होता है तथा प्रत्येक में 9-9 नवांश '

"चरे स्वस्मात्, स्थिरे नवमभात् द्विस्वभावे पंचमभात"

के अनुसार चर में स्वराशि से, स्थिर में नौवीं राशि से व द्विस्वभाव में पाँचवी राशि होता है। इसी प्रकार से नवमांश की गणना करनी चाहिए।

उदाहरण, लग्नस्पष्ट 6.11°.42' में तीन नवांश व्यतीत होकर चौथा नवांश समान है। अतः तुला से चौथी राशिमकर नवांश लग्न राशि रहती हैं।

नवांश कुंडली

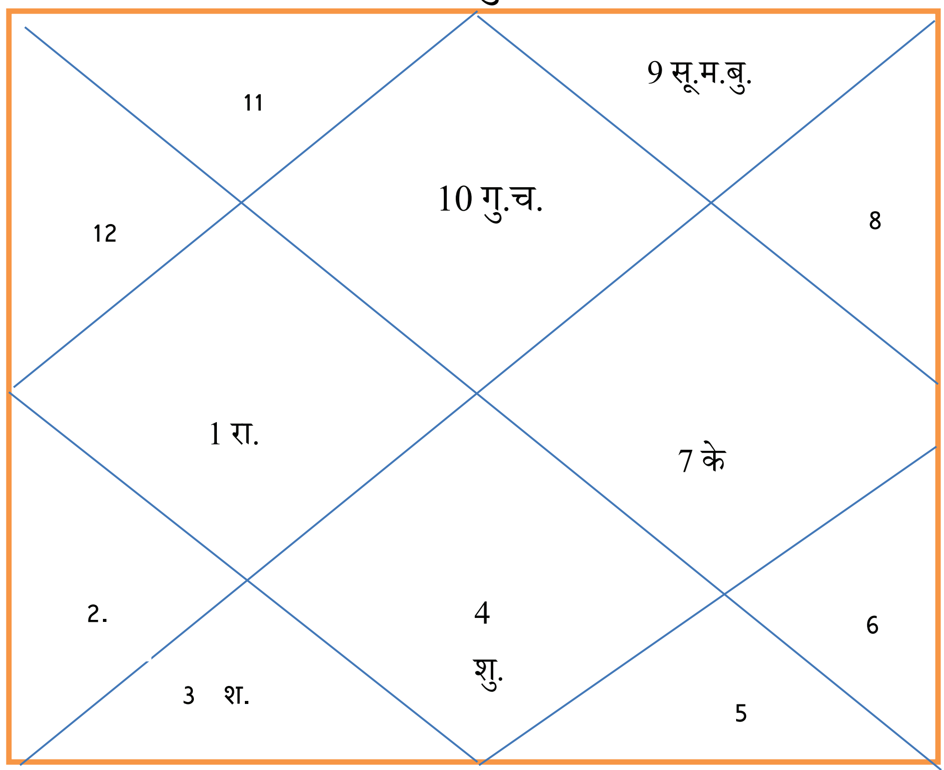

द्वादशांश विधि-

प्रत्येक राशि में 2°.30' प्रति द्वादशांश से 12 द्वादशांश होते हैं। इसमें सर्वत्र अपनी राशि से ही गणना की जाती है। अर्थात् मेष में मेष से, वृष में वृष से इत्यादि। 'द्वादशांशे स्वस्मात्' के द्वारा द्वादशांश विधि साधन करना चाहिए।

उदाहरण- लग्न स्पष्ट 6/11°/42' है। अतः तुला से पाँचवीं राशि कुम्भ द्वादशांश लग्न में रखी जाएगी।

द्वादशांश कुंडली

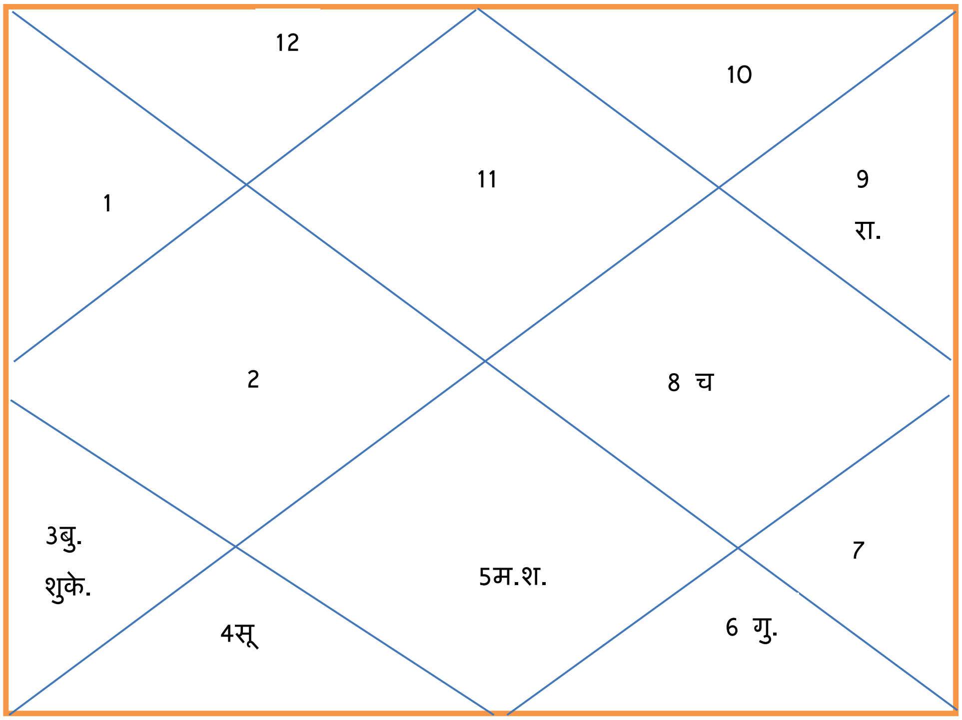

त्रिंशांश विधि :

राशि के तीसवे भाग को त्रिंशांश कहते हैं। 5/5/8/7 पाँच 5. अंश क्रम से विषम राशियों में व 5.7.8.5.5 अंश क्रम से सम राशियों में पांच पांच त्रिशांश होते हैं। 'भौमार्किज्यज्ञभार्गवाः'। मंगल, शनि, गुरु, बुध, शुक्र, विषम में व इससे विपरीत समय में अर्थात् शुक्र, बुध, गुरु, शनि, मंगल त्रिंशांशेश होते हैं।

उदा. लग्न 6.11°.42' विषम है। अतः तीसरा गुरु (धनु) त्रिशांश होता हैं। इसी प्रकार से कुंडली में ग्रहों की स्थापना की जाती हैं।

त्रिंशांश कुंडली

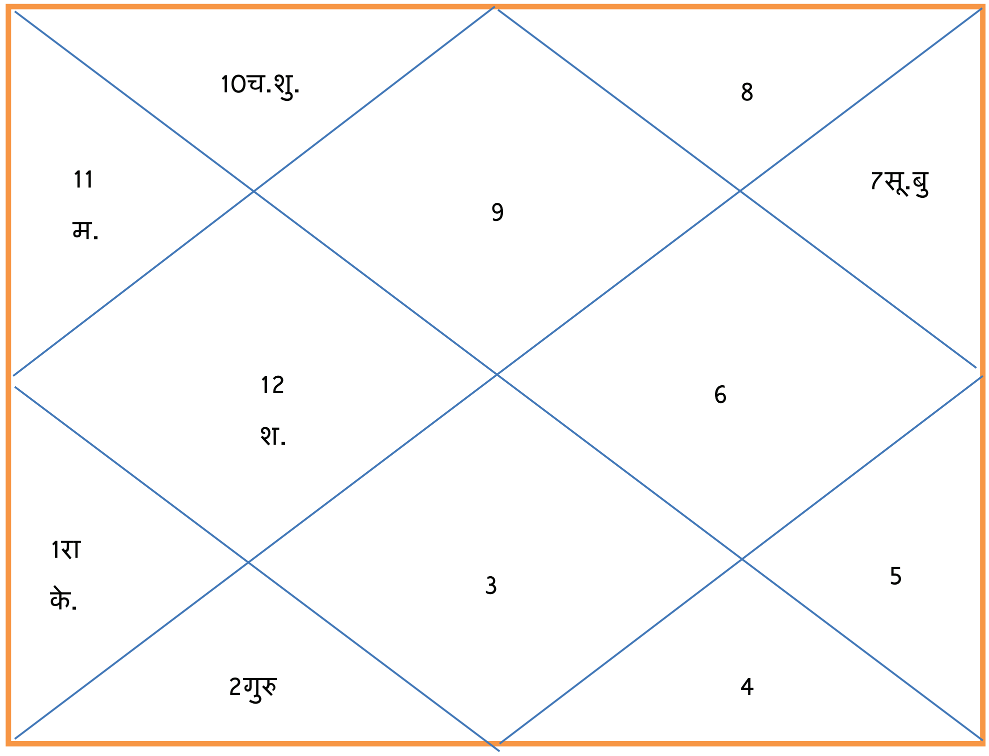

1.6 फलदीपिका के अनुसार षडवर्ग विचार

आचार्य मंत्रेस्वर ने फल दीपिका नामक ग्रन्थ में वर्णन किया है की एक राशि में ३० अंश होते हैं। इन राशियों को पूर्वाचार्यों ने दश प्रकार से विभाजित किया है। जिनका अलग-अलग नाम दिया गया हैं। इन्हीं विभाजनों को वर्ग कहा जाता हैं। जेसे

१. गृहक्षेत्र या राशि,

२. होरा,

३. द्रेष्काण,

४. सप्तमांश,

५. नवांश,

६. दशमांश,

७. द्वादशाश .

८. कलांश या षोडशांश,

९. त्रिंशांश

१०.षष्ठयंश

ये दश वर्ग हैं। इन दश वर्गों में १. गृह, २. होरा, ३. द्रेष्काण, ४. सप्तमांश, ५. नवांश, ६. द्वादशांश और ७. त्रिंशांश इनको सप्त वर्ग कहते हैं। सप्तवर्ग में सप्तमांश को छोड़कर १. गृह, २. होरा, ३. द्रेष्काण, ४. नवांश, ५. द्वादशांश तथा ६. त्रिंशांश को षड्वर्ग कहा जाता हैं।

क्षेत्रत्रिभागनवभागदशांशहोरा-
त्रिंशांशसप्तलवषष्टिलवाः कलांशाः ।
ते द्वादशांशसहिता दशवर्गसंज्ञा
वर्गोत्तमो निजनिजे भवने नवांशः॥

1 क्षेत्र (३०°)

2. द्रेष्काण (३०° /3 = १०°)

३. नवांश (30°९/=3° २०)

४. दशांश (30°/१०=3°)

५. होरा (30°/ =15°)

६. त्रिंशांश (३०°30 /=१°)

७. सप्तमांश (30°/7=4°'8.5)

८. षष्ठयंश (30°/60 = 0° 30')

९. कलांश (30° /16 =1° 52'30")

१०. द्वादशांश (30°/12=2° 30)

चर राशि का प्रथम नवांश, स्थिर राशि का पंचम नवांश और द्विस्वभाव राशि का नवम नवांश वर्गोत्तम संज्ञक कहलाता हैं।

" दशांशषष्ट्यंशकलांशहीनास्ते
सप्तवर्गाश्च विसप्तमांशाः।
षड्वर्गसंज्ञास्त्वथ राशिभावतुल्यं
नवांशस्य फलं हि केचित्"

इन दश वर्गों में दशांश, षष्ट्यंश और कलांश का त्याग करने पर भी १. क्षेत्र, २. होरा, ३. द्रेष्काण ४. सप्तमांश, ५. नवमांश, ६. द्वादशांश और ७. त्रिंशांश के रूप में वर्णित हैं। ये सप्तवर्ग होते

हैं। इस सप्तवर्ग में सप्तमांश का त्याग करने पर छः वर्ग या षड्वर्ग शेष रहता है, जो षडवर्ग के नाम से जाने जाते हैं। जो निम्नलिखित हैं।

“क्षेत्रस्यार्द्धं हि होरा त्वयुजि रविसुधांश्वोः समे व्यस्तमेतद्
द्रेष्काणेशास्त्रिभागैस्तनुसुतशुभपा द्वादशांशस्तु लग्नात्।
भोमार्कडियज्ज्ञशुक्राः शिशुजसमलवा ह्योजभे युग्मभे तद्-
व्यस्तं त्रिशांशा क्रियमकरतुलाः कर्कटाद्या नवांशाः”॥

होरा- राशि के आधे भाग (१५°) को होरा कहते हैं। विषम राशि में प्रथम होरा सूर्य की तथा द्वितीय होरा चन्द की मानी गयी हैं। सम राशि में इसके विपरीत प्रथम होरा चन्द्रमा और द्वितीय होरा सूर्य की कही गयी हैं।

द्रेष्काण - राशि के तृतीय भाग (३०°/3 = १०°) को द्रेष्काण कहते हैं। एक राशि में तीन द्रेष्काण होते हैं। राशि द्रेष्काण उसी राशि का, द्वितीय द्रेष्काण उससे सुत (पंचम) राशि का और तीसरा द्रेष्काण शुभ होता है।

द्वादशांश- राशि के बारहवें भाग को (३०°/१२=२° 30) द्वादशांश कहते हैं। जिसमे से 2°30 का एक द्वादशांश होता है। उसी राशि से प्रारम्भ कर क्रमशः बारह राशिया होती हैं।

त्रिंशांश- राशि के ३०वें भाग (३०°/३०=१°) को त्रिंशांश कहते हैं। विषमराशि में प्रथम ५° के स्वामी भौम, अग्रिम ५° शनि, अगले ८° के स्वामी बृहस्पति, उसके बाद के ७° के स्वामी बुध, और अन्तिम ५° के स्वामी शुक्र होते हैं।

समराशियों में अंशों के स्वामी विपरीत क्रम से चलते हैं। प्रथम ५° के स्वामी शुक्र, अग्रिम ७° के स्वामी बुध, अगले ८° के स्वामी बृहस्पति, उसके अग्रिम ५° के स्वामी शनि; और अन्तिम ५° के स्वामी मंगल ग्रह होते हैं।

नवांश- एक राशि के नवें भाग(३०°/९=३°२०) को नवमांश कहते हैं। मेष राशि से प्रारम्भ कर राशियों के प्रथम नवांश मेष, कर्क राशियों के क्रम से नवमांश का प्रारम्भ करते हैं।

एक राशि में ३० अंश होते हैं। इसका आधा १५° अर्थात् १५° की एक होरा होती है। विषमराशि के प्रथम १५° के स्वामी सूर्य और अन्तिम १५° अंश के स्वामी चन्द्रमा होते हैं।तथा

समराशियों में इसके विपरीत स्वामित्व होता है। समराशि में प्रथम १५° के स्वामी चन्द्रमा और अन्तिम १५° के स्वामी सूर्यादि ग्रह होते हैं।

1.7 वृह्जातक के अनुसार षडवर्ग विचार

द्रेष्काणहोरानवभागसंज्ञास्त्रिंशांशकद्वादशसंज्ञिताश्च।

क्षेत्र च यद्यस्य स तस्य वर्गो होरेति लग्नं भवनस्य चार्द्धम् ॥ ९॥

ग्रहों के ६ वर्ग होते हैं, द्रेष्काण-होरा-नवमांश त्रिशांश- द्वादशांश औरगृह ग्रहों के जो द्रेष्काणादि कहे गये हैं वे उनके वर्ग कहे गये हैं। ये द्रेष्काणादि षडवर्ग कहे जाते हैं। इन षडवगों में सूर्य-चन्द्र का त्रिशांश नहीं होता तथा भौमादि पञ्चतारा ग्रहों की होराभी नहीं होती हैं। इस तरह ग्रहों के पाँच ही वर्ग होते हैं। होरा राशि के आधे भाग (१५ अंश) को कहते हैं अर्थात् लग्न के आधे भाग को होरा कहते हैं।

1.8 सर्वार्थचिन्तामणि के अनुसार षड्वर्ग विचार

युजीन्दुसूयौं भवने रवीन्दू नाथौ त्वयुग्मे भवनस्य चान्हें।

राशिं त्रिधाकृत्य दृकाणमाहुस्तदीशपुत्रेश शुभाधिनाथाः।

राशि के आधे भाग को 'होरा' कहते है। इनमें युग्म (सम) राशियों में चन्द्र-सूर्य इस क्रम से राशि के पूर्वार्ध (पन्द्रह अंश) तथा उत्तरार्ध सोलह से तीस अंश तक होरा कहलाती हैं। अयुग्म राशियों (विषम राशियों) में सूर्य-चन्द्र- इस क्रम से होरा होते हैं। राशि के तीन भाग करने पर उन्हें द्रेष्काण, दृकाण, त्रिभाग या तृतीयांश कहा जाता है। उनके स्वामी प्रत्येक राशियों में स्वराशिपुत्र पञ्चम शुभ, (नवम) राशि का द्रेष्काण- इसी क्रम से होते हैं।

1.9 षड्वर्गों की विशिष्ट संज्ञाएं-

जिस प्रकार दस वर्गों में वैशिष्ट्यादि पारिजातादि संज्ञाएं होती हैं, उसी प्रकार षड्वर्गों तथा सप्तवर्गों में भी 'किंशुक' जातादि संज्ञाएं कही गयी हैं। इन सभी का विचार, मूल त्रिकोण व उच्चादि के आधार पर होता हैं।

1. जो दो वर्गों में विशिष्ट हो वह ग्रह की 'किंशुक' संज्ञा होती हैं।
2. जो तीन वर्गों में विशिष्ट हो तो उसे ग्रह की 'व्यंजन' संज्ञा कही गयी हैं।
3. जो चार वर्गों में विशिष्ट हो तो वह ग्रह की 'चामर' संज्ञा कहलाती हैं।

4. जो पांच वर्गों में विशिष्ट हो वह ग्रह की 'छत्र' संज्ञा होती हैं।
5. जो छ: वर्गों में विशिष्ट हो वह ग्रह की 'कुण्डल' संज्ञा होती हैं।
6. जो सात वर्गों में विशिष्ट हो तो वह ग्रह की 'मुकुट' संज्ञा कहलाती हैं।

बृहत पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार वर्ग कुण्डलियों के कुछ विचारणीय विषय भी होते हैं। जो इस प्रकार हैं, लग्न या प्रथम भाव से से शरीर का विचार किया जाता हैं। होरा कुंडली से सम्पत्ति का, द्रेष्काण से भ्रातृसुख का, सप्तमांश से सन्तति का, नवमांश से पत्नी का, दशमांश से उन्नति का, द्वादशांश से माता-पिता का, षोडशांश से राजसी वाहनों का, त्रिशांश से अरिष्ट फलों का, व षष्ट्यंश से समस्त शुभाशुभ फलों का विचार करना चाहिए।

इन वर्गों में लग्न, द्रेष्काण व नवांश मुख्य होते हैं। इनमें प्रायः सभी मुख्य शुभाशुभ फलों का विचार किया जाता हैं कहा गया है कि-

"वर्ण रूपगुणान्सुधीसुतनयान् नवांशेऽखिलम्"।।

पराशर ने भी षड्वर्गों में विश्वा बल निर्णय करते हुये कहा हैं, लग्नादि पद का क्रमशः 6/2/4/5/2/1/ विश्वा बल होता है। यदि सम्पूर्ण फल को यदि 20 अंक मानें तो उसमें से 6 अंक लग्न को, 2 अंक होरा को इत्यादि क्रम से फल जानना चाहिए। लग्न को 30%, होरा को 10%, द्रेष्काण को 20%, नवमांश को 25%, द्वादशांश को 10% व त्रिंशांश को 5%का महत्त्व देना चाहिए।

1.10 षड्वर्ग कुण्डलियों का फलादेश

यदि सभी वर्गों में पड़ने वाली लग्न राशियों में से अधिक जगहों पर शुभ ग्रहों की राशियाँ पड़ती हों तो लग्न को शुभ षड्वर्ग कहा जाता हैं। ऐसा लग्न शुभफल कारक होने के साथ साथ अपने सभी भाव फलों को विशेष बल प्रधान करता हैं।

उदाहरणार्थ - जन्म लग्न, भाव, भावेशादि स्थिति से या क्रूर संयोग से अशुभ होते हुये भी षड्वर्गों में शुभ स्थानों में बेठा हो तो शुभ फल में लाभ अल्प होता हैं। ठीक इसके विपरीत होने पर विपरीत फल की प्राप्ति होती हैं।

यदि द्रेष्काण, लग्न या नवांश में केन्द्र या त्रिकोण में कोई उच्च ग्रह हो तो श्रेष्ठ फलदायक होता है। इसमें भी केन्द्रगत उच्च ग्रह श्रेष्ठ राजयोग बनाता है।सामान्यतया जातक पद्धति में देखा गया हैं। जैसे द्रेष्काण से कर्मफल या भ्रातृसुख देखना है तो द्रेष्काण कुंडली के केन्द्रभावों में उच्च,

मूलत्रिकोण, स्वराशि गत या शुभ ग्रह शुभ कर्मफल देते हैं। द्रेष्काण से तृतीयेश यदि अच्छे भाव या राशि स्थिति में हो तो भ्रातृसुख प्राप्त होगा। सप्तमांश से 1/2/11 व केन्द्र त्रिकोणों में शुभ व बलवान् ग्रह धन की वृद्धि के सूचक माने गये हैं। कहा गया हैं।

'धानस्यनिचयं सप्तांशकात् चिन्तयेत्'

यदि कुंडली में सप्तमांश से तृतीयेश यदि शुभ व बली होगा तो विशेष भ्रातृसुख मिलता हैं। नवांशकुंडली से पत्नी-पुत्रादि या समस्त जातक के फल का विचार करना चाहिए। अतः नवांश से केन्द्र, त्रिकोणादि, सभी शुभ भाव तथा जन्म कुण्डली से भी विचार करने से शुभ होंगे तो शुभ फलों की अधिकता रहेगी। अथवा नवांश में पंचम स्थान से सप्तम स्थान तक भावेशादि विचार से बली होगा तो स्त्री-पुत्रादि का सुखप्राप्त होता हैं। इसी तरह द्वादशांश में भी विशेषतया केन्द्र भावों (4.7.10)स्थानों से माता, स्त्री व पिता का शुभाशुभ, त्रिंशांश में अष्टम भाव व द्वादश भाव व 3,6 भावों की शुभाशुभता से अरिष्ट विचार जन्म कुण्डली की तरह करना चाहिए। अतः सम्बन्धित भावों व भावेशों के साथ-साथ वर्ग लग्नेशों व वर्ग लग्न भावों की भी शुभाशुभता से विशेष फल विचार करना आवश्यक होता हैं। विचार किया जाय तो होरा कुण्डली में सभी क्रूर ग्रह सूर्य होरा में तथा सभी शुभ ग्रह चन्द्र होरा में नहीं हैं। अतः मिश्रित ग्रह होने से जातक मिश्रित स्वभाव, कठोरता व कोमलता मिश्रित होगा। लग्न में सूर्य की होरा आर्थिक स्थिति का धीरे-धीरे विकास करती हैं। इसी प्रकार द्रेष्काण कुण्डली में लग्नेश केन्द्र में स्वक्षेत्री है। केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह सन्तानादि सुखदायक है। लेकिन अष्टम में नीच पाप ग्रह व द्वादश में शनि भाइयों के लिए तथा धन संचय के लिए अरिष्ट योग बनाता है। नवांश लग्न में पंचमेश व सप्तमेश की केन्द्र स्थिति को देखकर स्त्री-पुत्रादिकों को अधिक सुख प्रदान करती है, परन्तु द्वादश भावों में पाप ग्रह होने से सुख की प्राप्ति अल्प होती हैं। इसी तरह त्रिंशांश कुण्डली में भी लग्न व अष्टम की शुभता अरिष्ट फलों में न्यूनता प्रदर्शित करती है। इसी प्रकार जातक की कुण्डली में षडवर्ग फल का विचार अवश्य करना चाहिए। जिससे की उस जातक की कुंडली देखकर षडवर्ग का विचार करके सही भविष्यफल का निर्धारण हो सके।

1.11 सारांश

अभी तक हमने ज्योतिष शास्त्र मैं वर्णित षड्वर्ग क्या हैं षड्वर्ग का विचार कुंडली में कहां किया जाता हैं। आपने इन विषयों का अध्ययन कर लिया हैं। षड्वर्ग को ज्योतिष शास्त्र का मुख्य विचारणीय बिन्दु माना गया हैं। हमारे प्राचीन दैवज्ञों, ऋषियों ने आकाशीय जनगणना का चिंतन

करते हुए खगोलीय ज्ञान के द्वारा ज्योतिष शास्त्र के बारे मैं जानकारी प्राप्त कर ग्रन्थों मैं इसका उल्लेख किया हैं। वराहमिहिर से लेकर कमलाकर, आर्यभट्ट प्रथम आर्यभट्ट द्वितीय, ने सिद्धांत ज्योतिष के माध्यम से ग्रह नक्षत्रों का विवेचन किया जिससे हमें ज्योतिष शास्त्र के विषय मैं जानने का अवसर मिला। होरा सिद्धांत तथा संहिता ये ज्योतिष शास्त्र के त्रिस्कन्ध कहे जाते हैं। जिसके द्वारा गणित, फलित,तथा पृथ्वी मैं स्थित भौतिक वस्तुओं से लेकर आपदा वृष्टि, व्रज इत्यादि का ज्ञान किया जाता रहा हैं। सिद्धांत ज्योतिष के द्वारा जातक की कुंडली का निर्माण तथा होरा शास्त्र के माध्यम से जातक की कुंडली का फलादेश किया जाता हैं कि भविष्य मैं आने वाला समय उस जातक को कब अनुकूल रहेगा और कब प्रतिकूल रहेगा इन सभी विषयों की जानकारी होरा शास्त्र के माध्यम से किया जाता हैं। ज्योतिष शास्त्र कुंडली निर्माण मैं षड्वर्ग विचार गृह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश, इनका विचार किया जाता है। जो महत्वपूर्ण माने जाते हैं। फलादेश की दृष्टि से भी षडवर्ग का विस्तार पूर्वक विचार किया जाता हैं। यदि मां, पुत्र का विचार करना हो तो किस कुंडली के माध्यम से विचार करें,गृह यानि लग्न से देह का विचार, होरा से सुख सम्पदा, द्रेष्काण से भाई,बहन,सुख दुख, नवमांश से स्त्री,तथा जातक फल, द्वादशांश से माता, पिता,तथा स्वयं का तथा अरिष्ट का विचार त्रिशांश कुंडली से करना चाहिए। ग्रह स्पष्ट करनें के बाद जातक के षड्वर्ग कुंडली का निर्माण कर दशा,अन्तर्दशा का भी विचार किया जाता हें। नवमांश किसे कहा जाय राशि के नवम भाग को नवमांश, राशि के 30 वें भाव को त्रिशांश कहते हैं गूढता से फलादेश के लिए षड्वर्ग कुंडली का विचार करना आवश्यक होता हैं। इन सभी बिंदुओं के माध्यम से ही जातक की कुंडली का फलादेश करना चाहिए आप सभी ने इस ईकाई मैं षड्वर्ग के बारें मैं जान लिया होगा।

1.12 पारिभाषिक शब्दावली

1. षड्वर्ग	जिसमें छ: वर्ग होते हैं
2. गृह	लग्न
3. नवमांश।	राशि का नवम भाग
4. जातक	बालक
5. फलादेश	भविष्य जानना
6. विपदा।	अरिष्ट
7. द्रेष्काण	राशि का तृतीय भाग
8. विषम राशि	1,3,5,7
9. आदित्य	सूर्य

10 जीव	गुरु
11.होरा	राशि का आधा भाग
12.अंगार	भौम
13.विशिष्ट संज्ञा	वर्गों की होती हैं।
14.व्यंजन संज्ञा	तीन वर्गों मैं विभाजित
15.मुकुट संज्ञा	7वर्गो मैं विशिष्ट
16.त्रिकोण।	5,9,भाव
17.त्रिशांश	राशि का तीसवां भाग

1.13 अभ्यास प्रश्न

1. षड्वर्ग किसे कहते हैं।
2. गृह से आप क्या समझते हैं।
3. फलदीपिका ग्रन्थ के लेखक।
4. ज्योतिष शास्त्र को वेद पुरुष का क्या कहा जाता हैं।
5. नवमांश किसे कहते हैं
6. एक राशि का 12 भाग क्या कहलाता हैं।
7. विषम राशि कोन कोन सी हैं।
8. कुडंल संज्ञा किसे कहते हैं।
9. त्रिशांश कुंडली से किसका विचार किया जाता हैं।
10 .केन्द्र स्थान कोन कोन से हैं।
11. मेष के सूर्य मैं कोन सा महीना प्रारंभ होता हैं।
12. गृह कुंडली से किसका विचार किया जाता है।
13. व्यय किस भाव का नाम हैं।
14. होरा शास्त्र से किसका विचार किया जाता हैं।
15. त्रिशांश कुंडली से किसका विचार किया जाता हैं।
16. दैवज्ञ किसे कहते हैं।
17. जो पांच वर्गों मैं विशिष्ट है उसकी संज्ञा हैं।
18. एक राशि के तृतीय भाग को कहते हैं।
19. सित किस ग्रह का नाम हैं।
20. जो दो वर्गों मैं विशिष्ट हो उसकी कोन सी संज्ञा होती हैं। .
21. चामर संज्ञा किसे कहते हैं।
22. खगोलीय गणित का ज्ञान किया जाता हैं।

23. द्वादशांश से किसका विचार किया जाता हैं।

24. नवमांश कुंडली से किसका विचार होता हैं।

1.14 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. गृह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश को होरा कहते हैं।
2. लग्न को ही गृह कहते हैं।
3. आचार्य मंत्रेश्वर
4. नेत्र
5.राशि के नवम भाव को
6. द्वादशांश
7. मेष, मिथुन, सिंह तुला, धनु, कुंभ
8. जो छह वर्गों मैं विशिष्ट होता हैं।
9. स्त्री तथा अनेक अरिष्टों का का
10. 1,4,7,10स्थान
11. वैशाख का महीना
12 . शरीर का
13. भाव का नाम
14. फलादेश का विचार
15. अरिष्टों का
16. जो विद्वान होता हैं
17. छत्र संज्ञा,
18. द्रेष्काण
19. शुक्र ग्रह का नाम
20. किंशुक संज्ञा
21. जो चार वर्गों मैं विशिष्ट होता हैं।
22. सिद्धांत ज्योतिष के द्वारा
23. माता पिता का विचार
24. स्त्री तथा जातक का

1.15 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. फलदीपिका आचार्य मंत्रेश्वर चौखम्बा सुभारती
2. वृहत् संहिता वराहमिहिर चौखम्बा

3. पाराशर होरा शास्त्र, पाराशर ऋषि
4. सर्वार्थ चिंतामणि

1.16 निबन्धात्मक प्रश्न

1. षड्वर्ग से आप क्या समझते हैं विस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए।
2. ज्योतिष शास्त्र मैं त्रिस्कन्ध का परिचय देते हुए प्रकाश डालिए।
3. नवमांश, त्रिशांश कुंडली का उदा. सहित वर्णन कीजिए ।
4. ज्योतिष शास्त्र के स्वरूप का विस्तार पूर्वक प्रतिपादन कीजिए।
5. षड्वर्ग कुंडली के द्वारा जातक के फलादेश पर प्रकाश डालिए।

इकाई -2 ग्रहों के मित्रामित्र

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 मित्रादि परिचय
2.4 ग्रहों के शत्रु मित्रादि विचार
2.5 फलदीपिका ग्रन्थ के अनुसार शत्रु मित्र विचार
2.6 वृहत् जातक के अनुसार शत्रु मित्र विचार
2.7 ग्रहों के तात्कालिक मित्र शत्रु विचार
2.8 फलदीपिका ग्रन्थ के अनुसार शत्रु मित्र विचार
2.9 सारावली ग्रन्थ के अनुसार मित्र, शत्रु विचार
2.10 वृहज्जातक के अनुसार तात्कालिक शत्रु मित्र विचार
2.11 वृहत्पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार पंचधामैत्री विचार
2.12 पंचधामैत्री विचार
2.13 सारांश
2.14 पारिभाषिक शब्दावली
2.15 अभ्यास प्रश्न
2.16 संदर्भ ग्रन्थ सूची
2.17 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAJY(N) – 221 के पाठ्यक्रम से सम्बंधित है। इस इकाई का शीर्षक – 'मित्रामित्र विचार' हैं इससे पूर्व आपने फलित ज्योतिष शास्त्र से जुड़े विभिन्न विषयो का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'मित्रामित्र विचार'के बारे में सम्पूर्ण अध्ययन करेंगे '**मित्रामित्र विचार**' फलित ज्योतिष का महत्वपूर्ण भाग है इसके ज्ञान से ज्योतिष शास्त्री के साथ साथ जनमानस को भी इस शास्त्र के प्रति विश्वास बढता रहता हैं। जिस कारण से यह ज्योतिष शास्त्र काल शास्त्र के रूप में प्रचलित होता रहता है। काल शास्त्र पर ही यह सृष्टी आधरित है,जिससे सृष्टी का कार्य चल रहा है। होरा शास्त्र का विचार केसे हो तथा इसका फल क्या होगा इन सभी का विचार कुंडली के द्वादश भावों के द्वारा ,मित्रामित्र इत्यादि के द्वारा ही फलित शास्त्र का ज्ञान संभव है।

इस इकाई में हम सभी मित्रामित्र विचार के विषय में जानने का प्रयास करते है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- मित्रामित्र विचार के बारे में जान सकेंगे ।
- ग्रहों के मित्र ,तात्कालिक मित्र ,एवं शत्रुओ का ज्ञान कर सकेंगे।
- ग्रहों के नेसर्गिक मित्र शत्रुओं को जान सकेंगे।
- जन्मांग कुंडली में भावो के साथ साथ मित्रामित्र का ज्ञान कर सकें।
- कुंडली के द्वारा पंचधा मैत्री को जान सकेंगे।

2.3 मित्रादि परिचय

प्रचीन काल में ऋषियों ने अपनी दूर दृष्टी के अनुसार खगोलीय पिंड का, ग्रहों का, नक्षत्रों का, ग्रहों के शत्रु मित्रादि का अवलोकन करते हुये यह स्पष्ट किया की मनुष्यों के जीवन में इनका बहुत ही प्रभाव पड़ रहा हैं। इस विषय को ध्यान में रखते हुये सम्पूर्ण ज्योतिष शास्त्र को दीप की भाति प्रज्वलित करने का यह महान कार्य किया। आगे चलकर यह ज्योतिष शास्त्र आगे बढ़ने लगा इसी ज्यातिष शास्त्र में मित्रामित्र का विचार किया जाता है। जन्म कुंडली में ग्रहों के मित्र ,शत्रु ,के द्वारा जातक के भविष्य फल तथा अन्यान्य विषयो का भी निर्णय किया जाता है। कोन सा ग्रह किसका मित्र है कोन सा शत्रु है। यदि जन्मांग कुंडली मकर लग्न की हो लग्नेश यदि पंचम भाव में

हो तो शनि और शुक्र दोनों मित्र है ,इन दोनों का फल शुभ ही होगा ,इसी प्रकार से जन्मांग कुंडली में मित्रामित्र का विचार किया जाता है जिससे संपूर्ण कुंडली का फलादेश ठीक हो सके।

2.4 ग्रहों के शत्रु मित्रादि विचार

प्राचीन ऋषियों ने ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री कैसे हो इस विषय मै ग्रहों का नैसर्गिक मित्र, शत्रु व,सम, का विचार कर निर्णय किया कोन ग्रह किसका मित्र होगा कौन शत्रु तथा कौन सम होगा इस विषय का बहुत ही गहनतम चिन्तन किया, जिससे की जन्मागं कुंडली के द्वारा मित्र शत्रु के माध्यम से जातक का फलादेश सत्य घटित हो सके।

आइए हम ग्रहों के मित्र शत्रु,सम,का विचार करते हैं।

''रवे:समो ज्ञ:सितसूर्यपुत्रावरी परे ते सुहृदो भवेयु:।
चन्द्रस्य नारी रविचन्द्र पुत्रौ मित्रे सम:शेषनभश्चरा: स्यु:
समौ सितार्की शशिजश्च शत्रुमित्राणि शेषा: पृथिवी सुतस्य।
शत्रु: शशी सूर्यसितौ च मित्रे समा: परे स्यु: शशिनन्दनस्य।।
गुरोर्ज्ञशुक्रो रिपुसंज्ञकौ तु शनि: समोऽन्ये सुहृदो भवन्ति।
शुक्रस्य मित्रे बुधसूर्यपुत्रौ समौ कुजार्यावितरावरी तो।।
शने: समौ वाक्पतिरन्दु सूनुशुक्रौ च मित्रे रिपव:परेऽपि
ध्रुव ग्रहाणां चतुराननेन शत्रुत्वमित्रत्वसमत्वमुक्तमम्।।

वृ.पा.हो.ग्र.गु.रुपाध्याय, श्लोक 57 -.60

महर्षि पाराशर द्वारा उल्लेखित इस चक्र के द्वारा आप समझ सकते है।

1. सूर्य का बुध सम,शुक्र तथा शनि शत्रु,तथा शेष ग्रह मित्र होते हैं।
2. चन्द्र ग्रह का सूर्य एवं बुध मित्र तथा अन्य सभी ग्रह सम होते हैं।
3. मंगलग्रह का शुक्र एवं शनि सम बुध शत्रु, तथा अन्य ग्रह मित्र हैं
4. बुध का चन्द्र शत्रु, सूर्य एवं शुक्र मित्र, तथा अन्य ग्रह सम होते हैं।
5. गुरु का बुध और शुक्र शत्रु, शनि सम तथा अन्य ग्रह मित्र होते हैं।
6. शुक्र ग्रह का बुध, शनि मित्र, मंगल तथा गुरु सम, तथा अन्य ग्रह शत्रु होते हैं।
7. शनि का गुरु सम, बुध तथा शुक्र मित्र, तथा अन्य सभी ग्रह शत्रु होते हैं।

सूर्यादि नवग्रहों के मित्र,सम, शत्रु,होते हैं परंतु राहु केतु किसी भी ग्रहों के मित्र,सम, शत्रु, नहीं होते हैं वस्तुत:सूर्यादि नवग्रहों के मित्र,सम, शत्रु,होते हैं परंतु राहु केतु किसी भी ग्रहों के मित्र,सम, शत्रु, नहीं होते हैं राहु केतु ग्रहों के मित्र, शत्रु,का वर्णन शास्त्रों मैं नहीं मिलता हैं। प्रायः शनि को ही राहु,कुज को केतु, कहा जाता हैं। इनका वर्णन प्रायःकुछ कुछ ग्रंथो में देखने को मिलता है।

फलदीपिका ग्रन्थ में आचार्य मंत्रेश्वर वर्णन करते हुए लिखते है की , राहु और केतु के भी मित्र शत्रु होते है।

मित्रता विच्छनिसितास्तमसोर्द्वयोस्तु,
भौम: समो निगदितो रिपवश्च शेषा:।।

नेसर्गिक चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चन्द ,मंगल ,गुरु ,	बुध ,	शुक्र ,शनि
चन्द	सूर्य .बुध .	भोम.गुरु.शुक्र.शनि.	
मंगल	सूर्य.गुरु.चन्द .	शुक्र.शनि .	बुध.
बुध	सूर्य,शुक्र .	मंगल.गुरु .शनि .	चन्द .
गुरु	सूर्य.चन्द. मंगल .	शनि .	बुध .
शुक्र	बुध.शनि.	मंगल.गुरु .	चन्द.सूर्य.
शनि	बुध.शुक्र	गुरु.	सूर्य. चन्द .मंगल .

2.5 फलदीपिका ग्रन्थ के अनुसार शत्रु मित्र विचार

प्रायः मित्र शत्रु सभी के मत मैं एक ही होते हैं परंतु अलग-अलग शब्दों के पर्यायवाची होने के कारण शब्दों मैं भिन्नता दिखाई देती है।

सौम्य: समोऽर्कजसितावहितौ खराशों
रिन्दोर्हितो रविबुधावपरे समा: स्यु:।
भौमस्य मन्दभृगुजौ तु समौ रिपुर्ज्ञ:
सौम्यस्य शीतगुररि: सुहृदौ सितार्कौ।।

फलदीपिका अ.2 ,श्लोक -21 ,

सूर्य ग्रह के बुध सम है (न मित्र हैं न शत्रु है),शुक्र और शनि शत्रु होते हैं (शेष सभी ग्रह चन्द्र,गुरु,मंगल सूर्य के मित्र होते हैं)सूर्य और बुध चन्द्रमा के मित्र तथा शेष (मंगल,गुरु,शुक्र,शनि सम होते हैं) शुक्र और शनि मंगल के सम होते हैं तथा बुध ग्रह शत्रु होता है (शेष ग्रह सूर्य, चन्द्र, गुरु,मित्र होते हैं) चन्द्रमा बुध ग्रह का शत्रु है शेष

मंगल,गुरु,शनि ग्रह सम होते हैं।

सुरेर्द्विषौ कविबुधो रविजा: सम:स्या
न्मध्यौ कवेर्गुरुकुजौ सुहृदौ शनइज्ञऔ।
जीव:सम:सितविदौ रविजस्यमित्रे
ज्ञेया अनुक्तखचरास्तु तदन्यथा स्यु:।।

फलदीपिका अ. 2, श्लोक 22,

बुध और शुक्र वृहस्पति के शत्रु होते हैं शनि सम होता है,(शेष सूर्य, चन्द्र,मंगल,मित्र होते हैं),शुक्र ग्रह के मंगल,गुरु,सम है बुध और शनि मित्र हैं(शेष सूर्य,और चन्द्र शत्रु होते हैं। शनि ग्रह का शुक्र और बुध मित्र, वृहस्पति सम (शेष सूर्य, चन्द्र,मंगल शत्रु होते हैं

2.6 वृहत् जातक के अनुसार शत्रु मित्र विचार

सभी शास्त्रीय ग्रन्थों मैं देवज्ञों द्वारा नैसर्गिक मैत्री चक्र का विचार एक ही प्रकार से किया हैं।

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्रणि शेषा रवे
स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदो शेषा: समा:शीतगो:।
जीवेन्दूष्णकरा: कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरि: सितार्की समौ
मित्रे सूर्य सितौ बुधस्य हिमगु: शत्रु: समाश्चापरे।।
सूरे: सौम्यसिसावरी रविसुतो मध्योपरे त्वन्यथा
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरु शुक्रस्य शेषाबरी।
शुक्रज्ञौं सुहृदौ सम: सुरगुरु: सौरस्य चान्येऽरयो
ये प्रोक्ता: स्वत्रिकोणभादिषु पुनस्तेऽमी मया कीर्तिता:।।

वृ.जातक अ.2, श्लोक 16,17

2.7 ग्रहों के तात्कालिक मित्र शत्रु विचार

इस अध्याय मैं हम ग्रहों के तात्कालिक मित्र,शत्रु के बारे मै अध्ययन करेंगे। तात्कालिक का अर्थ होता है शीघ्र, इस अध्याय मैं हम ग्रहों के तात्कालिक मित्र,शत्रु के बारे मै अध्ययन करेंगे। तात्कालिक का अर्थ होता है कुछ समय के लिए ग्रहों की मित्रता , यहां पर कभी कभी जो शत्रु ग्रह है वो भी मित्र हो जाते हैं। जैसे कुण्डली मैं फलादेश करते समय शत्रु या मित्र ग्रह का हम सभी विचार करते हैं परन्तु तात्कालिक मित्र शत्रु का विचार कम करते हैं , यहां पर आपने यह ध्यान देना है कि जन्मागं कुंडली मैं नैसर्गिक मैत्री,शत्रु के साथ साथ तात्कालिक मैत्री शत्रु का विचार अवश्य करना चाहिए जिससे की कुण्डली का फलादेश ठीक हो सके नैसर्गिक मैं मित्र शत्रु हो परन्तु तात्कालिक कुण्डली मैं मित्र या शत्रु से कुण्डली का फलादेश अलग हो जायेगा उसमें परिवर्तन होगा।आइए हम तात्कालिक मैत्री शत्रु के बारे मै जानते हैं। वृहत्पाराशर होरा शास्त्र मै महर्षि पाराशर जी वर्णन करते हुए लिखते हैं।

दशबन्ध्वाय सहज स्वान्त्यस्थास्त्ते परस्परं
तत्काले मित्रतां यान्ति रिपवोऽन्यत्र संस्थिता।।

वृ.पा.हो.ग्र.गु.रुपाध्याय, श्लोक 61,

यदि किसी जातक की कुण्डली मैं अथवा तात्कालिक प्रश्न लग्न से जिस भाव मैं जो ग्रह है उस ग्रह से 10,4,11,3,2,12 भावों मैं स्थित ग्रह मित्र होते हैं,इसके अलावा अन्य ग्रह 1,5,6,7,8,9 भावों मैं स्थित हो तो वे शत्रु होते हैं। उदा.के रुप मै इस कुण्डली के माध्यम से आप समझ सकते है।

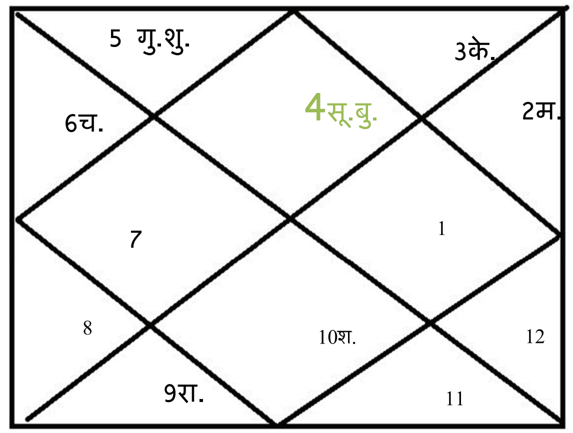

इस कुंडली मैं हम ग्रहों की स्थिति के अनुसार तात्कालिक मित्र, शत्रु,को समझ पायेंगे यहां पर हम सूर्य ग्रह के मित्र शत्रु ग्रह का अध्ययन करेंगे, सूर्य ग्रह से 1,मैं बुध,2मै शुक्र, 3 में चन्द्र,7में शनि,11मै मंगल हो तो नियमानुसार सूर्य ग्रह के मंगल,शुक्र, वृहस्पति,एवं चंद्र तात्कालिक मित्र होते हैं , बुध ,शनि तात्कालिक शत्रु होते हैं इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी तात्कालिक मित्र, शत्रु, विचार करना चाहिए जिससे की जातक का भविष्य फल सही घटित हो सकें।

तात्कालिक मित्रामित्र चक्र

ग्रह	**सूर्य**	**चन्द**	**मंगल**	**बुध**	**गुरु**	**शुक**	**शनि**
मित्र	गुरु.चन्द मंगल .शुक	सूर्य.बुध. गुरु.शुक्र	सूर्य.बुध गुरु. शुक्र	गुरु.शुक्र चन्द.मंगल	सूर्य.चन्द.मंगल	चन्द .मंगल सूर्य बुध	
शत्रु	शनि	शनि.मंगल	चन्द.शनि	सूर्य शनि	शुक्र.शनि.मंगल	गुरु. शुक्र	गुरु.शुक्र.चन्द मंगल.सूर्य .बुध

2.8 फलदीपिका ग्रन्थ के अनुसार शत्रु मित्र विचार

फल दीपिका ग्रन्थ मैं आचार्य मंत्रेश्वर वर्णन करते हुए लिखते हैं कि यदि दो ग्रह एक दूसरे से परस्पर तृतीय, चतुर्थ, द्वितीय,दशम,द्वादश,तथा एकादश भावों मैं स्थित हो तो तात्कालिक मित्र होते है इसी तरह से ग्रहों के तात्कालिक मित्र शत्रु का विचार करना चाहिये।

अन्योन्यं त्रिसुखस्वखान्त्यभवगास्तत्कालमित्राण्यमी
तन्नैसर्गिकमप्यवेक्ष्य कथयेत्तस्यातिमित्राहितान्।
शौर्याज्ञे रविजो गुरुर्गुरुसुतो भौमश्चतुर्थाष्टमौ
पूर्णं प्रति सप्तमं च सकलास्तेष्वधिवृद्धया क्रमात्।

फलदीपिका अ.2, श्लोक 23

2.9 सारावली ग्रन्थ के अनुसार मित्र, शत्रु विचार

सारावली ग्रन्थ मैं भी आचार्य कल्याण देव लिखते हैं यदि किसी जातक की कुण्डली मैं ग्रह जिस भाव मैं हो उस भाव से अन्य ग्रह किस किस स्थानों मैं है इसके अनुसार ही तात्कालिक मित्र, शत्रु का विचार करना आवश्यक होता है।जैसे 10,11,12, भावों तथा 2,3,4भावों मैं स्थित ग्रह तात्कालिक मित्र होते है।

व्ययाम्बुधनखायेषु तृतीये सुहृद: स्थिता:।
तत्कालरिपव: षष्ठसप्ताष्टैकत्रिकोणगा:।।

सारावली.अ.4,श्लोक -30,

2.10 वृहज्जातक के अनुसार तात्कालिक शत्रु मित्र विचार

ज्योतिष शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रंथ वृहज्जातक मैं आचार्य वराहमिहिर लिखते हैं यदि किसी भी जातक की कुण्डली मैं तात्कालिक प्रश्न लग्न से सूर्य या अन्य ग्रहों से 2,3,4,10,11,12भाव मैं जो ग्रह होता है उस समय प्रश्न लग्न,या जन्मांग कुंडली का विचार किया जाता हैं।

वृ.जा.अ 2, श्लोक 18,

2.11 वृहत्पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार पंचधामैत्री विचार

वृहत्पाराशर होरा शास्त्र मै महर्षि पाराशर लिखते हैं कि स्वाभाविक तथा तात्कालिक रुप से मित्र का होना आवश्यक होता है,पंचधा मैत्री पांच प्रकार की होती है जिसके द्वारा शत्रु मित्र इत्यादि का ज्ञान होता है तथा आवश्यक होता है,पंचधा मैत्री पांच प्रकार की होती है जिसके द्वारा शत्रु मित्र इत्यादि का ज्ञान होता है तथा जातक के ऊपर इसका फल घटित होते रहता हैं।

तत्काले च निसर्गने च मित्रं चेदधिमित्रकम्
मित्रों मित्रसमत्वे तु शत्रुः शत्रुसमत्वके
समो मित्ररिपुत्वे तु शत्रुत्वे त्वधिशत्रुता
एवं विविच्य दैवज्ञै जातकस्य फलं वदेत्।।

वृ.पा.हो.ग्र.गु.रुपाध्याय, श्लोक.62 -63

अर्थात् जो स्वाभाविक -तथा तात्कालिक रुप से परस्पर मित्र हो वह अधिमित्र कहलाता है। इसी प्रकार एक जगह से मित्र एक जगह से सम हो तो वह मित्र कहलाता है।एक स्थान से यदि शत्रु है और दूसरे स्थान से मित्र हो तो वह ग्रह सम कहलाता है। इसी प्रकार एक तरफ सम हो दूसरी तरफ शत्रु हो तो वह ग्रह शत्रु कहलाता है,यदि दोनों तरफ से शत्रु, शत्रु ग्रह हो तो यह अधि शत्रु कहलाता है। उदाहरण के रुप मै आप देख सकते हैं। जैसे सूर्य ग्रह का चन्द्र तात्कालिक मित्र हैं और नैसर्गिक मैं भी सूर्य का चन्द्र मित्र हैं तो यह अधिमित्र हो जाता है। जिसका फल सही हो सके। सूर्य का शनि तात्कालिक शत्रु है तथा नैसर्गिक मैं भी शत्रु है तो यहां अधिशत्रु हो जाता हैं।इसी तरह सूर्य का बुध तात्कालिक शत्रु है तथा नैसर्गिक में मै भी सम है। अतः सूर्य का बुध शत्रु है तथा सूर्य का चंद मित्र है।इसी तरह से अन्य ग्रहों का भी विचार करना चाहिए जिससे की ज्योतिष के क्षेत्र मैं आगे बहुत उन्नति हो सके तथा इसका फल घटित हो सकें, इस चक्र के द्वारा आप समझ सकेंगे।

पञ्चधा मैत्री चक्र

ग्रह	**सूर्य**	**चन्द**	**मंगल**	**बुध**	**गुरु**	**शुक्र**	**शनि**
अधिमित्र	चन्द.मंगल गुरु.	सूर्य.बुध.	सूर्य.गुरु .	शुक्र.	सूर्य.चन्द.	बुध.	-
मित्र	-	वृहस्पति. शुक्र.	शुक्र.	मंगल.गुरु	-	मंगल.	-

सम	शुक्र.	-	चन्द.बुध.	सूर्य .चन्द	मंगल.बुध.	सूर्य.चन्द शनि .	बुध. शुक्र.
शत्रु	बुध	मंगल.शनि .	शनि .	शनि	शनि.	गुरु.	गुरु
अधिशत्रु	शनि	-	-	-	शुक्र .	-	सूर्य. चन्द. मंगल .

2.12 फलदीपिका ग्रंथ के अनुसार पंचधामैत्री विचार

ग्रहों की मित्रता परस्पर दो प्रकार से होती है। नैसर्गिक तथा तात्कालिक मित्रता ,ग्रह जिस भाव मैं स्थित रहता है उस भाव से द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, एकादश,द्वादश ,दशम स्थानों मैउनके तात्कालिक मित्र होते हैं।इनसे अन्य भावों मैं स्थित ग्रह शत्रु होते हैं,इन दोनों की मित्रता,शत्रुता से पंचधामैत्री का विचार किया जाता है हर व्यक्ति की कुण्डली मैं यह स्थान एक ही रहेगा परन्तु ग्रहों की स्थिति बदल जायेगी जिससे की पंचधामैत्री मैं अन्तर आ जायेगा।इसी प्रकार से इसका विचार जातक की कुण्डली मैं ध्यान पूर्वक करना चाहिए। इसी प्रकार आगे हम पंचधामैत्री को इस प्रकार समझनें का प्रयास करेंगे।

नैसर्गिक मित्र +तात्कालिक मित्र= अधिमित्र,

नैसर्गिक सम + तात्कालिक मित्र = मित्र,

नैसर्गिक शत्रु+ तात्कालिक मित्र = सम,

नैसर्गिक सम+ तात्कालिक शत्रु= शत्रु,

नैसर्गिक शत्रु+ तात्कालिक शत्रु= अधिशत्रु

इसी प्रकार से आप कुंडली के माध्यम से पंचधामैत्री का विचार कर सकते हैं तथा अलग अलग कुण्डली का निर्माण करके भी इसका अभ्यास कर सकते हैं।

2.13 सारांश

इस ईकाई मैं ग्रहों के मित्र, शत्रु, सम, तात्कालिक, पंचधामैत्री, इन सभी विषयों पर शास्त्रीय मत के अनुसार विचार कर वर्णन किया गया हैं, की अलग अलग ज्योतिष के ग्रन्थों के द्वारा भी मित्रामित्र, पंचधामैत्री, तात्कालिक,मैत्री का भी विचार किया गया है जिसके द्वारा यह स्पष्ट हो सके कि कुछ शास्त्रीय ग्रन्थों मैं मित्र,शत्रु का विचार एक ही है। अब आप आगे इसमें समझेंगे की मित्र, शत्रु ,का विचार कहां पर किया जाता हैं।मित्र, शत्रु का विचार जातक की कुण्डली मैं पूर्ण रूप से फलादेश के लिए किया जाता है जिसके माध्यम से हमें जातक के ग्रह के अनुसार तात्कालिक, पंचधामैत्री, नैसर्गिक मैत्री का ज्ञान कैसे हो सके इन सबको जानने के लिए हमें मित्रामित्र का विचार करना आवश्यक होता हैं। बिना मित्र,शत्रु के हम जातक का भविष्य सटीक बतानें मैं असफल हो जाते हैं। इसलिए एक अच्छे भविष्य फल के लिए इन सबका ज्ञान होना आवश्यक होता है। नैसर्गिक मैत्री में केवल शत्रु,मित्र ,सम, का विचार किया जाता है, परन्तु तात्कालिक मैत्री मैं कुछ अल्प समय के लिए भावों के माध्यम से जैसे 2,3,4,10,11,12,जिस भाव मैं जो ग्रह है उस भाव से यदि इन सभी स्थानों मैं ग्रह हो तो यह मैत्री भाव का संबन्ध स्थापित करता है। इसके अतिरिक्त जिस भाव मैं जो ग्रह है उससे यदि इन भावों मैं 1,5,6,7,8,9,ये ग्रह हो तो यह शत्रुता का संबंध स्थापित करता है। जातक की कुण्डली के माध्यम से इस सम्पूर्ण विषय को समझा जा सकता हैं। इसलिए प्रथम भाव से लेकर द्वादश भाव पर्यन्त राशियों के साथ मित्रता देखी जाती है। कोन सी मित्रता है कोन सी नहीं उसका फल क्या होगा तात्कालिक मित्रता है तो उसका फल क्या होगा पंचधामैत्री,की मित्रता का फल क्या होगा , नैसर्गिक मित्रता का क्या फल होगा,इन सबका विचार करना अतिआवश्यक होता है यह शास्त्र का नियम है। इसी तरह से हम एक सही भविष्य फल के लिए इन सबकी मदद लेते हैं ज्योतिष शास्त्र हमेशा नेत्र के रुप मैं एक सफल भविष्य को निश्चित करनें मैं सफल रहा है,(ज्योतिषं नेत्र उच्यते) ओर रहेगा इन सबका वर्णन इन ग्रन्थों मैं प्राप्त होता है,इस ईकाई के माध्यम से आप सभी मानवहित के साथ साथ ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान को प्राप्त करनें तथा समझनें का प्रयास करेंगे।

2.14 पारिभाषिक शब्दावली

1. जीव – वृहस्पति
2. सित - शुक्र
3. तनु - लग्न
4. रिपु – 6 वा भाव
5. त्रिकोण – 5,9,भाव
6. त्रि त्रिकोण- 9 , भाव ,

7. भू सुत- मंगल ,
8. अर्क - रवि ,
9. सूर्य सुत – शनि ,
10. कंटक स्थान – 1,4, 7, 10,
11. नेसर्गिक - प्राकृतिक
12. तात्कालिक- अल्प समय के लिए
13. पंचधा – पांच प्रकार की मित्रता
14. पणफर – 2, 5, 8 ,11,
15. द्विस्वभाव- 3, 6,9, 12,
16. चर - 1, 4, 7, 10,

2.15 अभ्यास प्रश्न एवं उत्तर

1. सूर्य के कितने मित्र ग्रह है 3,
2. सूर्य के कितने शत्रु ग्रह है - 2,
3. चन्द्र,मंगल गुरु,किस ग्रह के मित्र है - सूर्य
4. किस ग्रह का कोई भी ग्रह शत्रु नहीं है - चन्द्रमा
5. चन्द्र, मंगल, सूर्य किस ग्रह के शत्रु है - शनि
6. जिस भाव मैं जो ग्रह है उससे दशम भाव

   मैं ग्रह क्या कहलाता है – मित्र

7. ग्रह से तृतीय भाव मैं स्थित ग्रह क्या कहलाता है – मित्र
8. ग्रह से नवम भाव मैं स्थित ग्रह क्या कहलाता है - शत्रु
9. तात्कालिक मित्र स्थान स्थान कोन कोन है - 10,11,12,2,3,4,
10. सुत किस भाव का नाम है - 5 भाव का
11. पंचधामैत्री के कितने प्रकार होते है - पांच
12. 'शत्रूमन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवे:'

    यह श्लोक किस ग्रन्थ का है। - वृहज्जातक

13. सम+शत्रु क्या होते हैं - शत्रु,
14. शत्रु+शत्रु क्या होगा - अधिशत्रु,

15. फलदीपिका ग्रन्थ के लेखककोनहै	-	आचार्य- मंत्रेश्वर जी
16. शुक्र ग्रह का मित्र कोन है	-	बुध,शनि,
17. बुध का शत्रु कोन है	-	चन्द्रमा
18. सौम्य किस ग्रह को कहते है	-	बुध
19. इन्दु किस ग्रह का पर्यायवाची है	-	चन्द्रमा
20. गुरु ग्रह का सम ग्रह कोन है		शनि -

2.16 संदर्भ ग्रन्थ सूची

ग्रन्थ	**लेखक**	**व्याख्याकार**
वृहत्पाराशर होरा शास्त्र	महर्षि पाराशर, व्याख्याकार	डा. देवेन्द्र नाथ झा,
फलदीपिका -	आचार्य मंत्रेश्वर जी	
वृहत्जाजक -	आचार्य वराहमिहिर,	केदारदत्त जोशी
सारावली -	आचार्य कल्याणवर्मा, व्याख्याकार	मुरलीधर धर चतुर्वेदी,
उत्तरकालामृतम् -	कालिदास,	जगन्नाथ भसीन,

2.17 निबन्धात्मक प्रश्न

1. तात्कालिक मित्र शत्रु किस प्रकार से होते हैं? इस विषय पर 1500 शब्दो का निबंध लिखिए।
2. ग्रहों के नैसर्गिक मित्र शत्रु का चक्र सहित वर्णन कीजिए।
3. वृहज्जातक ग्रन्थ के अनुसार नैसर्गिक मित्र शत्रु का उल्लेख कीजिए।
4. वृहत्पाराशर होरा शास्त्र के अनुसार तात्कालिक, मित्र, शत्रु का वर्णन कीजिए।
5. पंचधामैत्री का विस्तार से वर्णन कीजिए।
6. फलदीपिका ग्रन्थ के अनुसार तात्कालिक, नैसर्गिक, पंचधामैत्री का चक्र सहित स्पष्ट उल्लेख कीजिये ।

इकाई -3 ग्रहों की अवस्थादि विचार

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 अवस्था परिचय
3.4 बालादि अवस्था विचार
3.5 दीप्तादी अवस्था विचार
3.6 दीप्तादी अवस्था के फल
3.7 फलदीपिका के अनुसार अवस्था विचार
3.8 लाजित्तादी, क्षोभित, क्षुधित-तृषित ग्रहदशा फल
3.9 स्नानादि अवस्था विचार
3.10 शयनावस्था के प्रकार एवं फल
3.11 सारांश
3.12 पारिभाषिक शब्दावली
3.13 अभ्यास प्रश्न
3.14 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.15 संदर्भ ग्रन्थ सूची
3.16 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई बी.ए.जे.वाई .(N)-221 पाठ्यक्रम से सम्बंधित है। इस इकाई का शीर्षक है ग्रहों की अवस्थादि विचार, ज्योतिष शास्त्र प्रत्यक्ष शास्त्र के रूप मैं जाना जाता रहा हैं। जो किसी भी समस्या को होने से पूर्व प्रत्यक्ष रुप मैं जातक को संकेत करता हैं। ज्योतिष शास्त्र मैं जातक की समस्या कैसे समाप्त हो सके उसके लिए ग्रहों की अवस्था का विचार करना अतिआवश्यक होता हैं। जो अवस्थादि का सही फलादेश कर सके। ये ग्रहों की अवस्था क्या होती हैं, इसका विचार कहां किया जाता हैं, इन सभी का विचार हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से ज्ञात करते हैं। राशि के 30अंशो ओर तीन भागों मैं विभाजित कर प्रथम 10अंश में ग्रह की जाग्रत अवस्थाये, द्वितीय भाग में विभाजित रहने से 10अंश से 20अंश तक स्वप्नावस्था , इसके बाद अन्तिम 10अंशो मैं सुप्तावस्था होती हैं, ज्योतिष शास्त्र मैं हम बालादि अवस्था के बारे मैं भी अध्ययन करेंगे। जिससे हमें अवस्था के द्वारा जातक के भविष्य का सही फलादेश प्राप्त हो सके। इन सभी बिंदुओं मैं अवस्थादि विचार, तथा अवस्थाओं के फल के बारे मैं जानने का प्रयत्न करेंगे। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से हमारे प्राचीन ऋषियों ने मनुष्य के कल्याण के लिए जातक शास्त्रों को लिखकर जनकल्याण का कार्य किया हैं, जो हमको देखनें को प्राप्त होता हैं। बालादि अवस्थाओं मैं किन किन से फल की प्राप्ति होती है, इन सभी का उल्लेख भी ज्योतिष शास्त्र मैं वर्णित हैं। आइए हम ग्रहों की अवस्था के बारे मैं आगे विस्तृत रूप से अध्ययन करेंगे ।

3.2 उद्देश्य

- ❖ ग्रहों की अवस्थाओं से परिचित हो सकेंगे।
- ❖ बालादि पांच अवस्थाओं के बारे मैं जान सकेंगे ।
- ❖ दीप्तादि अवस्था तथा इसके फल के बारे मैं समझ सकेंगे1
- ❖ विभिन्न ग्रंथों के मतानुसार ग्रहावस्था को समझ सकेंगे।
- ❖ शयनावस्थाओं का परिचय तथा फल के बारें मैं जान पायेंगे ।
- ❖ जातक की कुंडली मैं ग्रहावस्था के फलादेश को ज्ञात करेंगे।

3.3 अवस्था परिचय

हमारे ज्योतिषी दैवज्ञों ने जातक के भविष्य फल को अवस्था विचार के माध्यम से ज्ञात करनें के लिए आवश्यक कहा हैं। जिससे कि जातक का भविष्य फल सही प्रकार से जाना जा सके तथा जातक के ऊपर अनेकानेक समस्याओं से छुटकारा पा सके। इसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र में अवस्था विचार का अलग ही महत्व माना जाता है। बलादि अवस्था, दीप्तादि, अवस्था, शयनोपग्रहावस्था, लाजितादी अवस्था चैतन्यता आदि अवस्था का विचार जातक की कुंडली में किया जाता हैं। जातक की कुंडली में ग्रहों का प्रभाव अवस्था के अनुसार किया जाता है, यह भी देखा गया हैं कि यदि बालक के ग्रह अवस्थागत है तो वह किस फल को देने वाला होगा। बाल, कुमार, युवा, किशोरावस्था. मृतावस्था, इन सभी के माध्यम से ग्रहों का अवलोकन करना चाहिए। यदि किसी जातक का कन्या लग्न हैं शनि ग्रह चतुर्थ भाव में बैठा हो तो यहां शनि ग्रह को देखना होगा कि किस अवस्था मैं गौचर कर रहा है उसी प्रकार से ग्रह अवस्था के अनुसार जातक को फल की प्राप्ति कराता है। इसी तरह से बाल, युवा, इत्यादि अवस्था का विचार करनें से ही सही फलादेश, किया जा सकता है। जिसका की जातक के ऊपर फल घटित हो सके।

3.4 बालादि अवस्था विचार

वैदिक ज्योतिष में ग्रहों की कई प्रकार की अवस्थाओं का वर्णन मिलता है । यह अवस्थाएँ ग्रहों के अंश अथवा अन्य कई तरह के बलों पर आधारित होती है। इन्हीं अवस्थाओं में से ग्रहों की एक अवस्था बालादि अवस्थाएँ होती है। जिनमें ग्रहों को उनके अंशों के आधार पर बल मिलता है, बालादि अवस्था में सम राशि में स्थित ग्रह का बल तथा विषम राशि में स्थित ग्रह का बल अलग अलग प्रकार से देखने को मिलता हैं। इन सभी बलों के अनुसार ही जातक अपने जीवन में ग्रहों के फलो को भोगता रहता है। तथा बालादि अवस्था में ग्रहों के बल उनके अंश तथा राशि पर आधारित होते है। राशि का महत्व इसलिए है क्योंकि सम राशि में स्थित ग्रह का फल विषम राशि में स्थित ग्रह से अलग हो सकता है। बाल, कुमार, युवा, वृद्ध, मृत ये पांच अवस्थाएं एवं स्वप्न जाग्रत, सुषुप्ति अवस्थाओं का विवेक हम आगे प्रकरण में अध्ययन करेंगे । इनमें से बालावस्था में ग्रह अपना थोड़ा-सा फल देने में सक्षम हो पाता है, कुमार अवस्था में जातक को आधा फल, युवावस्था में सम्पूर्ण शुभ फल, वृद्ध एवं मृतावस्था वाला ग्रह अशुभ फल देनेवाले होता हैं । इसी तरह जाग्रत अवस्था कार्य साधन कराने वाली, स्वप्न अवस्था मध्यम फल वाली व सुषुप्ति निष्फल जाननी चाहिए। स्वरशास्त्र मेंअवस्थाओ के बारे में वर्णन किया जाता हैं । अभिलाषी व असूर्यगावस्था जो ग्रह अपने उच्च में पहुँचना ही चाहता हो तो वह 'उच्चाभिलाषी', मूल त्रिकोण में

पहुँचने ही वाला 'मूलत्रिकोणाभिलाषी' एवं स्वक्षेत्र में पहुँचने को उद्यत ग्रह 'स्वक्षेत्राभिलाषी' कहलाता हैं। ऐसे ग्रह जितने ही अधिक अपनी उच्चादि राशियों के निकट होते हैं उतना ही अच्छा फल उसी प्रकार देते हैं। इसी प्रकार सभी उच्चादि ग्रह यदि सूर्य की अधिष्ठित राशि से आगे होंगे तो विशेष फल देंगे। इसके विपरीत सूर्य की राशि की ओर बढ़ता हुआ ग्रह जितना सूर्य के निकट पहुँचता जाएगा उतना ही उसका सारा शुभ फल क्रमिक रूप से कम होता जाएगा। ऐसे ग्रहों को क्रमशः 'असूर्यग' व 'सूर्यग' कहते हैं। इन बातों का विचार सभी फल प्रकारों में करना चाहिए।यहाँ शास्त्रों ने यह भी कहा हैं यदि बुध व शुक्र ग्रह सूर्य की ओर बढ़ रहे हों या बुध सूर्य के साथ हो तो विशेष दोषप्रद नहीं होता है। इसी प्रकार मंगल यदि शत्रु क्षेत्र में हो तो विशेष फल हानि नहीं करता है। राशि के ३० अंशों को तीन भागों में विभाजित करने पर विषम राशि के प्रथम भाग १० अंश में जाग्रत्, द्वितीय में स्वप्नावस्था १० ° से २० ° तक और अन्तिम १० अंशों में सुप्तावस्था में होती है। इसी क्रम में इनका फल भी जानना चाहिए। जाग्रत् अवस्था में ग्रह कार्य में लाभ होता है। द्वितीय स्वप्नावस्था में मध्यम फल और सुषुप्तावस्था में निष्फल की प्राप्ति होती हैं। सम राशियों में इसके विपरीत ३०°-२०° के मध्य जाग्रत् २०°-१०° तक स्वप्नावस्था और १०°-०° में सुप्तावस्था होती है।

त्रिंशदंशं त्रिभागं च कल्पयित्वा पृथक् पृथक्।
विषमादि क्रमेणैव समे वै विपरीतकम्।
विज्ञानं प्रथमं पुंसां जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिकाः।
विशेषतः परीक्षया स्याज्जाग्रतः कार्यसाधकः
स्वप्नावस्था मध्यफला उपदेष्टा गुरुर्यदि।
निष्फला चरमावस्था ज्ञातव्या मुनिसत्तम।

बालदि अवस्था में राशि के अनुसार ६-६ अंशों में ग्रहों की बाला, कुमार, युवा, वृद्ध और मृत पाँच प्रकार की अवस्थाएँ होती हैं। विषम राशि के प्रारम्भिक ६° पर्यन्त ग्रह की बाल्यावस्था होती है, ६°-१२° तक कुमारावस्था, . १२° - १८ ° तक युवावस्था, १८ ° से २४° तक वृद्धावस्था तथा २४ ° से ३० ° तक ग्रह की मृत अवस्था होती है। सम राशियों में इससे विपरीत अर्थात् ३०°से २४° के मध्य ग्रह की बाल्यावस्था २४ ° से १८ ° तक कुमारावस्था, १८°- १२° तक युवावस्था और १२ ° से ६ ° तक वृद्धावस्था एवं ६ ° से ०° पर्यन्त मृतावस्था होती है। जो जातक के ग्रहानुसार समय समय पर फल की प्राप्ति कराता हैं।

बालो रसांशैस्समे प्रदिष्टस्ततः कुमारो हि युवाथ वृद्धः ।
मृतः क्रमादुत्क्रमतः समर्थे बालाद्यवस्था कथिता ग्रहाणाम्
फलं तु किञ्चिद्वितनोति बालश्चार्द्ध कुमारो यत्तेन पुंसाम् ।
युवा समग्रं खचरोऽथ वृद्धः फलं च दुष्टं मरणं मृताख्यम् ॥

सम राशि विचार

ग्रहों की अवस्था	मृत	वृद्ध	युवा	कुमार	बाल
अंशात्मक	०°-6 °	6 ° -12	12° -18 °	18°-24 °	24°30°

विषम राशि विचार

ग्रहों की अवस्था	बाल	कुमार	युवा	वृद्ध	मृत
ग्रहों का अंश	०°-6 °	6 ° -12	12° -18 °	18°-24 °	24°30°

3.5 दीप्तादी अवस्था विचार

ग्रहों की अवस्थाओं के बारे में हमारे ज्योतिष शास्त्रीय ग्रंथो में ग्रहों की अवस्थाओं का विचार दशाफल, गोचर विचार व जन्मकुंडली निर्माण के बाद जातक का फल विचार सभी प्रकार से करना चाहिए। दीप्तादि अवस्थाएँ-दीप्त, स्वस्थ, मुदित, शान्त, शक्त, निपीड़ित (अतिदुःखी) भीत, विकल व खल ये नौ अवस्थाएँ विभिन्न ग्रन्थों में थोड़े बहुत भेद से बताई गई हैं। जो ग्रह अपनी उच्च राशि में स्थित हो वह ग्रह दीप्त कहलाता है। जो अपनी राशि में हो वह स्वस्थ होता है। अपने अतिमित्र की राशि में 'मुदित' होता है तथा निसर्ग मित्र के घर में 'शान्त' होता है। कुछ विद्वान् शुभ ग्रहों के वर्गों में होने पर शान्त मानते हैं। उदित अर्थात् अस्त न हो वह ग्रह 'शक्त' अर्थात् फल देने में समर्थ होता हैं। यदि अपनी नीच राशि में ग्रह स्थित हो तो 'भीत' अर्थात् डरा हुआ और अस्त अर्थात् सूर्य के साथ होने से जो दिखाई न दे वह ग्रह 'विकल' कहलाता है। जो पापवर्गों में स्थित ग्रह हो उसे 'खल' अवस्था कहा गया है ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दीप्तादी अवस्था का वर्णन ज्योतिष

शास्त्र में किया गया हैं। जातक की कुंडली में उच्चराशि में स्थित ग्रह दीप्त, कहलाता है, वही ग्रह मित्र की राशि में हो तो स्वस्थ, मित्र के गृह में हो तो मुदित, सम ग्रह के गृह में हो तो शान्त, शत्रु ग्रह की राशि में दीन, अति शत्रुगृही हो तो दुःखी, पापयुक्त हो तो विकल, पापग्रह के राशि में स्थित हो तो खल और सूर्य के साथ हो तो कोपी होता है।

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽतिदुःखितः ।
विकलश्च खलः क्रोधी नवधा खेचरो भवेत् ॥

जातकपारिजात नामक ग्रंथ में ग्रहों की दश अवस्थाओं का वर्णन किया गया हैं।

उत्त्वस्थः खेचरी दीप्तः स्वस्थः स्यादधिमित्रके ।
मुदितो मित्रभे शान्तः समभे दीन उच्यते।
शत्रुभे दुःखितोऽतीव विकलः पापसंयुतः ।
खलः खलगृहे ज्ञेयः कोपी स्थादर्कसंयुतः।

गर्वितावस्था पूर्वोक्त 'दीप्तावस्था' का ही प्रायः दूसरा नाम गर्वित अवस्था कहलाती है। इसी प्रकार से दीप्तादी ग्रह मित्र क्षेत्र में व बृहस्पति के साथ होने मैं मुदित' होगा। ये अच्छा फल देने वाला होता हैं। तथा भाव फल व दशा फल को पुष्ट करते पंचम स्थान में राहु तथा केतु के साथ स्थित ग्रह अथवा सूर्य, शनि, मंगल से युक्त ग्रह, किसी भी भाव में हो तो 'लज्जित' होता है। ऐसा ग्रह पंचम में हो तो पुत्रनाशक अथवा जिस भाव में हो, उस भाव के फल को कम करता है। शत्रुक्षेत्री हो , शत्रुदृष्ट हो , शत्रुयुत हो , शनि युत हो या दृष्ट ग्रह हो ये 'क्षुधित' कहलाता है। सूर्य के साथ बैठकर पाप युक्त दृष्ट हो तो 'क्षोभित' कहलाता है। ये दोनों ग्रह जहाँ बैठते हों, वहा भाव का नाश करते रहते हैं। यदि दशम भाव में ये ग्रह हों तो व्यक्ति आलसी , कामचोर व दरिद्री होता है। यदि जल राशियों में बैठा ग्रह शत्रु युक्त या दृष्ट हो तथा शुभ ग्रहों से न देखा जाता हो तो वह 'तृषित' कहलाता है। ये क्षोभित, क्षुधित व तृषित ग्रह केन्द्र व त्रिकोणों में बहुत खराब होते हैं। सातवें हों तो पत्नी घातक योग, लग्न में हों तो आत्मनाश योग, चतुर्थ में हों तो वह व्यक्ति सुख से वंचित रहता, एवं 5-9 में हों तो विशेषतया धन, पुत्र व भाग्य में बाधक होते हैं। दशाफलादि विवेक में इन अवस्थाओं का भी विचार करना चाहिए।

3.6 दीप्तादी अवस्था के फल

जब कोई ग्रह कुंडली में उच्च का हो या अपनी उच्च राशि में स्थित हो अथवा उच्च के अंश में स्थित हो तो वह उसकी दीप्त अवस्था होती है। इस अवस्था मे ग्रह अपने पूर्ण प्रकाश युक्त

होता है। दीप्त अवस्था में स्थित ग्रह की दशा आने पर वह ग्रह अपार सम्पदा प्रदान कराता है। इस अवस्था से साहस, वैभव, धन, संपत्ति, भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति, दीर्घकालिक खुशी, राजकीय मान , सम्मान, राज कृपा प्राप्त होती है। व्यक्ति शक्तिशाली, गुणवान व पुरुषार्थी होता है। जब भी ग्रह कुण्डली में अपनी मूलत्रिकोण राशि में या स्वराशि में होता है तब वह स्वस्थ अवस्था में होता है। इसमें वह अच्छे फल देता रहता हैं। जिससे व्यक्ति समाजिक यश प्राप्त के साथ साथ हर क्षेत्र में उसे सफलता मिलती रहती है। वह शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। यश, सम्पदा, सम्मान प्राप्तदीप्तग्रह की दशा में जातक, धनवान्, यशस्वी, दानी, विद्वान् और राजा के सामान फल भोगता है। स्वस्थ ग्रह की दशा में आचारवान्, धार्मिक, सुखी, निरोग और धनवान् होता है। मुदित ग्रह की दशा में राजा से प्रीति, वैभवादि की वृद्धि तथा जातक सुखी होता हैं। शान्त ग्रह की दशा में जातक निरोग, सुखी, धन-वैभवादि से सम्पन्न राजा से प्रीति तथा उत्साह और ऊर्जा से सम्पन्न होता है। शक्त ग्रह की दशा में धन, विद्या और विनय की प्राप्ति , तप की सिद्धि, धर्म में प्रवृत्ति बढती है। पीड़ित ग्रह की दशा में चोर, शत्रु और राजा से भय भी उत्पन्न होता है।

दीप्तः प्रमुदितः स्वस्थः शान्तः शक्तः प्रपीडितः।
दीनः खलस्तु विकलो भीतोऽवस्था दश क्रमात्॥
स्वोच्चत्रिकोणोपगतः प्रदीप्तः स्वस्थः स्वगेहे मुदितः सुहृद्धे।
शान्तस्तु सौम्यग्रहवर्गयातः शक्तोऽतिशुद्धः स्फुटरश्मिजालैः॥
ग्रहाभिभूतस्त्वतिपीडितः स्यादरातिराश्यंशगतोऽतिदीनः।
खलस्तु पापग्रहवर्गयोगान्नीचेऽतिभीतो विकलोऽस्तयातः।

दीप्तादि ग्रह दशा फल

दीप्तग्रह की दशा में भूसम्पत्ति की प्राप्ति, उत्साह, पराक्रम, धन, वाहन, स्त्री-पुत्र, उत्सवादि शुभ कार्य, समाज में प्रतिष्ठा, विद्या और राजा से सम्मान प्राप्त होता है।

पाके प्रदीप्तस्य धराधिपत्यमुत्साहशौर्यं धनवाहने च।
स्त्रीपुत्रलाभं शुभबन्धुपूजां क्षितीश्वरान्मानमुपैति विद्याम्॥

स्वस्थ ग्रहदशा फल

स्वस्थ ग्रह की दशान्तर्दशा में आरोग्यता, राजा से धन की प्राप्ति, सुख, विद्या, यश, प्रीति, महत्ता, स्त्री, धन, भूमि, आत्मज और धर्म का लाभ होता है।

स्वस्थस्य खेटस्य दशाविपाके स्वस्थो नृपाल्लब्धधनादि सौख्यम्।
विद्यायशः प्रीतिमहत्त्वमाराद्दारार्थभूम्यात्मजधर्ममेति।

मुदित ग्रहदशा फल

मुदित ग्रह की दशान्तर्दशा में वस्त्र, गन्ध, पुत्र और धन का सुख, धैर्य, धर्म, पुराणादि श्रवण का लाभ तथा अश्व वाहन, भूषण आदि की प्राप्ति होती है। कुण्डली में यदि ग्रह अपनी मुदित्त अवस्था में स्थित हे तब व्यक्ति को आर्थिक लाभ और धन प्राप्ति होती है. व्यक्ति सभ्य व्यवहार करने वाला होता है और उसे मानसिक संतोष की प्राप्ति भी होती है। उसे आभूषण, वाहन का सुख ,. धार्मिक प्रवृति भी जागृत होती है। और मित्र के व्यवहार द्वारा अच्छे गुणों की प्राप्ति होती है। जन्म कुण्डली में कोई भी ग्रह यदि अपनी मित्र की राशि में स्थित है तो वह उस ग्रह की मुदित अवस्था कहलाती है। जिरा प्रकार व्यक्ति अपने अच्छे मित्रों के साथ खुश रहता है ठीक उसी प्रकार ग्रह भी अपनी मित्र राशि में मुदित अर्थात प्रसन्न रहते हैं. मुदित अवस्था के प्रभाव से व्यक्ति धन सम्पत्ति व धार्मिक कार्यो में रुचि दर्शाता है जातक किसी की सहायता से भी कार्य कर सकता है. इस अवस्था में स्थित ग्रह की दशा होने पर जातक जीवन में सफलता प्राप्त करता है तथा जीवन में नई ऊचाईयों को छूता हे। स्वस्थ ग्रह की दशान्तर्दशा में आरोग्यता, राजा से धन की प्राप्ति, सुख, विद्या, यश, प्रीति, महत्ता, स्त्री, धन, भूमि, आत्मज और धर्म का लाभ होता है।

मुदितान्वितस्यापि दशाविपाके वस्त्रादिकं गन्धसुतार्थधैर्यम् ।
पुराणधर्मश्रवणादिलाभं हयादियानाम्बर भूषणाप्तिम् ॥

शान्त ग्रहदशा फल

शान्त ग्रह की दशान्तर्दशा में जातक सुखी होता है तथा धर्म में प्रवृत्ति होती है। भूमि, पुत्र और स्त्री का सुख प्राप्त होता रहता हैं। विद्या-विनोद एवं धर्मशास्त्र में रुचि के साथ साथ अनेक राजाओं से सम्मानित होने का गौरव मिलता रहता हैं। इस अवस्था के प्रभाव के परिणामस्वरुप व्यक्ति को मान सम्मान की प्राप्ति होती है, व्यक्ति को अपने कामों के लिए प्रसिद्धि ,पुरुषार्थ में वृद्धि ,कार्यों को संपन्न करने की दक्षता होती है। व्यक्ति को अचानक से मिलने वाले परिणाम प्राप्त उतार चढाव से भरी जिंदगी भी हो सकती है. जातक की कुंडली में जब कोई ग्रह उदित अवस्था अर्थात ग्रह के अस्त होने से पहले की अवस्था में होता है तब यह ग्रह की शक्त अवस्था होती है। इस अवस्था में ग्रह इतना शक्तिशाली नहीं होता और पूर्ण फल देने में समर्थ नहीं होता है परन्तु वह अपने कार्य में सक्षम, शत्रु का नाश करने वाला होता हैं।

दशाविपाके सुखधर्ममेति शान्तस्य भूपुत्रकलत्रयानम् ।
विद्याविनोदान्वितधर्मशास्त्रं बह्वर्थदेशाधिपपूज्यतां च ।

दीन ग्रहदशा फल

दीन ग्रह की दशान्तर्दशा में जातक स्थानच्युति, स्वजन विरोध, हीनवृत्ति से आजीविका प्राप्त करता है, तथा अनेक व्याधियों से पीड़ित और संमाज से परित्यक्त जीवन व्यतीत करता है। ग्रह की इस अवस्था में व्यक्ति के बनते हुए काम बिगड़ना हर परिस्थिति से डरने वाला, शोक संताप से पीड़ित, शारीरिक क्षमता में गिरावट संबंधियों से विरोध का सामना घर परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न होने की समस्या बड सकती है। जब भी कुण्डली के किसी भी भाव या राशि में दो ग्रह या दो से अधिक ग्रह आपस में 1 अंश के अन्तर में हों तो यह गृह युद्ध की स्थिति होती है. इसमे से अधिक अंशों वाला ग्रह युद्ध में परास्त होता है. परास्त ग्रह खल अवस्था में माना जाता है वह जातक को निर्धन बनाता है, जातक क्रोधी स्वभाव वाला, दूसरों के धन पर बुरी दृष्टि रखने वाला होता है।

स्थानच्युतिर्बन्धुविरोधता च दीनस्य खेटस्य दशाविपाके।
जीवत्यसौ कुत्सित्तहीनवृत्त्या त्यक्तो जनैः रोगनिपीड़ितः स्यात्॥

दुःखित ग्रहदशा फल

दुःखित ग्रह की दशान्तर्दशा में जातक नित्यप्रति अनेकानेक दुःखों को प्राप्त करता हैं। व्यक्ति को जीवन में धन हानि, बच्चों से अनबन और कलह की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। व्यक्ति रोग एवं व्याधि से प्रभावित विशेषकर नेत्र संबंधी रोग होने के साथ साथ, व्यक्ति का किसी कारण से अपमान अथवा वह पाप पूर्ण या अनैतिक कामों में लिप्त हो सकता है। व्यक्ति को अपने द्वारा किए प्रयासों में विफलता मिलती है और वह बुरी लत से प्रभावित हो सकता है। जब भी ग्रह जातक की कुंडली में अपनी नीच राशि में होता है तो वह उसकी दीन अवस्था मानी जाती है।

दुःखार्दितस्य दशाविपाके नानाविधं दुःखमुपैति नित्यम्।
विदेशगो बन्धुजनैर्विहीनश्चौराग्निभूपैर्भयमातनोति॥

विकल ग्रहदशा फल

विकल ग्रह की दशान्तर्दशा में वैकल्य, मानसिक सन्ताप, पिता आदि का निधन, स्त्री, पुत्र आदि को पीड़ा तथा वाहनादि की हानि होती है।

वैकल्यखेटस्य दशाविपाके वैकल्यमायाति मनोविकारम्।
पित्रादिकानां मरणं विशेषात् स्त्रीपुत्रयानाम्बरचौरपीडाम्॥

खल ग्रहदशाफल

खलग्रह की दशान्तर्दशा में पितृवियोग, शत्रुओं द्वारा धन और भूमि का नाश तथा जातक स्वजनों द्वारा निन्दित होता है। ग्रह की इस अवस्था के प्रभाव से व्यक्ति के अंदर शत्रुता की भावना

पनपती है. वह अपने ही लोगों द्वारा प्रताड़ित होता हैं, जन्म कुण्डली में जब कोई ग्रह शत्रु ग्रह के क्षेत्र में हो अथवा शत्रु ग्रह की राशि में बैठा हो तो वह दुखी अवस्था में होता है. जिस तरह से यदि कभी किसी व्यक्ति को अपने शत्रु के घर में जाना पड़े तो यह वहाँ जाकर परेशानी का अनुभव करता है. इसी तरह से ग्रह भी शत्रु के घर में परेशान होता है। ग्रह की इस अवस्था के कारण व्यक्ति को अनेक कष्ट मिलते रहते हैं। जिस तरह से एक साधारण व्यक्ति यदि किसी ताकतवर या पाप कर्म करने वाले व्यक्ति के साथ बैठ जाता है तब वह स्वयं को बेचेन महसूस करता है. इसी तरह ग्रह भी पाप ग्रहों के साथ बेचैनी महसूस करते हैं और यही अवस्था ग्रह की विकल अवस्था कहलाती हैं । ग्रह अपने फलानुसार फल नहीं दे पाता और वह साथ बैठे ग्रहों के अनुरुप फल देता है. इसके फल स्वरुप जातक नीच प्रकृति वाला होता है. जातक शक्तिहीन होकर दूसरों का सेवक,बुरी संगति का संग करने वाला होता है। ग्रह की विकल अवस्था के परिणामस्वरुप व्यक्ति शक्तिहीन, बलहीन, आत्म-सम्मान की हानि भी हो सकती है।

दशाविपाके कलहं वियोगं खलस्य खेटस्य पितुर्वियोगम् ।
शत्रोर्जनानां धनभूमिनाशमुपैति नित्यं स्वजनैश्च निन्दाम् ॥

कुद्ध ग्रहदशा फल-

इस दीप्तादी अवस्था में जातक अनेकानेक पापकर्म में रत रहने वाला, विद्या, धन, स्त्रीसुख, भूसम्पत्ति और स्वबन्धु का नाश, नेत्ररोग तथा सन्तान कष्ट होता है इस प्रकार की दशा में व्यक्ति का जीवन अधिक सघर्ष होता हैं।

कोपान्वितस्यापि दशाविपाके पापाः समायान्ति बहुप्रकारैः ।
विद्याधनस्त्रीसुखभूमिबन्धुनाशं पुत्रादि कृच्छ्रं खलु नेत्ररोगम् ॥

3.7 फलदीपिका के अनुसार अवस्था विचार

फल दीपिका नामक ज्योतिष शास्त्रीय ग्रंथो में आचार्य मंत्रेस्वर ने दीप्तादी अवस्थाओ का उल्लेख किया हैं। जातक की कुंडली में उच्च राशि में ग्रह हो तो प्रदीप्त अवस्था कहलाती है। यदि मूल त्रिकोण राशि में ग्रह स्थित हो तो इसे सुखित अवस्था कहते हैं। अपनी स्वराशि में ग्रह बेठा हो तो वह स्वस्थ अवस्था कहलाती है। यदि मित्र के गृह में ग्रह बेठा हो तो मुदित, सौम्य ग्रह के स्थान में हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो ग्रह को शान्त अवस्था कहते हैं। जब किसी ग्रह का प्रकाश मण्डल पृथ्वी से दिखाई दे तो ऐसा ग्रह शक्त कहलाता है। अर्थात् शुभ प्रभाव दिखाने का प्रभाव उसमें होती है।जो अस्त ग्रह निकृष्ट फल देने वाला होता हैं। वह अस्त ग्रह विकल अवस्था कहलाती

हैं। अर्थात् यदि अस्त न हो तो शक्त अवस्था, यदि अस्त हो तो विकला अवस्था जो ग्रह युद्ध में दूसरे ग्रह से पराजित हुआ हो उसे निपीडित कहा जाता हैं। जो पापग्रह या ग्रहों के वर्ग में हो उसे खल कहते हैं। जो शत्रु गृह में हो उसे पूर्ण दुःखी और जो ग्रह अपनी नीच राशि में हो उसे अतिभीत कहा जाता हैं। जैसा कि प्रदीप्त सुखित, स्वस्थ, मुदित, शान्त, शक्त, निपीडित, खल, सुदुःखित, नीच और विकल यह जो ११ प्रकार की अवस्थायें बतायी गयी हैं- इनमें इनके नाम के अनुसार ही फल समझना चाहिये। प्रथम ६ अवस्थाओं में ग्रह शुभ फल देने वाला होता हैं ।

स्वोच्चे प्रदीप्तः सुखितस्त्रिकोणे स्वस्थः स्वगेहे मुदितः सुहन्ने।
शान्तस्तु सौम्यग्रहवर्गयुक्तः शक्तो मतोऽसौ स्फुटरश्मिजालः।।
ग्रहाभिभूतः स निपीडितः स्यात् खलस्तु पापग्रहवर्गयातः ।
सुदुःखितः शत्रुगृहे ग्रहेन्द्रो नीचेऽतिभीतो विकलोऽस्तयातः।।
पूर्ण प्रदीप्ता विकलास्तु शून्यं मध्येऽनुपाताच्च शुभं क्रमेण।
अनुक्रमेणाशुभमेव कुर्युर्नामानुरूपाणि फलानि तेषाम्।।

3.8 लज्जित-क्षोभित क्षुधित-तृषित ग्रहदशा फल

ग्रहों की लज्जितादि अवस्थाएं का वर्णन ज्योतिष शास्त्र ग्रंथो में प्राप्त होता हैं। जिसका सम्बन्ध जातक की कुंडली में फलादेश विचार से मानी जाती हैं । जो निम्नलिखित हैं ।

दिशति लज्जितखेटदशारतिविराममतीवमतिक्षयम् ।
सुतगदागमनं गमनं वृथा कलिकथाभिरुचिं न रुचि शुभे
संक्षोभितस्यापि दशाविशेषाद्दरिद्रजातङ्कमतिं च कष्टम् ।
करोति वित्तक्षयमङ्घ्रिबाधाधनाप्तिबाधामवनीशकोपात् ।

लज्जित

लज्जित ग्रह की दशा में देवभक्ति में बाधा, बुद्धि का क्षय, पुत्र को कष्ट, यात्रा में रुकावट , विवाद में रुचि तथा धर्म में अरुचि होती है। क्षोभित ग्रह की दशा में जातक दरिद्र स्वाभाव का होता है। ऐसे जातकों की मति दूषित होती रहती, कष्ट, धनक्षय, पैरों में कष्ट, राजा के कोप से धनागम में बाधा उत्पन्न होती हैं । जो ग्रह पंचम भाव में राहू केतु सूर्य शनि या मंगल से युक्त हो वह लज्जित अवस्था कहलाता है । जिसके प्रभाव से पुत्र सुख में कमी और व्यर्थ की पात्रा और धन का नाश होता हैं ।

गर्वित

जातक की कुंडली में जो ग्रह उच्च स्थान या अपनी मूलत्रिकोण राशि में हो तो वह गर्वित कहलाता है। यह गर्वित अवस्था उत्तम फल प्रदान कराने वाला और सुख सौभाग्य में वृद्धि करता है।

क्षुधित

जातक की कुंडली में इस प्रकार के ग्रह हो तो शत्रु के घर में या शत्रु से युक्त क्षुधित कहलाता है। जो अशुभ फल की प्राप्ति करता हैं।

तृषित

जो ग्रह जल राशि में स्थित होकर केवल शत्रु या पाप ग्रह से दिखाई देता हो वो तृषित अवस्था कहलाता है। इस प्रकार की अवस्था में व्यक्ति विवाद ,दुर्बलता, क्लेश ,परिवार में चिन्ता धन हानि स्त्रियों को रोग, आदि अशुभ फल मिलते रहते हैं।

क्षोभित

व्यक्ति की कुंडली में जो ग्रह मित्र के घर में मित्र ग्रह युक्त या दृष्ट हो वह मुदित कहलाता है।जो सूर्य के साथ स्थित होकर केवल पाप ग्रह से दिखाई देने पर क्षोभित अवस्था कहलाती है। जिन जिन भावों में तुषित या क्षोभित ग्रह होते है उस भाव में क्षुधित ग्रह की दशा में शोक और मोह आदि से कष्ट, परिजनों के कष्ट से कृशत्व, मानसिक परिताप, कलह, शत्रुओं द्वारा अर्थप्राप्ति में बाधा और सर्वत्र बाधा तथा बौद्धिक क्षति होती है। तृषित ग्रह की दशा में स्त्रीसहवास जन्य व्याधि, दुष्ट या दूषित कार्य करने वाला, स्वजनों से विवाद के कारण धनहानि, दुर्बलता, दुष्टों से कष्ट और मानहानि होती है।

क्षुधितखगदशायां शोकमोहादि तापः परिजनपरितापादाधिभीत्या कृशत्वम्।
कलिरपि रिपुलोकैरर्थबाधा नराणा- मखिलमलनिरोधो बुद्धिरोधो विषादात्॥
तृषितखगदशायामङ्गनासङ्गमध्ये भवति गदविकारो दुष्टकार्याधिकारः।
निजजनपरिवादादर्थहानिः कृशत्वं खलकृतपरितापो मानहानिः सदैव॥

3.9 स्नानादि अवस्था एवं फल विचार

स्नानादि 27 अवस्थाएँ का वर्णन ज्योतिष शास्त्र के प्रमाणिक ग्रंथो में दिखाई देता हैं। जिसका सम्बन्ध जातक के ग्रहों से होने के कारण २७ प्रकार की अवस्थाये मानी जाती हैं। इन सभी प्रकार के ग्रहों के द्वारा अवस्थाओ का विचार करना चाहिए।

(1) स्नान (2) वस्त्र धारण (3) आमोद (4) पूजारम्भ (5) प्रार्थना (6) पूजा (7) यज्ञारम्भ (8) प्रभुध्यान (9) उपवेश (10) प्रदक्षिणा (11) भावना (12) अतिथि सत्कार (13) भोजन (14) जल सेवन (15) क्रोध (16) ताम्बूल भक्षण (17) वसति (18) किरीट धारण (19) मन्त्र (20) विलम्ब (21) शयन (22) मद्यपान (23) मिष्ठात्र पान (24) धनागम (25) किरीट त्याग (26) शयन (27) रति।

साधन विधि-

सर्वप्रथम जन्मलग्न की राशिसंख्या में ग्रह की अधिष्ठित राशि की संख्या जोड़ लें। इस योगफल को दुगुना करें तथा फिर ग्रह के विंशोत्तरी दशा वर्षों से गुणा कर लें। गुणनफल में 27 का भाग दें तो शेष संख्या तुल्य 'स्नानादि अवस्थाएं क्रमशः होती हैं।

उदाहरणार्थ

यदि किसी जातक का कर्क लग्न में शुक्र कुम्भ राशि में हो तो लग्न संख्या 4 + शुक्र राशि 11=15 × 2 = 30 × 20 शुक्रदशा वर्ष 600 /27 शेष 6 को स्नानादि अवस्था जानना चाहिए। इसी तरह से व्यक्ति की कुंडली में स्नानादि अवस्था का विचार कर फलादेश किया जाता है। जिससे जातक को सही मार्ग का ज्ञान हो सके। स्नानावस्था में जातक को मान-सम्मान, परिवार सुख व सफलता प्राप्त होती हैं। वस्त्र धारण अवस्था में व्यक्ति को उत्तम वस्त्राभूषण पहनने का सुख प्राप्त होता हैं। आमोद स्नानादि अवस्था में जातक को में विदेश लाभ और कीर्ति की प्राप्ति, पूजारम्भ में जातक को भूमिलाभ, वाहन व मान की प्राप्ति, प्रार्थना में राजभय, कष्ट, व हानि, पूजा में आदर, सम्पत्ति का लाभ , यज्ञारम्भ में पित्तविकार, कष्ट व विद्या, प्रभु ध्यान में शत्रुनाश व भूमि से लाभ, उपवेश अवस्था में वाहन सुख, मधुर वाणी, प्रदक्षिणा में लांछन, भावना नामक अवस्था में सफलता व परिवार सुख, अतिथि सत्कार में अभिमान वृद्धि व गड़े धन की प्राप्ति, भोजन में कपट, रोग, हीनाचरण, बहिष्कार, जलसेवन में दुराचरण, खराब भोजन, क्रोध में बदनामी, ताम्बूल अवस्था में गुप्त विद्या, जय व धन, मन्त्र में तन्द्रा, मिथ्याचरण व मीठी वाणी। विलम्ब में विद्वत्ता, असावधानी व आलस्य, शयन में क्रूरता, रोग व परिवार में उपद्रव, मद्यपान में प्रमाद, मित्रद्रोह, तिरस्कार व संहार

में बुद्धि, मिष्टान्न में अच्छी सन्तान, रूपवती भार्या, स्वास्थ्य व मित्रों का साथ, किरीट त्याग में उपेक्षा, अपने लोगों से कष्ट व धन नाश, शयन में राजनीति व दीर्घ रोग, रति में कुलटा से प्रेम, अविश्वास, मन में बेचैनी, पाप रति, दुर्बद्धि व शत्रुता होती है। इन सभी प्रकार से जातक की कुंडली का विचार तथा जातक के भविष्य फल का निर्धारण करना चाहिए।

3.10 शयनावस्था के प्रकार एवं फल

इसी क्रम में अब हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से अवस्था विचार को आगे ले जाते हुये शयनोपवेशनादि अवस्थाओ का अध्ययन करते हैं। जितना महत्वपूर्ण बालदि अवस्थाये हैं उतना ही महत्वपूर्ण शयनग्रहोप अवस्था भी मानी जाती हैं। इनकी संख्या में 12 हैं इनका साधन अलग अलग प्रकार से किया जाता हैं।

1. शयन	**7. निद्रा**
2. उपवेशन	**8. सभानिवास**
3. नेत्रपाणि	**9. आगम**
4. प्रकाशन	**10 भोजन**
5. गमन	**11. नृत्य लिप्सा**
6. आगमन	**12. कौतुक**

साधन प्रकार -

ग्रह की नक्षत्र संख्या को ग्रह की सूर्यादी क्रम से 1/2/3/4 आदि संख्या से गुणा करके उक्त गुणनफल को ग्रह जिस नवांश में हो उस नवांश संख्या से गुणा करने पर जो गुणनफल आये उसमे इष्ट घटी संख्या तथा जन्मनक्षत्र संख्या, लग्न संख्या को जोड़कर जो योगफल आये उस योगफल में 12 का भाग देने से शेष शयनग्रहोपवस्था कहलाती हैं। शेष संख्या को उसी संख्या से गुणा करके उसमें नामाक्षरांक जोड़कर 12 का भाग दें , तब शेष में सूर्यादि क्रमशः (5/2/2/3/5/3/3) जोड़ें व 3 का भाग देने पर शेष 1 आये तो दृष्टि, 2 हो तो चेष्टा व ० शेष हो तो विचेष्टा नामक अवस्था होती हैं।

कल्पित उदा . सूर्य $9/11^{\circ}/20$ है तथा सुनील नामक व्यक्ति की कुण्डली में जन्म लग्न कर्क, तथा जन्म नक्षत्र आर्द्रा है। सूर्य के नक्षत्र श्रवण की संख्या 22 × ग्रह संख्या। से गुणा करने पर = 22 आया इसमें सूर्य के अधिष्ठित नवांश की संख्या 4 से गुणा करने पर 88 + इष्ट घटी 25 + जन्म नक्षत्र 6 + लग्न 4 = 123/12 शेष 3 क्रम नेत्रपाणि अवस्था प्राप्त हुई।

शयनावस्थागत ग्रहफल

(i) जातक की कुंडली में शयनावस्थागत ग्रह जहाँ जिस स्थान में बेठा हो वह उस भाव के फल में वृद्धि करता हैं। दशम भाव में जो ग्रह जिस स्वभाव का बेठा हो वो उसी के अनु रूप जातक को फल की प्राप्ति कराता है। यदि शुभ ग्रह बेठे हो तो शुभ फल यदि अशुभ ग्रह हो तो अशुभ फल की प्राप्ति होती हैं।

(ii) जातक की कुंडली में भोजनावस्था नामक ग्रह विशेषतया पाप का भगीदार मानसिक तनाव बार बार मित्रों से परेशान तथा जिस भाव में ग्रह बेठा हो उस भाव का नाश करता है।

(iii) जातक की कुंडली में निद्रावस्था का ग्रह सप्तम स्थान में व पंचम स्थान में बेठा हो तो जातक को सदैव शुभफल की प्राप्ति होती हैं।

(iv) व्यक्ति की कुंडली में मृत्यु स्थान में पाप ग्रह तथा क्रूरुर ग्रह, हो तो जातक को भयावह कष्टों का सामना करना पड़ता हैं।

3.11 सारांश

बी.ए.जे.वाई. पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आपने ग्रहों की अवस्था के बारे मैं इस ईकाई मैं अध्ययन कर लिया होगा। कि ज्योतिष काल शास्त्र पर आधारित शास्त्र हैं। त्रिस्कन्ध सिद्धांत के अंतर्गत होरा, सिद्धांत, संहिता के द्वारा जातक का सम्पूर्ण फलादेश किया जाता हैं। जिसमें से मुख्य बिंदु के रूप मैं ग्रहों की अवस्था का उल्लेख हुआ हैं। किस अवस्था मैं ग्रहों का फल अच्छा या बुरा होगा इन सभी का विचार ज्योतिष शास्त्र मैं हमारे प्राचीन ऋषियों ने दूर दृष्टि से इन सभी का वर्णन किया यहां विशेष रूप से ग्रहों की बालादि अवस्था, दीप्तादि अवस्था,श्यनादि अवस्था, स्नानादि 27प्रकार की अवस्था, गर्वितादि, तथा लज्जितादि अवस्था का उल्लेख मिलता हैं। जिसके आधार पर जातक का सही फलादेश किया जा सकता हैं। बालादि अवस्थाओं मैं 5प्रकार की बाल, कुमार योवन, वृद्ध,और मृत इनका वर्णन आता हैं। अब प्रश्न हैं कि इनका कार्य या उपयोग कहां किया जाता हैं इस बारे मैं कहा गया हैं कि जब किसी जातक के जन्म के उपरान्त कुंडली का निर्माण किया जाता हैं तो जन्म कुंडली तथा, गोचर कुंडली मैं नवग्रहों मैं से कोन सा ग्रह सही अवस्था मैं हैं इसी आधार पर व्यक्ति का फलादेश किया जाता हैं।जैसे किसी जातक का कन्या लग्न हैं, किस तरह इसका ज्ञान किया जाय कि यह बाल्यावस्था मैं हैं इसी के माध्यम से फल की प्राप्ति होगी, प्रत्येक

ग्रहों का विभाजन डिग्री के अनुसार होता हैं, तथा 30डिग्री पर ग्रहों का विभाजन किया जाता हैं। प्रत्येक ग्रहों की डिग्री मैं 60 मिनट होते हैं,जिसके अनुसार शुभाशुभ फल का विचार किया जाता हैं।जैसे 1,10,19,28 ये डिग्री ज्योतिष शास्त्र मैं शुभ कही गयी हैं अन्य जो डिग्री 6,15,24,27,ये अशुभ मानी जाती हैं। यह निर्धारण ज्योतिष शास्त्र के द्वारा किया जाता हैं, इन सभी बालादि अवस्थाओं का प्रभाव जातक के जीवन पर बार बार पड़ता रहता हैं। यदि जातक की कुंडली मैं जो ग्रह जिस भाव का कारक हैं उस भाव का मैं कोन सा ग्रह किस अवस्था मैं बैठा है वह उस अवस्था के अनुसार फल देनेवाला होता हैं। जैसे किसी की कुंडली कन्या लग्न कि हैं,तो उस कन्या लग्न वाले जातक की कुंडली मैं गुरु,यदि पंचम भाव मैं है तो संतति, शिक्षा, सेवक, भविष्य कथन का विचार किया जाता हैं, यही वृहस्पति बाल अवस्था मैं बैठा हो तथा शुभ ग्रहों से युक्त हो तो जातक की शिक्षा प्रारंभ से ही ठीक रहेगी, विवाह के पश्चात् शीघ्र ही संतति का लाभ भी मिलेगा इन सभी का विचार सभी भावों मैं बालादि अवस्थाओं के माध्यम से किया जाता हैं, जिससे जातक के सही भविष्य फल को निश्चित किया जा सके। इस ईकाई मैं आपने अवस्थाओ के बारे मैं जान लिया होगा।

3.12 पारिभाषिक शब्दावली

1. युवावस्था	18से 12डिग्री तक
2. अर्क	सूर्य को
3. शांत	मोन रहना
4. मृत	ग्रहों की मृत अवस्था
5. शत्रुगृही	शत्रु के घर मैं
6. स्वभाव	व्यवहार
7. उत्सव	त्योहारादि
8. मुदित	जो ग्रह अपनी मित्र राशि मैं हो
9. बुधि	मति
10. स्वप्न अवस्था	10से 20डिग्री तक होती हैं
11.विषम राशि	मेष, मिथुन, सिंह , तुला, इत्यादि
12. दम्पति भाव	सप्तम

3.13 अभ्यास प्रश्न

1. बालादि अवस्था कितने प्रकार के होते हैं

2. एक राशि मैं अंश होते हैं
3. राशि के प्रथम भाग 10 अंश मैं कोन सी अवस्था होती हैं
4. स्वप्नावस्था कितने डिग्री तक होती हैं।
5. युवावस्था मैं कैसे फल की प्राप्ति होती हैं शुभ फल
6. मूल त्रिकोण स्थान कोन से हैं
7. कुमारावस्था होता है।
8. जिस ग्रह का शुभफल कम होता हैं उसे कहते हैं
9. दीप्तादि अवस्था के कितने प्रकार हैं
10. स्वस्थ अवस्था मैं जातक को कोन सा लाभ होता हैं।
11. राजा से प्रीति किस अवस्था मैं होती हैं।
12. विद्या और विनय की प्राप्ति किस अवस्था मैं होती हैं।
13. भूमि का लाभ कब होगा।
14. मैंखल अवस्था मैं कोन सा वियोग होता हैं।
15. दीप्तावस्थाका दूसरा नाम हैं।
16. शत्रुदृष्ट किसे कहते हैं।
17. त्रिकोण भाव मैं पाप ग्रह क्या फल देते हैं।
18. शत्रुयुत, शनियुत,या दृष्ट ग्रह कहलाता हैं।
19. दशाफल दर्पण के लेखक हैं।
20. लज्जित ग्रह दशा मैं कोन सा फल मिलता हैं
21. स्नानादि कितनी अवस्था होती हैं।
22. शयनादि अवस्थाओं के कितने प्रकार हैं
23. शयनावस्था गत ग्रह जिस भाव मैं बैठता है कैसा फल देता हैं।।
24. चैतन्यता के आधार पर अवस्था के प्रकार
25. सुषुप्ति अवस्था कितने डिग्री तक होती हैं।

3.14 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. पाच अवस्था
2. 30 अंश
3. जागृत अवस्था
4. 20डिग्र

5. शुभ फल
6. 5,9
7. 18डिग्री तक
8. असूर्ययग, सूर्यग,
9. 9 प्रकार
10. आचारवान, धार्मिक, सुखी, निरोगी रहने का लाभ होता है।
11. मुदित अवस्था
12. शक्त ग्रह की दशा मैं
13. दीप्त अवस्था
14. पितृ वियोग
15. गर्वितावस्था
16. जिन शुभ ग्रहों पर शत्रु की नजर होती हैं।
17. शुभ फल
18. क्षुधित
19. श्री निवास शर्मा
20. देवबाधा, बुद्धि का क्षय, इत्यादि विपरीत फल मिलता हैं।
21. 27अवस्था,
22. 12 प्रकार
23. शुभ फल
24. 3 प्रकार होते हैं।
25. 20° 30° तक

3.15 संदर्भ ग्रन्थ सूची

जातक पारिजात

दशाफल दर्पण श्री निवास शर्मा

फल दीपिका आचार्य मंत्रेस्वर

ज्योतिष सर्वस्व

वृहत पाराशर होरा शास्त्र ऋषि पाराशर

3.16 निबन्धात्मक प्रश्न

1. बालादि पांच अवस्थाओं का विस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए।
2. दीप्तादि अवस्था से आप क्या समझते हैं, विस्तृत प्रकाश डालिए।
3. स्नानादि अवस्था का परिचय देते हुए स्वकल्पित उदा. सका साधन कीजिए।
4. शयनावस्थाओं के फल का विस्तृत विवेचन कीजिए।
5. लज्जितादि ग्रह अवस्था का वर्णन कीजिए।

इकाई - 4 ग्रहों के बलाबल में विशेष

4 .1 प्रस्तावना
4. 2 उद्देश्य
4 .3 ग्रह बल परिचय
4.4 षडबल का स्वरूप
4.5 स्थान बल , दिग्बल,कालबल विचार
4.6 चेष्टा बल, अयन बल, पक्ष बल विचार
4.7 वृह्जातक के अनुसार षडबल विचार
4.8 सारांश
4.9 पारिभाषिक शब्दावली
4.10 अभ्यास प्रश्न
4.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.12 संदर्भ ग्रन्थ सूची
4.13 निबन्धात्मक प्रश्न

4 .1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई बी.ए.जे.वाई .(N)-221 पाठ्यक्रम से सम्बंधित है। इस इकाई का शीर्षक है ग्रहों के बलाबल में विशेष ,फलित ज्योतिष शास्त्र के ग्रंथों के आधार पर मूलतः ग्रह और भाव के द्वारा हम जातक की कुंडली के माध्यम से शुभाशुभ फलों के बारे मैं समझत पाते हैं। जातक की कुंडली मैं ग्रह तथा भाव अपनें बल के अनुसार व्यक्ति को प्रभावित करते रहते हैं। एक ही लग्न मैं उत्पन्न हुए जातकों का फलादेश किया जाय तो फलादेश मैं भिन्नता पाई जाती हैं। इसी तरह से अन्य जातकों का देखें तों ग्रह तथा भाव बल की प्रधानता मैं उनको लाभ मिलता हैं, परन्तु एक ही लग्न से अन्य का विचार करें तो उसको लाभ कम मिल पाता हैं। किसी की कुंडली में ग्रह कारक बन जाता हैं। किसी को बाधक बन जाता हैं। कोई सुख को भोगता हैं कोई दुःख को भोगता हैं।इन सभी के पीछे कुछ न कुछ कारण अवश्य होगा जिससे जातक को इन सभी प्रकार के शुभ तथा अशुभ फलों की प्राप्ति होती हैं। वह कारण ग्रह बल भाव बल, इत्यादि होते हैं। ग्रह हमेशा अपने बल के अनुसार जातक को फल प्रदान करते हैं, इसलिए जातक के जीवन मैं अमुक घटना, या समस्या कब होगी इसका सही ज्ञान प्राप्त करनें के लिए ग्रहों के बलाबल का ज्ञान आवश्यक किया जाता हैं। यदि किसी भी व्यक्ति की कुंडली मैं सही प्रकार से बलाबल न देखा जाय तो जातक का फलादेश ठीक तरह से घटित नहीं होगा जिससे उसका विश्वास भी कम होगा तथा उसके उपर आने वाली समस्या का समाधान नहीं हो पायेगा सही प्रकार से विद्वान ज्योतिषी के द्वारा ही फलादेश लाभप्रद होता हैं। ज्योतिष शास्त्र मैं षडबलों के विषय में हमारे आचार्य कहते हैं कि षडबल मैं बली ग्रह की दशा हमें अपनें फल की सूचना शीध्र से प्रदान कराती हैं। अतः आज के परिप्रेक्ष्य मैं जातकों के जीवन को सही मार्ग प्रशस्त करनें मैं ग्रह बल भाव बलों का ज्ञान आवश्यक होना चाहिए। आइए हम सभी ग्रहों का बलाबल नामक ईकाई मैं ग्रहों के बल,भावों के बल तथा ग्रहबल प्रकार के बारे मैं विस्तृत रूप में अध्ययन करेंगे।

4. 2 उद्देश्य

प्रिय अध्येताओं प्रस्तुत ईकाई के अध्ययन के पश्चात् आप

- ❖ ग्रहों के बलाबल के बारे मैं जान सकेंगे।
- ❖ बल साधन कैसे किया जाय इस विषय से अवगत होंगे

- ❖ कालबल, चेष्टा बल के बारे मैं समझ सकेंगे।
- ❖ बलों का जीवन मैं कितना प्रभाव होगा ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- ❖ भावों के बल के बारे मैं समझ पायेंगे।
- ❖ भावों के बल भेद,का ज्ञान कर सकेंगे।

4 .3 ग्रह बल परिचय

आपने भली भांति समझ लिया होगा की ग्रहों का बल ज्ञान क्यों आवश्यक हैं। जिसके द्वारा विविध भावों मैं रहकर जातक को प्रभावित करते रहते हैं। ज्योतिष शास्त्र मैं मुख्य रुप से 6 प्रकार के बलों का उल्लेख हुआ हैं। जों इस प्रकार हैं। कालबल, चेष्टा बल, स्थान बल, नैसर्गिक बल, दृक् बल,अयनबल, इन मुख्य बलों का वर्णन सभी ज्योतिष शास्त्रीय ग्रंथो मैं किया गया हैं, इसमें भी देखा जाए तो स्थान बल के भी 5बलो के बल मैं उल्लेख किया गया हैं। जिससे की जातक की कुंडली मैं इन बलों का विचार विधि, विधान पूर्वक किया जाय, बल अर्थात शक्ति, यानि किसी भी जातक की कुंडली मैं ग्रहों के आधार पर कोन सा ग्रह किस भाव मैं बैठा हो उसका फल क्या हैं वह बलवान हैं या निर्बल होकर बैठा हैं। तदनुसार सार फल देता हैं। उच्च होंने पर 1 बल, नीच होने पर शून्य, मूल त्रिकोण, स्वगृही, अधिमित्र, मित्र, समय, शत्रु, अधिशत्रु, स्ववर्ग में, मित्र वर्ग,अधिमित्रवर्ग, समवर्ग, शत्रु वर्ग,अधिशत्रुवर्ग, मैं होंने पर जातक को तदनुसार फल की प्राप्ति कराता हैं। इसी तरह ग्रहों का विषम राशि मैं होना, विषम राशि तथा विषम अंश मैं, सम अंश मैं, ग्रहों का होना ही फल देने वाला होता हैं, उच्चदिबलो का भी विचार, नीचादिबलों का विचार भी किया जाता हैं। इस प्रकार से ग्रहों के बल का ज्ञान अवश्य करना चाहिए।

4.4 षड्बल का स्वरूप

सर्वप्रथम षड बल का विचार कुंडली मैं किये जानें से जातक के भविष्य फल का सही निर्धारण हो सकेगा। कालबल के बारे मैं जानते हैं। ग्रहों के द्वारा दिन तथा रात्रि मैं काल बल का ज्ञान किया जाता हैं। मंगल, चन्द्रमा, और शुक्र ग्रह रात्रि मैं, बुध ग्रह दिन एवं रात्रि मैं, सूर्य, गुरु,शनि दिन के समय काल बल को प्राप्त करते हैं। अर्थात शुक्ल,तथा कृष्ण पक्ष के द्वारा भी काल बल का निर्धारण किया जाता हैं। जातक की कुंडली मैं पूर्ण चंद्र हो तो वह चेष्टा बली कहलाता हैं। इससे जातक को शुभ फलों की प्राप्ति होती हैं यदि चंद्रमा केन्द्र मैं पूर्ण बली हैं तो जातक को अनेक पदवीं

प्राप्त होती हैं। व्यक्ति के कुंडली मैं उच्च राशि मैं ग्रहों का होना पूर्ण बल को देने वाला होता हैं। सूर्य तथा मंगल ग्रहों का 10वें भाव मैं होना इत्यादि प्रकार से दिग्बल कहा जाता हैं, शुक्र ,शनि, चन्द्र के दक्षिणायन होने पर भी अयन बल का फल जातक को प्राप्त होता रहता हैं। स्थान बल का भी स्व स्थान मैं उच्च या स्वगृही हो तो इसी तरह फल देने वाला माना जाता हैं। इसी प्रकार जातक की कुंडली मैं लग्न बल का भी विचार करना चाहिए। जिससे की जातक का मार्ग प्रशस्त हो सके। यदि जातक के जन्मांग मैं उच्च ग्रह हो, या मित्र राशि मैं हों या मित्र दृष्टि से देखा जाता हो , इस तरह के योग मैं जातक को अनेकानेक फल की प्राप्ति तथा सुख समृद्धि भी मिलती रहती हैं जो जातक के लिए शुभ संकेत होगा।

4.5 स्थान बल , दिग्बल,कालबल विचार

स्थान बल-

ज्योतिष शास्त्र षडबलों में स्थान बल, दिग्बल, काल बल, चेष्टा बल, निसर्ग बल व दृग्बल इन सभी बलों में से स्थान बल का प्रमुख स्थान माना जाता हैं। इनमें प्रथम चार विशिष्ट माने गये हैं। इनका विचार सर्वत्र किया जाता हैं। जिस ग्रह को चारों में एक भी बल प्राप्त न हो वह ग्रह निष्फल हो जाता हैं। अपने उच्च, मूलत्रिकोण, स्वगृह, मित्र राशि या इन नवांशों में स्थित होने पर, शुभ ग्रहों से दृष्ट होने से, विषम राशियों में पुरुष ग्रह व नपुंसक ग्रह एवं सम राशियों में चन्द्र व शुक्र को स्थान बल प्राप्त होता है। ग्रह उच्च, मूल त्रिकोणादि में उत्तरोत्तर बली होता है। इस सम विषम राशि बल को ही युग्मायुग्म बल कहते हैं। यह स्थान बल का ही अवान्तर भेद है। इसी तरह केन्द्र में विचार किया जाता हैं। जन्म कुंडली में स्थित ग्रह को पूर्ण बल, पणफर में हो तो आधा बल, आपोक्लिमस्थ हो तो चौथाई बल केन्द्रादिबल प्राप्त होता है। सूर्य, गुरु व मंगल अर्थात् पुरुष ग्रह प्रथम द्रेष्काण में, स्त्री ग्रह तृतीय द्रेष्काण में व नपुंसक ग्रह (बुध शनि) मध्य द्रेष्काण में द्रेष्काण बल प्राप्त करते हैं। स्थान बल में सप्तवर्गैक्य, द्रेष्काण, उच्चादि बल, युग्मायुग्म बल व केन्द्र बल सम्मिलित हैं। इन पाँचों के मिलने से स्थान बल का ज्ञान किया जाता हैं। जन्म कुंडली में जब कोई ग्रह अपनी परमोच्च अवस्था में रहता है तो उसे प्रथम बल प्राप्त होता हैं।इसी तरह यदि ग्रह नीच स्थान में रहने पर शून्य बल प्राप्त होता है। उच्च से नीच के मध्य कहीं और रहने पर हमें त्रैराशिक अनुपात करना चाहिए। उसी प्रकार मूलत्रिकोण आदि स्थानों पर ग्रह के बल क्रमशःकम होते चले जाते हैं। इस तरह उच्च ग्रह का आधा बल स्वगृही को, उसका आधा मित्रस्थ को, उसका आधा बल- समराशिस्थ को, उसका आधा शत्रुराशिस्थ को एवं इसका आधा बल अधिशत्रु राशिस्थ को मिलता है।

स्वोच्चस्वर्क्षसुहृद्गृहेषु बलिनः षट्सु स्ववर्गेषु वा
प्रोक्तं स्थानबलं चतुष्टयमुखात्पूर्णार्द्धपादाः क्रमात् ।
मध्याद्यन्तकषण्डमर्त्यवनिताः खेटा बलिष्ठाः क्रमात्
मन्दारज्ञगुरूशनोब्जरवयो नैजे बले वर्द्धनाः ॥

यदि ग्रह षड्वर्ग में अपनी उच्चराशि में हो, या स्वराशि में हो, या अपने मित्रग्रह की राशि के वर्ग में स्थित हों तो वे स्थानबली कहलाते हैं। इसी प्रकार केन्द्र, पणफर और आपोक्लिम भावों का विचार किया जाता हैं। केन्द्र, पणफर और आपोक्लिम भावों में स्थित ग्रह भी स्थानबली कहलाते है। केन्द्र में पूर्ण बल, पणफर में आधा और आपोक्लिम में चतुर्थांश स्थान बल होता हैं। नपुंसक ग्रह राशि के मध्य भाग में, पुरुष ग्रह राशि के आदि भाग में तथा स्त्री ग्रह राशि के अन्तिम भाग में बली होते हैं। ग्रहों का विचार करे तो शनि, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, चन्द्रमा और सूर्य क्रमशः नैसर्गिक रूप से बली होते हैं। **'बुधसूर्यसुतौ नपुंसकाख्यौ शशिशुक्रौ युवती नराश्च शेषाः'** ।

वक्रं गतो रुचिररश्मिसमूहपूर्णो
नीचारिभांशसहितोऽपि भवेत्स खेटः।
वीर्यान्वितस्तुहिनरश्मिरिवोच्चमित्र-
स्वक्षेत्रगोऽपि विबलो हतदीधितिश्चेत् ॥

यदि ग्रह अपनी नीच या शत्रु राशि या नवांश में स्थित होने पर भी यदि यह वक्री हो या अपनी पूर्ण रश्मियों से युक्त हो तो वह ग्रह बलवान होताहैं। यदि ग्रह अपनी उच्चराशि, मित्रराशि या इसके नवांश में स्थित हो तो चन्द्रमा के समान निर्बल माना जाता है ।

तुङ्गस्था बलिनोऽखिलाश्च शशिनः श्लाघ्यं हि पक्षोद्भवं
भानोर्दिग्बलमाह वक्रगमने ताराग्रहाणां बलम् ।
कर्क्युक्षाजघटालिगोहिरबलान्त्योक्षाश्विपाश्चात्यगः
केतुस्तत्परिवेषधन्वसु बली चेन्द्रर्कयोगों निशि ॥

इसी प्रकार जन्म कुंडली में सभी ग्रह अपनी उच्चराशि में स्थित होकर बलवान् होते हैं। ग्रह अपने सम्पूर्ण पक्षबल को प्राप्त कर चन्द्रमा बलवान् और शुभ फलदायक होता है। सूर्य दिग्बल (दशम भाव में स्थित होकर) प्राप्त कर बलवान् होता है। अन्य भौमादि ग्रह वक्री होने पर पूर्ण बली होते है। यदि रात्रि में जन्म हो तो राहु कर्क, वृष, कन्या, कुम्भ और वृश्चिक राशियों में तथा केतु मीन, कन्या, वृष और धनु के उत्तरार्द्ध में, परिवेश और इन्द्रचाप नामक योग में सूर्य चन्द्रमा के साथ बलवान् होते हैं। बल ज्ञान करने के लिए सभी प्रकार से ज्ञान करना चाहिए। पूर्ण दृष्टि से पूर्ण बल,

त्रिपाद से त्रिपाद बल इन छः का योग करने से षड्बल प्राप्त होते हैं। सूर्य व गुरु 6°30' कुल बल प्राप्त होने से पूर्ण बली होते हैं। चन्द्रमा 6° शनि व मंगल 5° एवं शुक्र 5°30' कुल बल प्राप्त होने पर पूर्ण वली हो जाते हैं। इन सभी नियमों के अनुसार षड बल साधन किया जाता है सूर्य-मेष व सिंह राशि मे, रविवार के दिन अपने उच्च स्व या मित्र ग्रह के नवांश में, अपनी होरा व द्रेष्काण में, उत्तरायण में, दशम स्थान में, राशि के आरम्भ में तथा दोपहर के समय सूर्य बलवान् होता है। चन्द्र-कर्क या वृष राशि में, राशि के अन्तिम खण्ड में, दक्षिणायन सूर्य में, राशि के प्रारम्भ तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट, सोमवार तथा पूर्णिमा तिथि में, उच्च, स्व, मित्रादि नवांश में, स्व होरा व द्रेष्काण में चन्द्रमा बली होता है। मंगल-मेष, वृश्चिक या मकर राशि में, स्वोच्चादि नवांश या द्रेष्काण में, अपने उच्चादि वर्गों में, मंगलवार के दिन रात्रि में, राशि के प्रारम्भ में, दशम भाव में तथा वक्री होकर कर्क राशि मे मंगल बली होता है। इसी क्रम मे बुध-सूर्य यदि साथ न हो तो मिथुन, कन्या, धनु राशि में, स्वोच्चादि नवांश, द्रेष्काण या राशि या सात वर्गों तथा बुधवार हो उत्तरायण में, राशि के मध्य भाग तथा रात और दिन में सदैव बली होता है। गुरु-कर्क, वृश्चिक, धनु, मीन राशि में, वक्री, स्वोच्चादि नवांश या वर्ग तथा गुरुवार तथा शुक्ल पक्ष में, मध्यान्ह व उत्तरायण के दिन सामान्यतः किसी भी राशि में सप्तम रहित केन्द्र में गुरु बलवान् होता है। वृष, तुला या मीन राशि, अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में, स्वोच्चादि वर्ग या नवांश के दिन , शुक्रवार में, वक्री, चन्द्रमा के साथ, राशि के मध्य भाग में, सूर्य से आगे, 3/ 4/ 6/ 12, भावों में मध्यान के समय शुक्र ग्रह बलवान् होता है। शनि-तुला, मकर या कुम्भ राशि में, रात्रि में, सप्तम स्थान में, दक्षिणायन होने पर वक्री होने पर सभी राशियों, शनिवार के दिन, स्वोच्चादि वर्ग या नवांश तथा कृष्ण पक्ष में शानि ग्रह बली होता है। अष्टम भाव में शनि ग्रह के होने से , राहु व केतु-मेष, वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुम्भ व मीन राशि में दशम स्थान में, रात्रि के समय में ग्रह बलवान् होते हैं। जो ग्रह गुरु से पूर्ण रूप से देखता है वह शुभ फलदायक तथा बुध ग्रह सदैव मिश्र फलप्रद देने वाले होते है। इसी प्रकार से ग्रहो के बलाबल का ज्ञान करना चाहिए कुछ उदारणों को देखते है।

(1) जब दो ग्रह परस्पर एक दूसरे की राशि में हों, जैसे मकर में बुध तथा कन्या में शनि हो तो यह सर्वाधिक बली सम्बन्ध माना जाता है।

(ii) कुंडली मे जब दो ग्रह किसी भी राशि में स्थित होकर एक दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखते हों तो यह पहले से कुछ कम बली सम्बन्धमाना जाता है।

(iii) जब जातक की कुंडली मे कोई ग्रह अपनी अधिष्ठित राशि के स्वामी से दृष्ट हो। जैसे मंगल मकर में हों तथा शनि उसे पूर्ण दृष्टि से देखता हों तो यह भी बली सम्बन्ध होता है।

(iv) जब जातक की कुंडली मे दो ग्रह एक ही राशि में स्थित हों तो यह सबसे निर्बल सम्बन्ध माना जाता है फलदीपिका ग्रंथ के अनुसार परस्पर केन्द्र व त्रिकोण में स्थित ग्रह भी परस्पर सम्बन्धी माने जाते हैं।

भावेशानुसार देखा जाय तो शुभाशुभत्व 5,9 भावों के स्वामी सभी ग्रह 'शुभ'माने गए हैं। यदि 4, 7, 10 भावों के अधिपति यदि पाप ग्रह हों तो अपना अशुभ फल नहीं देते, यदि शुभ ग्रह हों तो अपना शुभ फल नहीं देते हैं। अर्थात् दोनों प्रकार के ग्रह अपने फल के प्रति उदासीन हो जाते है। लग्नेश सदैव शुभ होता है। यदि लग्नेश के साथ ही अष्टमेश भी हो तो वह शुभकारक होता है। कुंडली मे भावेशो के भी सभी ग्रह प्रायः 'अशुभ' होते हैं, लेकिन शुभ ग्रह होने पर सामान्य अशुभ फल प्राप्त होते हैं। अष्टमेश सर्वाधिक अशुभफल देने वाला होता हैं लेकिन सूर्य व चन्द्रमा अष्टमेश हों तो विशेष अशुभ नहीं होते हैं।

दिग्बल-

पूर्व दिशा अर्थात् लग्न में बुध व बृहस्पति, दशम भाव या दक्षिण दिशा में सूर्य तथा मंगल, सप्तम या पश्चिम दिशा में शनि, उत्तर दिशा में चन्द्रमा व शुक्र को पूर्ण अर्थात् एक अंश बल प्राप्त होता है। अन्यत्र अनुपात से जाना जाता है। जिस स्थान में जो बल बताया जाएगा, उससे सप्तम स्थान में वह बल शून्य होगा। तदनुसार अनुपात किया जाता है। अर्थात् लग्न में गुरु व बुध को 60' कला बल व सप्तम में 0' कला बल तो दशम में 30' कला होता हैं।

काल बल

कालबल का प्रयोग नतोन्नत बल, पक्षबल, अहोरात्रि त्रिभाग बल व वर्षेशादि बल का योग करने में होता हैं। रात्रि में मंगल, चन्द्र व शनि पूर्ण नतोन्नत बली होते हैं। सूर्य, गुरु व शुक्र दिन में पूर्ण नतोन्नत बली तथा बुध सर्वदा दिन व रात में पूर्ण बल प्राप्त करता है। उक्त समय से विपरीत समय में सभी ग्रह शून्य बली होंगे।तथा प्रातः व सन्ध्या के समय दोनों प्रकार के ग्रहों को आधा अंश बल मिलता है। अर्थात् मध्यान्ह में दिन बली व मध्य रात्रि में रात्रि बली ग्रह पूर्ण नतोन्नत बल प्राप्त करते रहते हैं।

निशि शशिकुजसौराः सर्वदा ज्ञोऽह्नि चान्ये
बहुलसितगताः स्युः क्रूरसौम्याः क्रमेण।
स्वदिवससमहोरामासपैः कालवीर्यं
शरुबुगुशुचराद्या वृद्धितो वीर्यवन्तः ॥

4.6 चेष्टा बल, अयन बल, नेसर्गिक बल विचार

चेष्टाबल-

उत्तरायण में सूर्य व चन्द्रमा को चन्द्रमा के साथ स्थित सभी ग्रहों को, युद्ध में विजयी होकर उत्तर दिशा में स्थित अधिक किरण वाले ग्रह को चेष्टा बल प्राप्त होता है।

उदगयने रविशीतमयूखौ वक्रसमागमगाः परिशेषाः।
रिभूयते कदाचिद दक्षिणस्थोऽपि जयी शुक्रः प्रकीर्त्यते।
परस्परं योगा युद्धात वर्णरश्मिप्रभायोगादूहां चैतत् स्वया धिया ।।

सूर्य-चन्द्र उत्तरायण में (मकर से मिथुन तक छह राशियों में बली होते हैं। शेष (भौ. बु. बृ. शु. और श.) ग्रह वक्री या चन्द्रमा से युक्त कहने पर बली होते हैं। सूर्य से ग्रहों का संयोग हो तो अस्त और चन्द्र से संयोग हो तो समागम होता।

पक्ष बल -

पक्षों के अनुसार शुक्ल पक्ष में शुभ ग्रहों व कृष्ण पक्ष में पापग्रहों को बल मिलता है। स्पष्ट है कि पूर्णिमा के दिन सभी शुभ ग्रह पूर्ण पक्ष बली व अमावस्या को सभी पाप ग्रह पक्ष बली होते हैं। इसी प्रकार दिन रात्रि के समान त्रिभाग करके अहोरात्रि त्रिभाग बल का ज्ञान करना चाहिए। दिन के प्रथम त्रिभाग में बुध, द्वितीय में सूर्य व तीसरे में शनि को पूरा उक्त बल मिलता है। तथा रात्रि के प्रथम त्रिभाग में चन्द्रमा, मध्य में शुक्र व तृतीय में मंगल को पूर्ण बल की प्राप्ति तथा बृहस्पति सदैव उक्त बली होता है। शुक्र, मंगल, गुरु व सूर्य उत्तरायण में व चन्द्र शनि दक्षिणायन में पूर्ण अयन बल प्राप्त करते हैं। बुध स्ववर्ग में हो तो सदा अयन बली होता है। यदि अपने वार,अपनी होरा, अपने मास व अपने वर्ष में सभी ग्रहों को वर्षेशादि बल प्राप्त होता है। वर्षारम्भ व मासारम्भ के दिन जो वार पड़े, वही ग्रह क्रमशः वर्षेश व मासेश होता है।

नेसर्गिक बल-

जो ग्रह नेसर्गिक रूप से बल प्राप्त करता हुआ सभी ग्रहों को स्वाभाविक बल या निसर्ग बल के अनुसार बल प्राप्त प्राप्त करता हैं वह नेसर्गिक बल कहलाता हैं। शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र,

चन्द्र, सूर्य ये क्रमशः उत्तरोत्तर अधिक निसर्ग बली होते हैं। यदि अन्य सभी बलों का योग समान हो तो निसर्ग बल निर्णायक होता है। उदाहरणार्थ मंगल व सूर्य के अन्य बलों का योग बिल्कुल बराबर हो तो इनमें से सूर्य को अधिक बली माना जाएगा, क्योंकि उसे अधिक निसर्ग बल प्राप्त है।

4.7 वृहज्जातक के अनुसार षडबल विचार

आचार्य वरामिहिर ने ग्रहो का बली होना तथा उसका फल क्या हो सकता है, इस बारे मे कहा है सूर्य-बृहस्पति शुक्र ये दिवाबली कहे गए हैं। कृष्णपक्ष में पाप ग्रह, चन्द्रमा-भौम और शनि रात्रिबली होते हैं। बुध रात ओर दिन मे बली होता हैं। शुक्लपक्ष के दिन भी बुध -वृ-शु. इनसे युत बुध भी बली होते हैं। जिस वर्ष का जो ग्रह हो वह उस वर्ष बली माना जाता है। जिसदिन का ग्रह स्वामी होता है वह उस दिन में बली होता है। तथा जिसकी जो होरा हो वह उस होरा में बली होता है। तथा जिस माह का जो अधिपति हो वह उस मास में बली माना जाता है। ग्रहों के शनि-भौम बुध-**नेसर्गिक** बली होते हैं। इसी प्रकार बृहस्पति-शुक्र-चन्द्रमा और सूर्य क्रमशः में ये एक दूसरे के उत्तरोत्तर बली भी होते है।

4.8 सारांश

भारतीय ज्योतिष शास्त्र मैं षडबल विचार के बारे मैं आप सभी ने समझ लिया होगा कि षडबल का विचार कहां और कैसे किया जाता हैं। इस विषय मैं ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन के पश्चात ही हम सभी षडबल को पूरी तरह समझ सकेंगे। सर्वप्रथम जब किसी भी जातक का जन्म होता हैं तो जन्म के उपरान्त कुंडली निर्माण के माध्यम से जातक की कुंडली मैं ग्रहों के अनुसार बलाबल का विचार विशेष रूप से किया जाता हैं। जिससे की हम सभी इस विषय को गम्भीरता से समझ सकेंगे। कुंडली मैं ग्रहों का बलवान होना या निर्बल होना यह लग्न तथा राशि के माध्यम से मित्रा मित्र का विचार कर ग्रहों के बलादि का विचार किया जाता हैं। जैसे किसी जातक की कुंडली कर्क लग्न की हैं कर्क लग्न मैं स्वराशि का चन्द्रमा हो या मित्र ग्रह सूर्य, वृहस्पति से युक्त हो तथा मित्र ग्रहों की शुभ दृष्टि होंने पर जातक के ग्रह बलवान होते हुए जातक को शुभ फलों की प्राप्ति कराता हैं। मुख्य रुप से षडबलों के माध्यम से जातक का फलादेश शास्त्र सम्मत माना जाता हैं। जो इस प्रकार उल्लेखित हैं। काल बल, स्थान बल,अयनबल, चेष्टा बल, नैसर्गिक बल, दिग्बल, षडबलों के द्वारा जातक का फलादेश किया जाता हैं। इसमें भी जो स्थान बल हैं इसकी भूमिका मुख्य रहती हैं स्थान बल के अन्तर्गत उच्च बल, द्रेष्काण बल, सप्तम बल, इत्यादि का वर्णन किया गया हैं। जो उच्च राशि मैं

स्थित होकर बैठा हो, तथा जो स्वराशि,या त्रिकोण मैं स्थित होकर बैठा हो वह अलग अलग बल के नाम से जाने जाते हैं, यदि ग्रह अपने उच्च राशि मैं या स्वगृही हो तो उस ग्रह को एक बल प्राप्त होता हैं। इसी प्रकार से ग्रहों का बल कम ज्यादा होने पर उस प्रकार का फल उस जातक को प्राप्त होता हैं। इसीक्रम मैं लग्न बल, दृष्टि बल, शुत्रु दृष्टि बल, इत्यादि का विचार किया जाता रहा हैं। इसी के ठीक विपरीत देखा जाय तो ग्रहों का नीच्च राशि मैं होना,शत्रु ग्रहों का उस भाव मैं होना या पाप ग्रहों की दृष्टि का होना जातक के ग्रहों का निर्बल होना अशुभ फल दायक होता हैं। इसी तरह से जातक की कुंडली मैं इन सभी ग्रहों का ध्यान पूर्वक विचार करना चाहिए। आपने षडबल नामक ईकाई मैं षडबल विचार के बारे मैं समझ लिया होगा।

4.9 पारिभाषिक शब्दावली

1. बल — शक्ति
2. स्थान — भूखंड पर निवास
3. स्वगृही — अपनें घर मैं
4. मूल त्रिकोण — पंचम,नवम भाव
5. विषम — जो सम न हो वह
6. नवमांश। — एक राशि का नवम भाग
7. दिग्बल। — दिशाओं की ऊर्जा
8. काल बल। — समय के अनुसार जिस ग्रह मैं बल हो
9. संध्या — रात्रि से पूर्व का समय
10. जीव — वृहस्पति
11. नैसर्गिक — स्वाभाविक
12. उच्च — श्रेष्ठ
13. केन्द्र स्थान — 1,4,7,10
14. वक्री — विपरीत
15. निर्बल — जिसके पास बल न हो
16. मारक — हानि
17. चेष्टा बल — स्व इच्छा से
18. भानु — सूर्य

4.10 अभ्यास प्रश्न

1. ग्रह बल कितने प्रकार के होते हैं।
2. षडबल कोन कोन से हैं।
3. मारक भाव कोन कोन से हैं ।
4. जीव किस ग्रह का नाम हैं।
5. स्थान बल किसे कहते हैं।
6. काल बल से क्या तात्पर्य हैं।
7. ग्रहों की कितनी प्रकार की गति होती हैं।
8. निर्बल किसे कहते हैं।
9. एक दूसरों के उत्तरोत्तर बली कोन से ग्रह होते हैं।
10. वृहत् पाराशर होरा शास्त्र के लेखक हैं।
11. नैसर्गिक क्या हैं।
12. दिग्बल किसे कहते हैं।
13. कुछ किस ग्रह का पर्यायवाची हैं।
14. दिन का प्रथम भाग कब होता हैं।
15. नपुंसक ग्रह कोन से हैं।
16. पंच ताराग्रह कोन से हैं।
17. दिवाबली ग्रह कोन कोन से हैं।
18. रात्री बली ग्रह हैं।
19. जब कोई ग्रह उच्च मैं हो तो उसको कितना बल मिलता हैं।
20. मित्र मित्र का क्या होता हैं।
21. गुरु का पूर्ण बल कितना होता हैं।
22. मांस कितने प्रकार के होते हैं।
23. आत्म कारक ग्रह हैं।
24. हृदय तथा गल प्रदेश का स्वामी है।
25. अष्टम भाव से किसका विचार किया जाता हैं।
26. सप्तम भाव का कारक।
27. रात्रि मैं कोन ग्रह नतोन्नत बल पाते हैं।

4.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. पांच प्रकार के होते हैं।
2. स्थान बल, काल बल, दिग्बल, चेष्टा बल,
3. 2,7,12
4. वृहस्पति
5. जो ग्रह स्व उच्च मैं हो
6. जिसमें ग्रह रात और दिन बली होते हैं
7. आठ प्रकार की
8. जो ग्रह बलहीन हैं
9. सूर्य, चन्द्र, गुरु,शुक्र,
10. पाराशर मुनि
11. जो ग्रह स्वाभाविक होते हुए फल देते हैं।
12. दिशा के अनुसार ग्रहों के बल को
13. मंगल
14. दिनमान को 3से गुणा करनें पर
15. बुध , शनि
16. मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि,
17. सूर्य गुरु
18. चन्द्र,
19. 1बल मिलता हैं।
20. अधिमित्र
21. 60कला,
22. 12 होते हैं
23. सूर्य हैं
24. चन्द्र
25. आयु का विचार किया जाता हैं।
26. शुक्र
27. मंगल चन्द्रमा, शनि

4.12 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहत् पाराशर होरा शास्त्र
2. ज्योतिष सर्वस्व
3. फलदीपिका
4. वृहत् जातकम्
5. सर्वार्थ चिंतामणि

4.13 निबन्धात्मक प्रश्न

1. षडबल से आप क्या समझते हैं? विस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए।
2. स्थान बल का विस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिए।
3. कुंडली मैं काल बल का क्या महत्व हैं? प्रतिपादन कीजिए।
4. भाव बल क्या हैं? विस्तृत विवेचन कीजिए।
5. फलदीपिका ग्रन्थ के अनुसार षडबल के बारे मैं विस्तार पूर्वक विवेचन कीजिए।

इकाई - 5 द्वादश भावस्थ सूर्य ग्रह फल

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 द्वादश भावों के नाम तथा उनके विचारणीय विषय

5.4 द्वादश भावस्थ सूर्य का फल

बोध प्रशन

5.5 सारांश

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAJY(N) - 221, द्वितीय खण्ड की इकाई 5 के '**द्वादश भावस्थ सूर्य ग्रह फल**' से सम्बन्धित है। हम यह जानने कि कोशिस करेंगे कि सूर्य का द्वादश भावों में शुभाशुभ क्या फल होता है, लेकिन उससे पूर्व हमें यह ज्ञात होना आवश्यक है कि द्वादश भाव किसे कहते है, तथा इन द्वादश भावों को किन- किन नामों से इसे जाना जाता है और द्वादश भावों से क्या-क्या विचार करतें है। प्रिय छात्रों द्वादश भाव फल जानने के लिए हमें ग्रह, भाव और राशि को जान लेना चाहिए जैसे ग्रहों का स्वरूप राशियों का स्वरूप और भावों के विचारण के विषय आदि विषयों को भली भांति अध्ययन कर लेने के पश्चात ही द्वादश भाव के फल को सम्यक रूप से आप समझ सकते हैं

5.2 उद्देश्य

- ❖ द्वादश भाव क्या है, इसे समझ सकेंगे।
- ❖ द्वादश भावों को किन-किन नामों से जाना जाता है इसे जान पायेंगे।
- ❖ द्वादश भावों के विचारणीय तथ्य क्या है, इसे सरलता से समझ सकेंगे।
- ❖ सूर्य का द्वादश भावों में क्या फल होगा इसे समझा सकेंगे।
- ❖ भावस्थ ग्रह से कैसे फलादेश किया जाता है।
- ❖ सूर्य के कारकत्व को आप समझ सकेंगे।

5.3 द्वादश भावों के नाम तथा उनके विचारणीय विषय

आचार्य श्री गणेशकवि ने अपने ग्रन्थ में द्वादश भावों के नामो का उल्लेख करते हुये कहा है –

देहं द्रव्यपराक्रमौ सुखसुतौ शत्रुः कलत्रमृति-
र्भाग्यं राज्यपदं क्रमेण गदिता लाभव्ययौ लग्नतः।
भावा द्वादश तत्र सौख्य शरणं देहे मतं देहिनां
तस्मादेवं शुभाशुभाख्य फलजः कार्यो बुधैर्निर्णयः ।।

लग्न से लेकर व्यय तक द्वादश भावों के क्रमशः ये नाम हैं

१. देह २. द्रव्य ३. पराग्रम ४. सुख ५. सूत ६. शत्रु ७. कलत्र ८. मृति ९ भाग्य १०. राज्यपद ११. लाभ १२. व्यय इसमें देह (प्रथम) भाव ही प्राणियों के सुख का स्थान माना गया है । अतः विद्वानों को देहभाव से ही प्राणियों के शुभाशुभ फलों का विचार करना चाहिए।।

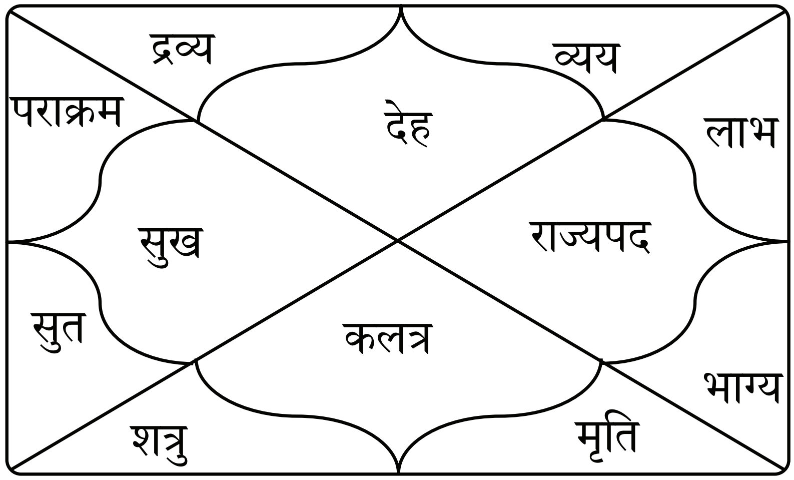

द्वादश भावों के विचारणीय विषय

लग्न	प्रकृतिस्थान, अंग, आत्मा, शरीर, उदय, होरा, मूर्ति, कल्प, देह, रूप, वर्तमान, जन्म, मूल, गात्र, कंजासन, चन्द्र, आद्य, विलग्न, शिर, वपु; फारसी में अव्वल खाने, ताले।
धन	साधनस्थान, अर्थ, वाक्, भक्ति, नयन, स्व कुटुम्ब, कुटुम्बभ, कोश, नेत्रकोण, वित्त, द्रव्य, द्रविण, अक्षि, पितृधन, धान्य, विद्या, अन्नपान, दक्षाक्षि, आस्य, पत्रिका, रे, वाहन-फारसी में चश्मखाने, मालखाने, जरखाने, कारखाने शमतौलिखाने।
तृतीय -	अहंकारस्थान, सहोदर, सहोत्थ, भ्राता, पराक्रम, वीर्य, धैर्य, कर्ण, दुश्चिक्य, बाहु, भुज, त्रिभ, अनुज, गल, उरस, सेना, विक्रम, शौर्य, दुश्चित्त, वन्हि, सहज-फारसी में बिरादरखाने, शेयुमखाने, बिलाधशालय।
चतुर्थ-	शापस्थान, पाताल, वृद्धि, हिबुक, माता, क्षिति, यान, अंबु, नीर, वाहन, गेह, सुख, बन्धु, चतुष्टय, मित्र, जल, अम्बा वेश्म, ऋक्ष, क्षेत्र, मातुल, भागिनेय,

	अनलहर, दैत्येन्द्रलोक, दितिसुतभुवन, आनंद, देवराजारि, वेद, गोत्र, भू, सुहृत, तुर्य, उदक, वेदकोण, शौर्य, रसातल, दुग्ध, सेतु, नदी-फारसी में मादरखाने, मादरागार, दोस्तखाने, चहरूमखाने।
पंचम -	काव्यस्थान, विद्या, पुत्र, त्रिकोण, प्रतिमा, प्रतिभा, मात्राभिध, व्याद्य, सुत, धी, देव, राज, नन्दन, पितृत (औरस पुत्र), पंचक, वाक्, लक्ष्मी, बुद्धि, सन्तति, शर, मन्त्र, प्रभाव, आत्मज, शक्ति, उदर, मन्त्री, राजांक, सचिव, कर, आत्मन्, असु, जठर, श्रुति, स्मृति, तनय, तनुज, गर्भ, विवेक-फारसी में अक्कलखाने, फर्जन्दखाने, पंजुमखाने, पिसरखाने।
षष्ठ	संसर्गस्थान, रोग, अंश, शस्त्र, भय, रिपु, क्षत, अरि, मातुल, सपत्न, षट्कोण, द्वेष्य, दुष्ट, शत्रु, वैरी, ऋण, चोर, ज्ञाति, आजि, दुष्कृत्य, अघ, भीति, अवज्ञा, रस, खल, क्षति, व्याधि, भंग, क्रोध, लोभ, मत्सर, व्यसन, विघ्न, अराति, व्रण, चतुष्पाद-फारसी में मर्जखाने, दुश्मनखाने, बन्दुमखाने।
सप्तम	प्रणयस्थान, योषित्, जामित्र, यामित्र, काम, गमन, कलत्र, धून, द्यूत, अस्त, स्मरगृह, चित्तोथ, कण्टक, मुनिगृह, तुरंग, दधि, सूप, दर्प, मनसिज, कुसुमशर, पर्वत, मार, अचल, अद्रि, विवाह, स्त्री, रति, मद, अज्ञता, अध्वन् लोक, पति, भार्या, मार्ग गिरि, नदीश, प्राण, वाणिज्यस्थान, विस्मृति, युवति-फारसी में हफ्तमखाने, जन्मकानग, जनखाने, हमलखाने।
अष्टम-	रिश्वत का स्थान, नाग, गज, पन्नग, मृति बन्ध, निधन, च्युति, पात, काल, लयपद, जीवित, साम्य, रन्ध्र, छिद्र, मांगल्य, मलिन, आदि पराभव, आयु, आयुष्य क्लेश, अपवाद अशुचि दास विघ्न मरण संग्राममरण विनाशन, प्रलय, मृत्यु, क्षीर, मूत्र, गुढ, दुर्ग, गुह्य-फारसी में मौतखाने, उमरखाने दोमार्गमकानग

	हस्तमखाने।
नवम -	वर्तनस्थान ग्रह, मार्ग, धर्म, गुरु, शुभ, तप, भाग्य त्रिकोण, पुण्य, सुकृत, देव, पैत्रिक, अर्जित ज्ञान, ज्ञानोदय, नन्द, अंक, निधी, विभु, पथ, आचार्य, दैवत, पितृ, पूर्वभाग्य, पूजा, पौत्र, जप, आर्यवंश, दया, ऊरू, फारसी में - वेशखाने, नसीबखाने, स्वप्नखाने, बख्तखाने, यख्तमखाने।
दशम -	प्राक्तनस्थान, कर्म, शासन, व्यापार, विमान, मेषूरण, मध्य, मान, राज, आस्पद, अभिजित, छत्र, रव, अभिषेक, अम्बर, नभ, गगन, आज्ञा, ज्ञान, जय सत्कीर्ति, ऋतु, जीवन, व्योम, आचार, गुण, प्रवृत्ति, अभ्र, मर्यादा, वीर्य, अन्तरिक्ष, चक्र वृद्धि, कर्माभिधान काष्ठा दनुजबल, दलहर, मधुहर, गरुडधर, दिक्षु, पितृकोष्ठ, आशा, तात, पितृ, मुद्रा, राज्य, वृष्टि, यात्रा फारसी में - शहखाने, बादशाहखाने।
लाभ -	रुद्रस्थान, उपान्त्य, प्राप्ति, आगम, भव, आप्ति, आय, जन्तु, अग्निकोण अय, तप, आगमन, सिद्धि, विभव, श्लाघ्यता, सरस संप्राप्ति शिव, ईश, पशुपति, गिरीश, नन्दनाथ, शंकर, महेश्वर, भवर्क मित्र, सर्वदोभद फारसी में - याफ्तिखाने।
व्यय -	कीर्तिस्थान, हानि, अर्क, आदित्य, अन्त, अन्त्य, रि:फ, प्रान्त्य, द्वादशक, वन्हिकोण, अपाय, नष्ट, दुःख, अंध्रि, वामनयन, क्षय सूचक, दारिद्र्य, पाप, शयन, बन्धन, मोक्ष, पतन, नरक फारसी में - खर्चखाने।

फलादेश के लिए ग्रहों का अनेक प्रकार से विवेचन करने का विधान है ,जिसके लिए ग्रह का कारकत्व ,उच्च-नीच्चादि संज्ञाओ कि जानकारी होना अति आवश्यकीय हैं

सूर्य का उच्च-निच्चादि क्रम, स्वरूप एवं कारकत्व –

सूर्य सिंह राशि का स्वामी होता है ,तथा सिंह के 0-20 अंश तक मूल त्रिकोण का शेष स्वराशि का स्वामी होता है , मेष राशि में 10 अंश तक उच्च का होता है तथा तुला राशि में 10 अंश तक नीच में सूर्य होता है ,

सूर्य का स्वरूप -

" रक्तश्यामो भास्करो" जिसका वर्ण लाल और श्याम अर्थात् पाटल पुष्प के वर्ण कि तरह हो , तथा बृहज्जातक में ग्रन्थकार ने सूर्य के स्वरूप के बारे में बताया है कि –

मधुपिंगलदृक्चतुरस्रतनूः पित्तप्रकृतिः सविताल्पकचः

सूर्य के स्वरूप का वर्णन करते हुये मंत्रेस्वर महाराज ने खा है कि -

पित्तास्थिसरोऽल्पकचश्च रक्तश्यामाकृतिः स्यांमधुपिंगलाक्षः

कौसुम्भवसश्चतुस्रदेहः शूरः प्रचण्डः पृथुबाहुरर्कः

अर्थात् – सूर्य पित्त प्रधान वाला, मजबूत हड्डियों वाला, सिर में कम बालों से युक्त, रक्त-श्याम वर्ण युक्त, इसके नेत्र कि पुतलियाँ शहद के समान कुछ भूरापन लिए हुये, इसकी आकृति वर्गाकार ,भुजाएं विशाल, लाल वस्त्र धारण किये हुये तथा स्वभाव से शूर व प्रचण्ड है

शैवो भिषंगनृपतिरध्वरकृत्प्रधानी

व्याघ्रो मृगो दिनपतेः किल चक्रवाकः

सूर्य शिव का उपासक, वैद्य, यज्ञ करने वाला, मंत्री ,व्याघ्र ,मृग ,चकोर आदि का द्योतक होता है

कारकत्व –

सूर्य के कारकत्व के बारे में फल दीपिका में मंत्रेश्वर जी ने उद्धृत किया है कि –

ताम्रं स्वर्ण पितृशुभफलं चात्मसोख्यप्रतापं

धैर्यं शैर्यं समितिविजयं राजसेवा प्रकाशम्

शैवं कार्यं वनगिरिगति होमकार्यप्रवृति

देवस्थानं कथयतु बुधस्तैक्ष्ण्यमुत्साहमर्कात्

तांबा, सोना, शुभ फल, धैर्य, शैर्य, पराक्रम, युद्ध में विजय, आत्मा, सुख, प्रताप, राजसेवा,शक्ति का प्रदर्शन, भगवान शिव से सम्बंधित कार्य, वन-जंगल या पहाड कि यात्रा,हवन आदि कार्य में प्रवृति,देवस्थान, तीक्ष्णता, उत्साह आदि का विचार सूर्य ग्रह से किया जाता है

सूर्य के विस्तृत कारकत्व

सूर्य –

आत्मा, शक्ति, तीक्ष्णता, बल, प्रभाव, गर्मी, अग्नितत्व, धैर्य, राजाश्रय, कटुता, आक्रामकता, वृद्धावस्था, पशुधन, भूमि, पिता, अभिरूचि, ज्ञान, हड्डी, प्रताप, पाचन शक्ति, उत्साह, वन प्रदेश, ऑख, वनभ्रमण, राजा, यात्रा, व्यवहार, पित्त, नेत्ररोग, शरीर, लकडी, मन की पवित्रता, शासन, रोगनाश, सौराष्ट्र, देश, सिर के रोग, गंजापन, लाल कपडा, पत्थर, प्रदर्शन की भावना, नदी का किनारा, मूँग, लाल चन्दन, कॉटेदार झाडिया, उन, पर्वतीय प्रदेश, सोना, तॉबा, शस्त्र प्रयोग, विषदान, दवाई, समुद्र पार की यात्राएँ, समस्याओं का समाधान, गूढ मन्त्रणा, आदि का कारक है।

5.4 द्वादश भावस्थ सूर्य का फल

प्रथमभावस्थ रविफल -

तनुस्थो रविस्तुङ्गयष्टि विधत्ते मनः संतपेद्दारदायादवर्गात् ।
वपुः पीडयते वातपित्तेन नित्यं स वै पर्यटन ह्रासवृद्धि प्रयाति ।।

यदि किसी की जन्म कुण्डली में लग्न में सूर्य स्थित हो तो वह उच्च कद का लम्बा शरीरवाला होता है। अपने स्त्रीपुत्र तथा परिवारवालों के कारण उसका मन सन्तप्त रहता है। इतस्तता - घूमते हुए, कभी हानि तथा कभी लाभ प्राप्त करता है। बातपित्त रोगों से उसे कष्ट- होता है ॥

यदा लग्नस्थानं गतवति रवी यस्य जनने
तपेत्कान्तावर्गात्रिजसहजवर्गादपि मनः
वपुःकष्टं पित्तानिलरुधिररोगेण परम
विदेशव्यापाराद् व्रजति धनमल्यत्वभितः॥

जिसके जन्मसमय में सूर्य यदि प्रभम भाव में है तो वह स्त्रियों से और भाईबन्धुओं से सन्तप्त - रहता है। पित-बायु और विक्रान से शरीर में कष्ट होता है तथा विदेश में व्यापार से धनधान्य की - क्षति होती है ॥

धनभावस्थ सूर्य का फल

धने यस्य भानुः स भाग्याधिकः स्या-
च्चतुष्पात्सुखं सद्व्यये स्वं च याति ।
कुटुम्बे कलिर्जाययया जायतेऽपि
क्रिया निष्फला याति लाभस्य हेतोः ॥

जिस व्यक्ति के धनभाव में सूर्य स्थित हों वह भाग्यशाली होता है । उसे हाथी घोड़े आदि- चौपायों का सुख मिलता है। सत्कार्यों में धन व्यय होता है। परिवार में स्त्री के कारण कलह होता है। लाभ सम्बन्धी कार्यो में सभी प्रयत्न असफल होते हैं ।।

जनुःकाले वित्तं गतवति यदा वासरमणौ
तदा भाग्यं तस्य प्रसरति कुटुम्बैकलिपि । :
शुभे वित्तापायो ह्यपि पथि तुरङ्गध्वनिरलं
गृहद्वारे दम्भाद् व्रजति शुभकृत्यं न परमम् ॥

सूर्य धनभाव में हो तो वह बहुत भाग्यशाली होता है। बन्धुबान्धवों के साथ कलह होता है। - सदा शुभकार्य में धनव्यय तथा गृहद्वार घोड़ों के शब्द से सुशोभित रहता है किन्तु अहङ्कारवश उससे शुभ कार्य नहीं होता है ॥

तृतीयभावस्थ सूर्यफल

तृतीये यदाहर्मणिर्जन्मकाले प्रतापाधिकं विक्रमं चातनोति ।
तदा सोदरैस्तप्यते तीर्थचारी, सदारिक्षयः सङ्गरे शं नरेशात् ॥

जिसकी जन्मकुण्डली में तृतीय भाव में सूर्य हो तो वह प्रतापी, यशस्वी तथा बलवान होता है। भाइयों के द्वारा वह कष्ट पाता है। तीर्थयात्रा करने वाला संग्राम में शत्रुओं को जीतने वाला तथा राजा के द्वारा लाभ पानेवाला होता है।

तृतीये चण्डांशी भवति जनने विक्रमकला-
प्रविस्तारो यस्यातुलबलमलं तीर्थगमनम् ।
विपक्षाणां क्षोभः सपदि समरे भूपकृपया
प्रतापस्याधिक्यं सहजगणतो दुःखमनिशम् ॥

सूर्य यदि तृतीयभाव में हो तो उसके पराक्रम में वृद्धि होती है। वह बलवान, तीर्थयात्रा करने वाला, संग्राम में शत्रुओं को तत्क्षण जीतने वाला तथा राजा की कृपा से अधिक प्रतापी होता है परन्तु सहोदर भाईयों से वह सर्वदा दुःख पाता है।

चतुर्थभावस्थ सूर्यफल

तुरीये दिनेशेऽतिशोभाधिकारी जनः सँल्लभेद्विग्रहं बन्धुतोऽपि ।
प्रवासी विपक्षाहवे मानभग कदाचिन्न शान्तं भवेत्तस्य चेतः ॥

जिसके चतुर्थ भाव में सूर्य हों वह व्यक्ति सौन्दर्य प्रिय भाइयों से विवादग्रस्त, प्रवासी (परदेशी) उसका जीवन लड़ाई-झगडे में शत्रुओं से अपमानित होता है। उसे कहीं भी शान्ति नहीं मिलती है ॥

तुरीये मार्तण्डे नरपतिकुलादर्थनिवहो
भवेन्मानव्रातः कलिरपि च बन्धोः प्रसरति ।
विपक्षाणां युद्धे भवति विजयो जातु न भवेत्

तथा वित्तं पुंसां व्रजति न हि शान्तिं खलजनात् ॥

सूर्य यदि चतुर्थभाव में रहे तो उसे राजकुल से धन सम्मान की प्राप्ति होती है परन्तु भाइयों से कलह और युद्ध में अपनी पराजय होती है तथा दुर्जनो से सर्वदा चित्त अशान्त रहता है ।।

पञ्चमभावस्थ सूर्यफल

सुतस्थानगे पूर्वजापत्यतापी कुशाग्रा मतिर्भास्करे मन्त्रविद्या।
रतिर्वञ्चनो संचकोऽपि प्रमादी मृतिः क्रोडरोगादिजा भावनीया ॥

जिसके पञ्चम भाव में सूर्य हों, वह प्रथम सन्तान का कष्ट (मृत्यु) तीक्ष्ण बुद्धि, मन्त्र विद्या का ज्ञाता, ठगने तथा संग्रह करने में चतुर तथा असावधान होता है। उसकी मृत्यु कलेजे के रोगों से होती है ।।

यदादित्येऽपत्ये प्रथमतनयो याति विलयं
कुशाग्रा वै बुद्धिः कपटपटुतातीव वितता ।
प्रसक्तिर्मन्त्राणां प्रभवति रतिर्वञ्चनपरा
तथा तस्य क्रोडामयनिवहभोगेन निधनम् ॥

सूर्य यदि पञ्चमभाव में हो तो उसकी प्रथमसन्तति नष्ट होती है। वह कुशाग्रबुद्धिकपटी-, मन्त्रविद्या का- प्रेमी, दूसरों को ठगने में तत्पर तथा हृदय सम्बन्धित रोग आदि से मृत्यु को प्राप्त करता है ।।

षष्ठभावस्थ सूर्य का फल

रिपुध्वंसकृद्भास्करो यस्य षष्ठे तनोति व्ययं राजतो मित्रतो वा।
कुले मातुरापच्चतुष्पादतो वा प्रयाणे निषादैर्विषादं करोति ॥६॥

जिस व्यक्ति की जन्मकुण्डली में षष्ठमाव में सूर्य हो, वह व्यक्ति शत्रुओं का नाश करने वाला, न्यायालय के कार्यों में तथा मित्रों के निमित्त धनव्यय करने वाला एवं यात्रा में निषाद (वनवासी भील आदि) जातियों से कष्ट पाता है।

दिवाभर्ता षष्ठे प्रबलरिपुहर्ता व्ययचयं
धराभर्तुर्दण्डाद्धितजनवशाच्चापि कुरुते ।
जनन्या गोत्रार्तिर्गजवृषतुरङ्गादिषु विपत्

प्रयाणे भिल्लाद्यैर्बहुतरविवादो जनिमताम् ॥

सूर्य यदि षष्ठभाव में हो तो वह प्रबल शत्रुओं का नाशक होता है। राजदण्ड तथा मित्रों के कारण धनव्यय करता रहता है। उसके मातृकुल में कष्ट तथा हाथीबैल-घोड़े आदि चतुष्पद जीवों - द्वारा पीड़ा एवं परदेश यात्रा में निम्नजातियों से बहुत विवाद होता है।

सप्तमभावस्थ सूर्यफल

धुनाथो यदा द्यूनजातो नरस्य प्रियातापनं पिण्डपीडा च चिन्ता।
भवेत्तुच्छलब्धिः क्रये विक्रयेऽपि प्रतिस्पर्धया नैति निद्रां कदाचित् ॥

जिस व्यक्ति की कुण्डली में सप्तम भाव में सूर्य हों उसे स्त्री कष्ट, शारीरिक पीड़ा, खरीद-बिक्री में स्वल्प लाभ होता है। वह व्यक्ति प्रतिवादियों से ईर्ष्या के कारण सुखपूर्वक नहीं सोता है।

प्रचाण्डांशु कामे जननसमये यस्य भवति
प्रियायाः सन्तापं सपदि कुरुते तस्य सततम्।
तथा कष्टं देहे हृदि परमचिन्तामपि खला-
दनल्पव्यापारादपि च परमायाति न धनम् ॥

जिसके जन्मसमय में सप्तमभाव में सूर्य हो तो शीघ्र ही उसे स्त्रीकष्ट, निरन्तर शरीरकष्ट, दुष्टों के कारण मानसिक चिन्ता तथा अधिक परिश्रम करने पर भी पूर्ण धनलाभ नहीं होता है।

अष्टमभावस्थ सूर्य का फल

क्रियालम्पटं त्वष्टमे कष्टभाजं विदेशीयदारान् भजेद्वाप्यवस्तु।
बसुक्षीणता दस्युतो वा विलम्बाद्विपद्गुह्यतां भानुरुग्रां विधत्ते ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में अष्टम भाव में सूर्य हो, वर क्रियालम्पट (कामुक परस्त्रीगामी) दुःखी, दूसरे देश या जाति की स्त्री से सम्बन्ध करने वाला, सुरापी तथा मांसाहारी होता है। उसका धन डाकूमों के द्वारा हरण किया जाता है। गुहा रोग बवासीर), सुजाक मादिसे उग्र कष्ट प्राप्त करता है

मृताव कर्केश्वरतनुसमा कान्तिविरतिः
क्रियाहीना बुद्धिःप्रभवति वसुर्ण्यमभितः।
गुदे रोगाधिक्यं खलु पुरवधूभिश्च रमणं
विदेशे संवासः कलिरपि जनैर्यस्य जनने ॥

सूर्य यदि अष्टमभाव में हो तो वह चन्द्रसदृश कान्तिवाला, निष्क्रिय बुद्धिवाला तथा धन-धान्य से क्षीण होता है। गुदा रोगी (पाईल्स 'आदि रोग(, परस्त्री रमणकर्ता, विदेश में वासी तथा लोगों से कलह करने वाला होता है।

नवमस्थ सूर्य का फल

दिवानायके दुष्टता कोणयाते न चाप्नोति चिन्ताविरामोऽस्य चेतः।
तपश्चर्यया‌ऽनिच्छयापि प्रयाति क्रियातुङ्गतां तप्यते सोदरेण ॥

जिसकी कुण्डली में नवमभाव में सूर्य हों, वह दुष्टता करता है। उसका चित्त चञ्चल रहता है। तपस्या तथा धार्मिक कार्यों में आस्था न रहते हुये भी लोक में पूज्य होता है। सहोदर भाई से कष्ट पाता है, वह दाम्भिक, असन्तुष्ट तथा अस्थिर चित्त का होता है।

जनुःकाले जन्तोर्नवमभवने वासरमणौ
बर्हिर्योगेनालं सकलजनपूज्यत्वमभितः।
तथा चिन्ताधिक्यं भवति सहजैरन्यमनुजैः
प्रवासादुद्विग्नं हृदयमपि तप्तं क्षितितले ॥

जिस के जन्मसमय में सूर्य नवम भावस्थ हो तो वह बहिर्योग के कारण सब लोगों से पूजित होता है । सहोदर भाइयों से तथा अन्य लोगों से चिन्ताधिक्य तथा प्रवास के कारण मन उद्विग्न रहता है ॥

दशमभावस्थ सूर्य का फल

प्रयातोंऽशुमान् यस्य मेषूरणेऽस्य श्रमः सिद्धिदो राजतुल्यो नरस्य ।
जनन्यास्तथा यातनामातनोति क्लमः संक्रमेद्वल्लभैर्विप्रयोगः॥

जिसकी जन्म कुण्डली में जन्म लग्न से दशम भाव में सूर्य हों, उस व्यक्ति का उद्योग राजा की भांति सफल होता है। उसकी योननायें शीघ्र कार्यान्वित होती हैं। माता के द्वारा कष्ट मिलता है। अपने प्रिय जनों (मित्र-पुत्र-पिता-माता आदि) से उसका वियोग होता है। जिससे उसे ग्लानि होती है॥

दिनाधीशे राज्ये जननसमये तस्य जनके
जनन्यामार्तिः स्यादिह हि निबिडा यस्य सहसा ।
श्रमात् सिद्धिः सर्वा क्षितिपतिकृपाकीर्तिरतुला

कलत्रापत्याद्यैर्भवति विधुरा बुद्धिरनिशम् ॥

सूर्य यदि दशमभाव में हो तो उसके मातापिता को कष्ट-, परिश्रम से कार्यसिद्धि, राजा की कृपा से अतुल कीर्तिलाभ तथा स्त्-रीपुत्रादि- के कारण अहर्निश कलुषित बुद्धि रहती है ॥

एकादशभावस्थ सूर्यफल

रवौ संलभेत् स्वं च लाभोपयाते नृपद्वारतो राजमुद्राधिकारात् ।
प्रतापानले शत्रवः सम्पतन्ति श्रियोऽनेकधा दुःखमङ्गोद्भवानाम् ॥

जिसके एकादश भाव में सूर्य हों वह सरकारी अधिकार प्राप्त कर धनार्जन करता है। उसकी प्रतापाग्नि से शत्रु सन्त्रस्त रहते हैं। अनेक प्रकार से धनागम होता है। सन्तान के द्वारा उसे कष्ट होता है॥

यदा लाभस्थानं गतवति रवौ यस्य सततं
धनानामाधिक्यं क्षितिपतिकृपातस्तनुभृतः ।
प्रतापाग्नौ शश्वत् पतति रिपुवृन्दं च परितः
स्वपुत्रात्सन्तापो भवति बहुधा वाहनसुखम् ॥

सूर्य यदि आयभाव में हो तो उसे राजा की कृपा से पूर्ण धनलाभ और उसके प्रतापाग्नि से शत्रुओं का संहार होता है। उसे वाहन से विशेष सुख परन्तु अपने पुत्र से कष्ट होता है ॥

द्वादशभावस्थ सूर्य का फल

रविर्द्वादशे नेत्रदोषं करोति विपक्षाहवे जायतेऽसौ जयश्रीः ।
स्थितिर्लब्धया लीयते देहदुःखं पितृव्यापदो हानिरध्वप्रदेशे ॥

जिसकी कुण्डली में द्वादश भाव में सूर्य हों उसे नेत्र विकार होता है। शत्रुओं से संघर्ष कार्य में विजय प्राप्ति होती है। लाभ की स्थिति बनी रहती है। शारीरिक कष्ट दूर होता है। चाचा की तरफ से आपत्ति रहती है। यात्रा करने पर रास्ते में धन हानि की सम्भावना रहती है ॥

व्यये चेदादित्ये जनुषि नयने कष्टमधिकं
क्षतिर्गिऽकस्पानिजवपुषि पीडा च निबिडा ।
रिपूणां संग्रामे भवति विजयश्रीस्तनुभृतः
स्थितिचाञ्चल्याज्जनकसहजार्तिश् !च महती ॥

जिसके व्ययभाव में सूर्य हो उसे नेत्र में अधिक कष्ट, मार्ग में अकस्मात धनक्षय, शरीर में अधिक कष्ट, संग्राम में विजय, अधिक चञ्चलता के कारण अस्थिर स्वभाव और अपने चाचा वर्ग से द्रोह होता है ।।

बोध प्रश्नों

1. भावों की संख्या होती है

(क) 10 (ख)12 (ग) 14 (घ) 16

2. कुण्डली के पंचम भाव को कहते है।

(क) पुत्र भाव (ख)उदय भाव (ग) पराक्रमभाव (घ) पाताल भाव

3. सूर्य प्रथम भाव में होतो जातक शरीर कैसा रहेगा।

(क) लम्बा शरीर वाला (ख) छोटे कद का (ग)मोटा शरीर (घ) पतला शरीर वाला

4. वाहन का विचार किस भाव से किया जाता है।

(क) 5 (ख) 10 (ग) 12 (घ) 4

5. सूर्य का वर्ण है ।

(क) रक्त-श्याम (ख) कला (ग) पीला (घ) सफेद

5.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने यह जाना कि सूर्य के स्वरूप, प्रकृति और कारकत्व के बार में सम्यक रूप से अध्ययन किया साथही आपने यह जाना कि भावा कितने होते हैं और उनके विचारणीय विषय किस भाव से क्या विचार किया जाता है। सूर्य लग्न में हो तो व्यक्ति तेजस्वी, प्रभावशाली और आत्मविश्वासी होता है । ऐसा व्यक्ति उच्च पद या प्रतिष्ठा प्राप्त करता दूसरे भाव में सूर्य व्यक्ति के धन और वाणी को प्रभावित करता है। व्यक्ति की वाणी में तेज होता है, लेकिन परिवार में कभी-कभी वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। यह स्थिति धन संचय में बाधाएं उत्पन्न कर सकती है । तीसरे भाव में सूर्य साहस और पराक्रम को बढ़ाता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी, निर्भीक और संकल्पशील होता है। छोटे भाई-बहनों से सहयोग प्राप्त होता है। लेखन, कला, और संवाद में प्रवीणता मिलती है। चतुर्थ भाव का सूर्य माता से संबंधों में बाधा ला सकता है। यह स्थिति संपत्ति, भूमि और वाहन के मामलों में लाभकारी होती है,। पंचम भाव में सूर्य विद्या, संतान और रचनात्मकता को प्रभावित करता है। यह स्थिति संतान सुख और शिक्षा में सफलता प्रदान करती है। व्यक्ति प्रेम संबंधों और रचनात्मक कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। षष्ठ भाव का सूर्य शत्रुओं को

परास्त करने में सक्षम बनाता है। ऐसा व्यक्ति स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना कर सकता है, लेकिन मुकदमेबाजी और विरोधियों पर विजय प्राप्त करता है। सप्तम भाव में सूर्य वैवाहिक जीवन में अहंकार और मतभेद पैदा कर सकता है। यह स्थिति साझेदारी के मामलों में भी बाधाएं उत्पन्न करती है। जीवनसाथी के साथ संबंधों में सुधार के लिए प्रयास करना आवश्यक होता है। अष्टम भाव का सूर्य व्यक्ति को गूढ़ ज्ञान और रहस्यमय विषयों में रुचि देता है। यह स्थिति आकस्मिक लाभ और दीर्घायु का संकेत देती है, लेकिन स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की संभावना रहती है। नवम भाव का सूर्य भाग्य, धर्म, और आध्यात्मिकता को बढ़ावा देता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यवान होता है और पिता से लाभ प्राप्त करता है। धर्म-कर्म में रुचि और लंबी यात्राओं का योग बनता है। दशम भाव का सूर्य करियर और समाज में प्रतिष्ठा प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करता है और नेतृत्व क्षमता से युक्त होता है। यह स्थिति कार्यक्षेत्र में उन्नति और सम्मान देती है। एकादश भाव का सूर्य लाभ और इच्छाओं की पूर्ति का संकेत देता है। मित्रों और सहयोगियों से सहायता प्राप्त होती है। आय में वृद्धि होती है और व्यक्ति समाज में प्रभावशाली बनता है। द्वादश भाव का सूर्य व्यय, आध्यात्मिकता, और मोक्ष की ओर झुकाव बढ़ाता है। ऐसा व्यक्ति विदेश यात्रा करता है, लेकिन व्यय अधिक होता है। स्वास्थ्य और नींद संबंधी समस्याएं भी हो सकती हैं। चमत्कारचिंतामणि के अनुसार सूर्य के द्वादश भावों में फल ग्रह की स्थिति, दृष्टि और राशियों पर भी निर्भर करता है। कुंडली के अन्य ग्रहों के साथ इसकी स्थिति का अध्ययन करना आवश्यक है।

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

कलत्र- पत्नि
तुङ्ग - उच्च कद का लम्बा शरीरवाला होता है।
सहज- कुण्डली के तृतीय भाव
कुटुम्ब- परिवार

5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ख)

2. (क)

3. (क)

4. (घ)

5 (क)

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहज्जातकम् - चौखम्भा प्रकाशन

वृहत्पराशरहोराशास्त्र - चौखम्भा प्रकाशन

ज्योतिष सर्वस्व – चौखम्भा प्रकाशन

चमत्कार चिंतामणि- चौखम्भा प्रकाशन

भावप्रकाश - चौखम्भा प्रकाशन

सरावली- चौखम्भा प्रकाशन

मानसागरी- चौखम्भा प्रकाशन

5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1 द्वादश भावों से विचाणीय विषयों का सविस्तार से वर्णन करें।

3 सूर्य के कारकत्व वर्णन करते हुए प्रथम, द्वितीय तृतीयभावस्थ फल का उल्लेख करें।

3 सूर्य का चतुर्थ, पंचम, षष्ठभावस्थ फल का वर्णन करें।

4 सूर्य का सप्तम , अष्टम नवम भावस्थ फल लिखिये।

खण्ड -3
द्वादश भावस्थ ग्रह फल

इकाई – 1 द्वादश भावस्थ चन्द्र एवं मंगल ग्रह फल

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 द्वादश भावस्थ चन्द्र का फल

1.4 द्वादश भावस्थ मंगल का फल

बोध प्रश्न

1.5 सारांश

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

1.7 बोधप्रश्नों के उत्तर

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई BAJY(N) – 221, खण्ड 3 के इकाई प्रथम के ‘ **द्वादश भावस्थ चन्द्र एवं मंगल ग्रह फल**’ से सम्बन्धित है। आप यह जानने कि कोशिस करेंगे कि चन्द्र का द्वादश भावों में शुभाशुभ क्या फल होता है, और मंगल का द्वादश भावों में शुभाशुभ क्या फल होता है, आप इसकी पूर्व की इकाई में जान चुके हैं कि द्वादश भाव किसे कहते हैं और द्वादश भावों से किन- किन विषयों का विचार करते हैं। इसको हम भली-भांति पढ़ चुके हैं तथा आप इस इकाई में चन्द्रमा और मंगल के कारकत्व और उनके द्वादश भाव में फल ।

1.2 उद्देश्य

- चन्द्रमा का द्वादश भावों में क्या फल होगा इसे समझ सकेंगे।
- चन्द्रमा का द्वादश भावों में स्थित शुभाशुभ फल क्या है इसे आप समझ सकेंगे।
- चन्द्रमा के कारकत्व को आप समझ सकेंगे।
- मंगल का द्वादश भावों में क्या फल होगा इसे समझ सकेंगे।
- मंगल का द्वादश भावों में स्थित शुभाशुभ फल क्या है इसे आप समझ सकेंगे।
- मंगल के कारकत्व को आप समझ सकेंगे।

1.3 द्वादश भावस्थ चन्द्र का फल

चन्द्रमा का स्वरूप

सारावली ग्रन्थ के अनुसार चद्रमा का स्वरूप -

सौम्यः कान्तविलोचनो मधुरवाग्गौरः कृशाङ्गो युवा
प्रांशुः सूक्ष्मनिकुञ्चितासितकचः प्राज्ञो मृदुः सात्विकः ।
चारुर्वातकफात्मकः प्रियसखो रक्तकसारो घृणा
वृद्धस्त्रीषु रतश्चलोऽतिसुभगः शुभ्राम्बरश्चन्द्रमाः ॥

चन्द्रमा सौम्य, सुन्दर नेत्रयुक्त, मृदुभाषी, गौरवर्ण, कृशित, युवा, उन्नत, सूक्ष्म तथा सरल काले-काले बालों से युक्त, प्राज्ञ, मृदु, सात्विक, सुन्दा, वात- कफ प्रकृति युक्त, मित्रप्रिय, रक्तसारयुक्त, दयावान्, वृद्धस्त्री में लीन, अत्यन्त सुन्दर तथा श्वेताम्बर धारी स्वरूप वाला है।

वृहज्जतक ग्रन्थ के अनुसार चद्रमा का स्वरूप -

तनुवृत्ततनुर्बहुवातकफः प्राज्ञश्च शशी मृदुवाक् शुभदृक।

दुबला-पतला और गोल शरीर अत्यधिक वात और कफ प्रकृति, बुद्धिमान, मनोहर नेत्र, कोमलवचन और आकर्षक चपल नेत्र वाला चन्द्रमा का स्वरूप कहा गया है।

चन्द्रमा का विस्तृत कारकत्व

चन्द्रमा

कविता, फूल, खाने के पदार्थ, मणि, चॉदी, शंख, मोती, आदि समुद्रोत्पन्न पदार्थ, नमकीन पानी, वस्त्राभूषण, स्त्री, घी, तेल, तिल, नींद, बुद्धि, रोग, आलस्य, कफ, प्लीहा, मनोभाव, हृदय, पाप – पुण्य, खटाई , सुख , जलीय पदार्थ, चॉदी, गन्ना, गेहूँ, सर्दी से बुखार, यात्रा, कुऑं आदि स्थान, टी.बी. , सफेद रंग, बेल्ट, तगडी, कॉसा, नमक, मन, मनोबल, शरद ऋतु, मुहूर्त्त, मुखशोभा, पेट, शहद, हँसी – मजाक, परिहास कुशलता, तेज चाल, चंचलता, दही, यश, रोजगार लाभ, कन्धे की बीमारियॉं, राजसी चिन्ह, खून की शुद्धता, शरीर विकास, चमकीली चीजें मखमली कोमल कपडे आदि का कारक है।

प्रथमभावस्थ चन्द्रफल

विघुर्गोकुलीराजगः सन् वपुस्थो घनाध्यक्षलावण्यमानन्दपूर्णम्।
विधत्ते धनं क्षीणदेहं दरिद्रं जडं श्रोत्रहीनं नरं शेषलग्ने ॥

यदि वृष कर्क या मेष राशि का चन्द्रमा लग्न में हो तो वह मनुष्य अत्यन्त धनी, स्वस्थ, सुन्दर तथा आनन्दपूर्वक रहता है। शेष राशि का चन्द्रमा लग्न में हो तो वह निर्धन, कुरूप, कृशकाय (रोगी) मूर्ख तथा बधिर होता है।

क्रिये तुङ्गे स्वर्क्षे प्रभवति विलग्ने हिमकरो
विधत्ते सत्वाढ्यं नरमतुलमोदावृतमपि।
गदवातैर्युक्तं जडमधममन्यर्भग उत
श्रिया हीनं नित्यं वधिरमपि सत्वैर्विरहितम् ॥

जिस के जन्मकाल में चन्द्रमा मेष वृष या कर्क राशि का होकर लग्न में स्थित हो तो वह बल तथा धन से परिपूर्ण होकर विपुल आनन्द को प्राप्त करता है। यदि मिथुनसिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक--

धनु-मकर-कुम्भ और मीन राशि का होकर लग्न में स्थित हो तो वह रोगीजड़-दरिद्र-बधिर और- बल से हीन होता है ॥

धनस्थ चन्द्र का फल

हिमांशै वसुस्थानगे धान्यलाभः शरीरेऽतिसौख्यं विलासोऽङ्गनानाम् ।
कुटुम्बे रतिर्जायते तस्य तुच्छां वशं दर्शने याति देवाङ्गनापि ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में लग्न से द्वितीय स्थान में चन्द्रमा हों तो उस मनुष्य का जीवन धन-धान्य से युक्त, शारीरिक सुख पूर्ण, स्त्रियों के साथ आनन्दपूर्वक रमण करता है। कुटुम्ब के लोगों के प्रति अत्यल्प स्नेह रखता है । उसे देखकर अप्सरायें भी मोहित हो जाती है। तात्पर्य यह कि वह मनुष्य बहुत ही सुंदर होता ॥

जनुः कोशागारं गतवति शशाङ्के तनुभृतां
धनर्द्धिः पद्माक्षीरतिरतिसुखं धान्यनिवहैः ।
भवेत्प्रीतिस्तुच्छा निजपरिजने विष्णुवनिता
समायाति स्वैरं निखिलभवनान्तः प्रमुदिता ॥

चन्द्रमा यदि धनभाव में हो तो धन की वृद्धि, कमलसमान नेत्रवाली स्त्री में प्रीति, धन-धान्यसुख, अपने परिजनों से स्वल्प प्रेम तथा उसके घर में प्रसन्नतापूर्वक लक्ष्मी स्वमेव आकर निवास करती है ।

पराक्रमभावस्थ चन्द्रफल

विधौ विक्रमे विक्रमेणति वित्तं तपस्वी भवेद्धामिनी रञ्जितोऽपि।
कियच्चिन्तयेत्साहजं तस्य शर्म प्रतापोज्ज्वलो धर्मिणो वैजयन्त्या ॥

जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली में चन्द्रमा तृतीय भाव में स्थित हों वह व्यक्ति निज बाहुबल से धनार्जन करता है। स्त्रियों से लुभाने पर भी वह तपस्वी होता है। उसकी धर्म पताका के द्वारा ही उसका यश सर्वत्र फैलता है ॥

सहोत्ये शीतांशौ जनुषि बलिते विक्रमवशाद्
धनान्यागच्छन्ति प्रवरवनितासङ्गमसुखम् ।
प्रतापद्भिः पुंसां सहजगणतः सौख्यमधिकं

तपस्या संसारे बुधजननमस्या प्रभवति ॥

जिस को जन्मसमय में मामा तृतीया पार स्वपराक्रम से धनलाभ होता है। उत्तात्री को सच, वृद्धि, सहोदर भाइयों से पूर्णरूपेण सुख, तपस्या (अ) प्राति)। युक्त और संसार में विद्वानों द्वारा सणानित होता है।

चतुर्थभावस्थ चन्द्रफल

यदा बन्धुगो बान्धवैरत्रिजन्मा नृपद्वारि सर्वाधिकारी सदैव।
वयस्यादिमे तादृशं नैव सौख्यं सुतस्त्रीगणात्तोषमायाति सम्यक् ।।

यदि चन्द्रमा किसी की जन्म कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित हो तो वह भाईबन्धुओं के - द्वारा राजकार्य (नौकरी) प्राप्त करता है। प्रारम्भिक वय में स्वल्प सौख्य मिलता है। बह स्त्री पुत्रादिकों से सन्तुष्ट रहता है।

सुखागारे चन्द्रो भवति सबलो यस्य जनने-
धिकारो भाण्डारे प्रखलवसुधाभत्रनिशम्।
वयस्याये किञ्चित् सुखमपि ततो नूतनलता
विलासः पुत्राणां सुखमलमलङ्कारनिवहै। ।।

बली चन्द्रमा यदि चतुर्थ भाव में हो तो वह भण्डार का स्वामी (कोषाध्यक्षहोता है। उसे (बाल्यावस्था में किंचित सुख तथा युवावस्था। स्त्रीपुत्र-अलङ्कार आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है-।

पञ्चमभावस्थ चन्द्रफल

यदा पञ्चमे यस्य नक्षत्रनाथो ददातीह सन्तानसंतोषमेव।
मिर्त निर्मलां रत्नलाभं च भूमिं कुसीदेन नानाप्तयो व्यावसायात् ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में पंचमभाव में चन्द्रमा हों वह निर्मल बुद्धि, रत्न (हीरा जवाहरादि) का लाभ तथा भूमि का सुख पाता है। व्याज का कारवार तथा व्यापार से धन प्राप्त करता है ॥-

जनुःकाले चन्द्रो भवति यदि सन्तानसबने
तदा पुंसःकान्तासुतसुखमलटारनिकः।
सदा हृद्या विद्या नरपतिकुलादेव वसुधा-
दुकूलार्थाः स्वैरं धनमपि कुसीदेन नितराम ॥

चन्द्रमा यदि पञ्चमभाव में हो तो उसे अलङ्करणादि से युक्त स्त्री का सुख तथा पुत्र का सुख प्राप्त होता है। वह उच्चकोटि का विद्या होता है। राज्यकुल से भूमिवस्त्र-धन का लाभ और व्याज-आदि से भी धन का लाभ होता है ।।

षष्ठभावस्थ चन्द्र का फल

रिपौ राजते विग्रहेणापि राजा जितास्तेऽपि भूयो विधौ सम्भवन्ति।
तदग्रेऽरयो निष्प्रभा भूयसोऽपि प्रतापोज्बलो मातृशोको न तद्वत् ॥

जिसकी जन्मकुण्डली में षष्ठभाव में चन्द्रमा हो वह व्यक्ति शासकों से भी संघर्ष करने में सफल होता है। उसके समक्ष शत्रु निस्तेज हो जाते हैं। उसका उज्वल प्रताप सर्वत्र देदीप्यमान होता है। वह माता के प्रति विशेष स्नेह नहीं रखता है।

अरिस्थाने चन्द्रो भवति सकरो जन्मसमये
प्रतापाग्नौ शत्रुचलति परितस्तस्य परतः।
पुनर्भूयादजा रिपुरिह जितोऽपि क्षितितले
सुखं मातुः स्वल्पं प्रभवति गदानामतिरतिः॥

जिस के जन्मसमय में बली चन्द्रमा षष्ठभाव में हो तो उसकी प्रतापाग्नि से शत्रुवर्ग शीघ्र ही भस्म हो जाते हैं। वह पृथ्वी पर बलवान शत्रुओं को भी जीत लेता है। उसे अल्प मातृसुख और अधिक रोग होता है।

सप्तमभावस्थ चन्द्रफल

ददेद् दारशं सप्तमे शीतरश्मिर्धनित्वं भवेदध्ववाणिज्यतोऽपि।
रतिं स्त्रीजने मिष्टभुग्लुब्धचेतः कृशः कृष्णपक्षे विपक्षाभिभूतः ॥

जिसकी जन्मकुण्डली में सप्तमभाव में चन्द्रमा हों वह स्त्री सुख को प्राप्त करता है स्थल व्यापार के द्वारा धनवान होता है। कृष्णपक्ष में स्त्रियों से अधिक स्नेहादि करता है। वह मिष्टानप्रेमी तथा लोभी होता है। शत्रुओं से पराजित भी होता है।

यदा कान्तागारं गतवति मृगाङ्के जनिमतां
कराक्रान्तेऽकस्माद्धनमपि भवेत् स्त्रीजनकुलात्।
अनङ्गप्राबल्यं वरनगरनारीरतिकला-

प्रवीणो वै धीरध्वनिमतिरतीव प्रभवति ॥

सप्तमभाव में यदि पूर्णबली चन्द्रमा हो तो उसे किसी स्त्रीकुल- से अकस्मात् धनप्राप्ति होती है । वह प्रबलकामी सुन्दर स्त्रियों के साथ रति- कला में प्रवीण, अत्यन्त गम्भीरध्वनि और स्थिरबुद्धि वाला होता है।

अष्टमभावस्थ चन्द्र का फल

सभा विद्यते भैषजी तस्य गेहे पचेत्कहिचित् क्वाथमुद्गोदकानि ।
महाव्याधयो भीतयो वारिभूताः शशीक्लेशकृत्सङ्कटान्यष्टमस्थः ॥

जिसकी जन्ममुण्डली में अष्टम भाव में चन्द्रमा पड़े हों, उसके घर वैद्यों की भीड़ लगी रहती है। सदा मूग आदि का काढ़ा पकता रहता है। कठिन रोगों तथा शत्रुओं का भय व्याप्त रहता है। अष्टम भाव का चन्द्रमा सदा क्लेशदायक होता है।

यदा मृत्युस्थानङ्गतवति शशाङ्के बलयुते
महारोगातङ्कः प्रबलरिपुशङ्का च भवति ।
क्वचित् क्वाथं मुद्गोदकमपि पचन्तीह भिषजः
सदा सद्वैद्यानां कलकलरवस्तस्य सदने ॥

जिसके जन्मसमय में अष्टमभाव में बलीचन्द्रमा हो उसे गम्भीर रोगों से आतङ्क (भय) तथा बलवान्शत्रुओं से डर बना रहता है । उसके गृह में वैद्यों के कारण काढ़ामूंग की दाल का रस - आदि बनता रहता है तथा बड़ेबड़े वैद्यों का जमघट लगा रहता है। अर्थात् उसके घर में अधिक- बीमारी होती है।

नवमस्थ चन्द्र का फल

तपोभावगस्तारकेशो जनस्व प्रजाश्च द्विजाः बन्दिनस्तं स्तुवन्ति ।
भवत्येव भाग्याधिको यौवनादेः शरीरे सुखं चन्द्रवत्साहसं च ॥

जिसकी जन्मकुण्डली में भाग्यस्यान में चन्द्रमा हों वह द्विजाति ब्राह्मण), क्षत्रिय, वैश्य वन्दिजनों तथा प्रजा से प्रशंसित होता है। युवावस्था से ही भाग्यशाली, शारीरिक सुख से सम्पन्न तथा साहसी होता है। चन्द्रमा की भांति उसका साहस घटता बढ़ता रहता है।-

तपस्थाने राकापतिरिह यदा जन्मसमये:

स्तुवन्ति व्यामोहात् प्रबलरिपवश्चापि कृतिनः ।
तमर्थानामाप्तिः परमकमनीयं मुखमलं
सुखं चाङ्गे राकापतिवदमितं तस्य सततम् ॥

चन्द्रमा यदि नवमभाव में हो तो उसके बलवान शत्रुगण तथा प्रबुद्धजन भी आकर्षित होकर स्तुति करते हैं। उसे धनलाभ, पूर्णचन्द्र के सदृश सुन्दरमुख और चन्द्रमा के जैसा ही शारीरिक सुख प्राप्त होता है अर्थात् चन्द्रमा जिस प्रकार क्षीण तथा पूर्ण होता रहता है उसी तरह उसका शारीरिक सुख भी घटता बढ़ता रहता है।

दशमभावस्थ चन्द्र का फल

सुखं बान्धवेभ्यः खगे धर्मकर्मा समुद्राङ्गजे शं नरेशादितोऽपि ।
नवीनाङ्गनावैभवे सुप्रियत्वं पुरा जातके सौख्यमल्पं करोति ॥

दशमभाव में चन्द्रमा हो तो वह धार्मिक तथा भाई- बन्धुओं का सुख प्राप्त करता है। राजकीय शासकों के द्वारा सौख्य प्राप्त करता है। नयीनयी स्त्रियों से वल्लभता मिलती है। सन्तान सुख अल्प होता है।- सेवकों का सुख स्वल्प रहता है।

यदा कर्मस्थानङ्गतवति तमीशे जनिमतां
स्वबन्धुभ्यः सौख्यं नरपतिकुलादर्थन्चियः ।
नवीनाभिर्नित्यं नगरवनिताभिः सुरतजं
सुखं पूर्वापत्ये प्रभवति सुखं नैव सततम् ॥

दशमभाव में यदि चन्द्रमा हो तो उसे अपने बन्धुबान्धवों से- सुख, राजकुल से धनलाभ, तथा नित्य नई नारियों से रतिसुख होता है, परन्तु उसे अपने ज्येष्ठ पुत्र से सुख प्राप्त नहीं होता है ॥

एकादशभावस्थ चन्द्रफल

लभेद् भूमिपादिन्दुना लाभगेन प्रतिष्ठाधिकाराम्बराणि क्रमेण ।
श्रियोऽथ स्त्रियोऽन्तःपुरे विश्रमन्तिक्रिया वैकृती कन्यका वस्तुलाभः ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में एकादश भाव में चन्द्रमा हों वह राजा के द्वारा सम्मान, पद तथा वस्त्रादि प्राप्त करता है। उसके अन्तः- पुर में लक्ष्मी तथा स्त्रियों का वास रहता है। उसके किये कार्य नष्ट हो जाते हैं, कन्या सन्तति की अधिकता रहतो है ॥

तमीभर्ता लाभे भवति जनने यस्य सबल-
स्तदा पृथ्वीभर्तुः प्रभवति धनानामधिकृतिः ।
श्रियः श्रेणी बाला लसति सदनान्तःप्रमुदिता
प्रतिष्ठा काष्ठान्तं व्रजति विभुता भूपतिकृता ॥

जन्मसमय में बली चन्द्रमा यदि ग्यारहवें भाव में हो तो वह राजा के धन का अधिकारी होता है तथा उसके घर में प्रमुदिता लक्ष्मी एवं सुन्दरी स्त्री निवास करती है। उसे दिगन्तव्यापि प्रतिष्ठा और राजा द्वारा प्रभुत्व की प्राप्ति होती है ॥

द्वादशभावस्थ चन्द्र का फल

शशी द्वादशे शत्रुनेत्रादिचिन्ता विचिन्त्या तदा सद्व्ययो मङ्गलेन ।
पितृव्यादिमात्रादितोऽन्तर्विवादो न चाप्नोति कामंप्रियाल्पप्रियत्वम् ॥

व्ययस्थान में जिसके चन्द्रमा हों, उसे शत्रु से भय तथा नेत्र कष्ट की चिन्ता बनी रहती है। विवाहादि मांगलिक कार्यों में उसका धन व्यय होता है। चाचा तथा उसके पुत्रादिकों से एवं मातृ कुल के लोगों से आंतरिक क्लेश होता है। स्त्री सुख पूर्ण नहीं मिलता है ॥

व्ययस्थानं याते जनुषि रजनीशे जनिमतां
रिपोर्भीतिश्चिन्ता नयनयुगले रोगपटली ।
विचिन्त्या यज्ञादौ व्ययचय उतान्तं पितृकुला-
त्तथा मातुर्वंशात्प्रभवति विषादश्च सुरतात् ॥

चन्द्रमा यदि व्ययभाव में हो तो उसे शत्रु से भयचिन्ता-नेत्रों में- अनेक प्रकार के रोग, यज्ञादि कार्यो में अधिक व्यय, पितृकुलमातृकुल से- परेशानी और रतिक्रिया में विषाद होता है ॥

1.4 द्वादश भावस्थ मंगल का फल

सारावली ग्रन्थ के अनुसार मंगल का स्वरूप -

ह्रस्वः पिङ्गललोचनो दृढवपुर्दीप्ताग्निकान्तिश्चलो
मज्जावानरुणाम्बरः पटुतरः शूरश्च निष्पन्नवाक्।
हस्वाकुचित दीप्तकेश तरुणः पित्तात्मकस्तामस

श्चण्डः साहसिकोऽपि घातकुशलः संरक्तगौरः कुजः ।।

मंगल छोटा कद, पिङ्गल नेत्रों से युक्त, दृढ शरीर, ज्वलित अग्नि के सदृश कान्ति से युक्त, चल (चञ्चल), मज्जायुक्त, लाल अम्बर (वस्त्र)धारी, अत्यन्त चतुर, शूर, वाग्मी, ह्रस्व तथा सुन्दर (घूँघराले केश से युक्त, युवा, पित्त प्रकृति, तामसी (तमोगुणी), साहसी, घात कुशल तथा लाल गौरवर्ण युक्त स्वरूप वाला होता है ।।

वृहज्जतक ग्रन्थ के अनुसार मंगल का स्वरूप -

क्रूरदृक् तरूणमूर्तिरुदारः पैत्तिकः सुचपलः कृशमध्यः ।

अर्थात् वक्रदृष्टि, युवा, उदारचित, पित्तप्रकृति, चंचल प्रकृति एवं पतली कमर मंगल का स्वरूप शास्त्रज्ञों ने बताया है।

मंगल का विस्तृत कारकत्व

मंगल

शूरता, वीरता, पराक्रम, आक्रामकता, युद्ध, शस्त्र उठाना, वीर्य हानि, चोरी, शत्रु, लाल रंग, उद्यानपति होना, शोर, पशुधन, राजयोग, क्रोध, मूर्खता, विदेशयात्रा, धीरज, पालक पिता आदि, मौखिक कलह , चित्त, गर्मी, घाव, राजसेवा, रोग, प्रसिद्धि अंगक्षति, कटुरस, युवावस्था, मिट्टी के पदार्थ, रूकावट, मांस – भक्षण , दोष दर्शन, शत्रु पर विजय, तीखा भोजन, सोना धातु, गम्भीरता, पुरूषत्व , शील, मूत्र के रोग, जला हुआ प्रदेश, सूखे वन, धन, खून, काम, क्रोध, सेनापतित्व, वृक्ष, वन विभाग का अधिकारी, ठेकेदारी, कृषि भूमि, दण्डाधिकारी, साँप, घर, वाहन- सुख, रक्त स्राव, पारा, बेहोशी आदि का कारक है ।

प्रथमभावस्थ भौमफल

विलग्ने कुजे दण्डलोहाग्निभीतिस्तपेन्मानसं केसरी किं द्वित्तीयः ।
कलत्रादिघातः शिरोनेत्रपीडा विपाके फलानां सदैवोपसर्गः ।।

जिसकी जन्म कुण्डली में लग्न में मंगल स्थित हों। वह व्यक्ति कितना भी बलवान तथा साहसी क्यों न हो, उसे लाठी, डंडे, लोहे तथा अग्नि से भय होता है। मानसिक चिन्ता बनी रहती है।

स्त्री सुख का नाश होता है, सिर तथा नेत्र में पीड़ा होती है। अच्छे फलों की प्राप्ति के अवसर पर अनेक विघ्न उत्पन्न होते हैं ॥

धरापुत्रे लग्नं गतवति यदा जन्मसमये ।
प्रहारो लौहास्त्रादनलशरदण्डादपि भयम् ।
विनाशो भार्यायाः शिरसि नयने रोगपटली
प्रतापस्तस्यापि प्रभवति मृगेन्द्रेण च समः ॥

जिसके जन्मसमय में मङ्गल यदि लग्न में हो तो उसके ऊपर लौहास्त्र का प्रहार होता है तथा आगतीर-लाठी से भी प्रहार क-ा भय रहताहै। स्वीनाश, शिर और आँखो में रोग होता है तथा वह सिंह के समानपराक्रमी होता है ॥

धनस्थ भौम का फल

भवेत्तस्य किं विद्यमाने कुटुम्बे, धनेऽङ्गारके यस्य लब्धे धने किम् ।
यथा त्रायते मर्कटः कण्ठहारं पुनः संमुखं को भवेद्वादभग्नः ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में द्वितीय भाव में मंगल स्थित हों, उसे धन लाभ होने पर भी उसका सुख नहीं मिलता। जैसे बन्दर के गले में हार पहनाने पर भी उसका आनन्दानुभव उसे नहीं होता ॥२॥

कुटुम्बे माहेयः प्रभवति यदा यस्य जनने
प्रलब्धे वित्तेशे स्वजन जनतः किं फलमलम् ।
यथा मुक्ताहारं क्षितिपतिजनैरर्पितमिमं
गले सूत्रायन्ते सततमभितो मर्कटगणाः ॥

मङ्गल यदि धनभाव में हो तो उसे अपने बन्धुबान्धवों से धनमिलने पर भी क्या लाभ हो - सकता है अर्थात कुछ भी नहीं, क्योंकि जिसप्रकार राजपुरुषों द्वारा पहनाई गई मोतियों की माला को वानर साधारण सूत्रसमझ कर अपने गले से तोड़कर फेक देता है उसी प्रकार वह व्यक्ति भीउस धन का दुरुपयोग कर उसे नष्ट कर देता है ॥

पराक्रमभावस्थ भौमफल

कुतो बाहुवीर्यं कुतो बाहुलक्ष्मीस्तृतीये न चेन्मङ्गलो मानवानाम्।
सहोत्थव्यथा भण्यते केन तेषां तपश्चर्यया चोपहास्यः कथं स्यात् ॥

जिसकी कुण्डली में तृतीय भाव में मंगल न हो तो उसे बाहुबल तथा धनार्जन कहाँ ? भ्रातृकष्ट कौन कह सकता है। तपस्या में उपहास कैसे प्राप्त कर सकता है। तात्पर्य यह कि जिसकी कुण्डली कुण्डली में तृतीय भाव में मंगल हों तो वह बाहुबल में यश तथा धनार्जन कर सकता है। भाइयों का सुख उसे नहीं मिखता, तपश्चर्या में उसका उपहास होता है। तपस्या में सफलता नहीं मिलती है ॥

यदा गोत्रापुत्रे प्रभवति सहोत्थे तनुभृतां
बलं बाह्वोः पूर्ण निजभुजबलेनैव सदने।
स्थिरा विष्णोः कान्ता लसति सहजे कष्टमधिकं
तपश्चर्या वर्या भवति च सपर्याविधिरपि ॥

मङ्गल यदि तृतीयभाव में हो तो वह पूर्ण बाहुबली होता है तथा अपने बाहुबल से ही घर में लक्ष्मी को सर्वदा स्थिर किए रहता है। भ्रातृवर्ग को अधिक कष्ट होता है तथा वह विधिपूर्वक तपस्या-भगवदनुष्ठानादि धार्मिक कार्य आदि भी करता रहता है ॥

चतुर्थभावस्थ भौमफल

यदा भूसुतः सम्भवेत्तुर्यभावे तदा किं ग्रहाः सानुकूला जनानाम्।
सुहृद्वर्गसौख्यं न किञ्चिद्विचिन्त्यं कृपावस्त्रभूमिर्लभेद् भूमिपालात् ॥

जिसके चतुर्थ भाव में मंगल हों तो उसके अन्य अनुकूल ग्रह क्या कर सकते हैं ? उसे मित्र वर्ग का सुख कैसे मिल सकता है ? उसे राजा से दया वस्त्राभूषण तथा भूमि का लाभ अवश्य होता है। अर्थात् सभी ग्रहों के अनुकूल होने पर भी चतुर्थ भाव का मंगल सुखी जीवन नहीं होने देते हैं ॥

चतुर्थे भूपुत्रे भवति जनने यस्य सबल:
किमन्ये रव्याद्यासततमनुकूलास्तनुभृतः ।:
सुहृद्वर्गात्सौख्यं प्रभवति न किञ्चिनिजगृहात्
त्रपा शत्रोः क्षोणीनरपतिकृपावस्त्रपटली ॥

मंगल बली होकर यदि चतुर्थ भाव में हो तो उसे बलवान्सूर्यादि ग्रह भी अनुकूल रहकर क्या शुभ कर सकते हैं ? उसे मित्रवर्ग औरअपने घर के लोगों से भी कभी सुख नहीं मिलता है। शत्रुओं से भय होता है, परन्तु राजा की कृपा से वस्त्रादि का लाभ होता है ॥

पञ्चमभावस्थ भौमफल

कुजे पञ्चमे जाठराग्निर्बलीयान् न जातं नु जातं निहन्त्येक एव ।
तदानीमनल्पा मतिः किल्विषेऽपि स्वयं दुग्धवत्तप्यतेऽन्तः सदैव ॥

जिस जातक की कुण्डली में पंचम भाव में मंगल हो उसकी पाचन शक्ति बलवान होती है। वह अधिक भोजन करता है। पापकर्म में उसका मन अधिक लगता है। वह मन ही मन सदा सन्तप्त रहता है। उसकी गर्भस्य या उत्पन्न सन्तान नष्ट होती है॥

अपत्ये क्षमापुत्रे भवति जठराग्नेप्रबलता :
न सन्तानो जीवत्यपि यदि च जीवत्यपि गदी ।
सदान्तःसन्तापः खलु मतिरनल्याघन्चिये
कृतेऽपि स्वर्गाप्तिर्नहि जनिमतामर्थनिवहः ॥

मंगल यदि पञ्चमभाव में हो तो उसकी जठराग्नि प्रबल होतीहै। उनकी सन्तान नहीं जीती है यदि जीती भी है तो रोगी रहती है। हृदयसदा सन्तप्त और बुद्धि विस्तृत होती है। उसे पाप करने पर स्वर्ग कीप्राप्ति हो सकती है किन्तु वह धनवान नहीं हो सकता है। अर्थात् निर्धन ही रहता है॥

षष्ठभावस्थ मंगल का फल

न तिष्ठन्ति षष्ठेऽरयोऽङ्गारके वै तदङ्गेरिताः सङ्गरे शक्तिमन्तः।
मनीषी सुखी मातुलेयो न तद्वद् विलीयेत वित्तं लभेतापि भूरि ॥

जिसके षष्ठ भाव में मंगल हो वह अपने चतुर सेना- पति तथा सैनिकों के द्वारा बलवान शत्रुओं को भी सामने टीकने नहीं देता है। वह बुद्धिमान होता है। मामा का सुख उसे नहीं होता। उसका धन नष्ट होने पर भी पुनः प्राप्त हो जाता है॥

यदा शत्रुस्थानं गतवति कुजे जन्मसमये
पलायन्ते भीताः सपदि समरे शत्रुनिवहाः ।
विचारज्ञा प्रज्ञा भवति न सुखं मातुलकुले
विलीयन्ते चार्थाः पुनरपि पराप्तिरभितः ॥

मंगल यदि षष्ठभाव में हो तो उसके शत्रुगण संग्राम में हीभयभीत होकर भाग जाते हैं। विचारशील बुद्धि होती है, मातृकुल में सुखनहीं होता है और सञ्चित धन नष्ट होता है, परन्तु पूर्व धन के नष्ट होने केबाद शीघ्र ही पुन अन्य प्रकार से धन का लाभ होता है ॥ :

सप्तमभावस्थ भौमफल

अनुद्धारभूतेन पाणिग्रहेण प्रयाणेन वाणिज्यतो नो निवृत्तिः ।
मुहुर्भङ्गदः स्पर्धिनां मेदिनीजः प्रहारार्दने सप्तमे दम्पतिघ्नः ॥ ७॥

यदि सप्तमभाव में मंगल हो तो निश्चय ही वह मनुण्य वैवाहिक कारणों से तथा परदेश में निवास करके जल्दी घर नहीं लौटता है। बारबार वह शत्रुओं से तड़ित होता है। उसे दाम्पत्य सुख - नहीं मिलता। यदि स्त्री की कुण्डली में हो तो पुरुष का नाश होता। तथा पुरुष की कुण्डली में हो तो स्त्री का नाश होता है।

कुजे कान्तागारं गतवति जनोऽतीवलघुताम्
समाधत्ते युद्धे प्रबलरिपुणा सक्षततनुः ।
तथा कान्ताघाती परविषयवासी खलमति-
निवृत्तो वाणिज्यादपि परवधूरङ्गनिरतः ॥

मंगल यदि सप्तमभाव में हो तो वह अत्यन्त लघुता को प्राप्तकरता है अर्थात् वह भाग्यहीन होता है। युद्ध में प्रबल शत्रुओं से उसकाशरीर क्षतविक्षत होता है अर्थात् शत्रु से पराजित होता है। - भार्याहीन-परविषयासक्त और दुष्टबुद्धि का होता है। कार्य व्यापार को छोड़कर वह परस्त्री के साथ रमण करता है ॥

अष्टमभावस्थ भौम का फल

शुभास्तस्य किं खेचराः कुर्युरन्ये विधानेऽपि चेदष्टमे भूमिसूनुः ।
सखा किं न शत्रूयते सत्कृतोऽपि प्रयत्ने कृते भूयते चोपसर्गः ॥

यदि अष्टमभाव में मंगल हों तो अन्य ग्रहों के भाग्यदायक होने पर भी वह व्यक्ति दुःखी रहता है। सत्कार करने पर भी उसके मित्र शत्रु की भांति व्यवहार करते हैं। प्रयत्न करने पर भी सदा विघ्नों के कारण असफल रहता है ॥

क्षमापुत्रे मृत्यौ कविगुरुबुधाः किं तनुभृतः

प्रकुर्युर्ये चान्ये प्रभवति विधानेऽपि नितराम् ।
खलायन्ते तस्य स्वजननिवहाः किं न सहसा
प्रयत्ने यातेऽपि प्रवरगदजा विघ्नपटली ॥

मंगल यदि अष्टमभाव में हो तो उस मनुष्य के शुक्रबुध-गुरु- आदि अन्य शुभग्रह शुभस्थान में रहकर भी क्या शुभ फल दे सकते हैं?अर्थात अशुभ फल होता है । उसके अपने बन्धुबान्धव भी शत्रु हो जाते हैं और प्रयत्न करने पर भी उसे रोगों से कष्ट होता है ॥

नवमस्थ भौम का फल

महोग्रा मतिभाग्यवित्तं महोग्रं तपो भाग्यगो मङ्घलस्तत् करोती।
भवेन्नादिमः श्यालकः सोदरो वा कुतो विक्रमस्तुच्छलाभे विपाके ॥९॥

जिसके भाग्य स्थान में मंगल हों वह बहुत बुद्धिमान, तेजस्वी भाग्यशाली होता है। उसके बड़े साले या होता है । अत्यन्त उद्यम करने पर भी बहुत अल्प लाभ होता है ॥

यदा भाग्यस्थानं गतवति कुजे जन्मनि मति-
महोग्राभाग्यादै धनमपि महोग्रं तनुभृताम् ।
तथा ज्येष्ठः श्यालो नहि सहजसौख्यं च परितः
कृतेप्युद्योगे स्यान्नतु फलविपाकः खलु भृशम् ॥

मंगल यदि नवमभाव में हो तो वह उग्रबुद्धि वाला, भाग्यवान तथा धनवान होता है । उसे ज्येष्ठशाला और अपने सहोदरभाई से सुख नहीं होता है। उद्योग करने पर भी उसे उत्तम फल नहीं मिलता है ॥

दशमभावस्थ मंगल का फल

कुले तस्य किं मङ्गलं मङ्गलो नो जनैर्भूयते मध्यभावे यदि स्यात् ।
स्वतः सिद्ध एवावत्तंसीयतेऽसौ वराकोऽपि कण्ठीरवः किं द्वितीयः ॥

यदि मंगल दशम भाव में हो तो उसके परिवार में मांगलिक कार्य नहीं होते। लोगों के द्वारा वह सुख तथा आदर पाता है। अपने पराक्रम से वह श्रेष्ठता प्राप्त करता है। सामान्य परिवार में उत्पन्न होने पर भो सिंह के समान प्रभावशाली होता है ॥

यदा कर्मस्थानं गतवति कुजे यस्य जनने

क्षमाभृत्यग्रामक्षितिपतिकुलावाप्तविभवः ।
स्वतः सिद्धः शश्वत्प्रभवति समन्तात्परमसौ
प्रतापवातेन व्रजति सहसा सिंहसमताम् ॥

मंगल यदि दशमभाव में हो तो उसे भूमिभृत्य-ग्राम और- राजकुल से धन प्राप्त होता है। वह निरन्तर सब कार्यो में सफल और सिंह के समान पराक्रमी होता है ॥

एकादशभावस्थ भौमफल

कुजपीडयेल्लाभगोऽपत्यशत्रून् भवेत्संमुखो दुर्मुखोऽपि प्रतापात् । :
धनं वर्धते गोधनैर्वाहनैर्वा सकृच्छून्यतार्थे च पैशून्यभावात् ॥

जिसकी कुण्डली में एकादश भाव में मंगल हों वह अपनी सन्तति तथा शत्रुओं को कष्ट देता है। दुष्ट स्वभाव होने पर भी अपने तेजसे लोगों से वह आदर प्राप्त करता है। गौवाहन आदि से धन - लाभ करताहै। दुष्ट स्वभाव के कारण वह एक बार धन के अभाव का भी अनुभव करता है ॥

यदाये माहेयः प्रभवति बलादेव समरे
जयत्यद्धाशत्रूनपि सुतविषादेन विकलः ।
धनग्रामक्षोणीचपलतुरगानन्दकृदसौ
परार्थव्यापारात्क्षतिमतितरामेव लभते ॥

मंगल यदि एकादशभाव में हो तो वह अपने पराक्रम से संग्राममें शत्रुओं को जीतता है परन्तु अपने पुत्र के विषाद से विकल रहता है। धनग्राम-भूमि और सुन्दर (चञ्चल) घोड़ा आदि वाहनों से - वह आनन्द प्राप्त करता है। दूसरों के साथ व्यापार करने से उसे अत्यन्त ही क्षति होती है ॥

द्वादशभावस्थ भौम का फल

शताक्षोपि तत्सक्षतो लोहघातैः कुजो द्वादशेऽर्थस्य नार्श करोति ।
मृषा किंवदन्ती भयं दस्युतो वा कलिं पारधीहेतु दुःखं विचिन्त्यम् ॥

जिसके द्वादशभाव में मंगल हों वह बड़े प्रभावशाली व्यक्ति को भी शस्त्र प्रहार से पराजित कर सकता है। धन का नाश होता है। चोरी आदि का मिथ्या आरोप लगता है। चोरों से विवाद तथा भय रहताहै। नौकरों का कष्ट तथा पराधीनता का कष्ट भोगता है ॥

कुजोऽपाये यस्य प्रभवति यदा जन्मसमये

तदा वित्तापायं सपदि कुरुते तस्य सततम् ।

कलङ्कप्रख्याति पिशुनजनतश्चौरकुलतो

भयं वा शस्त्रादेरपि रिपुकृतं दुःखमधिकम् ॥

मंगल यदि द्वादशभाव में हो तो उसका धन शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। निरन्तर चुगली करने वालों के द्वारा उसे कलङ्क की ख्याति मिलती है। चोर और शस्त्र से भी उसे भय होता है तथा शत्रुओं से उसे अधिक दुखः होता है॥

1. चन्द्रमा किस का कारक है।

(क) मन (ख) दुख (ग) बल (घ) विद्या

2. मंगल किस का कारक है।

(क) मन (ख) वाणी (ग) बल (घ) सुख

3. चन्द्रमा के प्रथम भाव में होतो जातक शरीर कैसा रहेगा।

(क) लम्बा शरीर वाला (ख) छोटे कद (ग)मोटा शरीर (घ) कृशकाय

4. मोती किस ग्रह का रत्न है।

(क) चन्द्रमा का (ख) मंगल का (ग)बुध का (घ) शनि का

5. मंगल किस रत्न का कारक है।

(क) मुंगा (ख)पन्ना (ग) पुखराज (घ) नीलम

1.6 संराश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि यदि चंद्रमा लग्न में स्थित हो, तो व्यक्ति सुंदर, आकर्षक और विनम्र स्वभाव का होता है। उसका मन चंचल होता है, लेकिन भावनाओं से परिपूर्ण रहता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों के प्रति सहानुभूति रखता है। दूसरे भाव में चंद्रमा व्यक्ति को मधुर वाणी और परिवार से सुख प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति धनवान होता है और धन संचय में सफल रहता है। तीसरे भाव में चंद्रमा साहस, पराक्रम और कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी होता है और भाई-बहनों के साथ अच्छे संबंध रखता है। चंद्रमा यदि कमजोर हो, तो मन में डर और

अस्थिरता आ सकती है। चतुर्थ भाव का चंद्रमा माता का विशेष सुख देता है। ऐसा व्यक्ति संपत्ति, भूमि और वाहन से लाभ प्राप्त करता है। मन में शांति और सुख बना रहता है। पंचम भाव में चंद्रमा संतान सुख और रचनात्मकता प्रदान करता है। षष्ठ भाव का चंद्रमा स्वास्थ्य में समस्याएं और मानसिक अशांति ला सकता है। ऐसा व्यक्ति शत्रुओं से घिरा रह सकता है, लेकिन उन्हें पराजित करने में सक्षम होता है। सप्तम भाव में चंद्रमा जीवनसाथी से सुख और सौंदर्य प्रदान करता है। वैवाहिक जीवन में भावनात्मक संतुलन बना रहता है। यदि चंद्रमा कमजोर हो, तो संबंधों में अस्थिरता आ सकती है। अष्टम भाव का चंद्रमा आकस्मिक लाभ का योग बनाती है, लेकिन मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव हो सकता है। नवम भाव का चंद्रमा भाग्यवान बनाता है। ऐसा व्यक्ति धर्मप्रिय होता है और लंबी यात्राओं में रुचि रखता है। । दशम भाव का चंद्रमा करियर में सफलता और प्रतिष्ठा देता है । ऐसा व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्र में लोकप्रिय होता है। यदि चंद्रमा मजबूत हो, तो व्यक्ति को उच्च पद और मान-सम्मान प्राप्त होता है । एकादश भाव में चंद्रमा आय और इच्छाओं की पूर्ति का संकेत देता है। यह स्थिति आर्थिक समृद्धि और सामाजिक जीवन में सफलता प्रदान करती है। द्वादश भाव में चंद्रमा व्यय और आध्यात्मिक झुकाव को दर्शाता है। यह स्थिति विदेश यात्रा और मोक्ष की ओर झुकाव देती है। यदि मंगल लग्न में स्थित हो, तो व्यक्ति साहसी, ऊर्जावान और दृढ़ निश्चयी होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी इच्छाओं को पूरा करने में सफल रहता है। हालांकि, यह स्थिति कभी-कभी गुस्से और आक्रामकता को बढ़ा सकती है। यदि मंगल अशुभ हो, तो चोट और दुर्घटनाओं का योग बन सकता है। दूसरे भाव में मंगल व्यक्ति की वाणी को तीखा और प्रभावशाली बनाता है। ऐसा व्यक्ति धन संचय में मेहनती होता है, लेकिन परिवार में मतभेद हो सकते हैं। यदि मंगल अशुभ हो, तो विवाद और वित्तीय समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। तीसरे भाव में मंगल व्यक्ति को साहसी, परिश्रमी और पराक्रमी बनाता है। ऐसा व्यक्ति अपने प्रयासों से बड़े लक्ष्यों को प्राप्त करता है। भाई-बहनों के साथ अच्छे संबंध बनते हैं। यह स्थिति कला, लेखन, और संवाद में भी सफलता देती है। चतुर्थ भाव का मंगल भूमि, संपत्ति और वाहन के मामलों में लाभकारी होता है। पंचम भाव में मंगल व्यक्ति को बुद्धिमान और साहसी बनाता है। यह स्थिति शिक्षा और संतान पक्ष से लाभकारी होती है। षष्ठ भाव का मंगल शत्रुओं को पराजित करने और मुकदमों में सफलता दिलाने में सहायक होता है। सप्तम भाव में मंगल वैवाहिक जीवन में संघर्ष और मतभेद का संकेत देता है। अष्टम भाव का मंगल व्यक्ति को गूढ़ ज्ञान और रहस्यमय विषयों में रुचि प्रदान करता है। यह स्थिति आकस्मिक लाभ का संकेत देती है, लेकिन चोट, दुर्घटना, या स्वास्थ्य समस्याओं से सतर्क रहने की आवश्यकता होती है नवम भाव में मंगल भाग्य और धर्म में बाधा उत्पन्न कर सकता है। ऐसा व्यक्ति साहसी होता है, लेकिन पिता से संबंधों में कमी हो सकती है। लंबी यात्राओं में सतर्कता बरतनी चाहिए। दशम भाव का मंगल करियर और कार्यक्षेत्र में सफलता

प्रदान करता है। यह स्थिति नेतृत्व क्षमता को बढ़ाती है और व्यक्ति को उच्च पद दिलाती है। कार्य में ऊर्जा और दृढ़ निश्चय से सफलता मिलती है। एकादश भाव में मंगल आय और इच्छाओं की पूर्ति का संकेत देता है। द्वादश भाव में मंगल खर्च और मानसिक अशांति का कारण बन सकता है। यह स्थिति विदेश यात्रा और आध्यात्मिक झुकाव देती है। व्यक्ति को चोट और दुर्घटनाओं से सतर्क रहना चाहिए।

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

मनोहर नेत्र- सुन्दर आंख वाला

कृशकाय – दुबला पतला शरीर वाला

तपश्चर्या- तपस्या करने वाला

महीप- राजा

मातृसुख – माता का सुख

1.7 बोधप्रश्नों के उत्तर

1.(क)

2. (ग)

3. (घ)

4. (क)

5. (क)

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहज्जातकम् - चौखम्भा प्रकाशन

वृहत्पराशरहोराशास्त्र - चौखम्भा प्रकाशन

ज्योतिष सर्वस्व – चौखम्भा प्रकाशन

चमत्कार चिंतामणि- चौखम्भा प्रकाशन

भावप्रकाश - चौखम्भा प्रकाशन

सरावली- चौखम्भा प्रकाशन

मानसागरी- चौखम्भा प्रकाशन

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. चन्द्रमा के कारकत्व वर्णन करते हुए प्रथम, द्वितीय तृतीय भावस्थ फल का उल्लेख करें।
2. चन्द्रमा का चतुर्थ, पंचम, षष्ठभावस्थ फल का वर्णन करें।
3. चन्द्रमा का सप्तम, अष्टम, नवम भावस्थ फल लिखिये।
4. मंगल के कारकत्व वर्णन करते हुए प्रथम, द्वितीय तृतीय भावस्थ फल का उल्लेख करें।
5. मंगल का चतुर्थ, पंचम, षष्ठभावस्थ फल का वर्णन करें।
6. मंगल का सप्तम, अष्टम, नवम भावस्थ फल लिखिये।

इकाई – 2 द्वादश भावस्थ बुध एंव गुरू ग्रह फल

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 द्वादश भावस्थ बुध का फल

3.4 द्वादश भावस्थ गुरू का फल

बोध प्रश्न

2.5 सारांश

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

2.7 बोधप्रश्नों के उत्तर

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई BAJY(N) – 221, खण्ड 3 के इकाई 2 के ‘ **द्वादश भावस्थ बुध एंव गुरू ग्रह फल’ से सम्बन्धित है।** आप यह जानने कि कोशिस करेंगे कि बुध का द्वादश भावों में शुभाशुभ क्या फल होता है, और गुरू का द्वादश भावों में शुभाशुभ क्या फल होता है, आप इसकी पूर्व की इकाई में जान चुके हैं कि द्वादश भाव किसे कहते हैं और द्वादश भावों से किन- किन विषयों का विचार करते हैं। इसको आप भली-भांति पढ़ चुके हैं तथा इस इकाई में आप बुध और गुरू के कारकत्व और उनके द्वादशभावस्थ फल के बार जान सकेगें।

2.2 उद्देश्य

- ❖ बुध का द्वादश भावों में क्या फल होगा इसे समझ सकेंगे।
- ❖ बुध का द्वादश भावों में स्थित शुभाशुभ फल क्या है इसे आप समझ सकेंगे।
- ❖ बुध के कारकत्व को आप समझ सकेंगे।
- ❖ गुरू का द्वादश भावों में क्या फल होगा इसे समझ सकेंगे।
- ❖ गुरू का द्वादश भावों में स्थित शुभाशुभ फल क्या है इसे आप समझ सकेंगे।
- ❖ गुरू के कारकत्व को आप समझ सकेंगे।

2.3 द्वादश भावस्थ बुध का फल

सारावली ग्रन्थ के अनुसार बुध का स्वरूप -

रक्तान्तायतलोचनो मधुरवाग्दूर्वादलश्यामल-
स्त्वक्सारोऽतिरजोधिकः स्फुटवचाः स्फीतस्त्रिदोषात्मकः ।
हृष्टोमध्यमरूपवान्सुनिपुणो वृत्तः शिराभिस्ततः
सर्वस्यानुकरोति वेषवचनैः पालाशवासा बुधः ॥

बुध रक्त तथा लम्बी आँख से युक्त, मृदुभाषी, दूर्वा दल के सदृश श्यामवर्ण, चर्मसार से युक्त, अत्यन्त रजोधिक, स्पष्ट वक्ता, वात-पित्त तथा कफ तीनों प्रकृति से युक्त, पुष्ट, मध्यम स्वरूप युक्त, सुन्दर, निपुण, शिरादि से आवृत (आच्छादित), वेष व वचन से सब का अनुकरण करने वाला तथा पलाश सदृश वस्त्र धारी है ।।

वृहज्जतक ग्रन्थ के अनुसार बुध का स्वरूप -

श्लिष्टवाक् सततहास्यरुचिज्ञः पित्तमारूतकफप्रकृतिश्च ।।

गद्गद्वाणी, सतत् हास्य में रूचि रखने वाला, कफ, वात और पित्त तीनों प्रकृति बुध का स्वरूप होता है।

बुध का विस्तृत कारकत्व

बुध –

बुद्धि , विद्या, घोडा, खजाना, गणित, वाक्कल, सेवा, लेखन, नया वस्त्र, बँगला, शिल्पकला, ज्योतिष, तीर्थयात्रा, व्याख्यान, आभूषण, मुदूवचन, नाना, दु:स्वप्न, नपुंसकता, खाल, गीलापन, वैराग्य, सुन्दर भवन, डॉक्टर, गला, गान विद्या, भिक्षु, तिर्यग दृष्टि, हँसोडपन, नम्रता, नृत्य, मन का संयम, नाभि, गोत्र वृद्धि, आन्ध्र प्रदेश की भाषा, विष्णु की भक्ति, शूद्र, पक्षी, बहन, भाषा का चमत्कार, नगरद्वार, धूल, गुप्तांग, व्याकरण, पुराण, साहित्य व वेदान्त विद्या, जौहरी, विद्वत्ता, मामा, मन्त्र, तन्त्र, आयुर्वेद, मन्त्रित्व, जुड़वापन, वनस्पति आदि का कारक बुध है।

प्रथमभावस्थ बुधफल

बुधो मूर्तिगो मार्जयेदन्यरिष्टं वरिष्ठा धिया वैखरीवृत्तिभाजः ।
जना दिव्यचामीकरीभूतदेहाश्चिकित्साविदो दुश्चिकित्स्या भवन्ति ।।

जिनकी जन्म कुण्डली में लग्न में बुध स्थित हो। ऐसे व्यक्ति के सभी ग्रह कृत या मन्त्राभिचार कृत अरिष्ट दूर होते हैं। वे अत्यन्त बुद्धिमान होते हैं। लेखनसम्पादनादि कार्यो से - धनार्जन कर जीविका चलाते है। उनका शरीर उत्तम सुवर्ण की भांति सुन्दर होता है। चिकित्सा शास्त्र के ज्ञाता होने पर भी स्वयं रोगी होने पर उनकी चिकित्सा असाध्य हो जाती है ।।

यदा लग्नस्थाने हिमकरसुते यस्य जनने
न किं सर्वारिष्टं विहगजनितं गच्छति लयम् ।
सदा रूपं चामीकरनिभमलङ्कारलसितम्
प्रतिष्ठा संसारे प्रभवति वरिष्ठा तनुभृताम् ।।

बुध यदि लग्न में हो तो उसके ग्रहजन्य अरिष्टों का नाश ही नही अपितु सकलारिष्टों का नाश होता है। आभूषणों से सुशोभित सुवर्ण के सदृश कान्तिमान उसका रूप रहता है और संसार में सबों के बीच उसकी अच्छी प्रतिष्ठा होती है ॥

धनस्थ बुध का फल

धने बुद्धिमान् बोधने बाहुतेजाः सभासङ्गतो भासते व्यास एव।
पृथूदारता कल्पवृक्षस्य तद्वद् बुधैर्भण्यते भोगतः षट्पदोऽयम् ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में द्वितीय भाव में बुध स्थित हों वह व्यक्ति निज बाहुबल से प्रतापशाली होता है। विद्वत् समाज में भगवान वेद व्यास की तरह शोभायभान होता है। दान देने में वह कल्पवृक्ष की भांति होता है। विद्वान लोग कहते हैं कि वह व्यक्ति भ्रमर की भांति गुण- ग्राही एवं स्वावलम्बी होता है ॥

विधोः पत्रे वित्ते प्रवरमतिरज्ञोऽपि कृतिनां
समाजस्थो वाचस्पतिरिव सदा भासत इति।
प्रतापी गीतज्ञो भ्रमर इव भोगी क्षितितले
महोदारः शश्वत्सुरतरुरिवश्रीपतिसमः ॥

बुध यदि धनभाव में रहे तो वह मूर्ख होते हुए भी बुद्धिमान होता है। वह सभा में सदा बृहस्पति के सदृश सुशोभित होता है। वह प्रतापी, सङ्गीत का ज्ञाताभ्रमर के समान भोगी-, अमर, कल्पवृक्ष के समान पृथ्वी पर महान उदार और धनवान होता है ॥

पराक्रमभावस्थ बुधफल

वणिमित्रता पण्यकृवृत्तिशीलो वशित्वं धियो दुर्वशानामुपैति।
विनीतोऽतिभोगं भजेत्संन्यसेद्वा तृतीयेऽनुजैराश्रितो ज्ञे लतावान् ॥

जिसके तृतीय भाव में बुध हो, वह व्यापारियों से मित्रता कर व्यापार कार्य में संलग्न होता है। उसी से जीविकोपार्जन करता है। मूर्खों के साथ होने पर वह उन्हीं के वश में हो जाता है। अत्यन्त विनीत होने पर भी लौकिक भोगों में लीन होता है या संन्यस्त (उदासीन) जीवन हो जाता है। भाइयों से लताओं की भांति लिपटा रहता है। तात्पर्य यह है कि उसे भाइयों से अधिक प्रेम होता है॥

तृतीये यस्य ज्ञे प्रसरति वणिक् वृत्तिरभितः

सदा दुर्वश्यानां भवति च वशित्वं निधिधिया।
सुखानामाधिक्यं निजसहजवर्गानुशरणा-
त्ततोऽन्ते वैराग्याविषयपटलीगच्छति लयम् ॥

बुध यदि तृतीयभाव में हो तो उसके व्यापार की चतुर्दिक वृद्धिहोती है। वह धन लोलुपता से दुष्ट बुद्धियों के वश में रहता है। अपने सहोदर बन्धुवर्गो के अनुशरण से सुख होता है और अन्त (वृद्धावस्था) में है वैराग्य के कारण उसकी विषय वासनाएँ लुप्त हो जाती हैं॥

चतुर्थभावस्थ बुधफल

चतुर्थे चरेच्चन्द्रजश्चारुमित्रो विशेषाधिकृभूमिनाथाङ्गतास्य।
भवेल्लेखको लिख्यते वा तदुक्तं तदाशापरैः पैतृकं नो धनं च ॥४॥

जिसकी जन्म कुण्डली में चतुर्थ भाव में बुध हो उसे अच्छे- अच्छे मित्र मिलते हैं। राजाओं के द्वारा विशेष अधिकार प्राप्त होता है, वह लेखक या टीकाकार होता है। उसके मुख से निकले हुए वाक्यों को अन्य लोग लिखते हैं। उसे पैतृक धन बहुत थोड़ा होता है॥

चतुर्थे यस्य ज्ञे प्रवरजनमैत्री क्षितितले-
धिकारोऽपि द्वारे भवति सुधाभर्तुरभितः।
तदाज्ञातः सर्वैर्निजपरिजनैर्लिख्यत ठत
प्रयत्नात्तद्वाक्यं किमपि न सुखं पैतृकथनात् ॥

बुध यदि चतुर्थभाव में हो तो उसे संसार में श्रेष्ठ मनुष्यों से मैत्री होती है तथा राज दरबार में अधिकार प्राप्त होता है। परिवार के लोग उसके वचनों का समादर करते है तथा उसे अपने पैतृक धन से सुख होता है॥

पञ्चमभावस्थ बुधफल

वयस्यादिमे पुत्रगर्भो न तिष्ठेद् भवेत्तस्य मेधाऽर्थसंपादयित्री।
बुधैर्भण्यते पञ्चमे रौहिणेये कियद्विद्यते कैतवस्याभिचारम् ॥

जिसके पंचमभाव में बुध स्थित हो तो उसकी को वय के पूर्वार्द्ध में पूत्र सन्तान नहीं होती। उसकी बुद्धी धनार्जन कार्य में कुशल होती है। वह अभिचार (मारण-मोहन-उच्चाटन) कार्य अधिक करता है। ऐसा विद्वान् लोग कहते हैं। वह छलकपट में भी निपुण होता है॥-

तमीभर्तुः पुत्रे गतवति जनुः पुत्रभवनं
वयस्याये यस्य प्रथमसुतगर्भक्षतिरपि ।
मनीषासद्वित्तव्यवहृतिविधेरर्थचतुरा
खलस्य व्यासङ्गात्कपटपटली नृत्यति मुखे ॥

बुध यदि पञ्चमभाव में हो तो प्रथमवय में उसकी स्त्री का प्रथमगर्भ नष्ट होता है। धनोपार्जन में उसकी चतुरबुद्धि लगी रहती है तथा दुष्टों के सहवास के कारण उसके मुख में कपट वाणी भरी रहती है ॥

षष्ठभावस्थ बुध का फल

विरोधो जनानां निरोधो रिपूणां प्रबोधो यतीनांचरोधोऽनिलानाम् ।
बुधे सद्व्यये व्यावहारो निधीनां बलादर्थकृत्संभवेच्छत्रुभावे ॥

जिसके षष्ठभाव में बुध हो उसे लोगों से विरोध होता है। उसके शत्रु उससेपराजि.त होते हैं। वह संन्यासियों (योगियों) से ज्ञान की बातें करता है। प्राणायाम आदि के द्वारा वायु का अवरोध करता है। सत्कार्यो में धन का व्यय करता है ॥६॥

विरोधो बन्धूनामरिगणनिरोधस्तनुभृतां
रिपौ ज्ञे वायूनां प्रभवति विकारोऽपि जठरे ।
यतीनां संबोधः सपदि शुभमार्गे व्ययचयो
वराणां रत्नानां व्यवहृतिरतीवार्थजननी ॥

बुध यदि षष्ठभाव में हो तो बन्धु बान्धवों से विरोध, शत्रुओं का नाश और पेट में वायु विकार होता है। संन्यासी से उसे ज्ञान प्राप्त होता है, धार्मिक कार्यो में धन का व्यय तथा उत्तम रत्नादि के कार्य व्यापार द्वारा धन लाभ होता है ॥

सप्तमभावस्थ बुधफल

सुतः शीतगोः सप्तमे शं युवत्य विधत्ते तथा तुच्छवीर्यं च भोगे।
अनस्तंगतो हेमवद्देहशोभां न शक्नोति तत्संपदो वानुकर्तुम् ॥

जिसके सप्तम भाव में उदित बुध पड़े हों, उसे स्त्री सुख मिलता है, किन्तु वीर्य दीर्वल्य के कारण वह स्त्री से सम्भोग में असफल होता है। उसकी शारीरिक शोभा स्वर्ण के सदृश होती है। उसकी शोभा तथा सम्पत्ति की तुलना कोई नहीं कर सकता। अर्थात् वह सुन्दर तथा धनी होता है॥

बुधे दारागारं गतवति यदा यस्य जनने
त्ववश्यं शैथिल्यं कुसुमशररङ्गोत्सवविधौ ।
'पृगाक्षीणां भर्तुः प्रभवति यदाऽर्केण रहिते
तदा कान्तिश्चञ्चत्कनकसदृशी मोहजननी ॥

बुध यदि सप्तमभाव में हो तो वह स्त्री संभोग में शिथिल होता है परन्तु वह सुन्दरी मृगनयनी स्त्री का स्वामी होता है । यदि बुध सप्तमभाव में सूर्य के साथ नहीं हो तो मन को मोहित करने वाली सुवर्ण के समान देदीप्यमान उसकी कान्ति होती है ॥

अष्टमभावस्थ बुध का फल

शतंजीविनो रन्ध्रगे राजपुत्रे भवन्तीह देशान्तरे विश्रुतास्ते।
निधानं नृपाद्विक्रियाद्वा लभन्ते युवत्युद्भवं क्रीडनं प्रीतिमन्तः ॥

जिसके अष्टमभाव में बुध होता है वह दीर्घायु, अपने देश तथा देशान्तरमें भी प्रसन्न तथा विख्यात होता है। राजा से अथवा व्यापार से धन प्राप्त करता है। उसे स्त्री सुख तथा स्त्री के साथ केलि करने का अवसर मिलता है ॥

मृतावब्जापत्ये प्रभवति यदा जन्मसमये
चिरं वै जीवित्वं निजपरपुरे तस्य सहसा ।
प्रविख्यातिः शचन्नरपतिकुलादर्थन्चियः
परस्त्रीभिः क्रीडा सुरतजनिता यस्य सततम् ॥

बुध यदि अष्टमभाव में हो तो वह दीर्घजीवी तथा अपने देश और विदेश में भी प्रसिद्ध होता है । वह राजकुल से धनलाभ और- पास्त्रीयों से सतत रतिक्रीडा करता है ॥

नवमस्थ बुध का फल

बुधे धर्मगे धर्मशीलोऽतिधीमान् भवेद्दीक्षितः स्वधुनीस्नातको वा।
कुलोद्योगकृद्धानुवभूमिपालात् प्रतापाधिको बाधको दुर्मुखानाम् ॥

जिसके भाग्यस्थान में बुध होता है, वह धार्मिक बुद्धि- मान्, याज्ञिक, सोमयाजी तन्त्र विद्या में दीक्षित तथा नित्य गंगास्नान करने वाला होता है। सूर्य समान अपने कुल के प्रताप को बढ़ानेवाला, राजा से भी अधिक प्रतापी एवं दुष्टों का बाधक होता है ॥

बुधे धर्मस्थानं गतवति सुधर्मा खुधवरो
नरो गङ्गाभक्तो यजननिरतः सखिरभितः ।
पताका वंशस्य प्रभवति नरेशादपि सदा
प्रतापी सन्तापी पिशुनमनुजानां धनपतिः ॥

बुध यदि नवमभाव में हो तो वह विद्वान, धर्मात्मा, गंगा का भक्त, यज्ञकर्ता, सज्जनों का सङ्ग करने वाला, अपने कुल की पताका, राजा से भी अधिक प्रतापी, दुर्जनों को सन्ताप देने वाला तथा पूर्ण धनवान होता है ॥

दशमभावस्थ बुध का फल

मितं संवदेनो मितं संलभेत प्रसादादिवैकारिसौराजवृत्तिः ।
बुधे कर्मगे पूजनीयो विशेषात् पितुः संपदो नीतिदण्डाधिकारात् ॥

दशम भाव में बुध हो तो वह मितभाषी होता है किन्तु बहुत धन धान्य प्राप्त करता है। न्यायधीश या राज्य कोई की शासनाधिकार प्राप्त करता है, पैतृक सम्पत्ति के कारण वह प्रतिष्ठित होता है ॥

बुधे कर्मस्थानं गतवति यदा जन्मसमये
पितुर्वित्तवातैः सुखमतितरामश्वपटली।
गजश्रेणीभृत्यप्रवरमणिशालाम्बरचयः
परानीतिः क्षोणीपतिविहितवृत्तिस्तनुभृतः ॥

बुध यदि दशमभाव में हो तो उसे पैतृकसम्पत्ति से सुख, घोड़ेहाथियों का सुख-, नौकर, उत्तमरत्न तथा भवन आदि का पूर्णसुख- प्राप्त होता है। वह उत्तम नीतिशास्त्र को जानने वाला और राजा से जीविका प्राप्त करनेवाला होता है ॥

एकादशभावस्थ बुधफल

विना लाभभावे स्थितं भेशजातं न लाभो न लावण्यमानृण्यमस्ति ।

कुतः कन्यकोद्वाहदानं च देयं कथं भुसुरास्त्यक्ततृष्णा भवन्ति ॥

जिसके लाभ स्थान में चन्द्रात्मज बुध न हो वह धन की प्राप्ति कैसे करे, सुन्दर कैसे हो, कन्या के विवाह में प्रचुर दान कहाँ से दे, ब्राह्मण लोग दान पाकर पूर्णमनोरथ कैसे हों? तात्पर्य यह कि जिसकी जन्मकुण्डली में बुध लाभ स्थान में हो तो वह व्यक्ति धनवान्, सुन्दर, कन्या- दान के अवसर पर प्रचुर दहेज देने वाला तथा ब्राह्मणों को दान देकर सन्तुष्ट करनेवाला होता है ॥

कुतः कन्यादानं भवति सदने लाभभवने
विना ज्ञं वित्ताप्तिः कथमृणविमुक्तिः कथमपि ।
समन्ताद्भूदेवाः कथमपि वितृष्णाश्च भविना
कथं रूपं दिव्यं कथमरिकुलार्थापहरणम् ॥

बुध यदि एकादश भाव में नहीं रहे ता उससे कन्यादान कैसे हो सकता है, उसे धन की प्राप्ति,.ऋण से विमुक्ति, विप्रगण पूर्ण रूप से संतुष्ट, दिव्य स्वरूप और शत्रुओं से धन का लाभ आदि शुभफल कैसे प्राप्त हो सकते हैं। अर्थात् बुध यदि एकादशभाव में रहे तो उसे उपरोक्त फल प्राप्त होते हैं।

द्वादशभावस्थ बुध का फल

न चेद् द्वादशे यस्य शीतांशुजातः कथं तद्गृहं भूमिदेवा भजन्ति ।
रणे वैरिणो नीतिमायान्ति कस्मात् हिरण्यादिकोशं शठः कोऽनुकुर्यात्।।

जिसके द्वादशभाव में बुध न हों तो उसके घर द्विज वर्ग कैसे जायेंगे । संग्राम में विपक्षी लोग किससे डरेंगे। धन -धान्यादि को शठ लोग कैसे अपहरण करेंगे तात्पर्य यह कि जिसकी जन्मकुण्डली में द्वादश भाव में बुध हों, तो उसके घर ब्रह्मणों को दान मिलता है, विपक्षी भयभीत रहते है तथा दुश्टजन उसके धन का अपहरण नहीं कर करते ।

शुभ्योऽपाये यस्य प्रभवति चेत्तस्य सदा
कर्थ विज्ञानातो भजति परितोऽपि प्रिजगण।।
कर्थ युद्ध धान्ति प्रबलरिपयो वा विमुखताम्
कर्थ कोषापायः प्रवरयजनेतीर्थविषये ॥

बुध यदि द्वादशभाव में नहीं रहे तो उसको घर विद्वान तथा बाह्मण कैसे आ सकते है और बलवान शत्रुगण युद्ध से नौसे विरास हो सकते है तथा उत्तम यज्ञ तीर्थया।। आदि धार्मिक कार्यो में धन खर्च को हो सकता है अर्थात् बुध यदि द्वादशभाव में रहे तो उसे उपरोक्त सभी फल(प्राप्त होते है ॥

2.4 द्वादश भावस्थ गुरू का फल

सारावली ग्रन्थ के अनुसार गुरू का स्वरूप -

ईषत्पिङ्गललोचनश्रुतिधरः सिंहाच्छनादः स्थिरः
सत्वाढ्यः सुविशुद्धकाञ्चनवपुः पीनोन्नतोरस्थलः ।
ह्रस्वो धर्मरतो विनीतनिपुणो बद्धोत्कटाक्षः क्षमी
स्यात्पीताम्बरधृक्कफात्मकतनुर्वेदः प्रधानो गुरुः ॥

बृहस्पति किञ्चित् पिङ्गल वर्ण के नेत्र व कान से युक्त, सिंह गर्जन तुल्य शब्दवाला, स्थिर, बलवान, विशुद्ध स्वर्ण सदृश वर्ण वाला, मोटा तथा उन्नत स्थल से युक्त, हस्वकाय, धर्म में लीन, विनीत, चतुर, तीक्ष्ण दृष्टि वाला, श्रमावान्, पीताम्बरधारी, कफ प्रकृति से युक्त और मेदा प्रधान शरीर वाला होता है ।।

वृहज्जतक ग्रन्थ के अनुसार गुरू का स्वरूप -

बृहत्तनुः पिङ्गमूर्धजेक्षणो बृहस्पतिः श्रेष्ठमतिः कफात्मकः ।

अर्थात् तुङ्ग शरीर, पीत केश, पीत नेत्र, श्रेष्ठ बुद्धि, कफ प्रकृति बृहस्पति का स्वरूप होता है।

गुरू का विस्तृत कारकत्व

वृहस्पति –

शुभ कर्म, धर्म, गौरव, महत्व, पोषण, शिक्षा, गर्भाधान, नगर, राष्ट्र, वाहन, आसन, पद, सिंहासन, अन्न, गृह – सुख, पुत्र, अध्यापन, कर्त्तव्य बोध, संचित धन, मीमांसा शास्त्र, दही, बडा शरीर, प्रताप, यश, तर्क, ज्योतिष, पुत्र, फौज, उदर रोग, दादा, बडे मकान, बडा भाई, राजा, क्रोध, रत्नों का व्यापार, स्वास्थ्य, परोपकार, राजकीय सम्मान, तपस्या , दान , गरूभक्ति, मध्यम श्रेणी का कपडा, गृहसुख, धारणात्मक बुद्धि, सभा चतुरता, बर्तन, सुख, कफ, सुन्दर वाहन आदि का अधिपति वृहस्पति है ।

प्रथमभावस्थ गुरूफल

गुरुत्वं गुणैर्लग्नगे देवपूज्ये सुवेशी सुखी दिव्यदेहोऽल्पवीर्यः ।

गतिर्भाविनी पारलोकी विचिन्त्या वसूनि व्ययं संबलेन ब्रजन्ति ॥

जिसको जन्मकुण्डली में बृहस्पति लग्न में स्थित हो वह व्यक्ति अपनी विद्या बुद्धि से प्रतिष्ठित, सुखी, सुन्दर वेष वाला, सुख साधनों से सम्पन्न होता है। मरणोपरान्त स्वाद उत्तम लाकों की प्राप्ति करता है। उसका धन भोगकार्य में व्यय होता है ॥

गुरुत्वं लोकानां निजगुणगणैरेव सततं
सुखं भव्या कान्तिः प्रभवति तनुस्थे सुरगुरोः ।
व्रजन्ति द्रव्याणि व्ययममितभोगेन कतिभि-
गतिवान्ते चिन्त्या मुरहरपुरे तस्य भविता ॥

बृहस्पति यदि लग्न में रहे तो उसे अपने गुण समूहों से ही लोगों में गुरुता प्राप्त होती है। सर्वदा सुखी, मनोहरस्वरूप, विविध प्रकार के भोगों में व्यय करने वाला तथा अन्त में वह विष्णुलोक को जाता है

धनस्थ गुरु का फल

कवित्वे मतिर्दण्डनेतृत्वशक्तिर्मुखे दोषधृक् शीघ्रभोगांत एव ।
कुटुंबे गुरौ कष्टतो द्रव्यलब्धिः सदा नो धनं विश्रमेद् यत्नतोऽपि ॥

द्वितीय भाव में यदि बृहस्पति हो तो कविता करने में उसकी बुद्धि तीव्र होती है। उसकी वाणी में दोष होता है। वह प्रवचन पटु नहीं होता; स्त्रीसम्भोग में उसका शीघ्र ही वीर्यपतन हो जाता - है। कठिन परिश्रम से उसे धन लाभ होता है। बहुत प्रयत्न करने पर भी उसके घर में धन स्थिर नहीं रहता है

धनस्थे काव्यानां सरसरचनाचारुपटुताऽ-
धिकारो दण्डानां प्रवरवसुधापालसदने ।
सदायासादर्थागम उत जनानां मुखरता
लभेन्नो लोकेभ्यः स्थितिमपि धनं वासवगुरौ ॥

बृहस्पति यदि धनभाव में रहे तो उसे सरस काव्य के निर्माणमें पटुता होती है। श्रेष्ठ राजा के दरबार में वह दण्ड देने का अधिकारीहोता है। यत्न से धन का लाभ करने वाला तथा लोगों के मध्य में अधिक बोलने वाला होता है परन्तु लोगों से उसे प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति नहीं होती है ॥

पराक्रमभावस्थ गुरुफल

भवेद्यस्य दुश्चिक्यगो देवमन्त्री लघूनां लघीयान् सुखं सोदराणाम् ।
कृतघ्नो भवेन्मित्रसार्थे न मैत्री ललाटोदयेऽप्यर्थलाभो न तद्वत् ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में बृहस्पति तृतीय भाव में स्थित हो, वह अत्यन्त क्षुद्र व्यक्ति (अकिंचन) होता है। भाइयों का सामान्य सुख मिलता है। वह कृतघ्न होता है। उसके भाग्य में हितैषी जनों से भी मित्रता नहीं लिखी है। राज्य सभा में या किसी उच्च पद की प्राप्ति के पश्चात् भी उसे यथेष्ट लाभ नहीं होता है ॥

यदा वै दुश्चिक्ये सुरपतिगुरौ जन्मसमये
कृतघ्नो मित्रार्थे प्रभवति लघूनामतिलघुः ।
सदा स्वभ्रातॄणां प्रवरसुखकल्याणकृदयं
गतोऽपि प्रख्यातिं नरपतिगृहे नैव सुखभुक् ॥

बृहस्पति यदि तृतीयभाव में हो तो वह मित्रों के प्रति कृतघ्न और छोटे हृदय वाला होता है। वह सर्वदा अपने भाइयों का सुख और कल्याण करने वाला होता है परन्तु राजा के यहाँ प्रसिद्धि पाकर भी स्वयं सुख भोगने वाला नहीं होता है ॥

चतुर्थभावस्थ गुरुफल

गृहद्वारतः श्रूयते वाजिहषा द्विजोच्चारितो वेदघोषोऽपि तद्वत् ।
प्रतिस्पर्धिनः कुर्वते पारिचार्यं चतुर्थे गुरौ तप्तमन्तर्गतं च ॥४॥

जिसकी जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में गुरु हो तो उसके दरवाजे पर घोड़ों की हिनहिनाहट तथा ब्राह्मणों द्वारा उच्चारित वेदध्वनि सुनायी देती है। उसके विरोधी उसकी सेवा करते हैं, तथापि उसके मन से सन्ताप बना रहता है ॥

सदोच्चैः श्रूयन्ते निगमघनघोषा द्विजमुखाद्
गजाश्वादीनां वै कलकलरवो द्वारि परितः ।
सुखस्थाने यस्य प्रभवति गुरावेव सबले
प्रतिस्पर्धीभूमावतुलपरिचर्या वितनुते ॥

बृहस्पति बली होकर यदि चतुर्थभाव में हो तो उसके द्वार पर सर्वदा ब्राह्मणों के मुख से वेदमंत्रो का उद्घोष और हाथी घोड़ों का कलाव सुनाई पड़ता है। इस पृथ्वी पर प्रतिस्पर्धी (शत्रु) गण भी उसकी बहुत सेवा करते है ॥

पञ्चमभावस्थ गुरुफल

विलासे मतिर्बुद्धिगे देवपूज्ये भवेज्जल्पकः कल्पको लेखको वा।
निदाने सुते विद्यमानेऽपि भूतिः फलोपद्रवः पक्वकाले फलस्य ॥

जिसके पञ्चमभाव में गुरु स्थित हों, उसकी बुद्धि भोगविलास के कार्यों में लगती है। वह वक्ता, तार्किक तथा सुन्दर अक्षर लिखने वाला होता है । उसके पुत्रों की सहायता मिलने पर भी सीमित धन की ही प्राप्ति होती है। कार्यसिद्धि के अवसर पर विघ्नबाधायें उपस्थित हो जाती हैं ॥५॥-

यदा प्रज्ञास्थाने जनुषि मनुजो भोगकुशलः
सदर्थानां वक्ता सदसि च सतर्कः सुरगुरौ ।
सदर्थः सम्पूर्णः प्रवरकृतिभिश्चापि महितः
सदा योगाभ्यासी तनयतनयानन्दविमुखः ॥

बृहस्पति यदि पञ्चमभाव में हो तो वह भोगी, सभा में तर्कसङ्गत और उचित बात बोलने वाला, उत्तम धनधान्य से परिपूर्ण, श्रेष्ठ महापुरुषों से पूजित और सदा योगाभ्यासी होता है परन्तु पुत्र और कन्या के सुख से वह विमुख रहता है ॥

षष्ठभावस्थ गुरु का फल

रुजार्तो जनन्या रुजः सम्भवेयू रिपो वाक्पतौ शत्रुहन्तृत्वमेति ।
बलादुद्धतः को रणे तस्य जेता महिष्यादिशर्मा न तन्मातुलानाम् ॥६॥

जिसके षष्ठस्थान में बृहस्पति स्थित हो वह स्वयं रोगी तथा माता भी रोगिणी होती है। वह शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। युद्ध में उसे कोई कैसे पराजित कर सकता है ? उसे गाय भैस आदि चतुष्पदों का सुख मिलता है। उसके मामा सुखी नहीं रहते ॥

रिपावाजौ जेता रिपुरतिबलात्तस्य पुरतो
न तिष्ठत्यद्धा वै भवति जननी रोगनिवहैः ।
परिव्यग्रा नित्यं नहि सहजवर्गेषु कुशलं

जनन्या जम्भारेर्गुरुरमलकान्तारतिततिः ॥

बृहस्पति यदि षष्ठभाव में हो तो वह युद्ध में शत्रुओं को जीतने वाला होता है। युद्ध में उसके सम्मुख बलवान शत्रु भी नही ठहरता है। उसकी माता सदा रोगों से दुखी रहती है और माता के बन्धुवर्गों में भी कुशल नहीं रहता है। उसे सुन्दरी स्त्री से अत्यन्त रति सुख प्राप्त होता है।

सप्तमभावस्थ गुरुफल

मतिस्तस्य बह्वी विभूतिश्च बह्वी रतिर्वैभवे भामिनीनामबह्वी ।
गुरुगर्वकृद्यस्य जामित्रभावे सपिण्डाधिकोऽखण्डकन्दर्प एव ॥

जिसके सप्तमभाव में बृहस्पति हो, वह व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान्, ऐश्वर्यवान्, तथा धनवान् होता है। स्त्रीरति में उसकी कम रुचि- होती है। उसके भाईबन्धुओं की संख्या अधिक होती है। वह - कामदेव के समान सुन्दर तथा घमण्डी होता है।

गुरौ दारागारे जननसमये यस्य असति
व्रजत्युच्चैः पुंसः सपति परमवं नृपकृतात् ।
विभूतिः प्रज्ञापि प्रभवति च बह्वीफसखसी
रतिर्बहीवध्वाः परममदनायिस्यापितः ॥

बृहस्पति यदि सप्तमभाव में हो तो यह शीत्र ही परमोच्च स्थान को प्राप्त करता है। उसे राजपरिवार से धन का काम होता है तथा उसकी बुद्धि बहुत ही फलदायिनी होती है। उसको स्त्री से बहुत रति सुख प्राप्त होता है तथा वह अधिक कामी होता है ।।

अष्टमभावस्थ गुरु का फल

चिरं नो वसेत्पैतृके चैव गेहे चिरस्थायि नो तद्गृहं तस्य देहम् ।
चिरं नो भवेत्तस्य नीरोगमङ्गगुरुमृत्युगो यस्य वैकुण्ठगन्ता ॥

जिसके अष्टम भाव में बृहस्पति स्थित हो वह पतृक गृह में अधिक समय तक निवास नहीं करता, उसका गृह तथा शरीर दीर्घजीवी नहीं होता है। वह नीरोग भी नहीं रहता है। वह थोड़ी ही आयु लोकवासी हो जाता है ॥

गुरौ मृत्युस्थाने जनुषि न बसेपैतृकगृहे
चिरजीवी किन्तु प्रभवति गदासी हि अनुजः ।

कुलालम्बी यस्याचलपतिरसो सुन्दरतनुः
सदा वै देहान्ते व्रजति हरिसायुज्यपदवीम् ।।

बृहस्पति यदि अष्टममाय में हो तो वह पितृगृह में नहीं रहता है। वह दीर्घायु होता है किन्तु सदा रोगी रहता है । कुल का सदा। अवलम्बन करने वाला, स्थिरबुद्धि, सुन्दर शरीर वाला और देहान्त होने पर विष्णु के सायुज्य मोक्ष लाभ करने वाला होता है ।।

नवमस्थ गुरु का फल

चतुर्भूमिकं तद्गृहं तस्य भूमीपतेर्वल्लभो वल्लभा भूमिदेवाः ।
गुरौ धर्मगे बान्धवाः स्युविनीताः सदालस्यतो धर्मवैगुण्यकारी ।।९।।

जिसके धर्मस्थान में बृहस्पति हो वह व्यक्ति राजाओं का प्रियपात्र तथा ब्राह्मणों का समादर करनेवाला होता है। उसका मकान चार आंगन वाला अर्थात् बहुत बड़ा होता है। उसके भाई लोग बड़े ही नम्र होते हैं। आलस्य के कारण धार्मिक कार्यों में वह प्रमाद कर उसका लोप करता है ।।९।।

चतु:शालं पीतारुणहरितचित्रं खलु गृहं
सदा क्षोणीभर्तुर्बहुतरकृपा बान्धवगणाः ।
विनीता यज्ञाली सुरपतिगुरौ धर्मभवने
मदाधिक्यं तस्य प्रभवति तपस्या लघुतरा ।।

बृहस्पति यदि नवमभाव में हो तो उसे पीलालाल-हरे रङ्गो से- चित्रित चौकोर मकान होता है उसे सदा राजा की कृपा प्राप्त होती है, उसके बन्धुबान्धव गण विनीत होते है-, वह बहुत यज्ञ करता है परन्तु उसमें अधिक मद और तपस्या कम होती है ।।

दशमभावस्थ गुरु का फल

ध्वजा मण्डपे मन्दिरे चित्रशाला पितुः पूर्वजेभ्योऽपि तेजोऽधिकत्वम् ।
न तुष्टो भवेच्छर्मणा पुत्रकाणां पचेत्प्रत्यहं प्रस्थसामुद्रमन्नम् ।।

दशम भाव में जिसकी जन्म कुण्डली में बृहस्पति हो उसके घर में ध्वजा फहराती रहती है। उसके अन्तगृह में चित्र-विचित्र: चित्र लगे रहते हैं । अपने पूर्वजों से भी उसका प्रताप अधिक होता है। दुष्ट पुत्रों के कारण वह असन्तुष्ट रहता है। उसके घर प्रतिदिन प्रस्थमात्र नमक खर्च होता है । अर्थात् उसका परिवार बहुत बड़ा होता है ।

यदा राज्यस्थाने सुरपतिगुरौ यस्य जनने
पताकाभिश्चित्रं यजनभवनं काञ्चनमयम् ।
प्रतापस्याधिक्यं तनयसुखमल्पं द्विजगणाः
समन्ताद् गुञ्जन्ते मधुरमनिशं कीर्तिरतुला ॥

बृहस्पति यदि दशमभाव में हो तो उसे पताकाओं से शोभित स्वर्णमय यज्ञमण्डप होता है । उसके प्रताप की वृद्धि परन्तु सन्तान सुख अल्प होता है । उसके द्वार पर ब्राह्मणगण अहर्निश वेदादि मन्त्रों का उच्चारण करते रहते हैं तथा उसकी विपुल कीर्ति होती है ।।

एकादशभावस्थ गुरुफल

अकुप्यं च लाभे गुरौ किं न लभ्यं वदन्त्यष्टधीमन्तमन्ये मुनीन्द्राः।
पितुर्भारभृत्स्वाङ्गजास्तस्य पञ्च परार्थस्तदर्थो न चेद्वैभवाय ॥

जिसके लाभ भाव में बृहस्पति हो उसे सोनाचांदी आदि- धन क्यों नहीं मिलेगा? बड़ेबड़े - -आठ विषयों के विद्वानों की बात सावधानी पूर्वक सुन कर उनका उत्तर देने में वह सक्षम होता है। वह पितके भार को ! वहन करने वाला अर्थात् पिता का आज्ञाकारी तथा सेवक होता है। उसके पाँच पुत्र होते हैं । उसका धन दूसरों के लाभ के लिए होता है, अपने सुख के लिए उसका धन नहीं होता है।।

गुरावायागारे लसति च विसारे जनुषि तं
स्तुवन्ति श्रीमन्तः सदसि सकला भूसुरगणाः ।
अलभ्यं किं भूमौ सपदि समरे यान्ति विमुखाः
विपक्षा सत्पक्षामुदितमनसस्तस्य सहसा ॥

बलवान बृहस्पति यदि एकादशभाव में हो तो उसकी सभा में धनवान तथा ब्राह्मणगाण स्तुति करते रहते हैं ।पृथ्वी पर उसके लिए कुछ श्री अलभ्य नहीं रहता, संग्राम मैं उसके शत्रुगण शीत्र ही विमुख होकर पलायित हो जाते है तथा अपने पक्ष के लोग सहसा उससे प्रस्न होते रहते हैं।।।

द्वादशभावस्थ गुरु का फल

यशः कीदृशं सद्व्यये साभिमाने मतिः कीदृशी वञ्चना चेत्परेषाम् ।
विधिः कीदृशोऽर्थस्य नाशो हि येन त्रयस्ते भवेयुर्व्यये यस्य जीवः ॥

जिसके द्वादश भाव में बृहस्पति हो उसे अभिमान से सत्कार्यों में धन व्यय करने पर भी यश कैसे मिलेगा ? उसकी बुद्धि दूसरों को ठगने वाली होने से वह बदनाम होता है। उसका धन किसी भी कार्य के करने से नष्ट ही होता है। उपर्युक्त सभी कार्य उसके सफल नहीं होते ॥

अपाये जम्पारेर्गुरपि न भद्रं भुवि यशो
भृशं दम्पाधिक्यं तनुभृत उतार्थव्ययचयः ।
पतिळग्रा नित्यं भवति परविचापहरणे
गुरुणां बन्यूनामुपकृतिविधाने शिथिलता ॥

बृहस्पति यदि द्वादशभाव में हो तो उसे कल्याण और यश प्राप्त नहीं होता है तथा वह बहुत अहङ्कारी होता है। उसे व्यर्थ में व्यय की अधिकता और सदा दूसरे के धन अपहरण हेतु व्यग्र बुद्धि रहती है। गुरु- वर्ग तथा बन्धुवर्ग का उपकार करने में उसे शैथिल्यता होती है ॥

1. बुध किस का कारक है।

(क) मन (ख) वाणी (ग) बल (घ) विद्या

2. गुरू किस का कारक है।

(क) मन (ख) वाणी (ग) ज्ञान (घ) सुख

3. गुरू किस रत्न का कारक है

(क) मोती (ख) पुखराज (ग)पन्ना (घ) गोमेद

4. बुध किस रत्न का कारक है।

(क) मोती (ख)पन्ना (ग) पुखराज (घ) नीलम

2.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने यह जाना है कि यदि बुध लग्न में हो, तो व्यक्ति बुद्धिमान, चतुर और आकर्षक व्यक्तित्व का होता है। ऐसा व्यक्ति संवाद में कुशल और तार्किक होता है। दूसरे भाव में बुध व्यक्ति की वाणी को मधुर और प्रभावशाली बनाता है। ऐसा व्यक्ति धन संचय में सफल होता है और व्यापार से लाभ प्राप्त करता है। तीसरे भाव का बुध व्यक्ति को साहसी

और कर्तव्यनिष्ठ बनाता है। ऐसा व्यक्ति लेखन, संवाद और कलात्मक कार्यों में निपुण होता है। चतुर्थ भाव का बुध शिक्षा, संपत्ति और माता से जुड़े मामलों में लाभ प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति घरेलू जीवन में सुखी रहता है और भूमि, वाहन आदि का स्वामी बनता है। पंचम भाव में बुध व्यक्ति को रचनात्मक और बुद्धिमान बनाता है। शिक्षा, संतान सुख और प्रेम संबंधों में सफलता मिलती है। षष्ठ भाव का बुध व्यक्ति को शत्रुओं पर विजय दिलाता है। सप्तम भाव का बुध वैवाहिक जीवन को सुखद बनाता है। अष्टम भाव में बुध व्यक्ति को गूढ़ ज्ञान और रहस्यमय विषयों में रुचि प्रदान करता है। नवम भाव का बुध व्यक्ति को भाग्यवान और धर्मप्रिय बनाता है। ऐसा व्यक्ति उच्च शिक्षा, लंबी यात्राओं और आध्यात्मिक कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। दशम भाव में बुध करियर और कार्यक्षेत्र में उन्नति प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति व्यवसाय, लेखन और शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। एकादश भाव का बुध आय, लाभ और इच्छाओं की पूर्ति में सहायक होता है। द्वादश भाव का बुध खर्च, विदेश यात्रा और आध्यात्मिकता का संकेत देता है। ऐसा व्यक्ति अपनी वाणी और बुद्धिमत्ता से समस्याओं का समाधान निकालने में सक्षम होता है। यदि बृहस्पति लग्न में स्थित हो, तो व्यक्ति धार्मिक, ज्ञानवान, और प्रख्यात होता है। दूसरे भाव में बृहस्पति व्यक्ति को धन, वाणी, और परिवार में सुख देता है। तीसरे भाव में बृहस्पति साहस, पराक्रम और मित्रों से सहयोग को बढ़ावा देता है। चतुर्थ भाव में बृहस्पति शिक्षा, मातृ सुख, और संपत्ति में वृद्धि करता है। व्यक्ति के पास अच्छा घर, भूमि और वाहन होते हैं। पंचम भाव में बृहस्पति व्यक्ति को संतान सुख, रचनात्मकता, और शिक्षा में सफलता प्रदान करता है। षष्ठ भाव का बृहस्पति शत्रुओं पर विजय दिलाता है और व्यक्ति को स्वास्थ्य संबंधी लाभ देता है। सप्तम भाव में बृहस्पति व्यक्ति को वैवाहिक जीवन में संतुलन, प्रेम, और साझेदारी में सफलता देता है। जीवनसाथी के साथ संबंध मजबूत होते हैं और सुखी वैवाहिक जीवन का संकेत मिलता है। अष्टम भाव में बृहस्पति व्यक्ति को गूढ़ ज्ञान, शोध और आध्यात्मिकता में रुचि देता है। नवम भाव का बृहस्पति व्यक्ति को भाग्यशाली, धार्मिक, और न्यायप्रिय बनाता है। ऐसा व्यक्ति उच्च शिक्षा प्राप्त करता है और विदेश यात्रा करता है। पिता से लाभ और आशीर्वाद मिलता है। यह स्थिति धर्म, न्याय और दया के मार्ग पर चलने का संकेत देती है। दशम भाव में बृहस्पति व्यक्ति को करियर में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्रदान करता है। व्यक्ति उच्च पदों तक पहुंचता है और अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करता है। यह स्थिति नेतृत्व क्षमता और अधिकारिकता को बढ़ाती है। एकादश भाव में बृहस्पति व्यक्ति को इच्छाओं की पूर्ति, मित्रों से सहयोग और आर्थिक लाभ प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में सफल होता है और समाज में अपना प्रभाव बढ़ाता है। यह स्थिति आर्थिक समृद्धि और उच्च मान-सम्मान

का संकेत देती है। द्वादश भाव में बृहस्पति व्यक्ति को आध्यात्मिक उन्नति, मोक्ष और विदेश यात्रा की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

मृदुभाषी – मधुर वाणी

चिरायु -दीर्घायु

अल्पाहारी – अल्प आहार लेने वाला

सहज – तृतीय भाव

भावेश – भाव का स्वामी

उदर रोग- पेट रोग

नवमेश – भाग्य स्थान का स्वामी

2.7 बोधप्रश्नों के उत्तर

1. (ख)

2. (ग)

3. (ख)

4. (ख)

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहज्जातकम् - चौखम्भा प्रकाशन

वृहत्पराशरहोराशास्त्र - चौखम्भा प्रकाशन

ज्योतिष सर्वस्व – चौखम्भा प्रकाशन

चमत्कार चिंतामणि- चौखम्भा प्रकाशन

भावप्रकाश - चौखम्भा प्रकाशन

सरावली- चौखम्भा प्रकाशन

मानसागरी- चौखम्भा प्रकाशन

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. बुध के कारकत्व वर्णन करते हुए प्रथम, द्वितीय तृतीय भावस्थ फल का उल्लेख करें।
2. बुध का चतुर्थ, पंचम, षष्ठभावस्थ फल का वर्णन करें।
3. बुध का सप्तम, अष्टम, नवम भावस्थ फल लिखिये।
4. गुरू के कारकत्व वर्णन करते हुए प्रथम, द्वितीय तृतीय भावस्थ फल का उल्लेख करें।
5. गुरू का चतुर्थ, पंचम, षष्ठभावस्थ फल का वर्णन करें।
6. गुरू का सप्तम, अष्टम, नवम भावस्थ फल लिखिये।

इकाई – 3 द्वादश भावस्थ शुक्र एवं शनि ग्रह फल

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 द्वादश भावस्थ शुक्र का फल

3.4 द्वादश भावस्थ शनि का फल

बोध प्रश्न

3.5 सारांश

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

3.7 बोधप्रश्नों के उत्तर

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई BAJY(N) – 221, खण्ड 3 के इकाई 3 के ‘ **द्वादश भावस्थ शुक्र एवं शनि ग्रह फल’ से सम्बन्धित है।** हम यह जानने कि कोशिस करेंगे कि शुक्र का द्वादश भावों में शुभाशुभ क्या फल होता है, और शनि का द्वादश भावों में शुभाशुभ क्या फल होता है, हम इसकी पूर्व की इकाई में जान चुके हैं कि द्वादश भाव किसे कहते हैं और द्वादश भावों से किन- किन विषयों का विचार करते हैं। इसको हम भली-भांति पढ़ चुके हैं तथा इस इकाई में आप शुक्र और शनि के कारकत्व और उनके द्वादशभावस्थ फल के बार जान सकेगें।

3.2 उद्देश्य

- ❖ शुक्र का द्वादश भावों में क्या फल होगा इसे समझ सकेंगे।
- ❖ शुक्र का द्वादश भावों में स्थित शुभाशुभ फल क्या है इसे आप समझ सकेंगे।
- ❖ शुक्र के कारकत्व को आप समझ सकेंगे।
- ❖ शनि का द्वादश भावों में क्या फल होगा इसे समझ सकेंगे।
- ❖ शनि का द्वादश भावों में स्थित शुभाशुभ फल क्या है इसे आप समझ सकेंगे।
- ❖ शनि के कारकत्व को आप समझ सकेंगे।

3.3 द्वादश भावस्थ शुक्र का फल

सारावली ग्रन्थ के अनुसार शुक्र का स्वरूप -

चारुदर्घभुजः पृथूरुवदनः शुक्राधिकः कान्तिमान्
कृष्णाकुञ्चितसूक्ष्मलम्बिचिकुरो दूर्वादलश्यामलः ।
कामी वातकफात्मकोऽतिसुभगचित्राम्बरो राजसो
लीलावान्मतिमान्विशालनयनः स्थूलांसदेशः सितः ॥

शुक्र सुन्दर लम्बे बाहुओं से युक्त, वृहत् छाती तथा मुख वाला, वीर्याधिक, कान्तिमान्, काले कुटिल पतले लम्बे बालों से युक्त, दूर्वादल सदृश श्याम वर्ण, कामी, वात-कफ प्रकृति वाला, अत्यन्त सुन्दर, चित्र (छिट)-विचित्र वर्ण का वस्त्र धारी, राजस प्रकृति युक्त, लीला (क्रीडा) करने वाला, बुद्धिमान्, विशाल नेत्र युक्त, और स्थूल स्कन्ध प्रदेश से युक्त स्वरूप वाला होता है ॥

वृहज्जतक ग्रन्थ के अनुसार शुक्र का स्वरूप -

भृगः सुखी कान्तवपुः सुलोचनः कफलानिलात्मासितवक्रमूर्धजः ।।

इसी प्रकार शुक्र का स्वरूप सुखी, सुन्दर काय, सुन्दर नेत्र, कफ और वात प्रकृति, कृष्ण केश और कुटिल कहा गया है।

शुक्र का विस्तृत कारकत्व

शुक्र – हीरा, मणि, विवाह, प्रेम – प्रसंग, दाम्पत्य सुख, आमदनी, स्त्री, मैथुन सुख व शक्ति, खटाई, फूल, यश, यौवन, सुन्दरता, काव्य रचना, वाहन, चॉदी, खुजली, राजसी स्वभाव, सौन्दर्य प्रसाधन का व्यवसाय, गीत – संगीत, आमोद – प्रमोद आदि , तैराकी, विचित्र कविता, रसिकता, भाग्य, सौन्दर्य , आकर्षक व्यक्तित्व, ऐश्वर्य , कम खाना , वसन्त ऋतु, वीर्य, जल – क्रीडा , नाटक, अभिनय, आसक्ति, राजकीय मुद्रा, कमजोरी, काले बाल, रहस्यमयी आदि का कारक शुक्र है।

प्रथमभावस्थ शुक्रफल

समीचीनमङ्ग समीचीनसङ्गः समीचीनबह्वङ्गनाभोगयुक्तः ।
समीचीनकर्मा समीचीनशर्मा समीचीनशुक्रो यदा लग्नवर्ती ॥

जिसके लग्न में शुक्र हों तथा शुभ ग्रहो के षड्वर्ग आदि में होने से बलवान् हों, वह सुन्दर शरीर वाला, सज्जनों से मित्रता करनेवाला सुन्दरसुन्दर कई स्त्रियों से भोग करने वाला-, सत्कार्य करने वाला, तथा उत्तम सुखों का भोग करने वाला होता है ॥

समीचीनं रूपं तनुभवनगे दानवगुरौ
समीचीनः सङ्गः प्रबलरिपुभङ्गश्च सहसा ।
अतिक्रीडा नित्यं हरिणनयनाभिस्तनुभृतः
समीचीनं कर्म प्रभवति च कल्याणमभितः ॥

शुक्र यदि प्रथमभाव में हो तो उसका अति सुन्दर स्वरूप होता है। सत्पुरुषों से सज और प्रबल शान का गहरा ना तोता है। गगनगनी वियों से नित्य रति जीडा होती है। सत उत्ता कर्म करता है उसे सदा कल्याण प्राप्त होता है ।।

धनस्थ शुक्र का फल

मुखं चारुभाषं मनीषापि चार्वी मुखं चारु चारूणि वासांसि तस्य।
कुटुम्बे स्थितः पूर्वदेवस्य पूज्यः कुटुम्बे न किं चार चार्वङ्गि कामः ॥

जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली में द्वितीय भाव में शुक्र हो वह मधुरभाषी, बुद्धिमान्, सुन्दर शरीर वाला, सुन्दर वस्त्रों से युक्त सुन्दर स्त्री को चाहने वाला होता है। उसके परिवार में सभी सुन्दर वस्तुएं रहती हैं ॥

कुटुम्बस्थे शुक परमकमनीयं जनिवती
मुख रूपं धन्यं प्रभवति मनीषा च महती।
सदा मिरा वाणी चपलनयनानां प्रियकरी
दकलार्थवातैरुत वृतमलं कोषभवनम् ॥

शुक्र यदि धनभाव में हो तो उसका मुख और शरीर सुन्दर होता है, बुद्धि तीव्र होती है, चञ्चल नेत्र वाली स्त्रियों को प्रसन्न करने वाली मधुर वाणी होती है तथा वस्त्र व धनादि से भण्डार परिपूर्ण रहता है ॥

पराक्रमभावस्थ शुक्रफल

रतिः स्त्रीजने तस्य नो बन्धुनाशो गुरुर्यस्य दुश्चिक्यगो दानवानाम्।
न पूर्णो भवेत्पुत्रसौख्येऽपि सेनापतिः कातरो दानसङ्ग्रामकाले ।।

जिसके तृतीय भाव में दैत्य गुरु शुक्र विद्यमान हो वह. व्यक्ति स्त्रियों से प्रेम करने में कुशल नहीं होता, भाइयों का सुख मिलता है। पुत्रों के रहते हुए भी पुत्रों से कष्ट पाता है। सेनापति पद मिलने पर भी युद्ध में कातर (डरपोक) तथा धन-धान्य से सम्पन्न होने पर भी दान करने की प्रवृत्ति नहीं रखता है। तात्पर्य यह कि वह भीरु तथा कृपण होता है ॥

गते भ्रातुः स्थानं जनुषि यदि शुक्रे तनुभृता
मतिः प्रीतिः शश्वत्कमलमदनायां सुतसुखे।
न तृप्तिः पूर्णेऽपि प्रकटधनदाने कृपणता
न सेनाधीशत्वं रणभुवि न शूरत्वमधिकम् ॥

शुक्र यदि तृतीयभाव में हो तो उसे कमलमुखी सुन्दरी स्त्रियों से अत्यन्त प्रेम होता है। पुत्रसुख से परिपूर्ण होने पर भी तृप्ति नहीं होती। पूर्ण धनदान करने पर भी कृपणता होती है। रणस्थल में वह न सेनाधीश होता है और न शूर ही होता है ॥

चतुर्थभावस्थ शुक्रफल

महित्वेऽधिको यस्य तुर्येऽसुरेज्यो जनैः किं जनैश्चापरै रुष्टतुष्टैः ।
कियत्पोषयेज्जन्मतः संजनन्या अधीनापितो पायनैरेव पूर्णः ॥

जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली में चतुर्थ स्थान में शुक्र स्थित हो, वह समाज में महत्त्वपूर्ण होता है। सामान्य लोगों के प्रसन्न या क्रुद्ध होने से उसे कोई भय नहीं होता। जन्म काल से ही वह माता का पालन- पोषण करता है। अपने आधित लोगों से इतना धन भेंट में मिलता है कि वह पूर्ण सन्तुष्ट रहता है। यह योग घूसखोरों की कुण्डली में भी होता है ॥

सुखस्थाने शुक्र प्रभवति यदा जन्मसमये
महत्वं पूज्यत्वे भवति च समत्वं तनुभृतः ।
सदा रुष्टे तुष्टे जननसमायान्मातुरधिकं
सुखं गोमातङ्गप्रवरतुरगैः सौख्यमधिकम् ॥

शुक्र यदि चतुर्थभाव में हो तो वह महान और पूजनीय होता है। दूसरों के रुष्ट या तुष्ट रहने पर भी वह सदा एक समान ही रहता है। उसे मातृसुख अधिक होता है तथा गायहाथी और उत्तम घोड़ों - का भी अधिक सुख प्राप्त होता है ॥

पञ्चमभावस्थ शुक्रफल

सपुत्रेऽपि किं यस्य शुक्रो न पुत्रे प्रयासेन किं यन्न संपादितोऽर्थः ।
व्युदर्क विना मन्त्रमिष्टाशनाभ्यामधीतेन किं चेत्कवित्वे न शक्तिः ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में पंचम भाव में शुक्र न हो, तो वह पुत्र रहते हुए भी पुत्रों का सुख कैसे प्राप्त कर सकता, द्रव्य प्राप्ति के लिये उसका प्रयास व्यर्थ है। पंचम भाव में शुक्र न हो तो मन्त्र-जप का पूर्ण फल कैसे मिले ? तथा अध्ययन की पूर्णता होने पर भी काव्यनिर्माण की शक्ति- कहाँ से मिले। अर्थात् पंचम भाव में शुक्र होने स पुत्र सुख की प्राप्ति उद्योग- धन्धे से लाभ, मन्त्रजप-अनुष्ठान - में सिद्धि, विद्या के क्षेत्र में पूर्णता तथा कवित्वशक्ति में वृद्धि होती है ॥

सुतस्थानं शुक्रे गतवति यदा जन्मसमये
द्रुतं पुत्रप्राप्तिः प्रवरधनलाभोऽपि सहसा ।
जपात्सिद्धिः सर्वा प्रभवति जनानामपि मनोः

कवित्वे पाण्डित्यं सततमुत मिष्टाशनसुखम् ॥

शुक्र यदि पञ्चमभाव में हो तो उसे शीघ्र ही पुत्रप्राप्ति तथा सहसा प्रचुरधन का लाभ भी होता है। मन्त्रजप से सभी प्रकार की सिद्धियाँ होती है। कविता करने की शक्ति होती है और सदा मिष्टान्न भोजन प्राप्त होता रहता है ॥

षष्ठभावस्थ शुक्र का फल

सदा दानवेज्ये सुधासिक्तशत्रुर्व्ययः शत्रुगे चोत्तमौ तौ भवेताम्।
विपद्येत संपादितं चापि कृत्यं तपेन्मन्त्रतः पूज्यसौख्यं न धत्ते ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में षष्ठस्थान में शुक्र हो उसे उच्चवर्ग के बलवान् शत्रुओं का सामना सदा करना पड़ता है तथा उसका धन श्रेष्ठकार्यों में व्यय होता है। उसका किया हुआ सम्पूर्ण कार्य वष्ट हो जाता है। कुमन्त्रों के अनुष्ठान से दुःख प्राप्त करता है तथा मातापिता गुरुजनों का सौख्य- भी उसे नहीं मिलता है ॥

यदा शत्रौ शुक्रे भवति जनने यस्य परितः
सुधासिक्तारातिः सततमिह वित्तव्ययचयः।
तथाकृत्यं यत्नादपि च खलु सम्पादितपरं
प्रणश्यत्यद्वा वै, कुमनुजपतो नश्यति कुलम् ॥

शुक्र यदि षष्ठभाव में हो तो उसे अमृत से सिञ्चित शत्रुवर्ग प्राप्त होते हैं अर्थात् कभी भी उसके शत्रुओं का नाश नहीं हो पाता है। धनव्यय की वृद्धि निरन्तर होती है तथा यत्न से सम्पादित कार्य भी नष्ट हो जाते है और कुत्सित मन्त्रों के जप से कुलप्रतिभा का नाश होता है ॥

सप्तमभावस्थ शुक्रफल

कलत्रे कलत्रात्सुखं नो कलत्रात् कलत्रं तु शुक्र भवेद्रत्नगर्भम्।
विलासाधिको गण्यते च प्रवासी प्रयासाल्पकः केन मुह्यन्ति तस्मात् ॥

जिसके सप्तम भाव में शुक्र हो उसे कमर में पीड़ा होती है। उसकी पत्नी सन्ततिरत्न को - उत्पन्न करने वाली रत्नगर्भा होती है। वह व्यक्ति अधिक विलासी होता है। उद्योगधन्धे में बहुत - अल्प प्रयास करता है। उससे कौन व्यक्ति है ? जो मोहित नहीं होता। अर्थात् उससे सभी प्रसन्न रहते हैं ॥

कवौ कान्तागारङ्गतवति कलत्रादतिसुखं
कटिप्रान्ते कष्टं भवति विषमं वातजनितम् ।
अपत्यानां सौख्यं रतिरपि वरस्त्रीभिरधिका
न के वै मुह्यन्ति प्रवररसिकास्तस्य कलया ॥

शुक्र यदि सप्तमभाव में हो तो उसे स्त्री से पूर्णसुख, कमर में वायुजन्य विषमकष्ट, सन्तान सुख और सुन्दरीयों के साथ रति होती है। उसकी कला से कौन मोहित नहीं होता अपितु सब मोहित हो जाते है अर्थात वह उत्तम कलाकार होता है ॥

अष्टमभावस्थ शुक्र का फल

जनः क्षुद्रवादी चिरं चारु जीवेच्चतुष्पात्सुखं दैत्यपूज्यो ददाति ।
जनुष्यष्टमे कष्टसाध्यो जयार्थः पुनर्वर्धते दीयमानं धनर्णम् ॥

जिसके अष्टम भाव में शुक्र हो वह कठोर वक्ता, गाय भैस, घोड़े आदि चतुष्पदों का सुख भोगने वाला दीर्घजीवी होता है। विजय तथा धनार्जन में उसे कठिन परिश्रम करना पड़ता है। उसका दिया हुआ कर्ज व्याजवृद्धि के कारण बढ़ता रहता है ॥-

यदा शुक्रे मृत्युं गतवति कठोरप्रलपनं
चिरं वै जीवित्वं गजतुरगगोभृत्यनिकरैः ।
सुखं कष्टादर्थः पुनरपि धनर्णं तनुभृतः
प्रवृद्धिं सङ्गच्छत्यपि रिपुजयः कष्टकरणात् ॥

शुक्र यदि अष्टमभाव में हो तो वह अधिक कटु वचन बोलने वाला और चिरजीवी होता है। उसे हाथी घोड़ा गाय और नौकरों का सुख होता है। कष्ट से। धनलाभ, कभी धन की वृद्धि और कभी ऋण की वृद्धि होती रहती है तथा कष्ट से शत्रु पर विजय प्राप्त होती है ॥

नवमस्थ शुक्र का फल

भृगौ त्रित्रिकोणे पुरे के न पौराः कुसीदेन ये वृद्धिमस्मै ददीरन् ।
गृहं ज्ञायते तस्य धर्मध्वजादेः सहोत्थादिसौख्यं शरीरे सुखं च ॥

यदि नवम भाव में शुक्र स्थित हो तो उससे ग्रामजनों में- कौन है ? जो उससे ऋण लेकर उसका धन नहीं बढ़ाता ? धार्मिक पाखण्ड से उसका गृह जाना जाता है। भाईबहनों तथा शारीरिक -सुख उसका पूर्ण रहता है ॥

भृगौ भाग्यस्थानङ्गतवति कुसीदेन नगरे
ददीरन्नास्मै के सततमपि वृद्धिं किल यदा ।
पताकाभिर्युक्तं यजनभवने दृश्यत इह
प्रदूराद् भ्रातृणां सुखमतुलमङ्गेन च सुखम् ॥

शुक्र यदि नवमभाव में हो तो उसके ग्राम में कौन ऐसा मनुष्यहोगा जो व्याज से उसके धन की वृद्धि न करता हो अर्थात धनवान होता से ही पताकाओं से सुशोभित उसकी यज्ञशाला दिखाई पड़ती है भ्रातृसुख और शारीरिकसुख भी पूर्ण प्राप्त होता है ॥

दशमभावस्थ शुक्र का फल

'भृगुः कर्मगो गोत्रवीर्य रुणद्धि क्षयार्थो भ्रमः किन्न आत्मीय एव ।
तुलामानतो हाटकं विप्रवृत्त्या जनाडम्बरैः प्रत्यहं वा विवादात् ॥

यदि दशमभाव में शुक्र हो तो मनुष्य के वंश में अवरोध होता है। अपनी ही त्रुटिवश अपना कार्य बिगाड़ता है। ब्राह्मणवृत्ति ढोंग- तथा विवाद के द्वारा १०० पल सुवर्ण कमा लेता है ॥

भृगौ कर्मस्थानं गतवति कुलं नश्यति तदा
तथावित्तत्यागात्प्रभवति सदा विभ्रमगणः ।
द्विजानां व्यावृत्त्या रिपुजनविवादेन च लयं
परं गच्छत्यद्वा शतपलमितं स्वर्णमभितः ॥

शुक्र यदि दशमभाव में हो तो उसके कुल का नाश होता है। धन के खर्च से अनेक भ्रम उत्पन्न होते हैं अर्थात भ्रमवश दो के स्थान में चार देते रहने से उसका धन नष्ट होता रहता है । अपने द्वार से ब्राह्मणों को अपमानित कर लौटाने से तथा शत्रुओं के साथ विवाद करने से सैकड़ो तोला सोना नष्ट होता है अर्थात् अधिकाधिक धन नष्ट होता है ॥

एकादशभावस्थ शुक्रफल

भृगुर्लाभगो लाभदो यस्य लग्नात् सुरूपं महीपं च कुर्याच्च सम्यक् ।

लसत्कीर्तिसत्यानुरक्तं गुणाढचं महाभोगमैश्वर्ययुक्तं सुशीलम् ॥

जिसके एकादश स्थान में शुक्र स्थित हो उसे धन लाभ अधिक होता है। वह सुन्दर, राजा के सदृश तेजस्वी होता है। उसका यश तथा उसकी कीर्ति, उसकी सत्यवादिता, गुण सर्वत्र दिखाई पड़ता है । उसे सभी भोगऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। वह बड़ा ही नम्र होता है ॥-

भृगावायस्थानङ्गतवति सुशीलत्वमधिकं
परं चञ्चद्रूपं सदसि पटुता चार्थविभुता ।
महीभर्तुः शश्वव्रजति खलु कीर्तिस्तनुभृतां
समुद्रान्तं भद्रा प्रभवति न निद्रा भुवि रिपोः ॥

शुक्र यदि एकादशभाव में हो तो वह अति सुशील होता है। उसका देदीप्यमान स्वरूप, सभा में वाकपटु और पूर्ण धनवान् होता है उसे राजा सदृश आसमुद्रान्त निर्मल कीर्ति निरन्तर प्राप्त होती रहती है अर्थात् वह राजा या राजा के सदृश होता है । पृथ्वी पर उसके शत्रुओं को निद्रा नहीं आती है अर्थात् शत्रुगण उससे निरन्तर भयभीत रहते हैं ॥

द्वादशभावस्थ शुक्र का फल

कदाप्येति वित्तं विलीयेत पित्तं सितो द्वादशे केलिसत्कर्मशर्मा ।
गुणानां च कीर्तेः क्षयं मित्रवैरं जनानां विरोधं सदाऽसौ करोति ॥

जिसके १२वें भाव में शुक्र हो उसे धन प्राप्त होता है। पित्त जनित उसके रोग नष्ट हो जाते हैं। क्रीड़ा तथा सत्कार्यों से उसे सौख्य प्राप्त होता है। उसके गुण तथा कीर्ति का नाश होता है । मित्रों तथा अन्य लोगों से भी वह विरोध करता है ॥

कदाचिद्वित्ताप्तिः प्रतिदिनमपायस्तनुभृतः
सिते रिष्फागारं गतवति यदा जन्मसमये ।
सदा कामक्रीडा प्रभवति महत्कर्मकरणं
गुणानामल्पत्वं हितजनविरोधश्च सहसा ॥

शुक्र यदि द्वादशभाव में हो तो उसे कदाचित् धनलाभ होता है किन्तु व्यय प्रतिदिन होता रहता है । सदा कामक्रीड़ा होती है । वह श्रेष्ठ कर्मों को करता है । उसमें गुणों की अल्पता होती है और मित्रों से सहसा विरोध होता रहता है ॥

3.4 द्वादश भावस्थ शनि का फल

सारावली ग्रन्थ के अनुसार शनि का स्वरूप -

पिङ्गो निम्नविलोचनः कृशतनुर्दीर्घः सिरालोऽलसः
कृष्णाङ्गः पवनात्मकोऽतिपिशुनः स्नाय्वा ततो निर्घृणः ।
मूर्खः स्थूलनखद्विजोऽतिमलिनो रूक्षोऽशुचिस्तामसो
रौद्रः क्रोधपरो जरापरिणतः कृष्णाम्बरो भास्करिः ॥

शनि पिङ्गल वर्ण तथा निम्न (धसी हुई) ऑख से युक्त, कृशशरीर दीर्घ, सिरा युक्त, आलसी, कृष्ण वर्ण, वायु प्रकृति युक्त, अत्यन्त शठ, स्नायु युक्त, निर्दय, मूर्ख, स्थूल नख-दात से युक्त, अत्यन्त मलिन, कान्ति रहित, अपवित्र, तामस प्रवृत्ति युक्त, भयङ्कर, क्रोध में निरन्तर लीन, वृद्धावस्था युक्त तथा कृष्ण वस्त्र धारी है ॥

वृहज्जतक ग्रन्थ के अनुसार शनि का स्वरूप -

मन्दोऽलसः कपिलदृक् कृशदीर्घगात्रः स्थूलद्विजः परूषरोमकचोऽनिलात्मा ।

अर्थात् कार्या में आलसी, पीत नेत्र, दुर्बल और तुङ्ग शरीर, मोटे दाँत, रूखे रोम, रूखे केश और वात प्रकृति वाला शनि का स्वरूप कहा गया है।

शनि –जड़ता, आलस्य, रूकावट, चमड़ा, कष्ट, दुःख, विपत्ति, विरोध, मृत्यु, दासी, गधा, खच्चर, चांडाल, हीनांग, लोग, वनचर, डरावने लोग, स्वामीत्व, आयु, नपुंसकता, पक्षी, दासता, अधार्मिक, कार्य, झूठ बोलना, वात रोग, बुढ़ापा, नसें, पैर, परिश्रम, मजदूरी, अवैध सन्तति, गन्दे व बुरे पदार्थ का विचार, लंगड़ापन, राख, लोहा, काले धान्य, कृषिजीवी, शस्त्रागार, जाति वहिष्कार, सीसा, शक्ति का दुरूपयोग, तुर्क, पुराना तेल, लकड़ी, तामसी गुण, व्यर्थ घूमना, डर, अटपटे बाल, बकरा, भैंस, सार्वभौम सत्ता, कुत्ता, चोरी, कठोर हृदयता, मूर्ख नौकर व दीक्षा का कारक शनि है।

प्रथमभावस्थ शनिफल

धनेनातिपूर्णोऽतितृष्णो विवादीतनुस्थेऽर्कजेस्थूलदृष्टिर्नरः स्यात् ।
विषं दृष्टिजं त्वाधिकृद्वयाधिबाधाः स्वयं पीडिता मत्सरावेश एव ॥

जिसके जन्म लग्न में शनि स्थित हो, वह मनुष्य धन- धान्य से पूर्ण, लालची, असन्तुष्ट, झगड़ालू, अल्पबुद्धि दृष्टिदोषयुक्त, उसके देखने मात्र से शत्रु भयभीत होते हैं मानसिक रोग शारीरिक व्याधियों से पीडित तथा दूसरों के ऐश्वर्य को देखकर जलने वाला होता है ॥

यदा मन्दे लग्नं गतवति धनैरेव लसितो
विषादी वादेन प्रबलरिपुहा तोषरहितः ।
सदा व्यग्रश्चण्डः शनिरिव तदा पश्यति नरः
परोत्कर्षासह्यः कृशतनुरयं व्याधिगणतः ॥

शनि यदि लग्न में हो तो वह धन से सुशोभित, विवाद से विषादग्रस्त, बलवान शत्रुओं का भी नाश करने वाला और असन्तोषी होता है । सदा व्यग्रक्रोधी-शनि के समान कुदृष्टि वाला-, दूसरे के उत्कर्षो को नहीं सहन करने वाला और अनेकानेक व्याधियों से दुर्बल शरीर वाला होता है ॥ १ ॥

धनस्थ शनि का फल

सुखापेक्षया वर्जितोऽसौ कुटुम्बात्कुटुम्बे शनौ वस्तु किं किं न भुङ्क्ते ।
समं वक्ति मित्रेण तिक्तं वचोऽपि प्रसक्ति विना लोहकं को लभेत ॥

जिसके द्वितीय भाव में शनि स्थित हो वह परिवार से सुख नहीं पाता। सभी वस्तुओं का उपभोग करता है । मित्रों से अकारण ही कटु बात कहता है । उसके पास सुवर्ण रत्नादि अधिक रहता है ॥

कुटुम्बत्यक्तोऽपि प्रभवति कुटुम्बे यदि शनौ,
विदेशे सङ्गच्छन्किमिति नहि भुक्ते प्रियतमम् ।
सदा मिष्टं मित्रैरपि सह सदा तिक्तवचनं
प्रवक्ति स्वार्थं ना सपदि परिगृह्णाति च शरम् ॥

शनि यदि धनभाव में हो तो वह कुल परिवार से त्यक्त होकर भी परदेश में जाकर सदा मिष्टान्नादि प्रिय वस्तुओं का भोग तथा सब अभीष्ट वस्तुओं का लाभ करता है । मित्रों के प्रति सदा दुर्वचन ही बोलता है और स्वार्थ के लिए शीघ्र ही शस्त्रादि ग्रहण भी कर लेता है अर्थात् वह परम स्वार्थी होता है ॥

पराक्रमभावस्थ शनिफल

तृतीये शनौ शीतलं नैव चित्तं जनादुद्यमाज्जायते युक्तभाषी।
अविघ्नं भवेत्कहिचिन्नैव भाग्यं दृढाशः सुखी दुर्मुखः सत्कृतोऽपि ॥

जिसके तृतीय भाव में शनि स्थित हो, वह व्यक्ति अपने जनों तथा स्वयं किये हुए कार्यों से सन्तुष्ट नहीं रहता । वह मितभाषी होता ह। कभी भी उसका भाग्य विघ्नरहित नहीं होता। अर्थात् उसके महत्त्वपूर्ण कार्यों में सदा विघ्न उपस्थित होते रहते हैं वह दृढ़ आशावादो होता है । सम्मानपूर्वक बचन कहने पर भी वह कटु वचन बोलता है ॥

यदा भ्रातुः स्थानं गतवति शनौ जन्मसमये
धनानां व्यापारान्नहि परमहर्षो जनिमिताम् ।
भवेद्भाग्यं तेषां कथमिह महोत्पातरहितं,
कृते सत्कारेऽपि प्रसरति खलत्वं च परितः ॥

शनि यदि तृतीयभाव में हो तो उसे व्यापार से अधिक आनन्द नहीं होता अर्थात् व्यापार से पूर्ण धन नहीं मिलता है। उसके भाग्योन्नति में अनेक विघ्नबाधायें होती हैं और सम्मान करने पर भी - उसकी दुष्टता ही चारों तरफ फैलती है अर्थात् वह सम्मान करने वालों के प्रति भी दुष्टता ही करता है अर्थात वह परम दुष्ट जैसा होता है ॥ :

चतुर्थभावस्थ शनिफल

चतुर्थे शनौ पैतृकं याति दूरं धनं मन्दिरं बन्धुवर्गापवादः ।
पितुश्चापि मातुश्च संतापकारी गृहे वाहने हानयो वातरोगी ॥

जिसके चतुर्थभाव में शनि हो उसको पैतृक धन तथा घर छूट जाते हैं। भाईबन्धुओं के द्वारा - वह कलंकित होता है। वह माता-पिता को सन्ताम देने वाला होता है। घर तथा वाहन की हानि होती है तथा वह बात रोग का रोगी होता है ॥

यदा मातुः स्थानं गतवति दिवानाथतनये
धनं यत्प्राचीनं गृहमपि विदूरं व्रजति तत् ।
निजानां बन्धूनां सततमपवादं पशुभयं
स्वपित्रोः सन्तापः, वातार्तिः अधिका च प्रभवति ।।

शनि यदि चतुर्थभाव में हो तो उसके पूर्व के (संचित) धन और गृह नष्ट हो जाते हैं। अपने बन्धु वर्गो से बराबर अपवाद, पशुओं से भय अपने मातापिता को कष्ट और वात रोग से अधिक - पीड़ा होती है ॥

पञ्चमभावस्थ शनिफल

शनी पञ्चमे च प्रजाहेतुदुःखी विभूतिश्चला तस्य बुद्धिर्न शुद्धा।
रतिर्दैवते शब्दशास्त्रे न तद्वत् कलिमित्रतो मन्त्रतः क्रोडपीडा॥

जिसके पंचम भाव में शनि हो तो वह व्यक्ति सन्तान सम्बन्धी दुःख प्राप्त करता है। उसका धन स्थिर नहीं रहता। उसकी बुद्धि निर्मल नहीं होती। देवताओं तथा शास्त्रों के प्रति उसकी निष्ठा नहीं होती। किसी विचारणीय विषय पर मित्रों से कलह होता है ॥

यदा मन्देऽपत्यं गतवति कथं पुत्रजनतः
सुखं शुद्धा बुद्धिः कथमपि विभूतिश्च परमा।
कलिमित्रः किं नो भवति जठरे किं नहि रुजः
सपर्या देवानां कथमपि च वर्या जनिमताम्॥

शनि यदि पञ्चमभाव में हो उसे पुत्रजन्म सुख कैसे हो सकता है ? अर्थात् उसे पुत्र ही नहीं होता। निर्मल बुद्धि तथा अत्यधिक सम्पत्ति उसे कैसे हो सकती है ? क्या मित्रों के साथ कलह नहीं होता है ? क्या पेट में रोग नहीं होता है ? देव पूजा नही हो सकती अर्थात् वह नास्तिक होता है ॥

षष्ठभावस्थ शनि का फल

अरे र्भूपतेश्चोरतो भीतयः किं यदीनस्य पुत्रो भवेद्यस्य शत्रौ।
न युद्धे भवेत्संमुखे तस्य योद्धा महिष्यादिकं मातुलानां विनाशः॥

जिसके षष्ठ भाव में शनि स्थित हो, उसे शत्रु, राजा, शासक तथा चोरों से भय कहाँ हो सकता है ? तथा युद्ध में उसके सामने कौन योद्धा टिक सकता है ? गायभैंस आदि जानवरों तथा - मामा का नाश होता है ॥

अरौ मन्दे चौरादपि नृपकुलाच्छत्रुगणतः
कथं भीतिः पुंसां जननसमये संभवति चेत्।
कथं योद्धा युद्धे महति पुरतस्तिष्ठति बला-

न्महिष्यादेर्लाभः सततमभितः कीर्तिरधिका ॥

शनि यदि षष्ठभाव में हो तो उसे चोर से, राजकुल से और से भय कैसे हो सकता है अर्थात् उसे किसी से भी भय नहीं होता। भंयकर युद्ध में भी उसके आगे योद्धा लोग कैसे ठहर सकते हैं अर्थात् वह परम बलवान होता है। उसे भैंस गाय-बैल-आदि का लाभ और सर्वदा चतुर्दिक फैलनेवाली विपुल कीर्ति होती है ॥

सप्तमभावस्थ शनिफल

सुदारा न मित्रं चिरं चारु वित्तं शनी द्यूनगे दंपती रोगयुक्तौ।
अनुत्साहसन्तप्तकृद्धीनचेताः कुतो वीर्यवान् विह्वलो लोलुपः स्यात्॥

जिस के सप्तम भाव में शनि हो, वह व्यक्ति शीलवती स्त्रियों का, सच्चे मित्रों का तथा न्याय से उपाजित धन का अधिक समय तक सुख नहीं भोगता है। पतिपत्नी रोगी रहते हैं। वह उत्साह--रहित, सन्तप्त- हृदय, मलीनमन तथा विह्वल-मन तथा लोभी होता है। ऐसा व्यक्ति बलवान्- कैसे हो सकता है। अर्थात् वह निर्वल भी होता है ॥

यदा दारागारं गतवति दिनाधीशतनये
गदैरार्ता दारा बलमपि कुतो वित्तमधिकम्।
अनुत्साहः कृत्ये भवति कृशतातीव भविनां
गदानामाधिक्यं सपदि चपला बुद्धिरभितः ॥

शनि यदि सप्तमभाव में हो तो उसकी स्त्री रोग से पीड़ित रहती है। वह निर्बल एवं धन रहित होता है। कार्य में अनुत्साही, देह अत्यन्त कृश, रोगों की अधिकता और बुद्धि चञ्चल होती है ॥

अष्टमभावस्थ शनि का फल

वियोगो जनानां त्वनौपाधिकानां विनाशो धनानां स को यस्य न स्यात्।
शनी रन्ध्रगे व्याधितः क्षुद्रदर्शी तदग्रे जनः कैतवं किं करोतु ॥

जिसके अष्टम भाव में शनि स्थित हो वह अकारण लोगों का विरोधी तथा धन नाश का कारण स्वयं होता है। वह रोगी तथा दूसरों का छिद्रान्वेषण करता है। उसके सामने कोई छलकपट - तया वञ्चकता नहीं कर सकता ॥

यदा रन्ध्रस्थाने दिनकरसुते जन्मसमये

विनाशो वित्तानां निजजनवियोगः सहजतः ।
सदा वक्राकारा मतिरतितरां वा चतुरता
गदवातातङ्कः प्रभवति कलङ्कश्च भविनाम् ॥

शनि यदि अष्टमभाव में हो तो उसके धन का नाश होता है और अकारण ही आत्मीयजनों से वियोग होता है । सर्वदा उसकी कुटिल बुद्धि रहती है वह अत्यन्त चतुर होता है तथा वह रोगों से आतंकित और कलंकित होता है ॥

नवमस्थ शनि का फल

मतिस्तस्य तिक्ता न तिक्तं तु शीलं रतिर्योगशास्त्रे गुणो राजसः स्यात् ।
सुहृद्वर्गतो दुःखितो दीनबुद्ध्या शनिर्धर्मगः कर्मकृत्संन्यसेद्वा ॥

जिस व्यक्ति की जन्मकुण्डली में नवम भाव में शनि विद्य- मान हो, वह कटुस्वभाव वाला - होता है, किन्तु उसकी बुद्धि कंटु नहीं होती। योगशास्त्र में वह प्रवृत्त तथा रजोगुणी होता है। कृपण स्वभाव होने से स्नेह को अभाव में दुःखी रहता है। वह कर्मनिष्ठ होता है तथा लोक से उदासीन रहता है ॥

यदा धर्मस्थानं गतवति शनौ जन्मसमये
सुहृद्वर्गाद् दुःखं प्रभवति गतिस्तीर्थविषये ।
गृहद्वारं दीनद्विजपरिवृतं शीलममलं
वयोन्ते वैराग्यं रतिरपि च योगे तनुभृताम् ॥

शनि यदि नवमभाव में हो तो उसे मित्रों से तीर्थयात्रा में अभिरुचि होती है उसका गृहद्वार दानेक्षु ब्राह्मणों से आवृत्त रहता है । उसका स्वभाव अत्यन्त निर्मल होता है और वृद्धावस्था में वह वैराग्य तथा योगमार्ग में प्रवृत्त होता है ॥

दशमभावस्थ शनि का फल

अजा तस्य माता पिता बाहुरेव वृथा सर्वतो दुष्टकर्माधिपत्यात् ।
शनैरेधते कर्मगः शर्म मन्दो जयो विग्रहे जीविकानां तु तस्य ॥

जिसके दशम भाव में शनि स्थित हो उसे बकरी का दूध ही पालन करने वाला तदा उसका बाहुबल ही उसका पिता होता है । तात्पर्य यह कि उसके मांबाप बाल्यकाल में ही मर जाते हैं । -

जीविका के क्षेत्र में मन्थर गति से विकास होता है। अधिकार प्राप्त होने के कारण वह दुष्टकर्म (अनाचार करता है। (

अजा माता बाहुर्जनक उत कल्याणमभितः
शनौ राज्यस्थानं गतवति जयस्तस्य समरे।
प्रभुत्वं कोषस्य क्षितिपतिगृहे दुष्टमनसाऽ-
धिकारो यस्य स्वं नहि मिलति पूर्वार्जितमपि ॥

शनि यदि दशमभाव में हो तो उसकी माता बकरी सदृश होती है अर्थात् बाल्यावस्था में ही वह मातृसुख से हीन हो जाता है। उसके अपने हाथ ही पिता समान होते हैं अर्थात् वह पितृसुख से हीन तथा स्वपराक्रम से ही सब कुछ अर्जन करने वाला होता है। उसे अनेक प्रकार से कल्याण प्राप्त होता है। वह राजा के घर में कोषाध्यक्ष तथा दुष्टजनों को दण्ड देने का अधिकारी होता है। उसे पूर्वार्जित धन प्राप्त नहीं होता है ।॥

एकादशभावस्थ शनिफल

शनौ व्योमगे विन्दते किं च माता सुखं शैशवं दृश्यते किन्तु पित्रा।
निधिःस्थापितो वापिता वा कृषिश्च प्रणश्येद् ध्रुवं दृश्यते दैवतो वा ।।

जिसके दशम भाव में शनि विद्यमान हो उसकी माता क्या सुख पाती है ? अर्थात नहीं पाती। उसका पिता क्या उसका शैशव देख पाता है अर्थात् नहीं देख पाता। रक्षित धन और बोया हुआ धनधान्य (कृषि) निश्चिततौर से नष्ट हो जाता है अथवा देव प्रकोप से भी यह धन और) कृषिनष्ट हो (जाता है ॥

यदा लाभस्थानं गतवति शनौ यस्य जनने
स्थिरं वित्तं चित्तं स्थिरमपि चिरञ्जीवति च सः।
प्रपञ्चस्याधिक्यं रणभुवि च शूरत्वमधिकं
कुतो रोगाभोगः कुत उत सुतस्तस्य भवति ॥

शनि यदि एकादश भाव में हो तो उसकी धनचित्त और- आयु स्थिर होती है। वह प्रपञ्ची और संग्राम में विशेष पराक्रमी होता है। वह नीरोग रहता है परन्तु उसे पुत्रविहीन ही रहना पड़ता है ॥

द्वादशभावस्थ शनि का फल

स्थिरं वित्तमायुः स्थिरं मानसं च स्थिरा नैव रोगादयो न स्थिराणि।
अपत्यानि शूरः शतादेक एव प्रपञ्चाधिको लाभगे भानुपुत्रे ॥

एकादश भाव में जिस की जन्म कुण्डली में शनि हो उसका धन, मन तथा आयु स्थिर होती है। उसका रोग तथा सन्तति स्थिर नहीं होती। अर्थात् वह नीरोग रहता है तथा उसकी सन्तान मर जाती है। वह बहादुर होता है। सैकड़ों मनुष्यों में प्रपञ्चकार्य में वह प्रधान होता है।- अर्थात् रागद्वेष - में वह अधिक लिप्त रहता है ॥

व्ययस्थे यदा सूर्यसूनौ नरः स्यादशूरोऽथवा निस्त्रपो मन्दनेत्रः।
प्रसन्नो बहिर्नो गृहे लग्नपश्चेद्व्ययस्थो रिपुध्वंसकृद्यज्ञभोक्ता ॥

जिसके द्वादश भाव में शनि हो, वह व्यक्ति भीरु (कायर) निर्लज्ज तथा मन्ददृष्टि वाला होता है। विदेश में जैसा मुदित रहता है, वैसा घर में नहीं रहता। यदि शनि लग्नेश होकर द्वादश भाव में विद्यमान हो तो वह शत्रुओं का विनाश करने वाला तथा यज्ञ से प्राप्त द्रव्यादि का उप- भोग करने वाला होता है ॥

व्ययस्थाने मन्दः प्रभवति तदा कातर उत
त्रपाहीनः शश्वच्छुभकृति विधौ निष्ठुरमतिः।
स चेदङ्गस्वामी परविषयगामी प्रमुदितः
सदा शत्रुध्वंसी यजनकृदसौ वित्तप इव ॥

शनि यदि द्वादशवें भाव में हो तो वह कातरनिर्लज्ज तथा- शुभकार्य में निष्ठुर प्रकृति वाला होता है। शनि यदि लग्नेश होकर व्यय भाव में रहे तो वह परविषयगामी, शत्रुनाशर्क और कुबेर के समान यज्ञ करने वाला होता है ॥

1. शुक्र किस का कारक है।

(क) मन (ख) दुख (ग) वीर्य (घ) विद्या

2. शनि किस का कारक है।

(क) मन (ख) वाणी (ग) दुख (घ) सुख

3. शनि यदि द्वादश भाव में हो तो जातक कैसा होगा।

(क) निर्लज्ज (ख) छोटे कद (ग) मोटा शरीर (घ) कृशकाय

4. नीलम किस ग्रह का रत्न है।

(क) चन्द्रमा का (ख) मंगल का (ग)बुध का (घ) शनि का

5. शुक्र किस रत्न का कारक है।

(क) हीरा (ख)पन्ना (ग) पुखराज (घ) नीलम

3.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने यह जाना कि यदि शुक्र लग्न में स्थित हो, तो व्यक्ति आकर्षक, सौम्य, और लोकप्रिय होता है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक और विनम्र होता है। दूसरे भाव में शुक्र व्यक्ति को धन, वाणी, और परिवार में सुख देता है। तीसरे भाव में शुक्र व्यक्ति को साहस और पराक्रम प्रदान करता है । चतुर्थ भाव में शुक्र व्यक्ति को मानसिक सुख, घरेलू शांति, और मातृ सुख प्रदान करता है। उसका परिवार सुखी और संपन्न होता है। वह भूमि, संपत्ति, और वाहन के मामलों में लाभ प्राप्त करता है। पंचम भाव में शुक्र व्यक्ति को संतान सुख, प्रेम और रचनात्मकता में सफलता देता है। वह कला, साहित्य, और रचनात्मक कार्यों में निपुण होता है। षष्ठ भाव में शुक्र व्यक्ति को स्वास्थ्य में लाभ और शत्रुओं से बचाव करता है। सप्तम भाव में शुक्र वैवाहिक जीवन में सुख और प्रेम प्रदान करता है। अष्टम भाव में शुक्र व्यक्ति को गूढ़ ज्ञान, रहस्यमय मामलों में रुचि और आध्यात्मिक उन्नति का संकेत देता है। नवम भाव में शुक्र व्यक्ति को भाग्य, धर्म, और उच्च शिक्षा में सफलता प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति धर्म और सत्य के मार्ग पर चलता है और जीवन में सुख, शांति, और सफलता प्राप्त करता है। दशम भाव में शुक्र व्यक्ति को करियर, सामाजिक प्रतिष्ठा और सार्वजनिक जीवन में सफलता देता है। वह समाज में एक आदर्श व्यक्ति के रूप में स्थापित होता है और उच्च पदों पर कार्य करता है। एकादश भाव में शुक्र व्यक्ति को मित्रों से सहयोग, इच्छाओं की पूर्ति, और आय में वृद्धि प्रदान करता है। द्वादश भाव में शुक्र व्यक्ति को विदेश यात्रा, आत्मनिरीक्षण और आध्यात्मिक उन्नति की ओर प्रेरित करता है। हालांकि, यह स्थिति किसी प्रकार के भौतिक सुखों में कमी ला सकती है, लेकिन आध्यात्मिक संतोष और शांति प्राप्त होती है। यदि शनि लग्न में स्थित हो, तो व्यक्ति परिश्रमी, अनुशासित और स्थिर होता है। दूसरे भाव में शनि व्यक्ति को धन और परिवार के मामलों में सतर्क बनाता है। तीसरे भाव में शनि व्यक्ति को साहस, आत्मविश्वास और कठोर मेहनत का संकेत देता है। हालांकि, इस स्थान पर शनि भाई-बहनों के साथ संबंधों में दूरी और

कठिनाई ला सकता है। चतुर्थ भाव में शनि व्यक्ति को शिक्षा, घर, और माता से संबंधित मामलों में संघर्ष और कठिनाइयों का सामना कराता है। पंचम भाव में शनि व्यक्ति को संतान के मामलों में समस्याओं और देरी का सामना कराता है। ऐसा व्यक्ति अपनी संतान से संबंधित मामलों में संतुष्ट नहीं होता है। षष्ठ भाव में शनि शत्रुओं से लड़ाई में विजय दिलाता है और व्यक्ति को स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयों का सामना करने का संकेत देता है। सप्तम भाव में शनि व्यक्ति के वैवाहिक जीवन में समस्याओं का कारण बन सकता है। यह स्थिति विवाह में देरी, संबंधों में तनाव और जीवनसाथी से कठिनाइयों का संकेत देती है। अष्टम भाव में शनि व्यक्ति को गहरे और रहस्यमय विषयों में रुचि और आत्मनिरीक्षण की ओर प्रेरित करता है। यह स्थिति व्यक्ति को अचानक बदलाव, मुश्किल परिस्थितियों और वित्तीय संकट का सामना करवा सकती है। नवम भाव में शनि भाग्य, धर्म, और उच्च शिक्षा में कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है। व्यक्ति को शिक्षा में संघर्ष करना पड़ सकता है। दशम भाव में शनि व्यक्ति को करियर में कठिन संघर्षों और बाधाओं का सामना करने के लिए प्रेरित करता है। व्यक्ति को उच्च पद प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है । एकादश भाव में शनि व्यक्ति को इच्छाओं की पूर्ति में कठिनाइयाँ और देरी का सामना कराता है। व्यक्ति को अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में संघर्ष करना पड़ता है। द्वादश भाव में शनि व्यक्ति को खर्चों, मानसिक तनाव और आध्यात्मिक जीवन में कठिनाई का संकेत देता है। यह स्थिति व्यक्ति को अपने भीतर गहरी आत्मनिरीक्षण और आध्यात्मिक उन्नति की ओर मार्गदर्शन करती है।

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

सुन्दर काय - सुन्दर शरीर

कृष्ण केश – काले बाल

कृशशरीर – दुबला पतला शरीर

तुङ्ग शरीर- लम्बा शरीर वाला

कुटुम्ब – परिवार

3.7 बोधप्रश्नों के उत्तर

1. (ग)

2. (ग)

3. (क)

4. (घ)

5. (क)

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहज्जातकम् - चौखम्भा प्रकाशन

वृहत्पराशरहोराशास्त्र - चौखम्भा प्रकाशन

ज्योतिष सर्वस्व – चौखम्भा प्रकाशन

चमत्कार चिंतामणि- चौखम्भा प्रकाशन

भावप्रकाश - चौखम्भा प्रकाशन

सरावली- चौखम्भा प्रकाशन

मानसागरी- चौखम्भा प्रकाशन

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. शुक्र के कारकत्व वर्णन करते हुए प्रथम, द्वितीय तृतीय भावस्थ फल का उल्लेख करें ।
2. शुक्र का चतुर्थ, पंचम, षष्ठभावस्थ फल का वर्णन करें ।
3. शुक्र का सप्तम, अष्टम, नवम भावस्थ फल लिखिये।
4. शनि के कारकत्व वर्णन करते हुए प्रथम, द्वितीय तृतीय भावस्थ फल का उल्लेख करें ।
5. शनि का चतुर्थ, पंचम, षष्ठभावस्थ फल का वर्णन करें ।
6. शनि का सप्तम, अष्टम, नवम भावस्थ फल लिखिये ।

इकाई – 4 द्वादश भावस्थ राहु एवं केतु ग्रह फल

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 द्वादश भावस्थ राहु का फल

4.4 द्वादश भावस्थ केतु का फल

बोध प्रश्न

4.5 सारांश

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

4.7 बोधप्रश्नों के उत्तर

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई BAJY(N) – 221, खण्ड 3 के इकाई 4 के **द्वादश भावस्थ राहु एवं केतु ग्रह फल' से सम्बन्धित है।** आप यह जानने कि कोशिस करेंगे कि राहु का द्वादश भावों में शुभाशुभ क्या फल होता है, और केतु का द्वादश भावों में शुभाशुभ क्या फल होता है, आप इसकी पूर्व की इकाई में जान चुके हैं कि द्वादश भाव किसे कहते हैं और द्वादश भावों से किन- किन विषयों का विचार करते हैं। इसको आप भली-भांति पढ़ चुके हैं तथा इस इकाई में आप यह जानेगें कि राहु, केतु के कारकत्व तथा उनके द्वादश भावों में फल।

4.2 उद्देश्य

- ❖ राहु का द्वादश भावों में क्या फल होगा इसे समझ सकेंगे।
- ❖ राहु का द्वादश भावों में स्थित शुभाशुभ फल क्या है इसे आप समझ सकेंगे।
- ❖ राहु के कारकत्व को आप समझ सकेंगे।
- ❖ केतु का द्वादश भावों में क्या फल होगा इसे समझ सकेंगे।
- ❖ केतु का द्वादश भावों में स्थित शुभाशुभ फल क्या है इसे आप समझ सकेंगे।
- ❖ केतु के कारकत्व को आप समझ सकेंगे।

4.3 द्वादश भावस्थ राहु का फल

पराशर जी के मत से राहु के कारक -

प्रयाण समय सर्परात्रि सकल सुप्तार्थ कारको राहु:।

प्रवास का समय, रात्रि सोए हुए प्राणी: जुआ तथा सांपो का कारक ग्रह राहु है।

राहु का विस्तृत कारकत्व

राहु –

छत्र, चँवर, राज्य, संग्रह, कुतर्क, मर्मच्छेदी वचन, शूद्र, गोमेद रत्न, स्त्री , सुसज्जित वाहन, अधार्मिक मनुष्य, गंगा – स्नान, तीर्थ यात्रा, झूठ, भ्रम, मायाचार, कपट, रात की हवाऍं, रेंगने वाले कीड़े – मकोड़े , गुप्त वार्ता, मुत्यु का समय, वायु का तेज, दर्द, सॉस की बीमारी, दुर्गापूजा, पशुओं से मैथुन, उर्दू आदि भाषाऍं, कठोर भाषण, अचानक फल देना आदि का कारक राहु है।

प्रथमभावस्थ राहुफल

स्ववाक्ये समर्थः परेषां प्रतापात्प्रभावात्समाच्छादयेत्स्वान् परार्थान् ।
तमो यस्य लग्ने स भग्नारिवीर्यः कलत्रेऽधृति भूरिदारोऽपि यायात् ॥

जिसके लग्न में राहु स्थित हो, वह मनुष्य शत्रुओं को जीतने वाला होता है। वह दूसरों के बल से अपनी बात पूर्ण कराता है। अन्य लोगों के प्रताप से ही अपनी मनोरथ पूरा करता है । कई पत्नियों के होने पर भी वह सन्तुष्ट नहीं रहता है । अर्थात् वह अत्यन्त कामुक होता है ॥

प्रतापादन्यस्य प्रभवति समर्थस्तनुगते
प्रभावादन्येषां तपसि सहसाच्छादयति सः ।
निजार्थानन्यार्थानपि च विगतारिः कृतिपरो
द्विभार्यो वर्यस्त्रीगणपरिवृतो वादनिरतः ॥

राहु यदि लग्न में हो तो वह दूसरे के प्रताप से ही सामर्थ्यवान तथा दूसरे के प्रभाव से ही अपने और दूसरे के धन का उपभोग करता रहता है । वह शत्रुरहित होकर अपने कार्य में तत्पर रहता है । दो स्त्री वाला होकर भी अनेकानेक सुन्दरी से भी आवृत होकर रहता है तथा वाद विवाद में निरन्तर व्यस्त रहता है ॥

धनस्थ राहु का फल

कुटुम्बे तमो नष्टभूतं कुटुम्बं मृषाभाषिता निर्भयो वित्तपालः ।
स्ववर्गप्रणाशोभयं शस्त्रतश्चेदवश्यं खलेभ्यो लभेत्पारवश्यम् ॥

जिसके द्वितीय भाव में राहु हो उसका कुटुम्ब नष्टप्रायः हो जाता है। वह झूठ बोलने वाला निडर तथा धन की रक्षा करने वाला अर्थात् कृपण होता है। अपने बन्धु बान्धवों-का नाश देखता है। शस्त्र तथा दुष्टजनों के द्वारा वह पराधीनता (जेल यातना आदि) को प्राप्त होता है ॥

कुटुम्बे राहुश्शेद्भवति धनपालोऽपि विकलः
सदा मिथ्यावादी निजजनविरोधेन मनुजः ।
भयं शत्रोः शस्त्रादपि च लभते निर्भयमतिः
परार्थाधीनत्वं विषमनृपदण्डं च खलतः ॥

राहु यदि धनभाव में हो तो वह कुबेर के सदृश धनी होने पर भी निर्धन ही रहता है । बन्धु-बान्धवों से विरोध के कारण वह सर्वदा मिथ्या भाषण करने वाला होता है । उसे शत्रु तथा शस्त्र से भी

भय रहता है। वह निर्भीक बुद्धि वाला, पराधीन तथा दुर्जनों के संग के कारण वह कठोर राजदण्ड भी पाता है ॥

पराक्रमभावस्थ राहुफल

न नागोऽथ सिंहो भुजाविक्रमेण प्रयातीह सिंहीसुने तत्समत्वम् ।
तृतीये जगत्सोदरत्वं समेति प्रयातोऽपि भाग्यं कुतो यत्नहेतुः ॥

जिसके तृतीय भाव में राहु स्थित हो वह व्यक्ति अत्यन्त प्रतापी होता है। गज तथा सिंह भी उसकी तुलना में दुर्बल होते हैं। सभी लोग उससे सहोदर की भांति व्यवहार करते हैं। अत्यन्त धनी होने पर भी वह सदा उद्यम करता रहता है। धन से वह कभी भी सन्तुष्ट नहीं होता ॥

यदा सिंहीपुत्रे भवति सहजे जन्मसमये
जगन्मैत्री नित्यं प्रवरमपि भाग्यं प्रभवति ।
महालस्यं पुंसामुपकृतिविधानेन किमिति
प्रतापप्राबल्याद्विषमसमरे सिंहसमता ॥

राहु यदि तृतीयभाव में हो तो संसार में सबसे मित्रता और उसका उत्तम भाग्य होता है। परोपकार में आलस्य और संग्राम में प्रताप की प्रबलता से वह सिंह के समान (पराक्रमी) होता है॥

चतुर्थभावस्थ राहुफल

चतुर्थे कथं मातृनरुज्यदेहो हृदि ज्वालया शीतलं किं बहिः स्यात् ।
स चेदन्यथा मेषगः कर्कगो वा बुधर्तेऽसुरो भूपतेबंन्धुरेव ॥

जिस व्यक्ति की जन्म कुण्डली में चतुर्थभाव में राहु हो उसे मातृसुख कैसे मिलेगा? वह व्यक्ति शरीर के अन्दर तथा बाहर सदा सन्तप्त रहता है। वही राहु चतुर्थ भाव में मेष, कर्क, मिथुन तथा कन्या राशि का हो तो पूर्वोक्त फल का विपरीत फल देने वाला होता है। वह व्यक्ति शासकों का अत्यन्त कृपापात्र होता है ॥

सुखे मातुः कष्टं भवति यदि राहुस्तनुभृतः
सदान्तः सन्तापः कथमपि बहिः शीतलमलम् ।
शरीरे राहुश्चेद् गवि बुधभृगोश्चन्द्रभवने
क्रियेऽपि क्षोणीशैः प्रभवति हितत्वं च परितः ॥

यदि राहु चतुर्थभाव में हो तो उसकी माता को कष्ट होता है। शरीर में कदाचित् बाह्य प्रसन्नता हो भी सकती है किन्तु भीतर संताप ही होता रहता है । राहु यदि वृषमिथुन-कन्या-कर्क - अथवा मेष राशि का होकर चतुर्थभाव में हो तो राजाओं के द्वारा उसका हित होता है ॥

पञ्चमभावस्थ राहुफल

सुते तत्सुतोत्पत्तिकृत्सिहिकायाः सुतो भामिनीचिन्तया चित्ततापः ।
सति क्रोडरोगे किमाहारहेतुः प्रपञ्चेन किं प्रापकादृष्टवयम् ॥

राहु जिसके पंचम भाव में स्थित हो उसे सन्तान सम्बन्धी चिन्ता से पीडित पत्नी का कोपभाजन होना पड़ता है। उदरजन्य रोग होता है । औषध का प्रयोग करने पर भी सफलता नहीं मिलती है। दुर्भाग्य वश उसके सभी प्रयास व्यर्थ होते हैं ॥

सुते सिंहीपुत्रे जनुषि सुतलाभः प्रभवति
कान्ताया उदरभवरोगैर्विकलता।
तथा चिन्ता तापः प्रसरति जनानामतितरां
विना दैवं यत्नैः किमिति बहुलाभः क्षितिपतेः ॥

यदि राहु पञ्चमभाव में हो तो उसे पुत्र का लाभ होता है । स्त्री सदा पेटरोग से पीड़ित रहती - है । चिन्ता और सन्ताप में वृद्धि होती है। बिना दैवकृपा के अनेक यत्न करने पर भी अधिक लाभ नहीं होता है अर्थात् उसे कम लाभ होता है ॥

षष्ठभावस्थ राहु का फल

बलं बुद्धिवीर्यं धनं तद्वशेन स्थितो वैरिभावेऽपि येषां जनानाम् ।
रिपूणामरण्यं दहेदेव राहुः स्थिर मानसं तत्तुला नो पृथिव्याम् ॥

जिसकी जन्म कुण्डली में छठे भाव में राहु हो वह शत्रुओं के समूह का नाश करता है। शारीरिक तथा बौद्धिक बल से धन प्राप्त करता है। उसका मन स्थिर धैर्ययुक्त होता है। उसकी मामा का सुख नहीं मिलता है ॥

यदा सिंहीपुत्रे गतवति जनुः शत्रुभवने
प्रतापाग्नौ नित्यं ज्वलति रिपुवृन्दं जनिमताम् ।
बलं ज्ञानं वित्तं प्रभवति तदाधीनमधिकं

पितृव्यादेर्मातुः सहजगणतः किं सुखमपि ॥

राहु यदि षष्ठभाव में हो तो उसकी प्रतापाग्नि में शत्रुगण नित्य ही जलते हैं। बलज्ञान और - धन विशेषकर उसके अधीन रहते हैं। उसको चाचा मामा आदि से सुख नहीं होता है ॥-

सप्तमभावस्थ राहुफल

विनाशं लभेयुर्घने तावत्यो रुजा धातुपाकादिना चन्द्रमर्दी।
कटाहे यथा लोडयेज्जातवेदा वियोगापवादा शमं न प्रयान्ति ॥

जिसके सप्तम भाव में राहु हो तो जैसे कड़ाही में स्थित पदार्थ को अग्नि पका देता है उसी प्रकार उसकी स्त्रियों को धातुजन्य रोगों से नष्ट कर देता है। स्वजनों के वियोग तथा लोकनिन्दा के कारण उसे शान्ति नहीं मिलती है ॥

गते कान्तागारं जनुषि शशिमहिन्यपि यथा
कटाहस्थं द्रव्यं ज्वलदजलतो नश्यति तथा।
विनाशं भामिन्याः सपदि च लभेरन् खलु रुजा-
विभागो बन्धूनां प्रसरति कलङ्को जनिमताम् ॥

यदि राहु सप्तमभाव में हो तो उसकी स्त्री का रोगों से उसी तरह नाश हो जाता है जिस तरह कड़ाही में रखा हुआ घृतादि अग्नि के ताप से नष्ट हो जाता है। बन्धुबान्धवों से वियोग और उसके - कलङ्क का विस्तार होता है ॥

अष्टमभावस्थ राहु का फल

नृपैः पण्डितैर्वन्दितो निन्दितः स्वैः सकृद्भाग्यलाभोऽसकृन्नश एव।
धनं जातकं तं जनाश्च त्यजन्ति श्रमग्रन्थिकृद्रन्ध्रगो बध्नशत्रुः ॥

जिसके जन्म स्थान से अष्टमभाव में राहु हो उसे अधिक परिश्रम करने के कारण गुल्म (वायुगोला) रोग होता है। उसे परिवार के लोग त्याग देते हैं। धन का सुख उसे प्राप्त नहीं होता। वह विद्वानों तथा राजाओं से मान्य तथा स्वजनों से निन्दित होता है। उसका भाग्योदय एक ही वार होता है, किन्तु धनहानि तथा अपमान वारवार होता है ॥-

यदा मृत्युस्थानं गतवति तमीनायकरिपौ
त्यजन्ति स्वेच्छाततमपि सुजना यस्य जनने। :

क्वचिद् भूमीभर्तुः परमधनलाभः क्वचिदपि
प्रणाशश्चार्थानामनिलभवगोलोऽपि जठरे ॥

यदि राहु अष्टमभाव में हो तो उसे सज्जन लोग स्वेच्छा से अकारण ही छोड़ देते हैं। यदा कदा राजा से प्रचुर धन का लाभ कभी धन का नाश भी होता रहता है। उसके पेट में वायुगोला का और रोग होता है ॥

नवमस्थ राहु का फल

मनीषी कृतं न त्यजेद् बन्धुवर्ग सदा पालयेत्पूजितः स्याद् गुणैः स्वैः ।
सभाद्योतको यस्य चेत्रित्रिकोणे तमः कौतुकी देवतीर्थे दयालुः ॥

जिसके नवम भाव में राहु स्थित हो वह अपने गुणों के द्वारा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। अपने बन्धुबान्धवों को कभी भी नहीं- त्यागता, उनका पालन करता है। सभा में चमत्कार, प्रभाव, देवता तथा तीर्थों में श्रद्धा रखता है, कृतज्ञ तथा दयावान होता है ॥

यदा सिंहीपुत्रे नवमभवने जन्मसमये
गुणैः पूज्यो विज्ञो भवति च दयालुः क्षितितले।
सदर्थानां दाता त्यजति न कृतं पुण्यकृदसौ
स्ववर्गाणां शश्वदतिरमलकीर्तिः खलु जनः ॥

यदि राहु नवमभाव में हो तो वह जगत में अपने गुणों से पूज्यविद्वान और दयालु होता है। - अच्छे सद्रव्य का दान देने वाला, प्रारम्भित कार्य को न छोड़ने वाला, पुण्य कार्य करने वाला, अपने परिजनों के बताये हुए मार्ग पर सदा चलने वाला और निर्मल कीर्ति युक्त होता है ॥

दशमभावस्थ राहु का फल

सदा म्लेच्छसंसर्गतोऽतीव गर्वं लभेन्मानिनीकामिनी भोगमुच्चैः ।
जनाकुलोऽसौ सुखं नाधिशेते मदार्थव्ययी क्रूरकर्मा खगेऽगौ ॥

जिसके दशम भाव में राहु हो वह नशीली वस्तुओं में अपना धन व्यय करता है। वह क्रूर कार्य में रमा रहता है। लोगों के भय से वह सुखपूर्वक सो भी नहीं सकता। दुष्टों के साथ रहने में ही गर्व करता है। अच्छीअच्छी भामिनी स्त्रियों से भोग करता है ॥-

अगौ वित्तापायोऽधिकमनवधानेन दशमे

महत्सौख्यं म्लेच्छात्प्रभवति कुगर्वस्तनुभृतः ।
तथा चिन्ताधिक्यं स्वजनजनकैः किं सुखमलं
सदा रण्डानारीसुरतमवरप्रीतिरत्रितः ॥

यदि राहु दशमभाव में हो तो असावधानी के कारण अधिक धन का व्यय, नीच और हीन जातियों से अधिक सुख, अधिक चिन्ता युक्त तथा उसे अपने परिजनों एवं पिता से सुख नहीं होता है। वह विधवा स्त्रियों से सदा सम्भोग और दुर्जन लोगों से प्रेम करता है ॥

एकादशभावस्थ राहुफल

सदा म्लेच्छतोऽर्थं लभेत्साभिमानश्चरेत् किंकरेण व्रजेत् किं विदेशम् ।
परार्थाननर्थो हरेद् धूर्तबन्धुः सुतोत्पत्तिसौख्यं तमो लाभगश्चेत् ॥

जिसके एकादश भाव में राहु हो वह सन्तानसुख प्राप्त करता है । सदा निन्दित कार्य से धन प्राप्त करता है । अहंकारी होता है । नौकरों के साथ सदा चलता है। परदेश जाने की आवश्यकता नहीं होती। घरबैठे- धन कमाता है । दूसरों के धन का हरण करता है। वह धूर्त तथा अनर्थ करने- वाला होता है ।

अगौ लाभस्थानं जनुषि भविनां म्लेच्छकुलतः
सदा वित्तप्राप्तिश्चतुरजनमैत्री च परमा।
सुतानामुत्पत्तिः सपदि परवित्तापहरणे
मतिश्चण्डो गर्वः प्रभवति गतिः किङ्करगणैः ॥

राहु यदि एकादशभाव में हो तो उसे म्लेच्छों से सदा धन की प्राप्ति होती है, बुद्धिमान् मनुष्यों से मैत्री होती है और शीघ्र ही पुत्रों की प्राप्ति होती है । दूसरे के धन अपहरण की और बहुत अहङ्कार युक्त उसकी बुद्धि होती है । वह नौकरों के साथ मित्रता करने वाला होता है ॥

द्वादशभावस्थ राहु का फल

तमो द्वादशे दीनता पार्श्वशूलं प्रयत्ने कृतेऽनर्थतामातनोति ।
खलैमित्रतां साधुलोके रिपुत्वं विरामे मनोवाञ्छितार्थस्य सिद्धिम् ॥

जिसके द्वादश भाव में राहु हो वह दीनता तथा पाश्र्व- शूलपसलियों में पीड़ा पाता है। उसे - अत्यन्त परिश्रम करने पर भी कार्यसिद्धि नहीं मिलती। दुष्ट लोगों से मित्रता तथा सज्जनों से वैर करता है। अन्त में मनोवांछित फल को प्राप्त करता है ।।

यदा रिष्फे राहुर्जनुषि भविनां दैन्यमधिकं
तथा शूलं पार्श्वे हृदयकमले चानिलकृतम् ।
कृते यत्नेऽनर्थः प्रभवति विरामे शुभफलं
खलैमैत्री शश्वत् परमरिपुता सज्जनगणैः ॥

यदि राहु द्वादशवें भाव में हो तो वह अधिक दीनहीन होता है। पार्श्व भाग और हृदय में उसे वायुजनित शूल होता है । प्रयत्न करने पर भी उसके किसी भी कार्य के आदि में अनिष्ट फल तथा अन्त में है । उसे निरन्तर दुष्टों से परममैत्री एवं सज्जनों से परमशत्रुता होती होता है ॥

4.4 द्वादश भावस्थ केतु का फल

पराशर जी के मत से केतु के कारक -

व्रण रोग चर्मार्तिशूल स्फुट क्षुघार्तिकारकः केतुः ।।

व्रण चर्मरोग, शूल, भूख, फोडा- फुंसी का कारक केतु है।

केतु – मोक्ष, शिवोपासना, लाहसुनिया रत्न, डॉक्टरी, कुत्ता, मुर्गा, ऐश्वर्य, टी0बी0, पीड़ा, ज्वर, ताप, वायु विकार, स्नेह, सम्पत्ति का हस्तान्तरण, पत्थर की चोट, कॉंटा, ब्रह्मज्ञान, ऑंख का दर्द, अज्ञानता, भाग्य, मौनव्रत, वैराग्य, भूख, उदरशूल, सींगों वाले पशु, ध्वज, शूद्रों की सभा, बन्धन की आज्ञा को रोकना, जमानत आदि का कारक केतु है ।

प्रथमभावस्थ केतुफल

तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्ता तथा दुर्जनेभ्यो भयं व्याकुलत्वम् ।
कलत्रादिचिन्ता सदोद्वेगता च शरीरे व्यथा नैकधा मारुती स्यात् ॥

जिसके लग्न में केतु हो वह भाईबन्धुओं को कष्ट देने- वाला दुष्ट लोगों के भय से व्याकुल रहता है । स्त्री पुत्रादि की चिन्ता, मन में सदा उद्वेग तथा अनेक प्रकार की वातव्याधि से सदा पीड़ित रहता है ॥

यदा केतुर्लग्ने जननसमये बान्धवजनै-
महाक्लेशः शश्वद्भयमपि सदा दुर्जनकुलात् ।
मनश्चिन्ताधिक्यं प्रभवति कलत्रार्तिरधिका
जनानां वैकल्यं सततमुदरे कष्टमधिकम् ॥

यदि केतु लग्न में हो तो उसे अपने बन्धुजनों से बराबर क्लेश और दुर्जनों से सदा भय होता है। मानसिक चिन्ता की अधिकता, स्त्री को अधिक कष्ट, विकलता और पेट में (दर्द आदिकष्ट (अधिक होता है ॥

धनस्थ केतु का फल

धने केतुरव्यग्रता किं नरेशाद् धने धान्यनाशो मुखे रोगकृच्च ।
कुटुम्बाद्विरोधो वचः सत्कृतं वा भवेत्स्वे गृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम् ॥

धन भाव में केतु हो तो राजा से सम्पत्ति सम्बन्धी कोई कष्ट नहीं होता है। मुख में रोग तथा धनधान्य की हानि होती है। कुटुम्ब- के लोगों से विरोध रहता है। वचन से भी कुटुम्ब के लोग उसका आदर नहीं करते। यदि अपने गृह (मेष) में या बुध की राशि मिथुन या कन्या के केतु हो तो अत्यन्त सौख्य मिलता है ॥

मतिळग्रा नित्यं भवति नृपतेरर्थभवने
तमः पुच्छे धान्यक्षतिरपि कलिर्बान्धवजनैः ।
तथा रूक्षा वाणी सदसि निजपक्षार्तिरभितः
स्वभे सद्भे तस्मिन्नमितसुखमर्थश्च भविनाम् ॥

यदि केतु धनभाव में हो तो उसकी बुद्धि सर्वदा व्यग्र रहती है, राजा से धन हानि होती है, बन्धुबान्धवों के साथ कलह होता है, सभा में रूक्षवाणी बोलता है, उसके अपने पक्षवालों को चतुर्दिक पीड़ा ही होती है। धनभाव में केतु यदि अपनी राशि (मेष) का हो अथवा शुभग्रह की राशि का हो तो उसे विपुल सुख और धन प्राप्त होती है ॥

पराक्रमभावस्थ केतुफल

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकञ्च ।
सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडां भयोद्वेगचिन्ताकुलत्वं विधत्ते ॥

यदि तृतीय भाव में केतु स्थित हो तो उसके शत्रुओं का चाश होता है वह सदा विवादरत रहता है। उपभोग की सभी सामग्रियो मिलती हैं। वह तेजस्वी तथा ऐश्वर्यवान् होता है। मित्रों का नाश तथा बाहों में पीड़ा होती है। भय, घबराहट के कारण उद्विग्न रहा करता है ॥

तृतीये चेत्केतुर्भवति सुखहेतुस्तनुभृतां
धनानां भोगानां परमहसां चापि जनने।
विनाशः शत्रूणां प्रवरसमरे बाहुयुगले
व्यथा भीतिश्चिन्ता निजसुहृदि पीडा च परितः ॥

केतु यदि तृतीयभाव में हो तो उसके सुख का कारण केतु होता है। धनों का भोगों का और परम तेज का कारण भी केतु होता है। अर्थात् तृतीयभाव में केतु हो तो सुख धन भोग और तेज बल आदि को देता है। भीषण संग्राम में उसके शत्रुओं का नाश होता है। दोनों बाहों में व्यथा भय चिन्ता और मित्रों को कष्ट होता है ॥

चतुर्थभावस्थ केतुफल

चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचित् सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति।
शिखी बन्धुवर्गात्सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नो वसेत् स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ॥

यदि चतुर्थ भाव में केतु स्थित हो तो मातृसुख नहींमिलता, मित्रों से भी सुख का अभाव रहता है। उसकी पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। उद्विग्न रहने के कारण अपने घर में बहुत समय तक न रहता है। यदि उच्चराशि (धनु) का केतु हो तो भाइयों से सुख मिलता है ॥

सुखे केतुः पुंसां भवति नहि मातुः सुखमलं
सुहृद्वदिव व्रजति विलयं पैतृकधनम्।
स्वगेहे नो वासः सपदि च निवासेन कलहो
निजोच्चे स्वक्षेत्रे स तु भवति बन्धोः सुलमलम्॥

यदि केतु चतुर्थभाव में हो तो उसे माता का पूर्णसुख नहीं होता है। मित्रों के द्वारा ही पैतृक धन का नाश होता है। उसका निवास अपने घर में कभी नही होता है यदि वह वास करता है तो घर में कलह होता है। केतु यदि चतुर्थभाव में होकर अपने उच्च (धनु) या गृह में हो तो बन्धुओं से पूर्णसुख प्राप्त होता है ॥

पञ्चमभावस्थ केतुफल

यदा पञ्चमे राहुपुच्छं प्रयाति तथा सोदरे घातवातादिकष्टम् ।
स्वबुद्धिव्यथा सन्ततं स्वल्पपुत्रः स दासो भवेद्वीर्ययुक्तो नरोऽपि ॥

यदि पंचमभाव में केतु स्थित हो तो उस जातक के भाइयों को शस्त्राघात या वातव्याधि से कष्ट होता है। सदा उसकी बुद्धि भ्रमित रहती है तथा अल्प पुत्र उत्पन्न होते हैं। अत्यन्त तेजस्वी तथा बलवान होने पर भी दासवृत्ति करने वाला होता है।

यदा राहोः पुच्छे भवति किल सन्तानभवने
सहोत्थानां शस्त्रक्षतजनितकष्टं हि बहुधा ।
स्वबुद्ध्या पीडापि प्रभवति जनानामतितरां
तथापत्यादल्पं सुखमनुदिनं तत्कलहतः ॥

केतु यदि पञ्चमभाव में हो तो उसके सहोदर भाइयों को बहुधा शस्त्राघात से कष्ट सम्भव रहता है। अपनी बुद्धि के कारण उसे अत्यधिक पीड़ा भी होती है। पुत्र के साथ निरन्तर कलह के कारण उसे पुत्र सुख नहीं होता है॥

षष्ठभावस्थ केतु का फल

तमः षष्ठभागे गते षष्ठभावे भवेन्मातुलान्मानभङ्गो रिपूणाम् ।
विनाशश्चतुष्पात्सुखं तुच्छचित्तं शरीरे सदानामयं व्याधिनाशः ॥

यदि छठे भाव में केतु स्थित हो तो मामा से उसका अप- मान होता है। शत्रुओं का नाश, पशुधन गायभैंस आदि का सुख मिलता है।- वह तुच्छ विचार तथा हीनभावनावाला होता है। उसके - रोग नष्ट हो जाते हैं, वह सदा नीरोग रहता है॥

तमःपुच्छे षष्ठे जननसमये मातुलकुलात्
सदा मानाल्पत्वं प्रभवति चतुष्पात्सुखमलम् ।
तथाऽऽरोग्यं व्याधिक्षय उत धनानामपचयः
प्रचण्डारे शः सपदि समरे वादकरणात् ॥

केतु यदि षष्ठभाव में हो तो उसे मातृकुल से सम्मान नहीं मिलता है। गाय बैल भैस घोड़ा आदि से अधिक सुख होता है। आरोग्य, व्याधिनाश, धन का हास और वाद विवाद में भयङ्कर प्रतिवादी का भी नाश होता है॥

सप्तमभावस्थ केतुफल

शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिन्ता निवृत्तः स्वनाशोऽथवा वारिभीतिः ।
भवेत्कीटगः सर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता चेत् ॥

यदि सप्तम भाव में केतु स्थित हो तो यात्रा सम्बन्धी कष्ट तथा चिन्ता होती है। यात्रा से निवृत्त होने पर धन का नाश तथा जल से भय होता है। स्त्री पुत्रादि की चिन्ता, व्ययाधिक्य तथा मन उद्विग्न रहता है। यदि वृश्चिक राशि का केतु सप्तम भाव में हो तो सदा लाभदायक होता है ॥

तमःपुच्छे नारीभवनमुपयाते जनिमतां
तदा मार्गाभीतिर्जलजनितभीतिश्च परमा ।
परावृत्तार्थानां प्रभवति विरामोऽलिभवने-
सदा कान्ताकष्टं व्ययचय उतार्थामलसुखम् ॥

यदि केतु सप्तमभाव में हो तो उसे मार्ग में तथा जल में भी अत्यधिक भय होता है। सप्तमभाव का होकर यदि वृश्चिक राशि में स्थित हो तो गया हुआ धन भी स्थिर रहता है। स्त्री को कष्ट और खर्च में वृद्धि होती है किन्तु धन से उत्तम सुख अवश्य प्राप्त होता है ॥

अष्टमभावस्थ केतु का फल

गुदा पीड्यतेऽर्शादिरोगैरवश्यं भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः ।
भवेदष्टमे राहुपुच्छेऽर्थलाभः सदा कीटकन्याजगो युग्मगे तु ॥

यदि अष्टमभाव में केतु हो तो बवासिर आदि गुह्यरोगों से अवश्य पीड़ा होती है। वाहन से भय तथा दुर्घटना एवं लेनदेन के कार्यो में- द्रव्य का अवरोध होता है। आर्थिक लाभ होता है, विशेषकर वृश्चिक, कन्या. मेष, वृष तथा मिथुन राशि का केतु अष्टम भाव में हो तो अर्थलाभ अधिक होता है ॥

यदा केतौ रन्ध्रे जननसमयेऽर्शादिजनितं
गुदे कष्टं नित्यं प्रभवति पशूनामपि भयम् ।
स्ववित्तानां रोधः खलु मिथुनकन्याल्यजवृषे
तदाप्तिर्द्रव्याणां क्षितिपतिकुलादेव भविनाम् ॥

यदि केतु अष्टमभाव में हो तो उसे सर्वदा गुदा में अर्श (बवासीरआदि रोगजनित कष्ट होता (है । पशुओं से भय तथा अपने धन के आगम में रूकावट होती है। केतु यदि अष्टमभाव का होकर

मिथुन- कन्यावृश्चिक-मेष-वृष इनमें से किसी- भी एक राशि में रहे तो निश्चय ही उसे राजकुल से धन प्राप्त होता है ॥

नवमस्थ केतु का फल

शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशः सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः ।
सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धि तदानीम् ॥

यदि नवम भाव में केतु हो तो उस जातक का क्लेश दूर हो जाता है। म्लेच्छों के द्वारा उसका भाग्योदय होता है। वह सन्तान की इच्छा करता है। भाइयों से कष्ट पाता है तथा बाहों में पीड़ा होती है। तपस्या तथा दान करने में वह लोक में उपहास का पात्र होता है ॥

तमःपुच्छे भाग्यं गतवति सुतार्थस्तनुभृतां
सदा म्लेच्छाल्लाभः खलु निखिलकष्टापहरणम् ।
सहोत्थानां कष्टं बहुविधगदो बाहुयुगले
तपश्चर्यादानप्रभव उपहासश्च सततम् ॥

केतु यदि नवमभाव में हो तो उसे पुत्र और धन का लाभ होता है । सदा नीच जातियों से लाभ और सभी कष्टों का नाश होता है । सहोदर भाइयों को कष्ट तथा दोनों बाहों में विविध प्रकार के रोग होते है । तपस्या और दान आदि धार्मिक कृत्यों में सदा उपहास होता है । अर्थात् तपश्चर्या तथा दान शास्त्रविधि से न होने के कारण उपहास होता है ॥

दशमभावस्थ केतु का फल

पितुर्नो सुखी कर्मगो यस्य केतुर्यदा दुर्भगं कष्टभाजं करोति ।
तदा वाहने पीडितं जातु जन्म वृषाजालिकन्यासु चेच्छत्रुनाशम् ॥

यदि दशमभाव में केतु स्थित हो तो उसे पिता का सुख नहीं मिलता, वह कुरूप तथा कष्ट भोगने वाला होता है। उस जातक के वाहन से भय होता है । यदि दशम स्थान में वृष, मेष, वृश्चिक तथा कन्या राशि का केतु हो तो शत्रुओं का नाश होता है ॥

यदा सिंहीपुत्रे दशमभवने यस्य जनने
पितुः कष्टं नित्यं प्रभवति कुरूपत्वमथवा ।
अवश्यं दौर्भाग्यं तुरगगजगोभिर्भयमलौ

वर्ष षष्ठे मेषे व्रजति विलयं शत्रुपटली ॥

यदि केतु दशमभाव में हो तो उसके पिता को बराबर कष्ट होता है अथवा स्वयं वह कुरूप होता है निश्चित ही उसका भाग्य खराब होता है। घोड़ा हाथी गाय बैल आदि से उसे भय होता है परन्तु यदि केतु दशमभाव का होकर वृश्चिकवृष-कन्या-मेष इनमें से किसी भी राशि का हो- तो उसके शत्रुओं का नाश होता है ॥

एकादशभावस्थ केतुफल

सुभाग्यः सुविद्याधिको दर्शनीयः सुगात्रः सुवस्त्रः सुतेजोऽपि तस्य।
दरे पीड्यते सन्ततिर्दुर्भगा च शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति ॥

जिसके एकादशभाव में केतु हो तो वह भाग्यवान्, अत्यन्त विद्वान्, दर्शनीय, सुन्दर शरीरवाला, सुंदर वस्त्रों से शोभित तथा तेजस्वी होता है। सब प्रकार का लाभ उसे मिलता है। उसकी सन्तान अन्नवस्त्र के अभावमें पीड़ा पाती है तथा भाग्यहीन होती है।-

शिखी लाभस्थाने जनुषि भविनां भाग्यमधिकं
प्रभाधिक्यं विद्या सततमनवद्याकृतिरपि।
प्रशस्तं वस्त्रं च प्रभवति गुदे कष्टमनिशं
तथा नानार्थाप्तिः परमविकला सन्तातितिः ॥

केतु यदि एकादशभाव में हो तो वह पूर्ण भाग्यवान होता है। विशेष कान्ति, उत्तम, विषा निर्गल आकृति और उत्तम वस्त्र (धारण करने) वाला वह होता है। उसे गुदा में बराबर का रहता है। उसे विविध प्रकार से धन का लाभ परन्तु सन्तान हेतु वह अत्यन्त विकल रहता है ॥

द्वादशभावस्थ केतु का फल

शिखी रिष्फगो बस्तिगुह्याङ्रिनेत्रे रुजा पीडनं मातुलान्नैव शर्म।
सदा राजतुल्यं नरे सद्व्ययं तद्रिपूणां विनाशं रणेसौ करोति ॥

जिसके कारण द्वादशभाव में केतु हो उसे लिङ्ग, गुदा; पैर तथा नेत्र में रोग होने से कष्ट होता है। मामा से उसे सुख नहीं मिलता। वह राजा की भांति सत्कार्यो में धन व्यय करता है। युद्ध में उसके शत्रु मारे जाते हैं ॥

यदाऽपायागारं जनुषि यदि केतावुपगते

महापीडा गुह्ये पदनयनयो भिनिकटे ।
जयो वादे नित्यं नरपतिवदेवामलसुखं
नराणां कल्याणं भवति च न मातुः सहजतः ॥

यदि केतु द्वादशवें भाव में हो तो उसे गुदानेत्र और- नाभि के निकट में पीड़ा होती है । वाद-विवाद में सर्वदा जय और राजा के समान वह पूर्णसुख प्राप्त करता है। मातुलवर्ग से उसे सुख नहीं होता है ॥

1. जुआ का कारक ग्रह है।

(क) राहु (ख) मंगल (ग)सूर्य (घ) चन्द्रमा

2. केतु किस का कारक है।

(क) मन (ख) वाणी (ग) व्रण चर्मरोग (घ) सुख

3. केतु यदि द्वादश भाव में हो तो जातक को कौनसा रोग होता ।

(क) गुदा रोग (ख) पेट रोग (ग) मोटा शरीर (घ) मुख रोग

4. गोमेद किस ग्रह का रत्न है।

(क) चन्द्रमा का (ख) मंगल का (ग) बुध का (घ) राहु का

5. केतु किस रत्न का कारक है।

(क) हीरा (ख)पन्ना (ग) लाहसुनिया (घ) नीलम

4.5 सारांश

इस इकाई के अधययन के पश्चात् आपने यह जाना कि राहु ग्रह छायामूर्ति ग्रह होता है, जो भ्रम, माया, रहस्यमय घटनाओं, और अप्रत्याशित परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करता है। यदि राहु लग्न में स्थित हो, तो व्यक्ति का व्यक्तित्व रहस्यमय, आकर्षक और अप्रत्याशित होता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन में कुछ ना कुछ गुप्त पक्ष रहता है । दूसरे भाव में राहु व्यक्ति को धन और वाणी में असामान्यता और बदलाव का संकेत देता है। ऐसे व्यक्ति धन के मामलों में अचानक उन्नति तो पाते हैं, लेकिन यह प्रक्रिया धीमी और कभी-कभी अनिश्चित होती है। तीसरे भाव में राहु व्यक्ति को

साहस, उत्साह, और तर्कशक्ति प्रदान करता है। वह अपनी यात्रा और प्रयासों में नए रास्तों पर चलता है। चतुर्थ भाव में राहु व्यक्ति को परिवार, घर, और मातृ सुख में उथल-पुथल का सामना कराता है। ऐसा व्यक्ति अपने घर और परिवार के मामलों में भ्रम और मानसिक अस्थिरता का अनुभव करता है। पंचम भाव में राहु व्यक्ति को संतान के मामलों में समस्याओं और मानसिक दबाव का सामना कराता है। संतान के मामलों में भ्रम और कठिनाइयाँ हो सकती हैं, और व्यक्ति को संतान के प्रति अपने दृष्टिकोण में बदलाव करना पड़ सकता है। षष्ठ भाव में राहु व्यक्ति को शत्रुओं से युद्ध और संघर्ष में अप्रत्याशित लाभ दिलाता है, लेकिन यह हमेशा अप्रत्याशित परिणाम देता है। सप्तम भाव में राहु व्यक्ति के वैवाहिक जीवन में भ्रम और अस्थिरता का कारण बनता है। जीवनसाथी से संबंधों में दूरी और समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। अष्टम भाव में राहु व्यक्ति को गूढ़ और रहस्यमय विषयों में रुचि देता है। यह व्यक्ति को आध्यात्मिकता और रहस्यों के साथ जुड़ा हुआ बनाता है, नवम भाव में राहु व्यक्ति को भाग्य में अचानक बदलाव, और उच्च शिक्षा में समस्याओं का सामना कराता है। दशम भाव में राहु व्यक्ति के करियर और समाज में प्रतिष्ठा में बदलाव और अप्रत्याशित उथल-पुथल का कारण बनता है। हालांकि, राहु व्यक्ति को व्यवसाय में सफलता, नए अवसर और अप्रत्याशित लाभ प्राप्त करवा सकता है। एकादश भाव में राहु व्यक्ति को इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं में अप्रत्याशित लाभ और सफलता देता है, लेकिन यह लाभ स्थिर नहीं होता। ऐसे व्यक्ति को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अप्रत्याशित तरीकों से काम करना पड़ता है। द्वादश भाव में राहु व्यक्ति को मानसिक शांति और आध्यात्मिकता में भ्रम, खर्च और अनिश्चितता का सामना कराता है। केतु ग्रह आत्मज्ञान, मोक्ष, और अज्ञेयता का प्रतीक होता है। केतु का प्रभाव व्यक्ति के जीवन में अचानक परिवर्तन, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति, और भौतिक सुखों से दूरी बनाने की प्रवृत्ति को दर्शाता है। यदि केतु लग्न में स्थित हो, तो व्यक्ति का व्यक्तित्व रहस्यमय और गहरे विचारों वाला होता है। इस स्थिति में व्यक्ति को मानसिक और आध्यात्मिक रूप से बहुत कुछ सीखने की प्रवृत्ति होती है, दूसरे भाव में केतु व्यक्ति को धन और परिवार के मामलों में अप्रत्याशितता और असामान्यता का सामना कराता है। तीसरे भाव में केतु व्यक्ति को साहस, आत्मनिर्भरता और चिंतनशीलता प्रदान करता है। हालांकि, इस स्थिति में व्यक्ति को भाई-बहनों से संबंधों में दूरी और समझ में असमंजस हो सकता है। चतुर्थ भाव में केतु व्यक्ति को घर, माता और मानसिक शांति के मामलों में उलझन और भ्रम का सामना कराता है। घर में स्थिरता का अभाव हो सकता है और व्यक्ति को मानसिक शांति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। पंचम भाव में केतु व्यक्ति को संतान और रचनात्मकता में समस्याओं का सामना कराता है। संतान के मामलों में देरी या समस्याएँ हो सकती हैं।

षष्ठ भाव में केतु व्यक्ति को शत्रुओं और स्वास्थ्य के मामलों में अप्रत्याशित लाभ और समस्याओं का सामना कराता है। शत्रु और कर्ज से जुड़ी समस्याएँ रह सकती हैं, लेकिन व्यक्ति को इससे उबरने के लिए मानसिक और आत्मिक विकास की ओर बढ़ने का अवसर मिलता है। सप्तम भाव में केतु व्यक्ति के वैवाहिक जीवन और साझेदारी में समस्याएँ उत्पन्न करता है। वैवाहिक जीवन में कुछ असंतुलन हो सकता है, और जीवनसाथी से संबंधों में अव्यवस्था और तनाव हो सकते हैं। अष्टम भाव में केतु व्यक्ति को गूढ़ और रहस्यमय ज्ञान की ओर आकर्षित करता है। नवम भाव में केतु व्यक्ति को उच्च शिक्षा, धर्म, और भाग्य में असमंजस का सामना कराता है। व्यक्ति को अपने जीवन के उद्देश्य की खोज में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन यह उसे अपने कर्मों और भाग्य के बारे में गहरे ज्ञान की ओर मार्गदर्शन करता है। दशम भाव में केतु व्यक्ति को करियर, समाज में प्रतिष्ठा और कार्यों में बदलाव का सामना कराता है। करियर में असामान्यता और अनिश्चितता हो सकती है, एकादश भाव में केतु व्यक्ति को इच्छाओं और लक्ष्यों की पूर्ति में संघर्ष और मानसिक दबाव का सामना कराता है। यह व्यक्ति को समाज में पहचान पाने में कठिनाई देता है, लेकिन उसे अपनी आंतरिक शक्ति और आत्मज्ञान की ओर अग्रसर करता है। द्वादश भाव में केतु व्यक्ति को मानसिक शांति, विदेश यात्रा, और आध्यात्मिक जीवन में गहरे अनुभवों का सामना कराता है।

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

व्रण – फोडा फुंसी

चर्मरोग – त्वचा रोग

दशमस्थ – दशम भाव में स्थित

लौकिक – सांसारिक

पराक्रमभाव – तृतीय भाव

4.7 बोधप्रश्नों के उत्तर

1. (क)
2. (ग)
3. (क)
4. (घ)

5. (ग)

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहज्जातकम् - चौखम्भा प्रकाशन

वृहत्पराशरहोराशास्त्र - चौखम्भा प्रकाशन

ज्योतिष सर्वस्व – चौखम्भा प्रकाशन

चमत्कार चिंतामणि- चौखम्भा प्रकाशन

भावप्रकाश - चौखम्भा प्रकाशन

सरावली- चौखम्भा प्रकाशन

मानसागरी- चौखम्भा प्रकाशन

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. राहु के कारकत्व वर्णन करते हुए प्रथम, द्वितीय तृतीय भावस्थ फल का उल्लेख करें।
2. राहु का चतुर्थ, पंचम, षष्ठभावस्थ फल का वर्णन करें।
3. राहु का सप्तम, अष्टम, नवम भावस्थ फल लिखिये।
4. केतु के कारकत्व वर्णन करते हुए प्रथम, द्वितीय तृतीय भावस्थ फल का उल्लेख करें।
5. केतु का चतुर्थ, पंचम, षष्ठभावस्थ फल का वर्णन करें।
6. केतु का सप्तम, अष्टम, नवम भावस्थ फल लिखिये।